मध्यम वर्गीय परिवारों में पारिवारिक तनाव तथा विघटन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

झाँसी नगर के विशेष संदर्भ में

समाजशास्त्र विषय में पी०एच०डी० उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

शोध निर्देशक

डॉ. आर. पी. निमेष

एम.ए., पी.एच.डी.

उपाचार्य, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर, समाज विज्ञान संस्थान

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

अनुसंधित्सु

मायाराम

बी.एस.सी., एल.एल.बी., एम.ए.

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, उ०प्र०

२००६

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी श्री मायाराम, शोध पंजीकरण संख्या, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी ने अपना अनुसंधान कार्यष

''मध्यम वर्गीय परिवारों में पारिवारिक तनाव तथा विघटन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन झाँसी नगर के विशेष सन्दर्भ में।''

शोध शीर्षक पर मेरे मार्ग दर्शन में पूर्ण किया गया है। यह भी प्रमाणित किया जाता है कि:-

1. मेरी पूर्ण जानकारी एवं विश्वास में यह मौलिक कार्य है।
2. आपने विभाग में 24 महिने से अधिक समय उपस्थिति होकर अपना अनुसंधान कार्य पूर्ण किया है।
3. आप पर बुदेलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी का कुछ देय अवशेष नहीं है।
4. मेने यह शोध प्रबन्ध, समिति के निर्देशानुसार तथाशोध अनुकमणिका के अनुरूप ही पूर्ण कराया है।

अतः उपरोक्त बिन्दुओं के आलोक में, मैं इस शोध प्रबन्ध के मूल्यांकन की प्रवल संस्तुति एवं अनुशंसा करता हूँ।

दिनांक : 7/12/2006

(डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद निमेष)
उपाचार्य
डॉ0 भीमराव अम्बेडकर समाज विज्ञान संस्थान,
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

उपोद्घात

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव एवं विघटन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन पर आधारित है जो आनुमाविक तथ्य परक वैज्ञानिक निष्कर्ष ही नहीं करता, अपितु अर्न्तराष्ट्रीय स्तर की जवलन्त समस्य के सन्दर्भ में उन तथ्यों को उजागर एवं रेखांकित करता है, को पग-पग पर सहन किया जाता है। भले ही पारिवारिक तनाव एवं विघटन एक सामाजिक एवं पारिवारिक प्रक्रिया है जो सभी समुदायों में पाई जाती है फिर मध्यम वर्गीय परिवारों में यह गम्भीर एवं जटिल समस्या क्यों है? क्या यह अपने अंक में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक इत्यादि समस्याओं को समेटे रहती है?

पश्चात् भौतिकवादी संस्कृति की चमक-दमक के प्रभावों के तीव्र परिवर्तनों के इस दौर में परिवारों की संरचना एवं उनके प्रकार्यो में हो रहे परिवर्तनों के फलस्वरूप पारिवारिक तनाव एवं कलह को कम कर पाने का कार्य पूर्व की भाँति नहीं कर पा रहे हैं । निःसन्देह एवं निर्विवाद रूप से यह बात सत्य है कि मध्यम वर्गीय परिवारो में नव युवकों एवं युवतियों के मध्य सफल समायोजन/सामन्जस नहीं हो पा रहा है, सम्प्रति पारिवारिक जीवन समस्याग्रस्त, दूभर एवं नरकीय हो रहा है।

इलियट व मैरिल ने लिखा है कि तनाव एवं विघटन द्वारा प्रभावित होने वाली इकाई परिवार होता है तो उसे पारिवारिक विघटन कहते हैं। जिसके मुख्य कारणों में पतिष्पत्नी में तनाव पैदा होता है और वे अपने कार्य ढग से नहीं चला पाते

तब पारिवारिक विघटन होता है। जब माता-पिता और उनकी सन्तानों के बीच शान्ति पूर्ण सम्बन्ध नहीं रहता, तब भी परिवार का विघटन होता है तथा दूसरे सदस्यों से भी तनाव होता है तब परिवार समाप्त हो जाता है। पारिवारिक विघटन मृत्यु, आपद,शारीरिक आघात, व्यवहार और अन्य कारणों से होता है। जिससे मनुष्य एक दूसरे के साथ व्यवस्थित ढ़ग से नहीं रह पाते हैं । तभी परिवार एवं सामाजिक समायोजन एकांकीपन, अलगाव, पृथकरण, खाली समय का रचनात्मक उपयोग न होना तथा स्वयं व आश्रितों के भरण-पोषण की समस्या उत्पन्न हो जाती है। प्रस्तुत शोध कार्य मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव तथा विघटन की समस्याओं, कारको का प्रभाव उजागर तो करेगा ही साथ ही समाधान के लिए व्यवहारिक सुझाव भी बतायेगा । सम्प्रति जिसकी उपदेयता एवं महत्व की अनुमति तो पाठक गण एवं विषय के विद्वान मनीषी ही कर सकेंगे किशोध अध्येता अपनी लक्ष्य पूर्ति में कहाँ तक सफल हुआ है।

"अनुसंधित्सु"

(मायाराम)

आभार

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध बुदेलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी की समाजशास्त्र विषय में ''डाक्टर आफ फिलासफी'' की उपाधि प्राप्त करने के लिए सर्व प्रथम विश्वविद्यालय झाँसी कीशोध समिति बधाई की पात्र है, जिसने प्रथम दृष्टिया शोध की रूप रेखा अनुमोदित करके अनुसंधान कार्य हेतु मार्ग प्रशस्त कर मेरा उत्साहवर्धन किया।
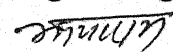
प्रत्येक नवीन कार्य के लिए कोई न कोई प्रेरणा श्रोत अवश्यक हुआ करता है। मेरी हाई स्कूल से लेकर स्नात्कोत्तर स्तर तक की समस्त शैक्षिक उपलब्धियां एवं अनुसंधान कार्य करने हेतु प्रेरित करने के लिए प्रथम प्रेरणा श्रोत अंकुरित करने का श्रेय मुख्य रूप से मेरी पत्नी श्रीमती सुमन पंकज जी, जो कि स्वयं पी0 एच0 डी0 हैं, को जाता है क्योंकि उसने ही मुझे सदैव ही अधिकाधिक उच्चतर शैक्षिक उपलब्धियाँ प्राप्त करने के लिए प्रेरित ही नहीं किया अपितु मैरे मन में प्रवल जिज्ञासा तथा उत्कण्ठा उत्पन्न की, कि मै भी डाक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त करू। इसी जिज्ञासा के वषीभूत मैने गुरूवार डा0 राजेन्द्र प्रसाद निमेष, एम0ए0, पी0एच0डी0 उपाचार्य डा0 बी0 आर0 अम्बेडकर समाज विज्ञान संस्थान बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से शोध अध्ययन करने के लिए आग्रह किया। मैरी बार-बार विनय करने पर तथा मेरी रूचि देख/भॉप कर उन्होंने अपने निदर्शन में शोध अध्ययन करने की अनुमति प्रदान कर दी। आपने मेरी रूचि का शीर्षक अनुमोदित ही नही किया अपितु मेरा मार्ग दर्शन करना भी सहज

स्वीकार कर लिया, जिसके लिए आभार प्रगट करना मेरा पुनीत दायित्व व कर्तव्य है।

शोधार्थी विभिन्न विषय विशेषज्ञों डा0 एन0 एन0 अवस्थी विभागाध्यक्ष, समाज कार्य, बुदेलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी, डा0 किरन शर्मा, सहायक प्रोफेसर पीताम्बरा विद्यापीठ जनपद दतिया म0प्र0, श्री एन0 पी0 ऑगनी होत्री सहायक प्रोफेसर, मेडीकल कालेज आगरा, डा0 रनवीर सिंह सहायक प्रोफेसर समाज विज्ञान संस्थान झाँसी, डा0(कु.) जयकिरन सहायक प्रोफसर, नेहरू परास्नातक महाविद्यालय ललितपुर का आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मुझे बहुमूल्य सुझाव दिये। डा0 एस0 डी0 सिंह विभागाध्यक्ष शिकोहाबाद ने मेरा पग-पग पर उत्साह वर्धन किया मै उनका विशेषकर आभारी हूँ।

अन्त में, लेकिन कम आभारी नहीं हूँ अपनी पत्नी श्रीमती सुमन पंकज जिन्होंने शोध के अन्तराल में मुझे पारिवारिक उत्तरदायित्वों के निर्वाहन से मुक्त रखा। विशेष आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापन व धन्यवाद उन समस्त सूचनादाताओं का जिन्होंने प्रथम दृष्टता निःसंकोच अपने व्यक्तिगत जीवन सम्बन्धी सूचनाएं प्रदान कर मैरे अध्ययन को पूरा करने में मैरी आद्योपान्त सहायता की है। साथ ही उन समस्त महानुभावों जिनके नामों का उल्लेख पृथक से करना यहाँ सम्भव न हो सकता है, को पुनः-पुनः धन्यवाद के साथ जिन्होंने मैरी आधी-अधूरी कटीली राह को अवलोकित कर जवाज्वल्पमान बनाया है।

अनुसंधित्सु

(मायाराम)

अनुक्रमणिका एवं अध्यायीकरण

अध्याय	अध्याय सम्बन्धी विवरण	पृष्ठ संख्या
अध्याय-1	प्रस्तावना - शोधाध्ययन की सामाजिक महत्ता - शोध विषय की अवधारणा - परिवार की अवधारणा - परिवार का महत्त्व - परिवार का आधार - मध्यम वर्गीय परिवारों का वर्गीकरण - मध्यम वर्गीय परिवारों का अन्य परिवारों से सम्बन्ध - मध्यम वर्गीय परिवारों की विशेषताऐं - मध्यम वर्गीय परिवारों में आधुनिक परिवर्तन - मध्यम वर्गीय परिवारों में सामाजिक गतिशीलता - मध्यम वर्गीय परिवारों में पश्चिमीकरण एवं आधुनिकीकरण - मध्यम वर्गीय परिवारों में समाजीकरण - मध्यम वर्गीय परिवारों में पारस्परिक सम्प्रेक्षण - मध्यम वर्गीय परिवारों में मनोरंजन	1-39
अध्याय-2	शोध पद्धति - अध्ययन क्षेत्र - अनुसंधान का प्रारूप - निदर्शन - तथ्यों के स्रोत - तथ्य संकलन - तथ्यों का वर्गीकरण - तथ्यों का सारणीयन - तथ्यों का विश्लेषण तथा व्याख्या - प्रतिवेदन का प्रस्तुतिकरण	40-72
अध्याय-3	साहित्य का पुनरावलोकन	73-103
अध्याय-4	उत्तरदाताओं की सामाजिक जनांककीय विशेषताऐं - आयु, लिंग, शैक्षिक स्तर, व्यवसाय, मासिक आय, जाति एवं धर्म, विवाह स्तर, विवाह के स्तर, बच्चों की जनसंख्या, विवाह का स्वरूप आवासी दशा, सूचना श्रोंत आदि।	104-121
अध्याय-5	मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव - पारिवारिक तनाव के अध्ययन की आवश्यकता - शोध का महत्व - पारिवारिक तनाव की अवधारणा - तनाव के भेद - तनाव की प्रकृति	122-148

- तनाव के लक्षण
- तनाव के कारक

अध्याय-6 मध्यम वर्गीय परिवारों में पारिवारिक विघटन के कारक 149-173
- वैयक्तिक कारक
- सामाजिक कारक
- आर्थिक कारक
- मानसिक कारक

अध्याय-7 पारिवारिक तनाव का व्यक्ति-परिवार व समाज पर प्रभाव 174-219
- व्यक्ति पर प्रभाव
- परिवार पर प्रभाव
- समाज पर प्रभाव

अध्याय-8 अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में अधिक तनाव के कारण 220-239
- वैयक्तिक कारक
- सामाजिक कारक
- आर्थिक कारक
- महिला सशक्तिकरण
- धार्मिक कारक
- अशिक्षितों में कम तनाव के विविध कारक
- राजनैतिक कारक
- सांस्कृतिक कारक

अध्याय-9 पारिवारिक तनाव को कम करने के सुझाव 240-248
- सम्प्रेक्षण की तकनीकियां
- स्वयं प्रयास
- शीलों का पालन
- धार्मिक क्रिया-कलाप
- सामाजिक क्रियाएं
- मनोवैज्ञानिक सुझाव

अध्याय-10 शोधाध्ययन के निष्कर्ष 249-274
- सारांश
- कठिनाइयाँ
- समाधान

संलग्न परिशिष्ट
- सन्दर्भ ग्रन्थ - सूची
- साक्षात्कार अनुसूची

संलग्न -तालिकाओं की सूची

क्र0 सं0	अध्याय	तालिका नं0	तालिकाओं का शीर्षक सम्बन्धी विवरण	पृष्ठ संख्या
1	4	1	उत्तरदाताओं का आयु सम्बन्धी विवरण	113
2	4	2	उत्तरदाताओं का लिंग सम्बन्धी विवरण	114
3	4	3	उत्तरदाताओं का शैक्षिक स्तरवार वर्गीकरण	114
4	4	4	उत्तरदाताओं का जातिवार वर्गीकरण	115
5	4	5	उत्तरदाताओं का धर्मवार वर्गीकरण	115
6	4	6	उत्तरदाताओं का व्यापारवार वर्गीकरण	116
7	4	7	उत्तरदाताओं का मासिक आयवार वर्गीकरण	116
8	4	8	उत्तरदाताओं का विवाह स्तर सम्बन्धी वर्गीकरण	117
9	4	9	उत्तरदाताओं का बच्चों की जनसंख्या संबंधी विवरण	118
10	4	10	उत्तरदाताओं द्वारा किए गये विवाहों के स्वरूप का विवरण	119
11	4	11	उत्तरदाताओं के परिवार के स्वरूप का विवरण	119
12	4	12	उत्तरदाताओं की आवासी दशा का विवरण	120
13	4	13	उत्तरदाताओं के सूचना श्रोतों का विवरण	120
14	5	14	उत्तरदाताओं में तनाव ग्रस्तता संबंधी विवरण	135
15	5	15	उत्तरदाताओं के प्रभाव की सीमा संबंधी विवरण	135
16	5	16	उत्तरदाताओं में तनाव की समस्याओं संबंधी विवरण	136
17	5	17	उत्तरदाताओं में कहां-सुनी के सामान्य मुद्दों का विवरण	137
18	5	18	उत्तरदाताओं में कहां-सुनी के विशेष मुद्दों संबंधी विवरण	137
19	5	19	उत्तरदाताओं में कहां-सुनी की समाप्ति संबंधी सूचनाएं	138
20	5	20	उत्तरदाताओं में तना-तनी के मध्य हस्तक्षेपकों का विवरण	139
21	5	21	उत्तरदाताओं में तना-तनी को लेकर पुलिस स्टेशनों तक पहुँच का विवरण	139
22	5	22	उत्तरदाताओं में पुलिस रिपोर्ट के कोर्ट केसेज संबंधी विवरण	140
23	5	23	उत्तरदाताओं के कोर्ट केसेज के परिणाम संबंधी विवरण	140
24	5	24	उत्तरदाताओं में तनाव के मनोवैज्ञानिक कारकों का विवरण	141
25	5	25	उत्तरदाताओं में तनाव के कटु प्राथमिक संबंधी कारक	142
26	5	26	उत्तरदाताओं में पति की आदतों के कारण पारिवारिक तनाव संबंधी विवरण	143

क्र0 सं0	अध्याय	तालिका नं0	तालिकाओं का शीर्षक सम्बन्धी विवरण	पृष्ठ संख्या
27	5	27	उत्तरदाताओं में पत्नि के व्यवहार के कारण पारिवारिक तनाव का विवरण	144
28	5	28	उत्तरदाताओं में पारिवारिक तनाव के सांस्कृतिक कारकों का विवरण	145
29	5	29	उत्तरदाताओं में पारिवारिक तनाव के आर्थिक कारकों संबंधी विवरण	146
30	5	30	उत्तरदाताओं में पारिवारिक तनाव के जैवकीय कारकों संबंधी विवरण	147
31	5	31	उत्तरदाताओं में पारिवारिक तनाव के अन्य कारक संबंधी विवरण	148
32	6	32	पारिवारिक विघटन पर वैयक्तिक कारकों के प्रभाव का विवरण	166
33	6	33	पारिवारिक विघटन में पारिवारिक तनाव की भूमिका संबंधी विवरण	167
34	6	34	पारिवारिक विघटन में परिवार के कार्यों में परिवर्तन की भूमिका	168
35	6	35	पारिवारिक विघटन पर परिवार की संरचना में परिवर्तन के प्रभाव का विवरण	169
36	6	36	पारिवारिक विघटन पर सामाजिक कारकों के प्रभाव का विवरण	170
37	6	37	पारिवारिक विघटन पर आर्थिक कारकों का प्रभाव	171
38	6	38	पारिवारिक विघटन पर मानसिक विकारों का प्रभाव	172
39	6	39	पति-पत्नी के मध्य तनावों का पारिवारिक विघटन पर प्रभाव	173
40	7	40	पारिवारिक तनाव का व्यक्ति की जीवन शैली पर प्रभाव संबंधी विवरण	179
41	7	41	पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के मानसिक व्यवहार पर प्रभाव संबंधी विवरण	180
42	7	42	पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के स्वास्थ्य पर प्रभाव संबंधी विवरण	182
43	7	43	पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के व्यवहारिक प्रतिमानों पर प्रभाव संबंधी विवरण	183
44	7	44	पारिवारिक तनाव का व्यक्ति की व्याधिकी पर प्रभाव संबंधी विवरण	185
45	7	45	पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के आर्थिक व्यवहार पर प्रभाव संबंधी विवरण	186
46	7	46	पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के नैतिक मूल्यों पर प्रभाव संबंधी विवरण	188
47	7	47	पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव संबंधी विवरण	190

क्र0 सं0	अध्याय	तालिका नं0	तालिकाओं का शीर्षक सम्बन्धी विवरण	पृष्ठ संख्या
48	7	48	पारिवारिक तनाव का बच्चों के समाजीकरण पर प्रभाव संबंधी विवरण	202
49	7	49	पारिवारिक तनाव का बच्चों के मनोवैज्ञानिक व्यवहार पर प्रभाव संबंधी विवरण	203
50	7	50	पारिवारिक तनाव का परिवार के पोषण पर प्रभाव संबंधी विवरण	204
51	7	51	पारिवारिक तनाव का पारिवारिक संगठन पर प्रभाव संबंधी विवरण	206
52	7	52	पारिवारिक तनाव का प्राथमिक संबंधों पर प्रभाव संबंधी विवरण	207
53	7	53	पारिवारिक तनाव का सामाजिक प्रक्रियाओं पर प्रभाव संबंधी विवरण	213
54	7	54	पारिवारिक तनाव का सामाजिकता पर प्रभाव संबंधी विवरण	214
55	7	55	पारिवारिक तनाव का सामाजिक नियंत्रण पर प्रभाव संबंधी विवरण	216
56	7	56	पारिवारिक तनाव का उत्पादकता पर प्रभाव संबंधी विवरण	217
57	7	57	पारिवारिक तनाव का सामाजिक स्वास्थ्य पर प्रभाव संबंधी विवरण	218
58	8	57	अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में तनाव अधिक होने के वैयक्तिक कारक	232
59	8	58	अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में तनाव अधिक होने के सामाजिक कारक	233
60	8	59	अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में तनाव अधिक होने के आर्थिक कारक	234
61	8	60	अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में महिला सशक्तिकरण के कारण अधिक तनाव होते	235
62	8	61	शिक्षितों की तुलना में अशिक्षितों में कम तनाव होने के कारण	236
63	8	62	अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में तनाव अधिक के अन्य कारक	237
64	8	63	अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में तनाव अधिक के राजनैतिक कारक	238
65	8	64	अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में तनाव अधिक के सांस्कृतिक कारक	239
66	9	65	पारिवारिक तनाव कम करने के संचार संबंधी सुझावों का विवरण	241
67	9	66	पारिवारिक तनाव कम करने के स्वयं के प्रयास के सुझाव संबंधी विवरण	242
68	9	67	पारिवारिक तनाव कम करने के शीलों के पालन संबंधी सुझावों का विवरण	243

क्र0 सं0	अध्याय	तालिका नं0	तालिकाओं का शीर्षक सम्बन्धी विवरण	पृष्ठ संख्या
69	9	68	पारिवारिक तनाव कम करने के धार्मिक क्रियाकलाप संबंधी सुझावों का विवरण	244
70	9	69	पारिवारिक तनाव कम करने के सामाजिक क्रियाओं संबंधी सुझावों का विवरण	245
71	9	70	पारिवारिक तनाव कम करने के मनोवैज्ञानिक क्रियासंबंधी सुझावों का विवरण	246
72	9	71	पारिवारिक तनाव कम करने के सांस्कृतिक क्रियाओं संबंधी सुझावों का विवरण	247

अध्याय - 1

प्रस्तावना

- शोधाध्ययन की सामाजिक महत्ता
- शोध विषय की अवधारणा
- परिवार की अवधारणा
- परिवार का महत्त्व
- परिवार का आधार
- मध्यम वर्गीय परिवारों का वर्गीकरण
- मध्यम वर्गीय परिवारों का अन्य परिवारों से सम्बन्ध
- मध्यम वर्गीय परिवारों की विशेषताऐं
- मध्यम वर्गीय परिवारों में आधुनिक परिवर्तन
- मध्यम वर्गीय परिवारों में सामाजिक गतिशीलता
- मध्यम वर्गीय परिवारों में पश्चिमीकरण एवं आधुनिकीकरण
- मध्यम वर्गीय परिवारों में समाजीकरण
- मध्यम वर्गीय परिवारों में पारस्परिक सम्प्रेक्षण
- मध्यम वर्गीय परिवारों में मनोरंजन

अध्याय - 1

प्रस्तावना

"परिवार समाज का मेरूदंड है। जिसके सहारे समाज का ढांचा खड़ा होता है। प्राणी स्त्रीय प्राणी के रूप में परिवर्तन करने में जिन एकाधिक कारकों का हाथ रहता है, परिवार उनमें सर्वाधिक भूमिका अदा करता है। समाज के विकास के लिये जिस सहयोग, प्रेम, सामन्जस्य, सौहार्द की आवश्यकता होती है उसकी प्रथम पाठशाला परिवार है जो अपने सदस्यों में असीमित उत्तरदायित्व एवं कार्यविधि जैसे मानवीय गुणों का विकास निर्वाह करता है"।[1]

परिवार के महत्व को स्पष्ट करते हुये एण्डरसन ने कहा है कि एक कार्यात्मक इकाई के रूप में परिवार इतनी महत्वपूर्ण संस्था है कि समाज परिवार के माध्यम से ही अपने मान्यता प्राप्त लक्ष्यों को पाने का प्रयत्न करते है। परिवार के विभिन्न कार्यो के फलस्वरूप ही मानव वर्वता और असभ्यता की सीमाओं को लांघकर एक सभ्य प्राणी बन सका है। एक ऐसा प्राणी जिस पर संस्कृति है, ज्ञान है और अविष्कार करने की क्षमता है परिवार के कारण मनुष्य दूसरे से सहानुभूति रखता है, दूसरे के लिये त्याग करता है, सीखता है, और सामूहिक जीवन के महत्व को स्वीकार करता है। परिवार ही अपने सदस्यों का समाजीकरण करने वाली एक महत्वपूर्ण संस्था है। इसके अतिरिक्त अपने सदस्यों का धार्मिक पथ-प्रदर्शन करता है मनोरंजन करता है और विभिन्न विपत्तियों के विरूद्ध संरक्षण प्रदान करना भी परिवार का कार्य है। किन्सले डेविस ने कहा है कि "परिवार के सभी कार्य इतने स्वतंत्र प्रकृति के होते हैं। कि उन सभी कार्यो को अन्य संस्थाओं के द्वारा ही पूरा किया जा सकता है। लेकिन परिवार के

---

1. एण्डरसन एण्ड पाकर सोसाइटी 1961, पृष्ठ 162

अतिरिक्त ऐसी कोई संस्था नहीं है जिसके इन कार्यो को असीमित उत्तर दायित्व की भावना के साथ किया जाता है।''[1]

विज्ञान के वर्तमान युग में मनुष्य के आश्चर्य जनक वस्तुओं का आविष्कार किया है, इस तथ्य का शायद ही कोई अपवाद हो, कि परिवार का निर्माण आज भी मनुष्यों की सबसे बड़ी खोजों में से एक है लेकिन आज हम परिवारों में परम्परागत सहयोग, प्रेम तथा सौहार्द का अभाव देख रहे हैं। बदलते हुये मानवीय मूल्यों ने परिवार के वातावरण को भी अछूता नहीं छोड़ा है।

परिवार आधुनिक युग में सुख और शांति का स्थान न रहकर तनाव व अशान्ति के भंडार बन गये हैं। आधुनिक युग में परिवारों में पारिवारिक तनाव व संघर्ष अनेक कारणों से देखने को मिलते है। परिवार के सदस्यों में मानसिक वेमनस्य से ही तनाव का रेखांचित्र बनता है। छोटी-छोटी बातों पर विचारों में विरोध उत्पन्न हो जाता है और वह चाहे किसी भी कारण से रहा हो एक लम्बे समय के बाद हृदय में जड़ पकड़ लेता है। सदस्य एक दूसरे के प्रति अनिक्षा प्रकट करने लगते है। और आगे चलकर यह स्थिति गम्भीर हो जाती है। तनाव कभी हृदय में राख में छिपी चिन्गारी के समान बहुत समय तक सुलगते रहते है तथा कभी-कभी कोई विशेष घटना रूपी वायु चल जाने से यह तनाव की चिन्गारी झगड़े के रूप में परिवर्तित हो जाती है। और परिवार में कलह, पति-पत्नी के बीच मारपीट आत्महत्या घर छोड़ने, वैवाहिक विच्छेद आदि की नौबत आ जाती है।

तनाव में मानसिक क्रिया ही होती है, जबकि झगड़े में शारीरिक क्रिया भी सम्मिलित होती है। इस प्रकार के तनाव व झगड़े घर-घर में देखे जाते है। वह परिवार जो कभी स्वर्ग कहे जाते थे, आज कलह के कारण नर्क बन चुके हैं। परिवार का वातावरण दूषित हो गया है। उठती हुई पीढ़ी इस दूषित वायु में डूब रही है। उनमें वह ही दोष पूर्ण इच्छाऐं एवं स्वार्थ पनप रहे हैं। इस स्थिति की गहराई में

---

1. किंग्सले डेविस "1959" ह्यूमन सोसाइटी मैकामिलिन एण्ड को, न्यूयार्क पृष्ठ 305

जाने से विदित होता है। कि भारत भी पाश्चात्य परिवारों की भाँति स्वार्थी मध्यम वर्गीय परिवारों वाला देश हो जायेगा। एक दूसरे के लिये किया हुआ त्याग कहानी और कविता की वस्तुओं की भाँति रह जायेगी।

शोधार्थी एक समाजशास्त्र का विद्यार्थी होने के नाते यह उसका कर्तव्य हे कि मध्यम वर्गीय परिवारों के इस बदलते हुये रूप को समाज के समक्ष उपस्थिति करे तथा उसके विभिन्न रूपों, कारणों एवं परिवारों से अवगत कराते हुये यह मांग करे कि यदि मध्यम वर्गीय परिवारों की इस स्थिति को दूर नहीं किया गया तो इसके भयंकर परिणाम होगें।

आज के समाज के भौतिक वादी मूल्यों ने हमें सैद्धान्तिक ज्ञान और आलोचना की शान्ति अवश्य दी है। सामाजिक जीवन के स्थायित्व के लिये जिस प्रेम, त्याग, सहयोग, सहिष्णुता और कर्तव्य पालन जैसे गुणों की आश्यकता होती है, उन्हें विकसित करने का श्रेय केवल मध्यम वर्गीय परिवारों को ही है किन्तु क्या वास्तव में व्यवहारिक रूप में मध्यम वर्गीय परिवार इस गौरवपूर्ण भूमिका का निर्वाह करने में समर्थ हो रहा है? शायद नहीं जिस स्थिति से मध्यम वर्गीय परिवार गुजर रहे है' क्या यह कठिनाई पूर्ण है?

इस सबको दृष्टि में रखते हुए शोधार्थी ने मध्यम वर्गीय परिवारों में पारिवारिक तनाव तथा विघटन का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया है। शोध के उद्देश्यों की पूर्ति करते हुए प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने की चेष्टा की है, कि मध्यम वर्गीय परिवारों के तनाव व विघटन से सम्बन्धित झगड़ों का क्या कारण है तथा वे कौन सी परिस्थितियाँ हो सकती है जो पारिवारिक तनावों और झगड़ों को समाप्त कर एक सुखद वातावरण को पैदा कर सकें। चुंकि सुख शांति से युक्त परिवार ही व्यक्ति के अन्दर उच्च मानवीय गुणों को विकसित कर सकतें हैं। जिनकी एक आदर्श समाज के लिये मूल आवश्यकता है।

शोधाध्ययन की सामाजिक महत्ता

किसी भी समाज में मध्यम वर्गीय परिवारों पर गर्व ही नही किया जा सकता अपितु वे बहुमूल्य सामाजिक संरचना की सम्पत्ति होते हैं । वे एक ओर मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुभवों के उत्पादक होते हैं तो दूसरी ओर वे समाज तथा राष्ट्र की प्रगति में अपने सघन अनुभवों को योगदान करते हैं । अपने से निम्न एवं उच्च वर्गीय परिवारों की तुलना में वे देश की धड़कन को बेहतर ढंग से समझते हैं और उनके सटीक प्रत्यक्षीकरण तथा निर्णय समस्याओं के समाधान में लेते हैं ।

इस शोध विषय की अनेक सामाजिक महत्ताऐं हैं जो निम्नलिखित है :-

1. प्रथम तो यह कि इस शोध अध्ययन की विषय सामग्री जन मानस में मध्यम वर्गीय परिवारों में पाये जाने वाले तनाव व विघटन की समस्याओं के प्रति जागरूकता उत्पन्न करती है।
2. द्वितीय, यह शोध मध्यम वर्गीय परिवारों की सामाजिक आर्थिक तथा जननांकीय चित्र उपस्थित करता है जिसके आधार पर सहज ही उनके वारे में जानकारी हो जाती है।
3. तृतीय, इस अनुसंधान की यह सामाजिक महत्ता है कि मध्यम वर्गीय परिवारों के एक ओर पारिवारिक तनाव, उनके स्वभाव तथा प्रकार पर प्रकाश पड़ता है तो दूसरी ओर उनके उत्तरदायी कारको की समाज वैज्ञानिकों को जानकारी हो जाती है।
4. इस दृष्टि से भी यह शोध अध्ययन महत्वपूर्ण है क्योंकि पारिवारिक तनाव का व्यक्ति, परिवार तथा समाज जीवन पर क्या तथा कैसा प्रभाव पड़ता है, उसकी भी सहज जानकारी प्रदान कराता है।

5. इस शोध अध्ययन की यह भी उपयोगिता है कि इसमें पारिवारिक विघटन के कारणों तथा प्रभाव का भी अध्ययन किया गया है। जो पारिवारिक तनाव की सहज प्रक्रियात्मक अगला चरण है।

6. सबसे महत्वपूर्ण बात इस शोध की सामाजिक पृष्ठभूमि यह है कि इसमें मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव व विघटन की दर को कम करने हेतु मध्यम वर्गीय परिवारजनों द्वारा सुझाव का विवरण भी प्रस्तुत किया गया है।

7. वर्तमान में शोध की प्रसंगागिकता को निम्न रूपों में भी समझा जा सकता है। यद्यपि मध्यम वर्गीय परिवारों के सम्बन्ध में अनेक अध्ययन किऐ जा चुके है। परन्तु रस अध्ययन में अपनी नवीनता है क्योंकि बुन्देलखण्ड की भूमि में यह अध्ययन प्रथम बार किया गया है । अतः इसके निष्कर्ष प्रायः प्राथमिक है। इसके अलावा :-

अ. इस शोध के निष्कर्षों के आधार पर समाजशास्त्री भविष्य में नवीन उपकल्पनाओं का निर्माण कर अनुसंधान की प्रक्रिया को निरन्तर रखने में सक्षम होगें।

ब. इस अध्ययन से प्राप्त बहुमूल्य तथ्यों का प्रयोग मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव कलह तथा विघटन की दर को कम करने के लिए कार्यक्रमों का नियोजन, संगठन तथा क्रियान्वयन सम्भव होगा।

स. इस अन्वेषण के तत्वों को समाज कार्यकर्ता पारिवारिक संघर्ष को समाधान करने हेतु परामर्श प्रदान कर सकेगें।

द. इस शोध अध्ययन में सुझायें गये तनावों व पारिवारिक कलह सम्बन्धी पारिवारिक न्यायालय में पंजीकृत मुकद्मों के सुलझानें में न्यायाधिकारियों को सटीक पति-पत्नि के मध्य सुलह समझौते कराने में वे सुयोग्य होगें।

शोध विषय की अवधारणा

"मध्यम वर्गीय परिवारों में पारिवारिक तनाव तथा विघटन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन" इस शोध अध्ययन का शीर्षक है। जिसकी यहाँ व्याख्या करना शोधार्थी आवश्यक समझता है ताकि पाठक शीर्षक में आई अवधारणाओं का वही अर्थ निरूपित करें जिन्हें मानस में रखकर शोध समस्याओं का चयन किया गया था। ऐसा करने से निबन्ध सरलता से बुद्धि परख हो जाता है। साथ ही पाठकों को उसके पठन-पाठन में, आशय निकालने में और सहसम्बन्ध स्थापित करने में अधिकाधिक सरलता होती है और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विरोधाभास नहीं होता। क्योंकि शोध रिपोर्ट तैयार करने का प्रधान उद्देश्य "अध्ययन के सम्पूर्ण परिणामों को इस प्रकार व्यवस्थित करना कि प्रत्येक पाठक तथ्यों को समझने और निष्कर्षो की वैधता स्वयं निर्धारित करने में समर्थ हो सकें।

मध्यम वर्गीय परिवार का इस शोध अध्ययन में अर्थ उस वर्ग से है जो सम्पूर्ण समाज में सामाजिक, आर्थिक,मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक रूप से उच्चवर्ग के मध्य अपना जीवन व्यतीत करता है।

परिवार ,स्त्री पुरूष का वह युगल जो विवाह उपरान्त किसी आवासीय पर्यावरण में यौन सम्बन्ध स्थापित करता है, बच्चों को जन्म देते है, पालन-पोषण तथा समाजीकरण करते हैं। उनकी एक जन्म जाति या प्राप्त समाज की व्यवस्था में प्रस्थिति होती है। जो कि उनके जीविका उपार्जन और उसके द्वारा लाभ प्राप्ति पर निर्भर करती है।

तनाव का इस शोध विषय में अभिप्राय है कि पति-पत्नी, पिता-पुत्र, माता-पुत्र तथा माता-पिता व बच्चों के बीच किन्हीं भी समस्याओं को लेकर मानस पटल में अनबन, खिचाव, कहासुनी, कलह, झगड़े तथा मारपीट व विवाह विच्छेद की समस्याऐं।

पारिवारिक विघटन का अभिप्राय एक ऐसी स्थिति से है जिसमें परिवार की क्रियाशीलता में विषमता और असन्तुलन उत्पन्न हो जायें। वास्तव में परिवार एक मौलिक सामाजिक संस्था है यह अनेक वर्षों से चली आ रही है । यद्यपि इसमें रूढ़िवादी और परिवर्तन दोनों की प्रवृति पाई जाती है। फिर भी यह सामाजिक परिवर्तन के प्रभाव से मुक्त नहीं है। पारिवारिक विघटन के अर्न्तगत उन तत्वों को लिया जाता है। जो पति-पत्नी, माता-पिता, उनकी सन्तान तथा परिवार के सदस्यों की मनोवृत्तियां और सामाजिक मूल्यों पर निर्भर करता है । परिवार संगठन के निमित्त कुछ मानसिक परिस्थितियां अनिवार्य होती हैं। जब इन परिस्थितियों का अभाव होता है अथवा दूसरे वाह्य या आन्तरिक कारण उत्पन्न हो जाते है जिनसे परिवार में एकमत्य का ह्रास हो जाता है और उनके सम्बन्ध तनावपूर्ण हो जाते हैं तब पारिवारिक विघटन की स्थिति आती है। इस प्रकार संक्षिप्त में मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव एवं विघटन विषय का अर्थ है कि-

मध्यम वर्गीय परिवार व्यक्तियों के वे समूह है जिनके स्वयं के तीन अथवा चार प्रकोष्ठों के पक्के आवास हैं । दो या चार पहिया वाहन रखतें हैं । वे टेलीफोन/मोबाइल आदि संचार के साधनों का नित-प्रति के जीवन में प्रयोग करते हैं, जिनके पास रंगीन टी. वी. से अलग बी.सी.पी., बी.सी.आर मनोंरंजन के साधन हैं, दैनिक समाचार पत्र, पत्र-पत्रिकायें इनकी सूचना के श्रोत है। जो सरकारी या गैर सरकारी संस्थानों में या व्यापार के आजीविका के साधनों द्वारा माह में रू20,000 से 35,000 कमा लेते हैं, तथा शत-प्रतिशत रूप से आयकर देते हैं, के घरों में अशांति, बात-बात पर कहा-सुनी, पति-पत्नी के बीच एकमत्य का अभाव पाया जाता है।

परिवार की अवधारणा

लुण्डवर्ग, जी.ए.(1968: 291) का कथन है कि "सामाजिक व्यवस्था में यदि पुनरोत्पादन का कार्य रूक जाये, यदि बच्चों का पालन-पोषण न किया

जाये और उन्हे अपने विचारों का आगामी पीढ़ी के संचरित न करना तथा एक दूसरे से सहयोग करना न सिखाया जाये। तब सम्भवतः समाज का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा''।[1] समाज के अस्तित्व की रक्षा करने वाले इन सभी कार्यो को पूरा करने का दायित्व परिवार का है और इसी आधार पर सभी विद्वान परिवार को सभी सामाजिक संस्थानों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानतें हैं।

एण्डरसन का कथन है ''परिवार का एक रूप वह है जिसमें हम जन्म लेते हैं, और दूसरा वह जिसमें हम बच्चों को जन्म देते हैं। परिवार की सार भौमिकता इसी तथ्य से स्पष्ट हो जाती है कि हम में से ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो परिवार के इन दोनों रूपों में किसी का भी सदस्य न हो''।[2] विज्ञान के वर्तमान युग में मनुष्य ने आश्चर्य जनक वस्तुओं का आविष्कार किया है, अतीत काल में मानव ने मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के लिये अमृत तक की खोज कर ली, लेकिन इस तथ्य का शायद ही कोई अपवाद हो कि परिवार का निर्माण आज ही मनुष्य की सबसे महत्वपूर्ण खोज में से एक है।

एक सामाजिक तथ्य के रूप में परिवार एक समिति भी है और एक संस्था भी। यदि परिवार को कुछ विशेष उद्देश्यों की पूर्ति के लिये संगठित होने वाले व्यक्तियों का समूह माना जाये तब यह एक समिति है। इसके विपरीत यदि परिवार को कुछ नियमों और कार्य विधियों की व्यवस्था के रूप में देखा जाये तब यह संस्था होगी। एक संस्था के रूप में हमें परिवार का रूप अधिक महत्वपूर्ण है क्योकि समाज की निरन्तरता को बनाये रखने का ही यह एक प्रमुख माध्यम नहीं है बल्कि व्यक्ति की मौलिक आवश्यकताओं जैसे भोजन आवास और यौन संतुष्टि की संस्थागत पूर्ति भी परिवार के द्वारा ही होती है। यही कारण है कि परिवार में होने वाले परिवर्तन समाज की सम्पूर्ण रचना को प्रभावित करते हैं।

1. लुण्ड वर्ग, जी. ए. 1968 समाजशास्त्र, पृष्ठ- 291
2. एण्डरसन, पारक 1961- सोसाइटीज ओरगेनाइजेशन एण्ड ओपरेशन पृष्ठ- 160

शाब्दिक रूप से परिवार अथवा अंग्रेजी का शब्द फैमिली लैटिन शब्द डिनसने से बना है, जिसका अर्थ है 'सेवक'। इससे स्पष्ट होता है। कि परिवार का तात्पर्य किसी एक भी ऐसे समूह से है जिसके सदस्य सेवाभाव से एक दूसरे के साथ रहते हैं। संस्था के रूप में सभी समाजों में परिवार का रूप लगभग एक समान ही है, लेकिन परिवार के आकार और संगठन के दृष्टिकोण से भिन्न-भिन्न समाजों में इसका रूप भी एक दूसरे से कुछ भिन्न पाया जाता है। यही कारण है कि परिवार को परिभाषित करने में विभिन्न विद्वानों के विचारों में भी भिन्नता दिखाई देती है।

मैकाइवर और पेज ने परिवार की एक संक्षिप्त परिभाषा देते हुये कहा है कि "परिवार ऐसा समूह है और जो यौन सम्बन्धों पर आश्रित है तथा इतना छोटा और शक्तिशाली है कि सन्तान के जन्म और पालन-पोषण की व्यवस्था करने की क्षमता रखता है"।[1]

बर्जेस और लॉक के अनुसार "परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है, जो एक विवाह रक्त अथवा गोद लेने के सम्बन्धों द्वारा संगठित है, एक छोटी सी गृहस्थी का निर्माण करते है, और पति-पत्नी, माता-पिता, पुत्र-पुत्री, भाई-बहन के रूप में एक दूसरे से अन्तः क्रियाऐं करते तथा एक सामान्य संस्कृति का निर्माण तथा देख-रेख करते है"।[2] वास्तविकता यह है कि परिवार पति-पत्नी, बच्चों के निकट सम्बन्धियों का अपेक्षाकृत एक स्थाई संगठन है, जिसे विवाह, सन्तानोत्पत्ति और वंशनाम के आधार पर व्यवस्थित रखा जाता है। संक्षेप में "परिवार एक सारभौमिक भावनात्मक आधारी संस्था है जिसका रचनात्मक प्रभाव पड़ता है। जो सामाजिक ढाँचे में केन्द्रिय स्थिति रखता है, जिसमे सदस्यों

1. मैकाइवर एण्ड पेज 1953 सोसाइटी, मैकमिलन एण्ड को. लिमिटेड लन्दन पृष्ठ 288
2. तदैव पृष्ठ 289

का असीमित उत्तरदायित्व होता है, सामाजिक नियमन पाया जाता है तथा परिवार का स्थाई व अस्थाई स्वभाव पाया जाता है"।[1]

परिवार का महत्त्व

"आगवर्न परिवार को इसलिये महत्तपूर्ण मानता है क्योंकि वह परिवारजनों के मध्य स्नेह करना तथा पारस्परिक प्रेम सिखाता है"।[2] ग्रोब्स के अनुसार "अत्यधिक आत्मीय सम्बन्धों के अवसर पद्रान करना परिवार का आवश्यक काम है। तथा परिवार मनुष्य में मूल प्रवृत्तियों और भावनाओं को स्पष्ट करता है"।

परिवार के महत्व पर प्रकाश डालते हुए वर्गिस एण्ड लॉक ने लिखा है कि "परस्पर स्नेह विवाह और परिवार का आवश्यक आधार बनता जा रहा है"[3]। परिवार से व्यक्ति को स्नेह वात्सल्य, सहानुभूति, प्रेम तथा मनोवैज्ञानिक सुरक्षा मिलती है। परिवार में स्त्री-पुरूष का सम्बन्ध केवल शारीरिक नहीं परिवार के साथ-साथ काम करने से एक और दूसरे के सुख-दुःख में हाथ बटाने से, पति-पत्नी में अत्यन्त प्रगाढ़ दाम्पत्य प्रीति उत्पन्न होती है। पारिवारिक प्रेम स्नेह के अभाव में व्यक्ति का समुचित विकास हो सकता है खास तौर पर बच्चों के व्यक्तितत्व विकास में परिवार का बड़ा हाथ रहता है।

राल्फ लिन्टन ने लिखा है कि "शिशु के समुचित विकास के लिये शारीरिक आवश्यकता का सन्तुष्ट होना ही काफी नहीं है। बच्चों के वैज्ञानिक ध्यान, प्रेम की अनुकिया के सन्तोष की अधिकता की आवश्यकता है। बच्चों का परिवार में वात्सल्य और प्रेम मिलता है जो कि उनके व्यक्तितत्व के मनोवैज्ञानिक विकास के लिये अत्यन्त आवश्यक है। परिवार में असहाय, वृद्ध अथवा बेकार सदस्यों को भी सुरक्षा महसूस होती है, क्योंकि परिवार सब प्रकार की विपत्तियों में उनका साथ

---

1. वरगिल एण्ड लॉक 1943. "दी फेमिली" पृष्ठ 8
2. आगवर्न एण्ड निमकौफ 1960. हेण्ड बुक आफ सोशियालॉजी, रोलेज एण्ड केगन को. लन्दन पृष्ठ 208
3. वरगिस एण्ड लॉक 1943. "दी फेमिली" पृष्ठ 9

देता है। इस प्रकार परिवार के सभी सदस्यों को परिवार में सुख, शान्ति और सुरक्षा का अनुभव होता है''।[1]

राबर्ट फास्ट के शब्दों में ''घर वह स्थान है जहाँ जब भी आप आना चाहे वे आपको आने देगें''।[2] आज भी यौन आवश्यकता की पूर्ति के लिये परिवार एक मात्र संस्था है। रीड के अनुसार यौन आवश्यकताओं को नियमित करना और सन्तुष्ट करना परिवार का मौलिक कार्य है''।[3] मनु ने सन्तनोत्पत्ति के साथ-साथ रीति कस भी परिवार का उद्देश्य माना है। वात्सलायन ने गृहस्थ आश्रम का सर्वोपरि लक्ष्य ''काम'' ही माना है। हेवलोक, एलिस ने लिखा है कि ''यौन सम्बन्धी सामंजस्य भंग हो जाने पर परिवार का ढाँचा ढहती हुई बालू के ढेर पर बना होता है''[4]

1. आकर के दृष्टिकोण से एकांकी अथवा केन्द्रक परिवार सबसे छोटी इकाई है। इसके सदस्य केवल पति-पत्नी तथा उनके अविवाहित बच्चे ही होते है।

हेविस ने एकांकी परिवार की परिभाषा करते हुये कहा है कि ''एकाकी परिवार उन व्यक्तियों का छोटा समूह है जो जैवककीय भूमिका निभाने के अतिरिक्त एक दूसरे के साथ ही संस्थागत सामाजिक दायित्वों का पालन करते हैं तथा ऐसा करने के साथ ही उन विश्वासों और मूल्यों का पालन करते हैं। जिनकी उनसे परिवार के अंतर्गत पूरा करने की आशा की जाती है''।[5] इन परिवारों को तात्कालिक तथा प्राथमिक परिवार भी कहा जाता है। ये परिवार तात्कालिक इसलिये है कि इसके सदस्य केवल वही व्यक्ति हो सके है जिन्होंने इसमें जन्म लिया हो अथवा जो दम्पत्ति द्वारा गोद लिये हो। भारत में अभी तक एकांकी परिवारों की संस्था बहुत कम थी क्योंकि परम्परा के द्वारा संयुक्त परिवार ही अच्छा समझा

---

1. राल्फ लिन्टन 1952. द कल्चररल बैकग्रउन्ड आफ परसनलटी पृष्ठ 143
2. राबर्ट फास्ट
3. रीड
4. हेवलोक, एलिस 198. मैन इन प्रीमिटिव बल्ड
5. हेरिस, सी. सी. 1942: दी फेमिली पृष्ठ 70

जाता था। आज औद्योगीकरण तथा नगरीकरण के फलस्वरूप एकांकी परिवारों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है।

2. विवाह सम्बन्धी परिवार एकांकी परिवार की अपेक्षा कुछ बड़े होते हैं। इसके सदस्य केवल वही व्यक्ति नहीं होते जिन्होंने इसमें जन्म लिया हो बल्कि इसमें पत्नी के पक्ष में कुछ दूसरे व्यक्तियों को शामिल कर लिया जाता है। साधारण तथा ऐसे परिवार केवल उन्हीं समूहों में पाये जाते हैं। जो विवाह को दो व्यक्तियों का सम्बन्धन मानकर दो परिवारों का सम्बन्ध मानते हैं। ऐसे परिवारों को "मिश्रित परिवार" भी कहा जाता है। क्योंकि इनमें एकांकी तथा संयुक्त परिवारों की विशेषतायें मिली-जुली होती हैं। भारत की बहुत सी जनजातियों में विवाह सम्बन्धी परिवारों का प्रचजन है। इनमें खरिया जनजाति प्रमुख है। इसके अलावा अभी और गौड़ लोगों में ऐसे परिवार पाये जाते थे। लेकिन व्यक्तिवादिता में वृद्धि होने से इनकी संख्या कम होती जा रही है।

3. संयुक्त परिवार भारतीय समाज की एक प्रमुख विशेषता है लगभग इन्हीं के मिलते-जुलते परिवारों का संसार के दूसरे 10 भागों में विस्तृत परिवार Extended family कहा जाता है। संयुक्त परिवार की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए डा. दुबे का कथन है कि यदि अनेक एकांकी परिवार एक साथ रहते हो उनमें निकटता का सम्बन्ध हो वे एक ही सीन पर भोजन करते हो तथा एक ही आर्थिक इकाई के रूप में कार्य करते हो तब ऐसे सम्मिलित परिवार को संयुक्त निवास, संयुक्त रसोई, सदस्यों के बीच निश्चित संस्तरण तथा स्वामित्व संयुक्त परिवार के प्रमुख लक्षण है। परम्परागत रूप से भारत में सभी हिन्दू परिवार संयुक्त परिवार ही रहे हैं। इसका कारण यही है कि भारत में सामूहिकता को सदैव ही सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण आधार माना जाता रहा है।

आज औद्योगिक तथा नगरीकरण के कारण भारत में संयुक्त परिवारों की संख्या में तेजी से कमी होती जा रही है लेकिन फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों में संयुक्त

परिवारों का प्रभाव कम नहीं हुआ है। संयुक्त तथा एकांकी परिवारों की प्रकृति को समुचित रूप से समझने के लिये आवश्यक है कि परिवार के संगठन आकार, सदस्यों के पारस्परिक सम्बन्धों तथा परिवार के उद्देश्यों के आधर पर इनकी भिन्नता को संक्षेप में स्पष्ट किया जाये।

परिवार का आधार परिवार की सत्ता स्त्री के हाथ में होगी या पति के हाथ में तथा वंश का नाम पति के पक्ष से सम्बन्धित रहेगा अथवा पत्नी पक्ष में से, यह समस्या भी परिवारों के वर्गीकरण का एक प्रमुख आधार है। इस आधार पर परिवार के दो प्रकारों का उल्लेख किया जा सकता है।

1. मातृ सत्तात्मक परिवार : जिस परिवार में सामाजिक आर्थिक तथा धार्मिक दायित्वों के क्षेत्र पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों की प्रधानता होती है, उसे मातृसत्तात्मक परिवार कहा जाता है। ऐसे परिवार में कोई स्त्री ही परिवार की कर्ता होती है तथा उसी के द्वारा दूसरे सदस्यों के अधिकारों व कर्तव्यों का निर्धारिण किया जाता है। परिवार की सत्ता प्रमुख रूप से किसी स्त्री के हाथ में होने के कारण ही ऐसे परिवारों को मातृसत्ता कहा जाता है। यह परिवार साधारणतयः मातृ वंशी भी होते हैं। इसका तात्पर्य है कि ऐसे परिवारों में वंश परम्परा किसी स्त्री सदस्य के नाम अथवा पत्नी पक्ष के किसी पुरूष के नाम पर चलती है। मातृसत्तात्मक परिवार का यह अर्थ बिल्कुल नही है कि ऐसे परिवारों में पुरूषों को कोई अधिकार नहीं मिलता। वास्तव में पुरूषों को भी यह पर्याप्त अधिकार तथा पारिवारिक सम्मान प्राप्त होता है। इसलिये डा. दुबे ने कहा है कि "मातृसत्तात्मक परिवारों में पुरूष केवल स्त्रियों की ओर सत्ता का उपयोग करता है"।[1] इनमें नायर, खॉसी तथा असम पूर्वी भागों में रहने वाली कुछ जातियॉ प्रमुख है हिन्दू तथा ईसाई समूहों में इस प्रकार के परिवारों का प्रचलन कुछ कम रहा है। व्यवहारिक रूप से नैनीताल की थारू जनजाति के आज भी ऐसे परिवार के लक्षण काफी सीमा तक विद्यमान हैं।

---

1. दुबे, एस. सी. 1969: भारत के बदलते गांव, भारतीय गांव पृष्ठ 99

2. <u>पितृ सत्तात्मक परिवार :</u> पितृ सत्तात्मक परिवार पुरूष प्रधान होते हैं। इनमें परिवार की सत्ता किसी पुरूष सदस्य में निहीत होती है जिसे परिवार का कर्ता कहा जाता है। ऐसे परिवारों पुरूष कर्ता ही सदस्यों के अधिकारों तथा कर्तव्यों का निर्धारिण करता है। तथा उसी को परिवार की सम्पत्ति के उपयोग वितरण पर अधिकार होता है। यहाँ वंश परम्परा भी पुरूष के नाम तथा पिता के पक्ष से सम्बन्धित रहती है, इसलिये ऐसे परिवार पितृ सत्तात्मक परिवारों की संख्या भारत में ही नहीं अपितु संसार के सभी भागों में सबसे अधिक है। भारत की अधिकांश जन जातियाँ भी धीरे-धीरे पितृ सत्तात्मक होती जा रही हैं।

<u>सम्पत्ति का आधार</u> मार्क्सवाद की विचार धारा के प्रचार तथा प्रसार के कारण समाज में पाये जाने वाले समूह का अध्ययन वर्गो के रूप में होने लगा है। उपरोक्त विचार धारा के अनुसार परिवारों का साज आर्थशात्रियों ने तीन भागों में विभाजित किया है। जिनकी व्याख्या निम्न प्रकार से है।

1. <u>निम्नवर्गीय परिवार :</u> ये वे परिवार हैं जो गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे है। इनका मुख्य पेशा मजदूरी या खेतिहार मजदूर होता है। इनकी मासिक आमदनी लगभग रू0 2,000 से रू0 6,000 तक होती है। इनके अधिक बच्चे होते हैं। ऋण ग्रस्ता जिन्हें विरासत में प्राप्त होती है। इनके आवास कच्चे-पक्के अर्थात मिश्रित होते हैं। खुले में शौच, जन हैण्डपम्पों से जिनकी जलापूर्ति होती है। एक कमरा तथा वरामदा या दो कमरे के आवास में इनके सदस्य रहते हैं। मद्यपान धूम्रपान इनके सदस्य प्रायः करते हैं इनके घर, नगरों में मलिन बस्ती कहलाते है। शिक्षा का अभाव बेरोजगारी तथा कुपोषण उनकी खास समस्यायें होती हैं। परम्परायें व रूढ़िवादिता इनमें पाई जाती है अंधविश्वास तथा भाग्यवादी इनका दृष्टिकोण होता है इनके पास स्वयं के अच्छे मनोरंजन के साधन व सूचना श्रोत नहीं होते। इनके पर्यावरण की स्वच्छता इकचत नहीं होती तथा इनके सदस्यों में

व्यक्तिगत स्वच्छता का अभाव पाया जाता है यही कारण है कि रोग दर अधिक पाई जाती है।

2. उच्चवर्गीय परिवार : ये परिवार सामान्यतः किसी समाज के उच्च शिखर पर होते है। इनका व्यवसाय प्रायः व्यापार कारखाने दार, ऐजेन्सी डीलर अथवा केन्द्रीय सेवा के अधिकारी होते हैं। इनकी संचार व्यवस्था उच्च कोटि की होती है। इनको आवास से पहले पार्क स्वींमिंग पूल, तीन चार गाड़ियां। इनके सदस्य वायुयान या रेल के वातावरण प्रथम श्रेणो में यात्राऐं करते हैं विदेशी यात्राऐं इनके लिये सामान्य सा आना जाना होता है। वर्तमान सरकारों के साथ इनका सम्बन्ध प्रत्यक्ष रहता है। ये राजनैतिक दलों को निर्वाचन के समय भरपूर वित्तीय सहायता प्रदान कर व्यापारों में अधिक लाभ उठातें हैं। ये धनबल से संसद के सदस्य भी बन जाते हैं इनकी सामाजिक प्रस्थिति इग्लैण्ड House of lord के जैसी होती है। नगरों की सामाजिक चिन्तन को वे प्रायः प्रभावित रखते है। निम्नवर्गीय एवं मध्यमवर्गीय परिवार इनके किसी भी कार्यक्रम में सहज ही जुड़ जाते हैं। इनके ऊपर सामाजिक नियन्त्रण नहीं काम करता अपितु ये परिवार अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक नियन्त्रण रखते हैं। कानून के रक्षक इनके स्वार्थो की चौकीदारी, तीमारदारी तथा रक्षा कवच होते हैं। इनकी सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक तीनों प्रकार से समाज में उच्च सामाजिक प्रस्थिति होती है।, ये ग्रामीण ऑचलों में बहुत कम जमींदारों तथा साहूकारों के रूप में तथा नगर क्षेत्र में पूँजीपतियों के रूप में जीवन व्यतीत करते है। धार्मिक कार्यक्रमों को यह परिवार अधिक महत्व प्रदान करते हैं क्योंकि इनके कारखानों द्वारा उत्पादित सामान बाजारों में बिकता है। इन्हें समाज में नेता, अभिनेता तथा पूँजीपति के रूप में पहचान प्राप्त होती है। आज ये निर्वाचनों में जनता को प्रभावित करने के हेतु बड़े-बड़े कार्य करने के आश्वासन देकर तथा धन का अपव्यय करके निम्न व मध्यवर्गीय परिवारों का मत प्राप्त कर इनके स्वार्थो की पूर्ति करने वाले राजनैतिक दलों को विजय श्री दिलाते हैं।

3. <u>मध्यमवर्गीय परिवार :</u> आधुनिक समाज में सामाजिक जीवन विशुद्ध रूप से व्यापार, वाणिज्य, परिवहन संचार, प्रबन्ध विज्ञान, प्रोद्योगिकी के विकास द्वारा विश्लेषित किया जाता है। उद्यमी प्रायः व्यापार, उत्पादन, वितरण, शिक्षा, राज्य प्रबन्धन तथा अन्य क्षेत्र दूसरे कार्मिकों द्वारा प्रशासित एवं अनुरक्षित किये जाते हैं। नगर क्षेत्र अधिकांशतः श्वेतवस्त्रधारी कार्मिकों पर्यवेक्षकों, शिक्षावीरों, अभियनताओं, अधिशासियों, प्रबन्धकों, वैज्ञानिकों, चिकित्सकों, वकीलों तथा अन्य व्यवसायिकों, विक्रेताओं आदि से ये व्यावसायिक समूह ही मध्यम वर्गीय परिवारजन होते हैं। इस प्रकार मध्यम वर्गीय परिवार उच्च एवं निम्न वर्गीय परिवारों के मध्य आय उपभोग सत्ता तथा प्रतिष्ठा के आधार पर समझे जा सकते हैं।

वोटोमोर टी. बी. ने अपनी पुस्तक समाजशास्त्र में समाज को चार प्रकार के परिवार बतायें हैं। उनमें "मध्यम वर्गीय परिवार के सदस्य श्वेतवस्त्रधारी तथा व्यवसायिक जन होते हैं"।[1]

जी. डी. एच. कोल के अनुसार "मध्यम वर्गीय परिवार 'आय' के वर्गीय संरचना के तथ्य होते हैं"।[2]

गोल्डनर ए.डब्ल्यू एण्ड जिटलिन 1979, "मध्यम वर्गीय परिवार को प्रगतिवान औद्योगिक समाज का एक नवीन परिवार मानते हैं। इसके अधिकांश सदस्य तकनीकी ज्ञाता तथा क्रांतिकारी रूप में सेवा कार्य करते है। विशेषकर उत्पादन के सन्दर्भ में"।[3]

<u>मध्यम वर्गीय परिवार के पहुँच क्षेत्र :</u>

समाजशास्त्र के साहित्य में मध्यम वर्गीय परिवार के अध्ययन के दो मुख्य पहुँच मार्गो का उल्लेख मिलता है। प्रथम पहुँच, श्रेणी पहुँच कहते है। इस दृष्टि से मध्यम वर्गीय परिवार उच्च एवं निम्न परिवारों के मध्य विद्यमान होते हैं क्योंकि

---

1. वोटामो, टी. वी. समाजशास्त्र हिन्दी एडीसन, पृष्ठ 193
2. जी. डी. एच. कोल द्वारा उद्यृत ESO- 04 social stratification I. G. Now school of social scinces, 2001 mach
3. शोल्डर ए. डब्ल्यू, एण्ड जिटालिन 1979: द फ्यूचरर आफ इनटुलेक्चुयलस एण्ड राइज आफ नयू क्लास लन्दन मैकमिलन

तुलनात्मक इनकी आय, प्रतिष्ठा, प्रस्थिति एवं सत्ता उच्च परिवारों से कम तथा निम्न परिवारों से अधिक होती है। यहाँ वर्गीय संरचना सोपान की भांति पाई जाती है जोकि सामाजिक, आर्थिक स्थिति पर आधारित होती है। जो अधोतलीय होते हैं। वे निम्न वर्गीय परिवारों की श्रेणी में आते हैं उन्हें इन दोनों के मध्य मध्यम वर्गीय परिवार होते हैं तथा ये वर्ग संघर्ष में भाग नहीं लेते।

मध्यम वर्गीय परिवारों की व्याख्या की दूसरी पहुँच द्वन्दात्मक स्वरूप की है। इस पहुँच के अनुसार वर्तमान औद्योगिक समाज में दो वर्गीय परिवार सामाजिक संरचना में पाये जाते हैं प्रथम उच्च वर्गीय परिवार जिनके अपने कारखाने अतिरिक्त मूल्यउपार्जन के साधन तथा दूसरा श्रमिकों का, निम्न मध्यम वर्गीय परिवार जो कारखानों में कार्य कर अतिरिक्त आय का उत्पादन करता है। इन दो वर्गीय परिवारों के मध्य कई व्यवसायिक समूह अस्तित्व में आतें हैं, उदाहरण के लिये लघु उत्पादक, व्यापारी, दुकानदार, पर्यवेक्षक, विक्रेता, प्रबन्धक, तकनीशियन, चिकित्सक, अभियन्ता, अध्यापक, वैज्ञानिक तथा सरकारी कर्मी का यही व्यवसायिक समूह मध्यम वर्गीय परिवार कहा जाता है।

वर्तमान समाज का संगठन प्रमुख रूप से विभिन्न वर्गीय परिवारों द्वारा निर्मित होता है। औद्योगीकरण के वर्तमान युग में सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि होने के साथ ही मध्यम वर्गीय परिवारों का महत्व भी निरन्तर बढ़ता जा रहा है इसलिये आवश्यक हो जाता है कि सामाजिक परिवारों के एक प्रमुख आधार के रूप में यहाँ पर वर्गीयता की धारणा का संक्षिप्त विवेचन किया जाये। वर्गीयता से हमारा तात्पर्य व्यक्तियों के उस समूह से होता है जिनकी सामाजिक स्थिति लगभग समान स्तर की होती है। हमारे सामने कठिनाई यह आती है कि परिवार की वर्गीयता का आधार सामाजिक स्थिति को माने, आर्थिक सफलता को अथवा सांस्कृतिक विशेषताओं को। समाजशास्त्रीय अध्ययन में इन्हीं में से किसी आधार पर परिवार के वर्गीय करण की प्रकृति को स्पष्ट किया जा सकता है। आगवर्न का

कथन है "मध्यम वर्गीय परिवार की तुलना में निम्न तथा उच्च के मध्य सामाजिक स्थिति है"।[1] इस अर्थ से स्पष्ट होता है कि मध्यम वर्गीय परिवारों के सभी सदस्यों की सामाजिक स्थिति लगभग समान ही होती है। इस प्रकार सामाजिक स्थिति के आधार पर ही एक परिवार को दूसरे परिवार से पृथक किया जा सकता है। दूसरी श्रेणी उन विद्वानों की है जिन्होंने आर्थिक स्थिति का परिवार के वर्ग के निर्धारण को प्रमुख आधार माना है इस प्रसंग में.....

मार्क्स का कथन है कि "एक परिवार का उसके उत्पादन के साधनों और उत्पत्ति के वितरण के साथ स्थापित होने वाले सम्बन्धों के सन्दर्भ में ही परिभाषित किया जा सकता है"।[2] वह वर्ग को एक परिवार के ऐसे व्यक्तियों का समूह मानता है जो व्यवसाय, धन, शिक्षा, जीवन यापन की विधियाँ विचारों, भावनाओं मनोवृत्तियों और व्यवहारों में एक दूसरे के समान होते हैं। अथवा इनमें से कुछ आधारों पर एक दूसरे से समानता अनुभव करते हुये अपने को समूह का सदस्य समझते है"।[3] मध्यम वर्गीय परिवार का निर्माण व्यक्ति की योगयता, कार्य, कुशलता तथा धन उपार्जन पर निर्भर करता है इसके लिये परिवार के सदस्यों को भारी प्रयत्न करने पड़ते है। यही कारण है कि निम्न परिवार अपने श्रम, योग्यता के कारण मध्यम वर्गीय परिवार में पहुँच जाते हैं। प्रत्येक परिवार के सदस्य एक विशेष ढ़ंग से जीवन यापन करते हैं जैसे उच्च परिवार के सदस्य कम व्यय करते हैं जबकि मध्यम वर्गीय परिवार केवल आराम सम्बन्धी आवश्यकताओं और निम्न वर्गीय परिवार, आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति पर ही कम व्यय करते हैं।

मध्यम वर्गीय परिवारों का वर्गीकरण :

मध्यम वर्गीय परिवार वाणिज्य एवं व्यवसायिक समूह होता है जिनके सदस्यों में आय प्रतिष्ठा शक्ति तथा सुविधा का असामान्य वितरण होता है।

---

1. आगवर्न एण्ड निमकाफ 1960: ए हेण्डबुक आफ सोशियोलाजी रोलेज एण्ड वेगन पोल लि. लन्दन पृष्ठ 211
2. मार्क्स इण्डिया इन कानिष्ट मैनीफेस्टो कुटेटेड बाई मैटचल इन डिस्कवरी आफ सोशियोलाजी पृष्ठ 184
3. एम जिन्सवर्ग 1959: क्लास कोन्ससनेस फ्राम इन साइकोपीडियां आफ साइन्सेज पृष्ठ 536

सामाजिक आर्थिक अन्तर के आधार पर मध्यम वर्गीय परिवार का वर्गीकरण निम्न प्रकार पाया जाता है।

1. निम्न मध्यम वर्गीय परिवार 2. मध्यम वर्गीय परिवार

3. उच्च मध्यम वर्गीय परिवार

कार्य क्षेत्र के आधार पर मध्यम वर्गीय परिवारों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जाता है।

1. वाणिज्य मध्यम वर्गीय परिवार 2. औद्योगिक मध्यम वर्गीय परिवार

3. वित्तीय मध्यम वर्गीय परिवार 4. व्यवसायिक मध्यम वर्गीय परिवार

नगरीय वर्गीयकरण संरचना के आधार पर मध्यम वर्गीय परिवारों का वर्गीकरण दो प्रकार से किया गया है। जिससे समाजशास्त्र की महत्वपूर्ण विषयवस्तु आत्मसात होती है यह वर्गीकरण गतिशीलता की व्याख्या करता है। जो निम्न प्रकार है-

1. <u>अतीत मध्यम वर्गीय परिवार</u> :

अतीत के मध्यम वर्गीय परिवार के अन्तर्गत लघु उत्पादक, व्यापारी, दुकानदार, ठेकेदार, आत्मनिर्भर व्यावसायिकरण यथा चिकित्सक, वकील, चार्टर्ड लेखाकार आदि आते हैं। इन मध्यम वर्गीय परिवारों के पास न केवल अपने उत्पादन के साधन होते है अपितु वे उनमें स्वयं कार्मिक भी होते हैं।

2. <u>नवीन मध्यम वर्गीय परिवार</u> :

आधुनिक समय में कई सामाजिक श्रेणियों के कार्मिक जो प्राद्योगिकी, विकास तथा प्रबन्धकीय विकास के कारण एक महत्वपूर्ण ढंग से पूँजीवादी, समाजवादी तथा प्रगतिशील समाज में उभर रहे हैं। आधुनिक एवं वर्तमान सामाजिक, आर्थिक जीवन में मशीनों द्वारा कार्य करने वाले अनेकों समूह अपनी संरचना में प्रसार कर रहे हैं तथा वैज्ञानिक, तकनीशियन, प्रबन्धक,

अधिशाषी, श्वेतवस्त्र कार्मिक तथा अन्य कतिपय व्यवसायिक समूह नगरीय औद्योगिक समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। यही नवीन मध्यम वर्गीय परिवार है। इन्हें ही नवीन मध्यम वर्गीय परिवार की संज्ञा दी गई है। क्योंकि इनका प्रादुर्भाव अभी हाल में ही हुआ है। वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिक क्रान्ति के कारण विशेष उत्पादन व्यवस्था में ये अतीत के मध्यम वर्गीय परिवारों से तुलनात्मक रूप से पृथक हैं।

नवीन मध्यम वर्गीय परिवारों ने अत्यधिक अपने सदस्यों की वृद्धि कर विशेष कर प्रगतिपूर्ण औद्योगिक समाज में अपनी ओर ध्यानाकर्षण किया है। इनकी वृद्धि ने औद्योगिक समाज का वर्गीय संरचना को प्रभावित किया है। प्रारम्भ में उच्च वर्गीय समूह की संरचना जैसे प्रमिड की भांति थी एक लघु उच्च वर्गीय परिवार तथा एक बड़ा निम्न वर्गीय परिवार परन्तु आज नवीन मध्यम वर्गीय परिवार के अभ्युदय एवं प्रसार ने उनमें परिवर्तन ला दिया है

वर्गीय संरचना के विकासशील समाज में नवीन मध्यम वर्गीय परिवार आधुनिक समय में अद्वतीय प्रसार किया है। और विज्ञान प्रौद्योगिकी, शिक्षा, प्रबन्धन तथा सेवाओं के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान की है। आज भारत में नवीन मध्यम वर्गीय परिवार प्रारम्भिक औद्योगिक विकास की अवस्था को नवीन स्वरूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका कर रहे हैं।

यह बात ध्यान देने की है कि ज्ञान को व्यवहार में लानें तथा सदैव बढ़ती हुई मांग ने सामाजिक जीवन के विविध पक्षों कें अनुसंधान ने भारत में नवीन मध्यम वर्गीय परिवारों के विकास में सहयोग किया है। इसी प्रकार जोशी ने भी व्याख्या की है कि "भारतीय स्वतंत्रता के बाद से आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक परिवर्तन में एक निर्णायक शक्ति के रूप में मध्यम वर्गीय परिवार उभरे हैं।

वारनर ने अपने यांकी नगर के अध्ययन में मध्यम वर्गीय परिवार को प्रतिष्ठा के आधार पर दो भागों में वर्गीकृत किया है-

1. उच्च मध्यम वर्गीय परिवार जो उत्तम रूप से शिक्षित व्यावसायिक तथा ऊँची आय वाले वकीलों, तथा व्यापारियों का समूह होता है।
2. निम्न मध्यम वर्गीय परिवार जो श्वेतवस्त्रधारी कार्मिक होते हैं जिनमें बैंक तथा कार्यालय के कार्मिक होते है।

मध्यम वर्गीय परिवारों का अन्य परिवारों से सम्बन्ध :

मध्यम वर्गीय परिवारों का प्रसार आर्थिक व्यवस्था के वाणिज्य, प्रविधिकी, पर्यवेक्षण तथा प्रबन्धकीय तत्वों पर आधारित होता हैं। मध्यम वर्गीय परिवार देश की राजनीति, अर्थव्यवस्था, शिक्षा तथा प्राविधिकी से जुड़े होते है तथा सामाजिक परिवर्तन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करते है मध्यम वर्गीय परिवार पूँजीवादी तथा श्रमिक निम्न परिवार के मध्य अस्तित्व में रहते हैं। इनके मध्य में अवस्थिति दोनों प्रकार के परिवारों वे सम्बन्धित होते हैं।

अवधारणात्मक रूप में मध्यम वर्गीय परिवार आंशिक रूप से पूँजीवादी तथा आंशिक रूप से श्रमजीवी परिवार होते हैं। इस प्रकार यह दोनों प्रकार के परिवारों से मध्य अन्तः क्रिया में रत रहते हैं। कुछ प्रकार के मध्यम वर्गीय परिवार विशेषकर प्रबन्धक, पर्यवेक्षक, सरकारी कार्मिक, वैज्ञानिक, प्राविधिक, अधिशासी, राजनीतिक, शासित वर्ग के कार्यों का निष्पादन करते हैं। इस प्रकार मध्यम वर्गीय परिवार पूँजीवादी परिवारों के प्रसार भर हैं। अतः मध्यम वर्गीय परिवार शासन वर्ग से सम्बन्धित होते हैं। और ये पूँजीवादी वर्ग के स्वार्थों को पोषित करते हैं। विशेषकर नगरीय औद्योगिक समाज में।

इस प्रकार भी मध्यम वर्गीय परिवार का दोहरापन समान्तर एवं खड़ी अवस्था में प्रभाग मात्र है। मध्यम वर्गीय परिवारों में समानता होती है इनमें आन्तरिक प्रस्थिति का सोपान विद्यमान होता है। यह प्रास्थिति की विभिन्न परिस्थितियॉ अन्य परिवारों से विभिन्न प्रकार के सम्बन्ध रखती है। यही कारण है मध्यम वर्गीय परिवारों का एक भाग निम्न वर्गीय परिवारों से तथा एक भाग

उच्चवर्गीय परिवारों से नजदीक रहता है। इसलिये जब भी सामाजिक ढ़ॉचे में क्रान्ति या संघर्ष की प्रक्रिया उत्पन्न होती है। तब मध्यम वर्गीय परिवार या तो उच्च वर्गीय परिवारों के या निम्न परिवारों की ओर हो जाते हैं।

<u>मध्यम वर्गीय परिवारों की विशेषताऐं :</u>

यथार्थ में मध्यम वर्गीय परिवार किसी एक परिभाषा द्वारा नहीं किये जा सकते । अध्ययन की सरलता के लिये यह कहा जा सकता है कि मध्यम वर्गीय परिवार सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक विभिन्नताओं से युक्त होते हैं। जहॉ कृतिमता, व्यक्तिवादिता प्रतिस्पर्धा के कारण नियन्त्रण के औपचारिक साधनों के द्वारा स्थापित रहते हैं। कुछ भी हो मध्यम वर्गीय परिवार उच्च वर्गीय वर्गीय परिवारों एवं निम्न वर्गीय परिवारों से कुछ भिन्न सामाजिक तथा सांस्कृतिक विशेषताऐं रखते हैं, जो अपने सदस्यों के जीवन पर छाप छोड़ते हैं। विभिन्न विद्वानों ने सामाजिक संरचना आर्थिक क्रियाओं के स्वरूप और सामाजिक प्रक्रियाओं के आधार पर मध्यम वर्गीय परिवार के जीवन की अनेक विशेषतायें बतायी हैं जिन्हें संक्षेप में निम्नांकित रूप से स्पष्ट किया जा सकता है। एक ड्राइंगरूम, दो बैडरूम के साथ पृथक से भोजनालय, शौचालय, आंगन तथा विद्युत एवं शुद्ध जलपूर्ति की सुविधा से युक्त है। वैयक्तिक स्वच्छता इनके आकर्षण का केन्द्र होता है। इनके आवास पृथक से होने के कारण उनकी पर्यावरण की स्वच्छता बेहतर श्रेणी की होती है। मसलन पक्की गलियॉ, नांलियॉ, सुचारू रूप से पानी का निकास शुद्ध जलापूर्ति तथा इनकी जीवन प्रत्याशा दर अधिक होती है। सामान्य परिवारों की तुलना में इनमें कुपोषण कम पाया जाता है।

मध्यम वर्गीय परिवारों का क्षेत्र विशेषीकृत होता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकता के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान रखता है। प्रत्येक व्यक्ति के विचार और मनोवृत्तियॉ असमान होती हैं। ओद्योगीकरण के कारण आर्थिक क्रियाओं के क्षेत्र में बहुत बृद्धि हुई है। इसके कारण प्रत्येक व्यक्ति विशेष योग्यता रखता है। मध्यम

वर्गीय परिवारों में विभिन्न व्यवसायों तथा आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित समूहों का स्थानीय क्षेत्र भी एक दूसरे से पृथक होता है। यह विशेषीकरण का चरम रूप है जिसे आधुनिक समाजशात्रियों ने क्षेत्रीय सिद्वांत के रूप में स्पष्ट किया है। हेरिस द्वारा प्रस्तुत यह चित्र यह स्पष्ट करता है कि नगर के केन्द्र भाग में फुटकर व्यापारिक संस्थान होते है। तथा दिशाओं में थोक विक्रय का क्रम "नम्बर दो" मध्यम वर्ग के निवास "नम्बर चार" तथा थोक वर्ग के व्यक्तियों के निवास "नम्बर पॉच" होते है।[1]

मनोवैज्ञानिक आधार पर मध्यम वर्गीय परिवार उच्च वर्गीय परिवारों से मानसिक विशेषताओं जैसे- मनोवृत्तियों, भावनाओं और व्यवहार प्रतिमानों के आधार पर भिन्न होते हैं। निम्न वर्गीय परिवारों में सामूहिकता की भावना का महत्व सबसे अधिक पाया जाता है। परम्पराओं, प्रथाओं, लोकाचारों के प्रति निम्न वर्गीय परिवारों में असीम प्रेम पाया जाता है। धर्म और संस्कार उनके प्रमुख आधार है। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण कम सन्देह पूर्ण और कम आलोचनापूर्ण होता है। उनमें प्राथमिक सम्बन्ध पाये जाते हैं। इसके विपरीत मध्यम वर्गीय परिवारों में व्यक्तिवाद की भावना होती है। वयक्ति अपने परिवार, पड़ोस तथा सम्बन्धियों के प्रति भी विरोधी मनोवृत्तियॉ रख सकते है। उन्हें नवीनता से प्रेम होता है और धर्म, परम्परा तथा प्रथा को रूढ़िवादिता मानतें है। इसी स्थिति में उन्हें सुधारवादी तथा प्रगतिवादी कहा जा सकता है। "प्रतियोगिता के कारण उनमें द्वेष और संघर्ष के मनोभाव विकसित होते हैं। इस प्रकार उनका जीवन उद्वेगपूर्ण बनावटी और संघर्ष युक्त होता है। यही कारण है कि आधुनिक सभ्यता तथा विकास के साथ ही मध्यम वर्गीय परिवारों में पारिवारिक तनाव, विघटन, मानसिक रोगों और पागलपन की मात्रा में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

---

1. सी. डी. हेरिस एण्ड ई. एल. अरमन 1942: द नेचर आफ मिडिल क्लास, फमिली कुटेड वाई, आर.एन. 2002 भारतीय सामाजिक व्यवस्था, पृष्ठ 192

मध्यम वर्गीय परिवारों का जन्म आर्थिक जीवन की सफलता से हुआ है। और आज भी ये परिवार आर्थिक क्रियाओं के केन्द्र बने हुये हैं। नगरों में अधिकतर परिवार उत्पादन और प्रशासन में सम्बन्धी कार्यो में लगे रहते हैं। यातायात, संचार, सुरक्षा तथा न्याय की अधिक सुविधायें होने के कारण अधिकांश मध्यम वर्गीय परिवार नगरों में ही रहना चाहते हैं। मध्यम वर्ग अपने सदस्यों के हित के प्रति जागरूक होता है। उच्च एवं निम्न वर्गीय परिवारों के अलावा एक तीसरा मध्यम वर्गीय परिवार होता है। जो प्रायः विषम परिस्थितियों में होते हैं। क्योंकि एक और इन परिवारों से अधिक कार्य की आशा की जाती है और मासिक आय भी आवश्यकतओं को पूर्ति करने हेतु समुचित नहीं होती।

मध्यम वर्गीय परिवारों के जीवन में सभी क्रियाओं का आधार व्यक्तिगत लाभ व व्यक्तिवादी धारणाऐं होती हैं। डेविस का कथन है कि मध्यम वर्गीय परिवार प्रत्येक क्षेत्र में आनें को सबसे अधिक चतुर प्रमाणित करके अधिक लाभों को प्राप्त करने का प्रयत्न करते है। चाहे उस कार्य में सार्वजनिक जीवन की कितनी भी हानि होने की आशंका क्यों न हो। बस यही प्रतिस्पर्धा जन्म लेती है यह प्रतिस्पर्धा मध्यम वर्गीय परिवारों के सामाजिक एवं पारिवारिक क्षेत्र में पृथक से देखी जा सकती है आज उनके सामने एक ही सम्बन्ध प्रधान है जिसे आर्थिक सम्बन्ध कहते है। ''उदाहरण के लिये तुम हमारे यहॉ आओगे तो क्या लाओगे'' जब हम तम्हारें यहॉ आयेगें तो क्या खिलाओगे''।[1]

मध्यम वर्गीय परिवारों में स्थानीय गतिशीलता की ही अधिकता नहीं होती अपितु सामाजिक गतिशीलता की चरम सीमा होती है। यही कारण है कि इनका जीवन शिक्षित और विवेकशील होता है इनमें सामाजिक जागरूकता अधिक होने के कारण ये राजनैतिक लाभ भी अधिक उठा लेते है। अन्धविश्वासों व रूढ़ियों का प्रभाव इन परिवारों में न्यूनतम पाया जाता है। शिक्षा के प्रभाव से कोई भी

---

1. डेविस किन्सले 1966: ह्यूमन सोसाइटी पृष्ठ 33

व्यक्ति ऐसे तथा स्वीकार नही करता जिसे तर्क के द्वारा प्रभावित नहीं किया जा सके। परम्पराओं के प्रति उदासीनता नवीनता के प्रति प्रेम मध्यम वर्गीय परिवारों की स्थाई विशेषता है।

मध्यम वर्गीय परिवारों की क्या विशेषतायें होती हैं। जिनसे उन्हें निम्न तथा उच्च परिवारों से अलग समाजशास्त्रीय रूप से जाना जाता है वर्ग व्यवस्था में सभी परिवार समान रूप से महत्वपूर्ण नहीं होते। यथार्थ में सभी परिवार कुछ श्रेणियों में विभाजित होते है। जिनमें कुछ का स्थान ऊँचा कुछ का नीचा तथा कुछ का मध्यम श्रेणी का होता है। उच्च परिवारों की संख्या समाज कम तथा मध्यम परिवारों की संख्या उच्च परिवारों के लगभग दोगुनी तथा निम्न परिवारों की संख्या सर्वाधिक होती है। इस प्रकार इन तीनों प्रकार के परिवार की शक्ति, धन तथा प्रतिष्ठा पृथक-पृथक होती है।

वर्ग चेतना मध्यम वर्गीय परिवारों में लगभग एक समान पायी जाती है। समान मनोवृत्तियां और व्यवहार के समान प्रतिमान पाये जाते हैं। इसके फलस्वरूप उनमें समानता की चेतना उत्पन्न हो जाती है। अनेक विद्वानों में इसी चेतना को वर्ग चेतना के नाम से सम्बोधित किया जाता है। यही चेतना आपने वर्गीय परिवारों को अपने अधिकारों में वृद्धि करने का ही प्रोत्साहन ही नहीं अपितु उच्चवर्गो से प्रतिस्पर्धा करने की भी प्रेरणा देती है।

यद्यपि अर्थशास्त्रियों ने परिवार को तीन भागों में बॉटा है अर्थात् उच्च, मध्यम एवं निम्न परिवार लेकिन इनमें से प्रत्येक बना वर्ग अनेक उपवर्गो में विभाजित होता है। उदाहरण के लिये मध्यम वर्गीय परिवारों में सभी व्यक्तियों की आर्थिक, स्थिति, शक्ति अथवा सुविधायें समान नहीं होती। ऐसी स्थिति में एक ही वर्ग में अनेक उपवर्गीय परिवार होते है। तथा उनमें वर्ग चेतना भी भिन्न-भिन्न होती है।

मध्यम वर्गीय परिवारों की प्रकृति ली हुई होती है इस प्रकार एक विशेष योग्यता आर्थिक स्थिति अथवा कुशलता होने पर कोई भी निम्न वर्गीय परिवारों का व्यक्ति मध्यम वर्गीय परिवार बन सकता है। इसी प्रकार मध्यम वर्गीय परिवार धन शक्ति में ह्रास होने पर निम्न वर्गीय परिवार में पहुँच जाता है। भारतीय समाज में अनुसूचित जाति के अनेकों निम्न परिवार आज मध्यम वर्गीय परिवारों में परिणीत हो रहे है।

<u>मध्यम वर्गीय परिवारों में आधुनिक परिवर्तन :</u>

सर्वव्यापी संस्था के रूप में अतीत में परिवारों ने इतने महत्वपूर्ण कार्य किये है कि इन्हीं कार्यों के कारण एक परिवार को सामाजिक जीवन का मौलिक प्रतिनिधी माना जाता है। आज इन्हीं कार्यों में क्रांतिकारी परिवर्तन उत्पन्न हो गये हैं। मौलिक रूप से आधुनिक मध्यम वर्गीय परिवार भी अनेक परम्परागत कार्य करते हैं लेकिन इन कार्यों को करने की विधियों और इनसे सम्बन्धित मनोवृत्तियों में महान परिवर्तन हो गया है। साधारण आधुनिक परिवार लाभप्रद और आवश्यक कार्य ही करते हैं । तथा यह प्रयत्न करते हैं कि पारिवारिक कार्यों में रूढ़िवादिता व अविवेक अंश निकाल दियें जायें। जहॉ हम अनेक शक्तियों के प्रभाव से मध्यम वर्गीय परिवारों के प्रमुख कार्यों में उत्पन्न होने वाले परिवर्तनों को निम्नांकित रूप से स्पष्ट करेगें।

सर्वप्रथम मध्यम वर्गीय परिवारों के सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुये हैं। आज अधिकतर परिवार व्यक्ति को परम्परागत संस्कृति की शिक्षा देना अधिक आवश्यक नहीं समझते बल्कि परिवार अपने सदस्यों को व्यवहार के नये आदर्शो और संस्कृति के आधुनिक रूप की शिक्षा देना अधिक उपयोगी मानतें हैं। कुछ समय पहले तक सामाजिक और सांस्कृतिक कार्य धर्म व प्रथाओं से नियन्त्रित होते थे लेकिन आज प्रथा, परम्परा तथा धर्म, रीति-रिवाज व लोकाचारों के बन्धन ढीले पड़ जाने के कारण रूढ़ियों के स्थान

पर तर्क का महत्व बढ़ता जा रहा है। परिवार में सभी सदस्यों को पर्याप्त स्वतन्त्रता मिल जाने के कारण सदस्यों की व्यक्तिगत रुचि और नवीन आदर्शो का महत्व कही अधिक बढ़ गया है। इससे परिवार के परम्परागत नियन्त्रण में कमी आई है। व्यक्ति की स्थिति को निर्धारित करने का परम्परागत कार्य भी आज परिवार द्वारा नहीं होता बल्कि अन्य बहुत सी समितियॉ तथा संगठन इस कार्य को करते है। यही कारण हे कि परिवार और व्यक्ति आज दो ईकाई बन गये हैं। आज परिवार का विघटन होना व्यक्ति का विघटन होना आवश्यक नहीं रह गया है कुछ समय पहले तक मध्यम वर्गीय परिवारों का संगठन का आधार धर्म था और इस प्रकार धार्मिक कार्यो को परिवार का सर्व प्रमुख दायित्व था। लेकिन आज तर्क का महत्व बढ़ जाने से परिवार के धार्मिक कार्य कम होते जा रहे है। वर्तमान जीवन में धर्म का अर्थ कर्मकाण्डों को पूरा करने अथवा परम्पराओं का पालन करने से नहीं लगाया जाता है बल्कि धार्मिक क्रियाओं का इनकी उपयोगिता के आधार पर मूल्यांकन करने का प्रयत्न किया जाता है। यही कारण है कि मध्यम वर्गीय परिवारों के काम बदलते जा रहे हैं क्योंकि अन्य अभिकरण उसका काम लेते जा रहे हैं। इन अभिकरणों में मुख्य निम्नलिखित हैं-

1. मातृत्व चिकित्सालय
2. स्त्रियों के चिकित्सालय
3. बच्चों के अस्पताल
4 बाल पालक गृह
5. शिशु शालायें
6. होटल तथा जलपान गृह

आधुनिक मध्यम वर्गीय परिवारों का भी विघटन धीरे-धीरे होता जा रहा है। इसके कुछ चिन्ह परिवार में अग्रलिखित परिवर्तनों में देखे जा सकते हैं। पारिवारिक एकता में कभी आज कल मध्यम वर्गीय परिवारों के सदस्यों के उद्देश्यों महत्वाकांक्षाओं, विचारों तथा आदर्शो की एकता समाप्त होती जा रही है। स्त्री-पुरुष, लड़के, लड़कियॉ सभी के अपने-अपने आदर्श है। अपनी योजनाएं हैं। अपने कार्यक्रम हैं। अपने विचार हैं। जिनमें वे दूसरे के हस्तक्षेप बिलकुल पसन्द नहीं

करते। इस प्रकार साथ रहते साथ खाते पीते हुये भी उनका एक दूसरे से कोई मतलब नहीं रहता। घर मानो एक होटल बन जाता है जिसमें परिवार के सदस्य केवल खाना-पीना खाने और आराम करने को एकत्र होते है। जहाँ पति-पत्नी दोनों नौकरी करते हैं वहाँ उनमें भी यही फासला देखने को मिलता है। इस मनोवृत्ति से परिवार खंडित होता जाता है। पारिवारिक नियन्त्रण में कमी मध्यम वर्गीय परिवारों में परिवार के अन्य सदस्यों पर परिवार का नियन्त्रण बराबर उठता जा रहा है। कोई किसी की सुनना नहीं चाहता। युवक-युवतियों की बातें बड़ी कड़वी लगती हैं। वे किसी बात में उनका नियन्त्रण नहीं मानना चाहते। नौकरी लगते ही या विवाह होते ही वे परिवार से अलग हो जाना चाहते हैं। इस प्रकार परिवार का विघटन स्पष्ट दिखाई देता है।

कलह : आज कल मध्यम वर्गीय परिवारों में कलह बढ़ रहा है क्योंकि न तो परिवार का कोई नियन्त्रण रह गया है और न ही सदस्यों में एकता की भावना। संयुक्त परिवारों का तेजी से विघटन हो रहा है। मार-पीट, मुकद्मावाजी आदि अधिक देखन में आतें है। एक दूसरे का विश्वास उठता जा रहा है। एक घर में कई-कई चूल्हे जलते हैं। इससे इन परिवारों का विघटन स्पष्ट दिखाई देता है। वैवाहिक बन्धन में शिथिलता परिवार का आधार विवाह का बन्धन है विवाह के बन्धनों के ढीले पड़ने से परिवार के बन्धन भी ढीले पड़ते है। आज कल विवाह एक धार्मिक संस्कार न रह कर एक सामाजिक समझौता मात्र रह गया है।

जिसको जो अब जाने पर या किसी प्रकार का मन मुटाव होने पर सहज ही तोडा जा सकता है। इस कारण तलाकों की संख्या बराबर बढ़ रही है। कहना न होगा कि पारिवारिक विघटन की संख्या से कहीं अधिक है। डासन और गेटिस के शब्दों में "इन संख्याओं की तुलना में निःसंदेह ही पारिवारिक विघटन नहीं अधिक व्यापक तथ्य है, क्योंकि वह संख्या की उन्हीं दशाओं को बदलती है। जहाँ

पर प्रक्रिया व्यवहारिक रूप से पूर्ण हो जाती है"।[1] वैवाहिक सम्बन्धों के ढीले होने का एक बड़ा कारण यह भी है कि स्त्रियों की शिक्षा के साथ पुरूष बनने की नई परिस्थिति के अनुसार नहीं बदल जाते हैं। पहले स्त्रियाँ सब प्रकार से पति पर ही निर्भर रहती थी। अब शिक्षित हो जाने के बाद वे पति के समान धनोपार्जन करती हैं या कम से कम ऐसा करने की योग्यता रखती हैं। अब वे अपने अधिकारों को पहिचानने लगी हैं। अब वे जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरूषों से कन्धे से कन्धा मिला कर चल रही हैं। अब वे पुरूषों से भी वेसी ही सच्चाई चाहती हैं जैसी कि वह उनसे चाहता है। जब पुरूष स्त्रियों को यह बराबरी का दर्जा नहीं देना चाहता, तभी कलह हो जाती है, जिससे परिवार का विघटन होने लगता है।

माता-पिता और बच्चों का संघर्ष : आज कल मध्यम वर्गीय परिवारों में परिवर्तन का एक बड़ा महत्वपूर्ण चिन्ह माता-पिता बच्चों में संघर्ष दिखाई देता है। युवक-युवतियों पर से परिवार के बड़े-बूढ़ों का नियन्त्रण बराबर उठता जा रहा है। अब वे अपने उठते-बैठते, मिलने-जुलने और शादी ब्याह में माता-पिता की आज्ञा नहीं मानना चाहते। इस प्रकार उन में मन मुटाव बढ़ता जाता है। जो परिवार विघटन का द्योतक है।

सुरक्षा का अभाव : पति-पत्नी और माता-पिता व बच्चों के संघर्ष के कारण परिवार में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा क्रमशः समाप्त होती जा रही है। जिससे परस्पर विश्वास उठता जा रही है और परिवार का संगठन भिन्न-भिन्न होता जा रहा है। यही कारण है कि तलाकों की संख्या बढ़ रही है, आपस में विश्वास तथा घनिष्ठता कम हो रही है। लड़ाई-झगड़ा छोटी-छोटी बातों में मारपीट स्वार्थ, निरंकुशता और उच्छलता में वृद्वि हो रही है।

---

1. डासन एण्ड गेटिसः कोटेड बाई गुप्ता एवं शर्मा 1998 समाजशास्त्र साहित्य पब्लिकेशन आगरा पृष्ठ- 172

<u>मध्यम वर्गीय परिवारों में सामाजिक गतिशीलता :</u>

मध्यम वर्गीय परिवारों में सामाजिक गतिशीलता निम्नवर्गीय परिवारों में अधिक पाई जाती है। क्योंकि उनके सदस्य प्रायः सतप्रतिशत उच्च वर्गीय परिवारों की भांति साक्षर होते हैं। "सामाजिक गतिशीलता का आशय सामान्य भाषा में यही है कि आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु किए गये प्रयत्नों की कम अधिक सामान्य सत्ता। लाभ के व्यवसायों का चयन करना, आर्थिक स्तर में प्रगति करना तथा सामाजिक प्रस्थिति में प्रोन्नति लाना"। इतना ही नहीं मध्यम वर्गीय परिवारों के सदस्य प्राविधिकी शिक्षा भी, निम्न वर्गीय परिवारों की तुलना में अधिक प्राप्त करते हैं। फिर चाहे उन्हें बैंकों से ऋण ही क्यों न लेना पड़े। मध्यम वर्गीय परिवार अपने लड़के-लड़कियों के विवाह भी 25 वर्ष की आयु के बाद रचातें है जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें समाज में अधिक अन्तःक्रिया करने के अवसर प्राप्त होते हे। निम्न वर्गीय परिवारों में विवाह की आयु आज भी नगरों में 18-20 वर्ष तथा ग्रामीण ऑचलों में 14-16 वर्ष है। जिसके कारण उनकी अन्त क्रियायें सीमित हो जाती है। और वे प्रगति के नाम पर अधिक प्रसव न करने से जनसंख्या में वे हतासा वृद्घि कर लेते हैं मध्यम वर्गीय परिवार लड़कों की शादियॉ उच्च वर्गीय परिवारों में ही करने का भरसक प्रयास करते हैं ताकि वे उच्च विकास में उच्च नातेदारों में प्रस्थिति एवं संसाधनों का शोषण कर सके। इसके अलावा मध्यम वर्गीय परिवारों के सदस्य समाज के विविध संघ, समितियां तथा संस्थाओं के सदस्य बनने हेतु सदा प्रयत्नशील रहते हैं ताकि उनकी पारिवारिक सामाजिक तथा आर्थिक समस्याऐं स्वतः ही सुगमता पूर्वक पूरी होती रहे। तथा उनकी समाज की व्यवस्था में पहिचान बनी रहे। अपनी निरन्तर प्रगति की प्यास में अन्य उच्च वर्गीय एवं निम्न वर्गीय परिवारों से अपनी प्राप्तियों के प्रति मध्यम वर्गीय परिवारों में साश्वत् असन्तुष्टि ही बनी रहती है। उपरोक्त सामाजिक गतिशीलता अधिकांश पाई जाती है। इनके सदस्य सदैव मध्य स्तर से उच्च स्तरीय व्यवस्थाओं अधिक आय के

साधनों तथा अति उत्तम कोटि के कार्यो को प्राप्त करने हेतु संघर्षशील रहते हैं। जबकि निम्न वर्गीय परिवार गतिशील तो रहते हैं। परन्तु उनकी गतिशीलता प्रायः मन्द होती है तथा उसका स्वभाव अवरोही ही होता है। अर्थात आय की दृष्टि से उन्हें कोई लाभ नहीं अपितु कार्य की दशाऐं उनकी अवश्य बदल जाती है। और इस प्रकार वे सब मिलाकर निम्न वर्गीय परिवारों की स्थिति में ही बने रहते हैं।

<u>मध्यम वर्गीय परिवारों में पश्चिमीकरण एवं आधुनिकीकरण :</u>

भारतीय परिवेश में परिवारों में होने वाले परिवर्तनों में संस्कृतिकरण को श्रीनिवास ने महत्वपूर्ण कारक बताया है। संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण की भाँति ही परिवारों के जीवन में परिवर्तन कारक की भूमिका निभाता है। संस्कृतिकरण को परिभाषित करते हुये श्रीनिवास, एम.एन. लिखते है, कि "संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक निम्न हिन्दू अन्य समूह द्वारा अपनी प्रथाओं, संस्कारों, आदतों और जीवन के ढंगों को उच्चों की दिशा में परिवर्तित करते हैं"।[1]

मध्यम वर्गीय परिवारों में उच्च वर्गीय परिवार का अनुकरण पाया जाता है। यह अनुकरण मध्यम वर्गीय परिवार अपनें घरों में संस्कृति उपकरण तथा टी. बी., रेडियो, डबलबेड, फ्रिज तथा वाशिंग मशीन चाहे वे व्यापारियों से किस्तों पर ही क्यों न लें पर एकत्र करते हैं। क्योंकि ऐसा करने से परिवारों में स्थित्यात्मक परिवर्तन उत्पन्न होता है। इस प्रकार एम. एन. श्रीनिवास के शब्दों में "संस्कृतिकरण भारतीय इतिहास में सांस्कृतिक परिवर्तन की एक प्रमुख प्रक्रिया है और वह भारतीय उपद्वीप के प्रत्येक भाग में चलती है। यह अनय कालों से आज कुछ अधिक सक्रिय हो रही है और भारत में मध्यम वर्गीय परिवार में आज इसका प्रभाव कुछ अधिक ही देखा जा सकता है क्योंकि यह एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है"।[2]

---

1. श्रीनिवास एम. एन. दी सोशल सिस्टम एण्ड आफ मैंसूर विपेज सोशल चेंज इन माडर्न इण्डिया
2. तदैव

भारत में ब्रिट्रिश शासन के स्थापित होने के साथ-साथ भारतीय समाज, संस्कृति व सभ्यता के पाश्चात्य समाज अथवा पश्चिमी संस्कृति एवं सभ्यता से सम्पर्क हुआ। इस सम्पर्क के परिणाम स्वरूप उक्त दोनों समाजों में अन्तः क्रिया, जिसे हम पूर्व-पश्चिम अन्तः क्रिया कह सकते हैं, उससे दोनों एक दूसरे से प्रभावित होने लगे अर्थात पाश्चात्य संस्कृति के प्रतिमान भारतीय संस्कृति के प्रतिमानों से घुलने-मिलने लगें। चूंकि पाश्चात्य देशों में भारत की तुलना में विज्ञान, आधुनिक शिक्षा, प्रौद्योगिकी आदि का अधिक विकास हो गया है। अतः यह स्वाभाविक था कि इस संस्कृति लेन-देन अर्थात सांस्कृतिक अंतः क्रिया में भारतीय संस्कृति व समाज पर पाश्चात्य संस्कृति एवं समाज का अधिक प्रभाव पड़ा। पाश्चात्य संस्कृति व समाज के प्रतिमानों का भारतीय संस्कृति एवं समाज पर पड़ने वाले इस प्रभावशाली प्रभाव प्रक्रिया ने पक्षिमीकरण के नाम से सम्बोधित किया है । ब्रिट्रिश काल तक तो ये पक्षिमीकरण की प्रक्रिया एक छोटे से जन समुदाय अर्थात अंग्रेजों के सम्पर्क में आने वाले कुछ भारतीय धनी व्यक्तियों, राजा-महाराजाओं, अधिकारियों आदि तक सीमित रही किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद क्या नगर क्या ग्राम के मध्यम वर्गीय परिवारों को इस प्रक्रिया ने प्रभावित किया । उसके परिणाम स्वरूप हमारे व्यवहारों, विचारों खान-पान, वेश-भूषा, शिष्टता, पारस्परिक सम्बन्धों सामाजिक व्यवस्थाओं शिक्षा नैतिकता, धर्म प्रथा व परम्पराओं, स्त्रीयों की स्थिति जीवन पद्धति, दृष्टिकोण आदि में स्पष्ट पक्षिमीकरण समाज की झलक दिखाई देनें लगी। श्री लरनर डी. ने पाश्चातीयकरण की प्रक्रिया के स्थान पर आधुनिकरण शब्द को अधिक महत्व दिये जो प्रगतिशील जीवन सूचक है"।[1] इस विवेचन के आधार पर भारतीय समाज के मध्यम वर्गीय परिवार सर्वाधिक प्रभावित हुये। आज इन परिवारों में आधुनिकता का प्रत्यक्ष प्रभाव निम्न परिवारिक क्रिया कलापों में दृष्टिगोचर होता है। आज

1. लरनर, डी. 1958: दी पासिंग आफ ट्रेडिसीनल सोसाइटी पृष्ठ- 17

प्रत्येक मध्यम वर्गीय परिवार अपने बच्चों के जन्म दिन या तो घर पर या होटल में जाकर अपने सम्बन्धियों व ईष्ट मित्रों के साथ मनाते हैं। विवाहित दम्पत्ति अपनी वैवाहिक सालगिरह घर पर या होटल में जाकर मनाते है। इन परिवारों के नौकरी सुदा लोग प्रथम नौकरीय दिवस के रूप में उत्सव रचकर दावतें देते है। इन मध्यम वर्गीय परिवारों की लड़कियाँ तथा लड़के विद्यालय में प्रथम प्रेम दिवस मनाने में आनन्द ग्रहण करते है। 31 दिसम्बर को इन परिवारों में रात्रि के 12 बजे तक तथा नव वर्ष को मनाने के लिये बधाई देने की तो परम्परा सी बन गई है। इनकी स्त्रियाँ ब्यूटीपार्लर का प्रयोग करती हैं तथा लड़कियाँ कटस्लीप वस्त्र धारण करती हैं कामुकता का प्रदर्शन सहज, हो सा गया है।

मध्यम वर्गीय परिवारों में समाजीकरण :

मानव शिशु जन्म के समय किसी भी समाज में भाग लेने योग्य नहीं होता है। वह केवल एक प्राधिशास्त्रीय इकाई के रूप में इस संसार में आता है, जो केवल रक्त मांस व हड्डियों से बना एक जीवित पुतला मात्र होता है। इसमें किसी प्रकार के सामाजिक गुण नहीं होते। वह न तो सामाजिक होता है और न असामाजिक और न समाज विरोधी ही। समाज के रीति रिवाजों, प्रथाओं, मूल्यों एवं संस्कृति से वह अभिन्न होता है। बल्कि यह नहीं जानता कि किसके प्रति कैसा व्यवहार किया जाना चाहिये। और समाज उससे क्या अपेक्षाएँ करता है किन्तु वह कुछ शारीरिक क्षमताओं के साथ पैदा होता है। इन क्षमताओं के कारण ही वह बहुत कुछ सीख लेता है। समाज का क्रियाशील सदस्य बन जाता है और संस्कृति को ग्रहण करता है लेकिन सीखने की क्षमता सामाजिक सम्पर्क से ही विकसित होती है। उदाहरण के लिये मानव में भाषा के प्रयोग करने की क्षमता होती है। जो समाज के सम्पर्क से ही व्यवहारिक रूप धारण करती है। सामाजिक सम्पर्क के कारण ही व्यक्ति समाज के रीति रिवाज प्रथायें मूल्यों विश्वासों संस्कृति एवं सामाजिक गुणों को सीखता है और एक सामाजिक प्राणी का दर्जा प्राप्त करता है। सामाजिक सीख की इस

प्रक्रिया को ही सामाजीकरण कहते है''।[1] समाजीकरण पर प्रकाश डालते हुये यंग लिखते है कि ''समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक और सांस्कृतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रवेश करता है तथा समाज के विभिन्न समूहों का सदस्य बनता है और जिसके द्वारा उसे समाज के मूल्यों और मानको को स्वीकार करने की प्रेरणा मिलती है''।[2]

आज मध्यम वर्गीय परिवारों में समाजीकरण की प्रक्रिया गत तीन दशकों से विशेषकर नगरीय मध्यम वर्गीय परिवारों की भिन्न हो गई है। परिवार को बच्चों की प्रथम पाठशाला इसलिये ही कहा जाता था कि बालक अपने पिता का अनुकरण करता था और पुरूषों द्वारा किये गये कार्यो व्यवहारों प्रतिमानों तथा विधियों को सीख लेता था। यदि उसके व्यवहार मेंकिसी प्रकार की त्रुटि होती थी तो उसे सहानुभूति पूर्ण अथवा डाट-डपट कर समझा दिया जाता था। परन्तु आज माता-पिता ने बच्चों के समाजीकरण का उत्तरदायित्व दूर दर्शन को दे दिया है। बच्चे आज माता-पिता से कम दूर दर्शन से अधिक सीख रहे है। इन परिवारों में बच्चें को अधिक दबाव में नहीं रखा जा सकता है। माता-पिता अपने कार्य में इतने संलग्न रहते है कि उन्हें बच्चों के समाजीकरण के लिये समय ही नहीं मिलता। बच्चों पर पारिवारिक नियन्त्रण की ढील उन्हें सभी प्रकार के मित्र बनानें, उनके साथ खेलने, खाने, पीने की स्वतंत्रता होने तथा बिना आज्ञा के घर से बाहर जाने तथा लौटने की स्वतंत्रता ने उनके समाजीकरण को निश्चित ही संक्रमित कर दिया है। किशोरों की गलतियों पर उन्हें डाटने-फटकराने की क्रियाऐं इन परिवारों में अब नहीं की जाती। अब तो उन्हें जो अच्छा लगता है उसे वे सीखते है व करते है। उनका स्वच्छन्द घूमना, मनोरंजन करने पर माता-पिता का बिल्कुल कम अंकुश होता है। यही कारण है कि आज लड़की-लड़के बहुत सीमा तक समान हो गये हैं।

1. प्रो. गुप्ता 1998 समाजशास्त्र साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा पृष्ठ - 105
2. किम्बालयंग 1957: ए हेण्डबुक आफ सोशियोलाजी पृष्ठ- 89

ड्राइंग रूम में देखते है उनके मन में शर्म लिहाज की कोई सीमा तक समस्या नहीं है। भारतीय संस्कृति में जो समाजीकरण का उद्देश्य था कि बच्चों को अशुभ शक्तियों से बचाना तथा हित के लिये अभीष्ट प्रभावों को आमन्त्रित एवं आकर्षित करना, नैतिक गुणों का विकास करना तथा आध्यात्मिक के मीत्व को स्पष्ट करना आदि आज मध्यम वर्गीय परिवारों के समाजीकरण में पूर्णतयः अभाव आ गया है आज इन मध्यम वर्गीय परिवारों में किसी भी उपाय द्वारा धन कमाना, लाफ एण्ड बी मैसी, का जीवन बिताना ही सीख रहे हैं। दिखावा एवं व्यक्तिवाद इसके दो प्रमुख उद्देश्य है।

मां-बाप की सेवा करना इनके समाजीकरण मेंशामिल नहीं है आज मध्यम वर्गीय परिवार अपने माता-पिता को अनावश्यक अतिरिक्त भार, निराशापूर्ण रखते हैं। उनको सामाजिक, पारिवारिक निर्णयों में पूछते नहीं, उन्हें घर के अलग कमरे में डाल देते हैं। कुछ तो तीर्थ यात्रा के बहाने धार्मिक स्थलों पर उन्हें मरने के लिये छोड़ आते हैं। आज जंगल भी नहीं जहॉ वे दानप्रस्थ समझ कर चले जाये। यह सब मध्यम वर्गीय परिवारों के समाजीकरण की दोषपूर्ण प्रक्रिया का ही फल है। आज मध्यम वर्गीय परिवार के बच्चे तीन वर्ष के बच्चे नगरों में, के., जी., एक, में प्रवेश हो जाते हैं। अंग्रेजी भाषा में उन्हें सिखाया पढ़ाया जाता है। पिता को डैडी तथा मां को मम्मी के संस्कार दिये जाते हैं। लोगों का घर लौटने पर उन्हें बाय-बाय कहकर विदा किया जाता है। और जाने वाले से सी यू बोलकर जाता है।

मध्यम वर्गीय परिवारों में पारस्परिक सम्प्रेक्षण :

मध्यम वर्गीय परिवारों में पारस्परिक सम्प्रेक्षण की प्रक्रिया अन्य उच्च एवं निम्न वर्गीय परिवारों से अधिक पाई जाती है। पारस्परिक सम्प्रेक्षण वह प्रक्रिया हे जिसमें दो व्यक्तियों के मध्य आमने-सामने कि स्थिति में किसी विषय पर वार्ता करना पाया जाता है। पारस्परिक समस्त क्रियाओं की जड़ होता है।

एलवेट किलन्जर जो पूर्व पाश्चिम केन्द्र होना लूलो के चान्सलर हैं, ने पारस्परिक सम्प्रेक्षण पर जोर देते हुये कहा है कि ''पारस्परिक सम्प्रेक्षण जीवन का एक सबल भाग है जैसे की सॉस लेना, जिसे हम भूल रहे है वह आगे कहते हैं सम्प्रेक्षण से ऐच्छिक प्रत्युत्तर पाने के लिये एक दूसरे के विचारों एवं भावनाओं का संचार करता है''।[1] मध्यम वर्गीय परिवार पारस्परिक संचार के माध्यम से अपने मन की छोटी से छोटी बातों को परिवार से सदस्यों के सम्मुख अभिव्यक्ति, कर देते हैं। उनका ध्येय रहता है कि अन्य सदस्य उनकी आवश्यकता पूर्ति में रूचि ले तथा महत्व दें ताकि उनें अधिकारों का दमन न हो, उन्हें विकास के कतिपय अवसर आत्मसात हो तथा उनके जीवन का निरन्तर विकास बना रहे। उस प्रकार के पारस्परिक सम्प्रेक्षणों की प्रक्रिया को प्रायः डायनिंग टेबिल, शादी-विवाह के प्रांगणों में तथा उत्सवों पर होते देखा जाता है। नवकिशोर-किशोरी अपने परिग्रहण की चर्चा उन्मुक्त भाव से करते हैं। उन्हें दहेज में क्या-क्या तथा किस ट्रेड मार्क की वस्तु चाहिये। अपनी मॉ, भाई, भाभी आदि से साफ-साफ बता देते है।

किटक्टराव 1986:415 ने अपने अध्ययन अनुकूल संचार विधि के निष्कर्ष में बताया कि संचार जीवन रक्त के समान होता है। जो पारिवारिक, सामाजिक तथा आर्थिक निर्णय प्रक्रिया हो निरन्तर रखता है और यह प्रत्येक दिनचर्या का महत्पूर्ण पहलू होता है''।[2] पार्थास्वामी 1986:421 ने अपने शोध में भी संचार को एक दूजे को सूचित करने, प्रेरित करने, सिखाने, मनोरंजन करने, जनमत निर्माण करने, विकासवादी आन्दोलन को अनुमोदन करने की प्रक्रिया रूप में स्वीकार किया है''।[3]

<u>मध्यम वर्गीय परिवारों में मनोरंजन :</u>

अपने जीवन की तीन श्रेष्ठ आवश्यकताओं को पूरा करना होता है-

---

1. भषीन, वी.के. 1986 कमन्केकेशन टू मदर एण्ड चाइड पृष्ठ- 431
2. किट्ट राव 1986 एप्रोप्रियेट कम्नूकेशन एण्ड मीडिया पृष्ठ- 415
3. पार्थस्वामी, टी. के. 1986 मां एवं बच्चे के लिये बेहतर संचार पृष्ठ- 421

1. अपनी समस्त आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये मेहनत
2. मेहनत के बाद थकावट दूर करने के निये विश्राम और
3. मानसिक आराम के लिये मनोरंजन

वास्तव में आज के औद्योगिक समाज में श्रमविभाजन और विशेषीकरण इतना व्यापक हो गया है कि व्यक्ति दिन भर कार्य करने के बाद थक जाता है। जीवन की एक रसता के कारण शरीर और मन अस्वस्थ्य रहता है, दिन भर के अथवा परिश्रम के पश्चात जीवन को रसपूर्ण तथा चेतन बनाने के निये थोड़े बहुत मनोरंजन का होना नितान्त आवश्यक हो गया है। मनोरंजनशरीर को स्वस्थ रखने के साथष्साथ दिमाग को भी स्वस्थ्य रखता है"।[1] जोजोफली का कहना है कि "मनेरंजन प्रौढ़ो के जीवन में नवीनता लाता है तथा बच्चों के लिये चेतना तथा स्फूर्ति है"।[2] डा. सी.वी. ममलिया के अनुसार "कोई भी प्रक्रिया जो मनुष्य की मूलष्भूत आवश्यकताओं जैसे कार्य परिवर्तन की आवश्यकता कार्य के उपरान्त विश्राम अथवा सृजनात्मक उपलब्धि आदि को सन्तुष्ट करती है और जो व्यक्ति और समाज के कल्याण की वृद्धि करती है। उसे मनोरंजन कह सकते हैं।

वास्तव में मनोरंजन मानव जीवन के लिये अत्यधिक आवश्यक है। विद्वानों ने विकास के अनुसार मनोरंजन के निम्नलिखित उद्देश्य बताये हैं-

1. जीवन की ऊब का दूर होना
2. अवकाश का व्यक्तित्व के विकास में उपयोग करना
3. सामाजिक एकता और हम की भावना में वृद्धि तथा
4. सार्वजनिक रूप से एवं सामूहिक रूप से व्यक्तियों का सम्पर्क

नगरों के मध्यम वर्गीय परिवार के मनोरंजन पर जब हम दृष्टिपात करते हैं। तो मनोरंतन आमतोर पर व्यापारिक होता है। जो उचित रूप में व्यवस्थित होते हैं।

---

1. सिंह जीत कृष्णा 1977 अपराधशास्त्र अध्याय 25, पृष्ठ- 236
2. प्रकाशन केन्द्र न्यूबिलिडिंग्स अमीनाबाद, लखनऊ जोजेफली, जीत कृष्णा द्वारा उधृत अपराधशास्त्र पृष्ठ- 237

और जिनका मुख्य उद्देश्य पैसा कमाना होता है। व्यापारिक मनोरंजन व्याख्या करते हुये एन. कारपेन्टर ने कहा कि,

"commencial reareation has been defines as an activity that specially restricted passive and vicareouse saving emotional ethenic often governmentally regulated and occanionolly dispersed to the edge of the city by ecological social forces"[1]

अतः व्यापारिक मनोरंजन का उद्देश्य एक मात्र पैसा कमाना होता है। और इससे व्यक्तियों के मनोरंजन को ही ध्यान से रखा जाता है। उनके नैतिक व्यवहार को नहीं जिसके कारण यह पारिवारिक एवं सामाजिक विघटन का कारण बन जाता है। आजकल मानवता तथा नैतिकता धन के नीचे दब गई है। अतः मध्यम वर्गीय परिवारों में मनोरंजन जो मानव के हार्दिक सुख का कार्य या व्यापार बन गया है। औद्योगिक तथा नगरीयकरण के कारण पुराने सामाजिक मूल्यों का हास हो गया है और उनके स्थान पर नये मूल्यों ने जन्म ले लिया है। और नवीन मूल्य उन्हीं तत्वों को महानता देते हैं। जो मनोरंजन को आर्थिक लाभ में बदलनें के लिये सहायक होते हैं।

शोधकर्ता ने अनुसन्धान क्षेत्र के अवलोकन में पाया कि मध्यम वर्गीय परिवारों की मनोरंजन संस्थाओं में जो पारिवारिक तनाव तथा विघटन की पोषक है, जिनमें चलचित्र, नृत्यगृह, रात्रि क्लब, जुआ गृह के अतिरिक्त स्तर पर ब्ल्यू फिल्म्स उल्लेखनीय है। इन संस्थाओं में यौन इच्छाओं को उभारा जाता है। व्यक्ति शराब पीता है, जुआ खेलता है, रूपया हारता है। और चुराता है। शराब के नसे में चूर होकर व्यक्ति अपना व्यक्तित्व खो बैठता है और अनेक प्रकार के अपराध कर बैठता है। आज मध्यम वर्गीय परिवार की लड़कियॉ-लड़के

---

1. कारपेन्टर एन. जीत कृष्णा द्वारा उधृत अपराधशास्त्र पृष्ठ-240

ड्रग्स एडिक्ट हो जाते हैं। शादी से पूर्व उनमें जिस्म सम्बन्ध स्थापित अक्सर हो जाते हैं। विवाह के बाद यही किशोर-किशोरी अपने पति के साथ समायोजन करने मे कठिनाई अनुभव करता/करती है। परिणामतः परिवार में कहा सुनी, मार पीट तथा तनाव एवं कलह होना प्रारम्भ हो जाता है। इसके मुख्य कारको में मध्यम वर्गीय परिवारों में लड़के-लड़कियों की शहर से बाहर विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करना छात्रावासों में रहना गर्ल्स फ्रेंड्स के मोबाइल पर फोन आना बात करना होटलों में भोजन, शराब का प्रयोग, अधिक छूट और उन पर माता-पिता का अन्ध विश्वास तथा उनकी निजी जिन्दगी तथा पैसा कमाने में दिन रात एक कर देना आदि।

अध्याय -2

शोध पद्धति

- अध्ययन क्षेत्र
- अनुसंधान का प्रारूप
- निदर्शन
- तथ्यों के स्रोत
- तथ्य संकलन
- तथ्यों का वर्गीकरण
- तथ्यों का सारणीयन
- तथ्यों का विश्लेषण तथा व्याख्या
- प्रतिवेदन का प्रस्तुतिकरण

अध्याय -2

शोध पद्धति

मानव विश्व का सर्वाधिक बौद्धिक, चिन्तनशील एवं जिज्ञासु प्राणी है उसकी इसी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण वह समाज में व्याप्त सामाजिक समस्याओं एवं उनके इसी निराकरण के लिये सजग प्रहरी बन कर समाधान खोजने के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहता है। यहाँ तक कि समस्या से सम्बन्धित ज्ञान का स्पष्टीकरण करना, नवीन ज्ञान की खोज करना तथा उसका सत्यापन करना, उसके लिये एक जटिल समस्या होती है। समस्या से सम्बन्धित पक्षों के विषय में यथार्थ ज्ञान किन-किन तरीकों तथा प्रविधियों द्वारा किया जाये। ताकि अनुभव सिद्ध तथ्यों को ज्ञात करके निरीक्षण तथा सत्यापन के आधार पर मानव व्यवहार से सम्बन्धित क्रियाशील अन्तर्निहित प्रक्रियाओं की जानकारी प्राप्त की जा सके एवं विभिन्न सामाजिक प्रघटनाओं एवं नवीन तथ्यों के बीच पाये जाने वाले प्रकियात्मक सम्बन्धों की खोज की जा सके। इसके लिये उसे यह सोचना पड़ता है कि ऐसा करने के लिये शोध अध्ययन किस प्रकार किया जाये? ताकि संग्रहीत सूचनाऐं विश्वसनीय, तर्कसंगत तथा वस्तुनिष्ठ रूप में प्राप्त हो सके क्योंकि, "किसी भी अध्ययन विषय का विकास उसकी उचित अध्ययन विधियों के विकास पर निर्भर करता है, न कि विषय सामग्री पर"[1] इसलिये सामजिक अध्ययन पद्धतियों का उल्लेख करते हुऐ सर्वश्री सैलटिज जहोदा तथा कुक ने इन्हें बौद्धिक (नोरमेटिव) तथा व्यवहारिक (एप्लाइड) दो भागों में वर्गीकृत किया है। सामान्य शब्दो में बौद्धिक उद्देश्य को सैद्धान्तिक ज्ञान ओर व्यवहारिक उद्देश्य

---

1. करलिंगर एफ.एनु, दि फाउण्डेशन ऑफ विहेवियरल रिसर्च, रिनेहार्ट एण्ड न्सिटन प्रेस हाल्ट, न्यूयार्क, 1964, पृष्ठ-4

की उपयोगितावादी कहा जा सकता है। इनका स्पष्टीकरण करते हुये प्रोफेसर कपिल ने लिखा है कि बौद्धिक शोध के अन्तर्गत सामाजिक जीवन, सामाजिक समस्याओं तथा प्रघटनाओं के सन्दर्भ में मौलिक सिद्धान्तों व नियमों की गवेषणा की जाती है, जो इस ओर संकेत करती है कि एक अनुसंधानकर्ता को क्या करना चाहिये? जबकि व्यवहारिक शोध के अन्तर्गत मानव व्यवहार से सम्बन्धित समस्या का गहन अध्ययन करके उसका समाधान प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें व्यवहारिक सुझाव दिये जा सकें। "स्पष्टतः व्यवहारिक शोध के अन्तर्गत किन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिये अतिरिक्त (नवीन) ज्ञान की प्राप्ति की जाती है।"[1] परन्तु सर्वश्री करलिंगर एफ.एन. (1964:27) के अनुसार अनुसंधान कार्य प्रायः निम्नलिखित तीन श्रेणियों में विभक्त कियो जा सकते हैं:-

1- विशुद्ध मौलिक अनुसंधान, 2- क्रियात्मक अनुसंधान,

3- व्यवहारिक अनुसंधान

जिस प्रकार विधाता की सर्वोत्तम सृष्टि मानव है, उसी प्रकार मानव की सर्वोत्तम सृष्टि मानव समाज व उसकी विचित्र घटनाऐं है। यह मानव बुद्धिजीवी है, जिज्ञासा से भरपूर ज्ञानपिपासु है। इसीलिये यह सच ही कहा गया है कि मानव केवल प्रकृति का ही नहीं स्वयं अपना भी अध्ययन करता है। आकाश, धरती, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, नदी और समुद्र का अध्ययन उसके सम्मुख अनेक आश्चर्यजनक अनुभवों को उपस्थित करता है और उसके ज्ञान-विज्ञान के भण्डार को भरता रहता है, परन्तु स्वयं अपना, अपने समाज का, अपने वयवहारों का या फिर सामाजिक घटनाओं का अध्ययन मानव के लिये और भी रोचक, अत्यन्त आश्चर्यजनक अनुभवों से भरपूर और अनेक अनोखेपन से समृद्ध होता है। पर यह अध्ययन मनमाने ढंग से नहीं अपितु निरीक्षण, परीक्षण व प्रयोग पर आधारित

---

1. सिंह, एस.डी. 1980: वैज्ञानिक सामाजिक अनुस्थान अवाम सर्वेक्शन, के मूल तदवा कमल प्रकाशन, इन्दौर एम.पी. पृष्ठ-50

वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा किये जाने पर ही सत्य को ढूँढा जा सकता है। सामाजिक घटनाओं के सम्बन्ध में सत्य की खोज ही सामाजिक शोध है।

"मानव क्रिया के सभी क्षेत्रों में शोध का अर्थ ज्ञान तथा बोध की निरन्तर खोज है। परन्तु वही ज्ञान व बोध वैज्ञानिक होते है जिनमें वैज्ञानिक शोध के दो आवश्यक तत्व अवश्य विद्यमान हों- इनमें से प्रथम तत्व है निरीक्षण-इसके द्वारा प्रत्यक्ष रूप से देखकर हम कतिपय तथ्यों के विषय में ज्ञान प्राप्त करते है। दूसरा तत्व है- कारण दर्शाना- जिसके द्वारा इन तथ्यों का अर्थ, उनका पारस्परिक सम्बन्ध एवं विद्यमान वैज्ञानिक ज्ञान से उनका सम्बन्ध निश्चित किया जाता है।"[1] यही दोनों तत्व आदि सामाजिक तथ्यों के सम्बन्ध में किये गये अनुसंधान में विद्यमान हैं तो उसे सामाजिक शोध कहते हैं।

इस दृष्टि से सामाजिकशोध किसी सामाजिक समस्या को सुलझाने या किसी उपकल्पना की परीक्षा करने, नवीन घटनाओं को खोजने या कतिपय घटनाओं के बीच नवीन सम्बन्धों को ढूँढने के उद्देश्य से किसी यथार्थ विधि का उपयोग है। यह यथार्थ विधि इस प्रकार की होनी चाहिये जो कि वैज्ञानिक शर्तो को पूरा करती हो तथा जिसकी सहायता से अनुसंधान किये गये विषय का सत्यापन सम्भव हो। दूसरे शब्दों में सामाजिक घटनाओं या विद्यमान सिद्धान्तों के सम्बन्ध में नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिये प्रयोग में लाई गई वैज्ञानिक विधि सामाजिक शोध है।

अतः स्पष्ट है कि सामाजिक शोध एवं वैज्ञानिक नियमानुसार, उस मानवीय क्रियाकलाप की ओर संकेत करता है जिसके द्वारा सामाजिक जीवन में हमारे ज्ञान की वृद्धि सम्भव होती है तथा अनेक घटनाओं व उनके कारणों में पाये जाने वाले पारस्परिक सम्बन्ध के विषय में हम नवीन जानकारी प्राप्त करते है।

---

1. मुखर्जी, आर.एन.(2001), अष्टम संस्करण, सामाजिक शोध व सांख्यिकी, मातृ आशीष तिलक कालोनी, सुभाष नगर,बरेली, पृष्ठ-1

सामाजिक शोध के बारे में सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि ज्ञान प्राप्ति की वह विधि है जो कि निरीक्षण, वर्गीकरण, प्रयोग तथा निष्कर्षीकरण की सामान्य वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित होती है यदि उसी पद्धति के द्वारा न केवल अज्ञात सामाजिक घटनाओं को खोजा जा सकता है परन्तु ज्ञात सामाजिक घटनाओं की भी विवेचना या विश्लेषण किया जाता है। इस अर्थ में सामाजिक शोध "एक वैज्ञानिक योजना है जिसका कि उद्देश्य तार्किक तथा क्रमबद्ध पद्धतियों के द्वारा नवीन तथ्यों का अन्वेषण अथवा पुराने तथ्यों की पुनः परीक्षा एवं उनमें पाये जाने वाले अनुक्रमों, अन्तः सम्बन्धों, कारण सहित व्याख्याओं तथा उनको संचालित करने वाले स्वाभाविक नियमों का विश्लेषण करना है।"[1] इसीलिये श्री मौसर (1961:3) ने ठीक ही कहा है कि, "सामाजिक घटनाओं व समस्याओं के सम्बन्ध में नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिये किये गये व्यवस्थित अनुसंधान को हम सामाजिक शोध कहते हैं।"[2]

सामाजिक अनुसंधान कोई सरल व सीधा कार्य नहीं है और इसलिये प्रत्येक व्यक्ति इसे कर भी नहीं सकता। केवल कुछ पुस्तकीय ज्ञान ही शोध कार्य के लिये पर्याप्त नहीं है। इसके लिये अन्य अनेक बाह्य तथा आन्तरिक गुणों का होना आवश्यक है। इसका कारण भी स्पष्ट है। सामाजिक शोध सामाजिक घटनाओं से सम्बन्धित होता है और सामाजिक घटनाऐं अमूर्त, परिवर्तनशील, जटिल तथा व्यक्ति प्रधान होती है। इसीलिये इनका अध्ययन प्राकृतिक घटनाओं के अध्ययन से कहीं अधिक कठिन होता है। सबसे बड़ी बात यह है कि सामाजिक घटनाओं के अध्ययन का तात्पर्य वास्तव में मानव द्वारा मानव के विषय में अध्ययन है जैसा कि इस शोध का विषय है- "मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव एवं विघटन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन"

1. यंग, पी.वी. (1960): साईन्टीफिक सोसल सर्वे एण्ड रिसर्च, एसिया पवलिसिंग हाऊस, बोम्बे,पृष्ठ -44
2. मौसर, सी. ए. (1961): सर्वेमैथड इन सोसल इन्वेस्टीगेशन, हेनरमेन लन्डन, पृष्ठ-3

सामाजिक शोध का उद्देश्य सामाजिक घटनाओं का वैज्ञानिक अध्ययन करके उनके विषय में वास्तविक ज्ञान प्राप्त करना है। इस प्रकार का वैज्ञानिक अध्ययन मनमाने ढंग से नहींकिया जा सकता और न ही काल्पनिक घोड़ा दौड़ाकर अथवा दार्शनिक विचारों का सहारा लेकर किसी यथार्थ और प्रयोगसिद्ध निष्कर्ष तक पहुँचा जा सकता है। श्री अगस्त काम्टे का यह निश्चित मत था कि "वैज्ञानिक अध्ययन में सट्टेबाजी का कोई स्थान नहीं होता।" दूसरे शब्दों में आध्यात्मिक व दार्शनिक चिंतन द्वारा प्राप्त निष्कर्ष सत्य या काल्पनिक होना संयोग की बात है और उनके सत्य-असत्य का निर्णय अगर असम्भव नहीं तो कठिन तो अवश्य ही है। कुछ भी हो वैज्ञानिक अध्ययन संयोग या अनुमान पर कदापि निर्भर नहीं हो सकता और न ही होना चाहिये। इसलिये प्रत्येक विज्ञान अपने प्रयोगसिद्ध अध्ययन कार्य के लिये एक या एकाधिक निश्चित व व्यवस्थित अध्ययन प्रणालियों को अपनाता है। इन्हीं को शोध पद्धति कहते है और ये विधियां ही वैज्ञानिक अनुसंधान के आधार हैं। ये पद्धतियां आधारभूत रूप में सभी विज्ञानों में समान या एक जैसी होती हैं, केवल अध्ययन वस्तु की प्रकृति के अनुरूप इनके रूप या स्वरूप में कुछ आवश्यक परिवर्तन प्रत्येक विज्ञान में कर लिया जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पद्धति (Method) वह प्रणाली (Procedure) है जिसके अनुसार कार्य का संगठन, तथ्यों की विवेचना तथा निष्कर्षो का निर्धारण किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र

झाँसी उ0प्र0 के दक्षिण-पश्चिमी पठारी भाग में स्थित है। यह 24° 11से 25° 57 उत्तरी अक्षांश में तथा 78°10 से 79°25 पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। जनपद झाँसी के पूर्व में मध्य प्रदेश का ग्वालियर जिला, पश्चिम में उ.प्र. का ललितपुर जिला, उत्तर में जिला जालौन तथा दक्षिण में जनपद बाँदा स्थित है ।

जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 2362 वर्ग किमी है जो कि उत्तर प्रदेश की कुल भूमि 204411 वर्ग किमी का 0.7 प्रतिशत है।

1. जनपद की दशकीय जनसंख्या का आकार तथा वृद्धिदर :

झाँसी मण्डल का जनपद झाँसी पथरीला जनपद है जिसके कारण आकार में कोई विशेष परिवर्तन ज्ञात नहीं हुआ है। यह जनपद झाँसी जनपद की पाँच तहसीलों को मिलाकर बना है जो कि आकार की दृष्टि से बड़ा है। किन्तु जनसंख्यात्मक दृष्टि से छोटा है। सन् 1971 से 2001 तक दो दशकीय जनसंख्या के आकार एवं वृद्धि दर में परिवर्तन का प्रदर्शन निम्न तालिका में किया गया है।

झाँसी जनपद की दशकीय जनसंख्या तथा वृद्धि दर

वर्ष	लिंग वार जनसंख्या का वितरण			दशक वृद्धिदर
	पुरूष	स्त्री	योग	
1971	555252	462761	1048013	
1981	660664	5649621	1230265	20.80
1991	700735	449529	1260264	21.62
2001	736926	569128	1306054	22.60

श्रोत्र : झाँसी जनपद की वार्षिक रिपोर्ट-2004

जनपद की जनसंख्या में पुरूषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या कम ज्ञात हुई। 1971 में प्रति हजार पुरूषों पर 860 स्त्रियाँ पायी गयी जो 1981 कम होकर 834 तथा 1991 से 832 स्त्रियां प्रति हजार पुरूषों पर ज्ञात हुई है। इस स्त्री पुरूष अनुपात का एक विस्तृत अध्ययन निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

2. स्त्री पुरूष अनुपात का वितरण व दशक वृद्धिदर

वर्ष	पुरूष	स्त्री	समस्त योग	दशकीय वृद्धि	स्त्रियां प्रति 1000पुरूष
1971	555242	462761	1018013	--	860
1981	690644	569621	1260265	242252	884
1991	736926	596128	1333054	272789	832
2001	830075	695127	1525202	234948	834

श्रोत्र : झाँसी जनपद की वार्षिक रिपोर्ट -2004

तलिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि झाँसी जनपद में 1971 में 555252 पुरूष वर्गीय और 462761 स्त्री वर्गीय जनसंख्या थी जो कि 1981 में बढ़ कर पुरूष वर्ग में 690644 और स्त्री वर्ग में 569621 हो गयी। इस प्रकार 1971 से 1981 के बीच जनसंख्या में 242252 का कुल दशकीय परिवर्तन हुआ। 1991 के अनुसार पुरूषों की जनसंख्या 736926 तथा स्त्रियों की जनसंख्या 596128 थी इस प्रकार 1981 से 1991 के बीच होने वाला दशकीय परिवर्तन 272789 रहा। सन् 2001 में पुरूष, स्त्री अनुपात 834 हो गया।

3. जनसंख्या का ग्रामीण नगरीय विभाजन लिंगभेदानुसार :

दशक 1981 की तुलना में 1991 में ग्रामीण व शहरी तथा स्त्री व पुरूष वर्ग के जनांकिकी आकार में परिवर्तन निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है। तालिका के आंकड़ों के विश्लेषण तथा सम्बन्धित विवेचन से स्पष्ट होता है कि जनपद झाँसी के ग्रामीण आंचलों में जनसंख्या वृद्धि की दर नगरीय जनसंख्या की तुलना में काफी अधिक है। वर्ष 1981 तथा वर्ष 1991 के स्त्री तथा पुरूषों की जनसंख्या के तुनात्मक आंकड़े निम्वत् है-

ग्रामीण नगरीय जनसंख्या का वितरण

विवरण	पुरूष	स्त्री	योग
1. 1981 की जनगणना			
ग्रामीण	310035	393427	703462
शहरी	189260	176051	365311
2. 1991 की जनगणना			
ग्रामीण	524306	829013	953319
शहरी	166338	140608	306946
विवरण	पुरूष	स्त्री	योग
3. 2001			
ग्रामीण	617887	507607	1125494
शहरी	219039	188521	407560

श्रोत्र : झाँसी जनपद की वार्षिक रिपोर्ट- 2004

4. जनपदीय जनसंख्या का धर्मसापेक्ष विभाजन : जनपदीय जनसंख्या को धर्म के आधार पर हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, सिख, बौद्ध,जैन तथा अन्य धर्मों में बांटा गया है। इसका जनसंख्यात्मक प्रतिशत का एक विवेचन निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

जनसंख्या का धर्म सापेक्ष विभाजन (प्रतिशत) में

क्रमांक	धर्म वृत्तिका	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
1.	हिन्दू	92.28
2.	इस्लाम	7.14
3.	ईसाई	0.03
4.	सिक्ख	0.03
5.	बौद्ध	0.06
6.	परसी	0.35
7.	अन्य	0.01
	समस्त योग	100.00

5. जनसंख्या का शैक्षणिक स्तर सापेक्ष विभाजन

विवरण	शिक्षित पुरूषों का प्रतिशत	शिक्षित स्त्रियों का प्रतिशत	कुल जनसंख्या का शिक्षित प्रतिशत
1. 1991 की जनगणना			
ग्रामीण	43.2	15.9	31.0
शहरी	58.5	39.9	49.9
योग	45.2	18.9	33.9
2. 2001 की जनगणना			
ग्रामीण	57.5	23.1	42.1
शहरी	66.1	47.6	57.6
योग	51.7	29.8	46.2

6. झाँसी नगर की मलिन बस्तियों का जनसंख्यावार विवरण

झाँसी नगर की समस्त मलिन बस्तियों का जनसंख्यावार विवरण निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है :-

झाँसी नगर की मलिन बस्तियों का जनसंख्यावार विवरण

बार्ड संख्या	वार्ड का नाम	क्रम संख्या	मलिन बस्ती का नाम	जनसंख्या
1.	तालपुरा	1.	तालपुरा	10650
2.	खुशीपुरा	2.	खुशीपुरा	9600
3.	नई बस्ती	3.	नई बस्ती	12000
4.	बाहर ओरछा गेट	4.	बाहर ओरछा गेट	5400
		5.	मदकखाना	2100
		6.	मोहनीबाबा	2550
5.	बाहर सैंयर गेट	7.	बाहर सैंयर गेट	5850
6.	मसीहागंज	8.	मसीहागंज	6600

बार्ड संख्या	वार्ड का नाम	क्रम संख्या	मलिन बस्ती का नाम	जनसंख्या
7.	नैनागढ़	9.	नैनागढ़ हरिजन बस्ती	2550
8.	ईसाई टोला	10. 11. 12. 13.	ईसाई टोला पुरबिया टोला बिहारीपुरा सुमेरनगर	1350 900 900 750
9.	नैनागढ़ दक्षिणी भाग	14. 15.	नैनागढ़ कसाई बाबा महावीरनपुरा	2250 1800
10.	स्कूल पुरा	16. 17. 18. 19. 20.	स्कूलपुरा बिल्लेश्वर महाराजपुरा टोलाबदलूराम सिल्बटगंज	2400 1050 750 900 450
11.	बंगलाघाट	21. 22.	बंगलाघाट अन्दर बड़ागाँव	6000 600
12.	गुदरी	23. 24. 25.	गुदरी सूजे खाँ अन्दर बड़ागाँव	2286 1755 3300
13.	नन्दनपुरा	26. 27. 28.	नन्दपुरा खोडन पीरिया	8627 600 750
14.	अलीगोल	29. 30. 31. 32.	अलीगोल भैरोखिड़की बाहर उन्नाव गेट सराय	2124 1350 1416 1350
15.	हीरापुरा	33. 34.	हीरापुरा प्रतापपुरा	750 750
बार्ड संख्या	वार्ड का नाम	क्रम संख्या	मलिन बस्ती का नाम	जनसंख्या
16.	पुलिया नं0 9	35.	पुलियां न.9	10650
17.	सागरगेट	36.	सागरगेट	3000
18.	बाहर दतिया गेट	37.	बाहर दतिया गेट	1500

बार्ड संख्या	वार्ड का नाम	क्रम संख्या	मलिन बस्ती का नाम	जनसंख्या
19.	छनियापुरा	38. 39.	छनियापुरा अन्दर ओरछागेट	810 5400
20.	तलैया	40.	कुष्टयाना	2400
21.	बाहर खण्डेराव गेट	41.	बाहर खण्डेरावगेट	600
22.	मेवातीपुरा	42. 43.	मेवातीपुरा अन्दर उन्नाव गेट	6000 3150

अनुसंधान का प्रारूप

समाजशास्त्रीय शोध अध्ययनों में कई आधारों पर भिन्नता पाई जाती है। कुछ शोध कार्य किसी जिज्ञासा को शान्त करने के लिये तो कुछ केवल ज्ञान प्राप्ति के लिये किये जाते है, कुछ का लक्ष्य उपकल्पनाओं का निर्माण तथा कुछ का किसी उपकल्पना की सत्यता की जांच करना होता है। किसी शोध का लक्ष्य किसी घटना का यथार्थ चित्रण करना, किसी का सामाजिक समस्याओं के निराकरण हेतु विकल्पों का पता लगाना तथा कुछ का सामाजिक नियोजन एवं नियोजित परिवर्तन की प्रभावशीलता का पता लगाना और समाज कल्याण तथा विकास कार्यक्रमों के सफल संचालन में योगदान करना है। इन विभिन्न लक्ष्यों या प्रयोजनों के आधार पर सामाजिक शोध कार्य किया जाता है।

प्रत्येक सामाजिक शोध के कुछ निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति तब तक नहीं की जा सकती जब तक योजनाबद्ध रूप में शोधकार्य का प्रारम्भ नहीं किया गया हो। इसी योजना की रूपरेखा की शोध प्रारचना (Research Design) कहते है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि एक सामाजिक शोध की समस्या या उपकल्पना जिस प्रकार की होगी, उसी के अनुसार शोध प्रारचना का निर्माण किया जाता है जिससे शोध कार्य को एक निश्चित दिशा प्राप्त हो सके और शोधकर्ता इधर-उधर भटकने से बच जाये।

जैसा कि पहले ही कहा गया है कि कोई भी सामाजिक शोध बिना किसी लक्ष्य या उद्देश्य के नहीं होता है। इस लक्ष्य का उद्देश्य विकास और स्पष्टीकरण शोध कार्य की अवधि में नहीं होता, अपितु वास्तविक अध्ययन प्रारम्भ होने से पूर्व ही इसका निर्धारण कर लिया जाता है। शोध के उद्देश्य के आधार पर अध्ययन विषय के विभिन्न विषय के कतिपय पक्षों को उद्घाटित करने के लिये पहले से ही बनाई गई योजना की रूप रेखा को शोध प्ररचना कहते है।

श्री एकॉफ ने प्ररचना का अर्थ समझाते हुऐ लिखा है कि "निर्णय क्रियात्मक करने की स्थिति आने से पूर्व ही निर्णय करने की प्रक्रिया को प्ररचना कहते है।"[1]

अतः यह स्पष्ट है कि सामाजिक शोध प्ररचना के अनेक प्रकार हैं और शोधकर्ता अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये सर्वाधिक उपयुक्त समझकर इनमें से किसी एक प्रकार का चयन कर लेता है और वह कौन सा प्रकार है यह ज्ञात होते ही शोध कार्य की प्रकृति व लक्ष्य स्पष्ट हो जाते हैं। जैसे, यदि हमें यह ज्ञात हो जाये कि शोध प्ररचना अन्वेषणात्मक है तो स्वतः ही यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी सामाजिक घटना के अन्तर्निहित कारणों की खोज करना ही उस शोध का उद्देश्य है। इस प्रकार शोधकार्य तथ्यों का विवरण मात्र होगा अथवा नवीन नियमों को प्रतिपादित किया जायेगा, उसका उस शोध कार्य में परीक्षण व प्रयोग का अधिक महत्व होगा, इन सब बातों को ध्यान में रखकर शोध कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व एक रूपरेखा बनाई जाती है, उसी को शोध प्ररचना कहते हैं।

समस्त शोधों का एक ही आधारभूत उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति है। परन्तु इस ज्ञान की प्राप्ति विभिन्न प्रकार से हो सकती है और उसी के अनुसार शोध प्ररचना का स्वरूप भी अलग-अलग होता है। समाजशास्त्रीय अध्ययनों में अन्वेषणात्मक, वर्णनात्मक,निदानात्मक तथा परीक्षणात्मक शोध प्ररचनाओं को प्रयोग में लाया

1.ऐक्कोफ, के.एल. डिजायन आफ सोसल रिसर्च पृष्ठ-5

जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में अन्वेषणात्मक शोध प्रारचना का प्रयोग किया गया है। अन्वेषणात्मक शोध प्रारचना के बारे में श्री सेलटिज व उनके साथियों ने लिखा है "अन्वेषणात्मक शोध प्रारचना उस अनुभव को प्राप्त करने के लिये आवश्यक है जो कि अधिक निश्चित अनुसंधान के हेतु सम्बद्ध उपकल्पना के निरूपण में सहायक होगा।"[1] इसी प्रकार के विचार श्री हंसराज ने अभिव्यक्त करते हुऐ प्रगट किये हैं, "अन्वेषणात्मे शोध किसी भी विशेष अध्ययन के लिये उपकल्पना का निर्माण करने तथा उससे सम्बन्धित अनुभव प्राप्त करने के लिये अनिवार्य है।"[2]

शोधकर्ता मध्यम वर्गीय परिवारों के निवासियों की सामाजिक - आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक समस्याओं को स्पष्ट करने के लिये अन्वेषणात्मक शोध प्रारचना का चयन किया। मान लीजिये हमें किसी विशेष सामाजिक स्थिति में तलाक प्राप्त व्यक्तियों में यौन व्यभिचार के विषय में अध्ययन करना है तो उसके लिये सबसे पहले उन कारकों का ज्ञान आवश्यक है जो इस प्रकार के व्यभिचार को उत्पन्न करते हैं। अन्वेषणात्मक शोध प्रारचना इन्हीं कारकों को खोज निकालने की एक योजना बन जाती है।

शोधकर्ता द्वारा अपनाई गई इस शोध प्रारचना की सफलता के लिये शोधकर्ता ने :-

1- सम्बद्ध साहित्य का अध्ययन किया,

2- अनुभव सर्वेक्षण-उन सभी व्यक्तियों से सम्बन्ध स्थापित किया जिनके विषय में उसे यह सूचना किसी कि शोध विषय के सम्बन्ध में उनको पर्याप्त अनुभव या ज्ञान है। ऐसे लोगों का व्यवहारिक अनुभव शोधकर्ता के लिये पथ प्रदर्शक बना, तथा

---

1. सेलटिज, जहोडा, डच.कुक रिसर्च मेथड इन सोसल रिलेशन, पृष्ठ -33

2. हंसराज थियोरी एण्ड प्रेक्टिस इन सोसल रिसर्च, पृष्ठ-69

3. अन्तर्दृष्टि प्रेरक घटनाओं का विश्लेषण जिससे शोधकर्ता अध्ययन वस्तु के सम्बन्ध में व्यवहारिक अन्तर्दृष्टि पनपी तथा शोध में अधिक सहायता मिली। प्रत्येक समुदाय के जीवन में दृष्टि आकर्षक, कुछ अत्यन्त सरल व स्पष्ट, कुछ व्याधिकीय, कुछ व्यक्तिगत विशिष्ट गुण सम्बन्धी घटनाऐं होती हैं जो कि अर्न्तदृष्टि को प्रोत्साहित करने में सहायक सिद्ध होती हैं।

निदर्शन :

'कुछ' को देखकर या परीक्षण कर 'सब' के बारे में अनुमान लगा लेने की विधि को निदर्शन कहते हैं। इस प्रविधि की आधारभूत मान्यता यह है कि इन 'कुछ' की विशेषताऐं 'सब' की आधारभूत विशेषताओं का उचित प्रतिनिधित्व करती है। यदि 'कुछ' का चुनाव ठीक तरह से किया जाये। 'सब' की परीक्षा करना या देखना असुविधाजनक, धनसापेक्ष और समय सापेक्ष हो सकता है।''[1] प्रतिनिधित्व करने वाले निदर्शनों का अध्ययन ही श्रेयस्कर है। शोध में निदर्शन प्रविधि का प्रयोग अत्यन्त लोकप्रिय है और वह इस अर्थ में, कि राज के जीवन में एक अनाड़ी आदमी भी इसका डटकर प्रयोग करता है। बाजार में गेहूँ, चावल अथवा दाल खरीदते समय बोरियों को खुलवाकर उनका एक-एक दाना कोई नहीं परखता अपितु बोरी में से एक मुट्ठी भर दाने को लेने में सावधानी बरतते हैं, ढेर या बोरी के भीतर हाथ डालकर मुट्ठी भर लेते हैं ताकि दुकारदार द्वारा ऊपर ही ऊपर सजाया हुआ माल ही केवल हाथ न लगे क्योंकि वह माल सम्पूर्ण ढेर या बोरी में रखे हुऐ माल का उचित प्रतिनिधित्व नहीं करेगा। इसलिये सावधानी की आवश्यकता है और इस कार्य में हम जितना सफल होगें उतना ही माल खरीदने में हमें कम धोखा होगा। यही व्यवहारिक सामाजिक शोध की निदर्शन प्रविधि है तिसका प्रयोग परिशुद्ध रूप में वैज्ञानिक शोध करने में किया जाता है। अनुसंधान कार्य मोटे तौर पर दो पद्धतियों के आधार पर किया जा सकता है। यदि हम केवल

---

1. मुखर्जी, रवीन्द्रनाथ (2001), सामाजिक शोध व सांख्यिकी, विवके प्रकाशन 7,यू.ए. जवाहर नगर,दिल्ली, पृष्ठ-279

अध्ययन विषय की जनसंख्या या इकाइयों को ही पद्धति के चुनाव का आधार बनाये। ये दोनों पद्धतियां जनगणना पद्धति एवं निदर्शन पद्धति है। जनगणना पद्धति को हम (Census) तथा निदर्शन पद्धति को (Sampling Method) कहते हैं। जैसे एक स्कूल के बच्चे का सामाजिक अध्ययन करना है तो स्कूल के प्रत्येक बच्चे से पूछताछ करेगें। निदर्शन पद्धति में प्रत्येक कक्षा के कुछ छात्रों को प्रतिनिधि चयन कर पूछताछ करेगें। निदर्शन के बारे में श्री याटन का मत है कि "निदर्शन शब्द का प्रयोग केवल किसी समग्र चीज की ईकाईयों के एक सेट या भाग के लिये किया जाना चाहिये जिसे इस विश्वास के साथ चुना गया है ि कवह समग्र का प्रतिनिधित्व करेगा।"[1] इसी प्रकार के विचार गुडे एवं हाट (1952:209) ने प्रगट किये है- एक निदर्शन जैसा कि नाम से स्पष्ट है, किसी विशाल सम्पूर्ण का छोटा प्रतिनिधि है।"[2] शोध कार्य में निदर्शन प्रविधि ही कई तरह से अधिक लाभप्रद सिद्ध हुई है क्योंकि इसके प्रयोग से समय की बचत, श्रम की बचत, अधिक गहन अध्ययन की सम्भावना, निष्कर्षो की परिशुद्धता तथा अन्य अनेक लाभ होते हैं।

निदर्शन प्रविधि का तात्पर्य उस विधि से है जिसकी सहायता से प्रतिनिधित्व पूर्ण निदर्शन का चुनाव किया जाता है। अध्ययन निष्कर्षो के लिये यह अति आवश्यक है कि निदर्शन समग्र का उचित प्रतिनिधित्व कर सके। इसलिये निदर्शन चुनाव का काम मनमाने ढंग से नहीं किया जा सकता है। इसलिये सुनिश्चित प्रविधियों को अपनाना आवश्यक है।

1- <u>दैव निदर्शन प्रणाली :-</u>

प्रतिनिधित्वपूर्ण निदर्शन के चुनाव में अनुसंधानकर्ता के स्वयं के पक्षपात तथा मिथ्या झुकाव अथवा पुर्वाग्रह की संभावना से बचने के लिये तथा सम्पूर्ण समग्र की प्रत्येक ईकाई को समान रूप से चुने जाने का अवसर प्रदान करने के

---

1. फ्रेंकयाटन, उधृत द्वारा मुखर्जी ,आ.एन. (2001): विवके प्रकाशन जवाहर नगर दिल्ली-7,पृष्ठ-280
2. विलियम, जे.गुड एण्ड पौल, के.हाट (1952): मैथड्स इन सोसल रिसर्च मैकग्रो हिल बुक को.इनक,न्यूयार्क पृष्ठ -209

लिये दैव निदर्शन प्रणाली द्वारा निदर्शनों का चुनाव एक सर्वश्रेष्ठ प्रणाली है। दैव निदर्शन प्रणाली के विषय में थॉमस कर्जन (1941) ने लिखा है कि, "दैव निदर्शन में आने या निकल जाने का अवसर घटना के लक्षण से स्वतंत्र है।"[1]

दैव निदर्शन प्रणाली में निदर्शन चुनने की कई प्रविधियां है। जिनमें (अ) लाटरी प्रणाली, (ब) कार्ड या टिकट प्रणाली, (स) नियमित अंकन प्रणाली, (द) अनियमित अंकन प्रणाली, (य) टिप्पेट प्रणाली, (र) ग्रिड प्रणाली, (ल) कोटा प्रणाली मुख्य है।

2- <u>उद्देश्यपूर्ण निदर्शन प्रणाली :-</u>

जब अनुसंधानकर्ता किसी विशेष उद्देश्य को सामने रखकर जानबूझकर समग्र में कुछ इकाईयों का चुनाव करता है वो उसे उद्देश्यपूर्ण निदर्शन या सविचार निदर्शन कहते हैं। श्री एडील्फ जन्सन ने उद्देश्यपूर्ण निदर्शन की अवधारणा को स्पष्ट करते हुऐ लिखा है- "उद्देश्यपूर्ण निदर्शन से अर्थ है इकाईयों के समूहों की एक संख्या को इस प्रकार चुनना कि चुने हुऐ समूह मिलकर उन विशषताओंके सम्बन्ध में यथासम्भव वही औसत अथवा अनुपात प्रदान करें जो कि समग्र में है और जिनकी सांख्यिकीय जानकारी पहले से ही है।"[2]

3- <u>संस्तरित निदर्शन प्रणाली :-</u> प्रो0 सिन पाओं यंग ने लिखा है कि - "संस्तरित निदर्शन का अर्थ है समग्र में से उप निदर्शनों को लेना जिनकी कि समाज विशेषताएें है जैसे- खेतों के प्रकार, खेतों के आकार, भूमि पर स्वामित्व, शिक्षा स्तर, आयु, लिंग, सामाजिक वर्ग आदि। उपनिदर्शनों के अन्तर्गत आने वाले इन तत्वों को एक साथ लेकर प्रारूप या श्रेणी के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।"[3]

---

1. थोमस करसन, मैकग्रोनक (1941) ऐलीमेन्ट्री स्टेटिसटिक, पृष्ठ-224
2. एडल्फ जेनसन.
3. हिसिन, पी.वी.यंग (1931) फेक्ट-फाइन्डिग विदरूरल पीपुल पृष्ठ-36-37

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने उद्देश्यपूर्ण निदर्शन प्रणाली अथवा सविचार निदर्शन प्रणाली का चयन किया क्योंकि शोधकर्ता ने मध्यम वर्गीय परिवारों निवासियों की समस्याओं के अध्ययन के विशेष उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुऐ समग्र में से इकाईयों का चुनाव किया है। सविचार निदर्शन या उद्देश्यपूर्ण निदर्शन कम खर्चीली है क्योंकि उद्देश्यपूर्ण होने के कारण निदर्शन का आकार बहुत बड़ा नहीं होता। जहाँ समग्र की कुछ इकाईयां अधिक महत्वपूर्ण होती है वहां यह प्रणाली अधिक उपयोगी साबित होती है। इस में समय, धन व श्रम की बचत होती है क्योंकि अध्ययन की इकाईयों के बारे में पहले ही निर्णय ले लिया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी ने झाँसी के 300 मध्यम वर्गीय परिवार जो वहां की आवास विकास कालौनियों- (1) नन्दनपुरा शिवपुरी रोड तथा (2) आवास विकास कालौनी पिछोर, कानपुर रोड नामक स्थानों पर स्थित थी। नन्दनपुरा से 200 परिवार क्योंकि वहां 400 परिवार मध्यम वर्गीय जो श्रेणी- अ तथा ब में निवास करते थे तथा 100 परिवार पिछोर जहां 300 मध्यम वर्गीय परिवार निवास करते थे निदर्शितों का चयन देव निदर्शन विधि की नियमित अंकन प्रणाली द्वारा किया गया जिसके चयन अभिकल्प पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश डालती है।

चयनित निदर्श अभिकल्प

क्रम संख्या	कालौनी का नाम	कुल परिवारों की संख्या	चयनित निदर्श	प्रतिशत
1.	नन्दनपुरा आवास विकास कालौनी	400	200	50%
2.	पिछोर आवास विकास कालौनी	300	100	33%
	योग	700	300	

निदर्शन चुनाव में शोधकर्ता द्वारा जिन चरणों का पालन किया गया वे क्रमशः हैः-

1. समग्र को निश्चित करना, 2. निदर्शन इकाई का निर्धारण,

2. इकाईयों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के साधन सूची बनाना,

4. निदर्शनों के आधार, 5. निदर्शन पद्धति का चुनाव,

6. निदर्शन का चुनाव इत्यादि।

तथ्यों के स्रोत :-

वास्तविक सूचना या तथ्यां के बिना सामाजिक अनुसंधान या शोध वास्तव में एक अपंग प्राणी की भांति है। अनुसंधान की सफलता इसी बात पर निर्भर रहती है कि अनुसंधानकर्ता अपने अध्ययन विषय के सम्बन्ध में कितने वास्तविक निर्भर योग्य सूचनाओं और तथ्यों को एकत्रित करने में सफल होता है। अतः सूचना या तथ्यों के स्रोत के महत्व को सामाजिक अनुसंधान के क्षेत्र में कम नहीं किया जा सकता। साथ ही, ये सूचनाऐं या तथ्य एक ही प्रकार के नहीं होते है। इनमें भी कई प्रकार के भेद हैं और इन प्रकारों के विषय में भी स्पष्ट ज्ञान का होना एक सफल शोधकर्ता के लिये आवश्यक है। किस स्रोत से किस प्रकार की सूचना उसे प्राप्त हो सकती है, इस बात की स्पष्ट जानकारी न होने पर अनुसंधानकर्ता केवल इधर-उधर भटकता ही रहेगा और उसका काफी समय तथा श्रम व्यर्थ चला जायेगा। अतः सूचना या तथ्यों के प्रकार तथा स्रोतों के बारे में ज्ञान अति आवश्यक है।

सामाजिक शोध में विभिन्न प्रकार की सूचनाओं या तथ्यों की आवश्यकता होती है। इन्हें मोटे तौर पर दो भागों में विभाजित किया जा सकता है- (1) प्राथमिक तथ्य या सूचनाऐं तथा (2) द्वितीयक तथ्य या सूचनाऐं। प्राथमिक तथ्य वे मौलिक सूचनाऐं या आंकड़े होते है जो कि एक शोधकर्ता वास्तविक अध्ययन स्थल (Field) में जाकर विषय या समस्या से सम्बन्धित जीवित व्यक्तियों से साक्षात्कार

(Interview) करके अथवा अनुसूची (Schedule) या प्रश्नावली की सहायता से एकत्र करता है अथवा प्रत्यक्ष निरीक्षण के द्वारा प्राप्त करता है जैसा कि-

श्री पामर (1928:57) ने अपने विचार प्रगट किये हैं, - "ऐसे व्यक्ति न केवल एक विषय की विद्यमान समस्याओं को बताने की योग्यता रखते हैं अपितु एक सामाजिक प्रकिया में अन्तर्निहित महत्वपूर्ण चरण व निरीक्षण योग्य झुकावों के सम्बन्ध में भी संकेत कर सकते हैं।"[1]

श्री मती यंग (1960:127) ने सूचनाओं के स्रोतों को दो मोटे भागों में विभाजित किया हैः- 1. प्रलेखी स्रोत तथा, 2. क्षेत्रीय स्रोत

इस शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने मध्यम वर्गीय परिवारों में रहने वाले परिवारों को इकाई मानकर प्राथमिक तथ्यों के स्रोत का चयन किया तथा स्वयं के क्षेत्रीय अवलोकन को भी केन्द्र बनाया । शोध अध्ययन में द्वैतीयक स्रोत-सम्बन्धित पुस्तकें, जीवन इतिहास, प्रतिवेदन, समाचार पत्रों में प्रकाशित विषय वस्तु को भी प्रमाण के तौर पर प्रयोग में लाया गया क्योंकि भारत जैसे देश में जहां की सांख्यिकीय सामग्री प्राप्त करने के स्रोत तथा साधन सीमित व दोषपूर्ण है, जनगणना प्रतिवेदनों को नहीं नकारा जा सकता है। इन प्रतिवेदनों द्वारा सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक जीवन के अनेक महत्वपूर्ण पक्षों के विषय में विश्वसनीय आंकड़े व सूचनाऐं प्राप्त हो जाती हैं। जैसे- अपने देश में परिवार का आकर, स्त्री-पुरूष का अनुपात, जाति व धर्म के समर्थकों की संख्या, विभिन्न पेशों में लगी श्रम शक्ति, शिक्षा का स्तर, आयु का वर्गीकरण, जन्म व मृत्युदर, वैवाहिक स्तर तथा जनसंख्या आदि। इसका राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, व्यापारिक बहुत महत्व होता है।

किसी भी सामाजिक अनुसंधान का उद्देश्य एक घटना विशेष के सम्बन्ध में वैज्ञानिक निष्कर्ष निकालना होता है। वैज्ञानिक निष्कर्ष कोई अटकलपच्चू

---

1. पालमार, वी.एम.(1928)फील्ड स्टडी इन सोशियोलोजी, यूनिवरसिटी आफ शिकागो,पृष्ठ-57

निष्कर्ष नहीं अपितु वास्तविक तथ्यों (Actual Facts) पर आधारित यथार्थ (Exact) व निश्चित निष्कर्ष होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सामाजिक शोध की बुनियादी शर्त अध्ययन विषय सक सम्बन्धित वास्तविक तथ्यों का संकलन करना है।

तथ्य संकलन :-

वास्तविक तथ्यों को काल्पनिक ढंग से एकत्र नहीं किया जा सकता। इसके लिये तो कुछ प्रमाण सिद्ध तरीकों का होना आवश्यक है। सामाजिक अनुसंधान के लिये आवश्यक वास्तविक तथ्यों को एकत्र करने के लिये काम में लाये गये निश्चित व प्रमाण सिद्ध तरीकों को ही तथ्य संकलन की प्रविधि कहते है। वैज्ञानिक विश्लेषण और व्याख्या के लिये जिन वास्तविक तथ्यों की आवश्यकता होती है उन्हें एकत्र करने के लिये शोधकर्ता जिस विधि या तरीके को अपनाता है वही उसके लिये प्रविधि होती है। प्रो0 मोसर (1961:271) ने लिखा है कि, "प्रविधियां एक सामाजिक वैज्ञानिक के लिये वे मान्य तथा सुव्यवस्थित तरीके हैं जिन्हें वह अपने अध्ययन में विषय से सम्बन्धित विश्वसनीय (Reliable) तथ्यों को प्राप्त करने के लिये उपयोग में लाता है।"[1]

सामाजिक शोध का आधार विश्वसनीय तथ्य, सूचनाऐं आंकडे आदि हैं। इनको एकत्र करने की कुछ प्रविधियों का समाजशास्त्र में अपने अध्ययन विषय में सामाजिक घटनाओं की प्रकृति के अनुसार विकसित किया है। इन प्रविधियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :-

1. प्रश्नावली :- जब काफी बडे क्षेत्र में सूचनादाता फैले होते हैं और उनसे व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करना सम्भव नहीं होता तो उनसे सूचनाऐं एकत्र करने के लिये प्रश्नावली का डाक द्वारा एक अनुरोध पत्र के साथ भेज दिया जाता है। सूचनादाता उन्हें भरकर शोधकर्ता के पास भेज देता है।

1. यंग, पी.वी. (1960) साइंटीफिक सोसल सर्वे एण्ड रिसर्च, एशिया पवलिसिंग हाऊस, बोम्बे,पृष्ठ-127

2. <u>अनुसूची :-</u> अनुसूची को स्वयं शोधकर्ता सूचनादाता से मिलकर उत्तरों को भरता है। ये सभी प्रकार के उत्तरदाताओं से तथ्य संकलन की प्रविधि है।

3. <u>साक्षात्कार :-</u> इसके द्वारा शोधकर्ता उत्तरदाताओं से भेंट कर विषय के सम्बन्ध में आमने-सामने बैठकर सूचनाऐं स्वयं भरता है।

4. <u>निरीक्षण :-</u> जिसमें सूचनाऐं अध्ययन स्थल पर जाकर वास्तविक निरीक्षण के द्वारा भी प्राप्त की जा सकती है। ये निरीक्षण सहभागी व असहभागी दोनों प्रकार का हो सकता है।

<u>वैयक्तिक अध्ययन :-</u> सामाजिक अनुसंधान के क्षेत्र में जिन विधियां द्वारा अध्ययन किया जाता है, उनमें वैयक्तिक अध्ययन विधि महत्वपूर्ण है। इसमें अनेक को छोड़कर एक के बारे में सबसे अधिक जानकारी पाने का प्रयास किया जाता है। गुड एण्ड हाट (1952) के शब्दों में, "वैयक्तिक अध्ययन में हम एक विशेष प्रकार के सतत अनुभवों, सामाजिक शक्तियों तथा प्रभावों की पृष्ठभूमि में किसी इकाई का गहन तर्कयुक्त अध्ययन ही वैयक्तिक अध्ययन है।"[1]

इस शोध अध्ययन में शोधकर्ता के द्वारा साक्षात्कार अनुसूची को प्रयोग में लाने से पूर्व अनुसूची का क्षेत्र में परीक्षण किया गया तथा बाद में अनुसूची की त्रुटियों को दूर किया गया। तत्पश्चात् साक्षात्कार अनुसूची को प्रयोग में लाया गया। क्योंकि व्यक्तियों की भावनाओं, मनोवृत्तियों, प्रवृत्तियों और उद्वेगों का अध्ययन कैसे किया जाये, साक्षात्कार प्रविधि ही इसका निदान प्रस्तुत करती है। सामाजिक अनुसंधान की सर्वाधिक प्रचलित प्रविधियों में सम्भवतः इस प्रविधि का स्थान सर्वोपरि है। प्रो0आलपोर्ट ने इस प्रविधि की उत्पत्ति के बारे में कहा है कि, "यदि हम यह जानना चाहते है कि लोग क्या महसूस करते हैं, क्या अनुभव करते हैं और क्या याद रखते हैं, उनकी भावनाऐं व उद्देश्य क्या हैं, तो उनसे स्वयं क्यों नहीं पूछते"? साक्षात्कार प्रविधि पर प्रकाश डालते हुए श्री वी.एम. पालमर

---

1. मौसर, सी. ए. (1961): सर्वेमैथड इन सोसल इन्वेस्टीगेशन, पृष्ठ-271

(1928:170) ने कहा है कि, "साक्षात्कार दो व्यक्तियों के बीच एक सामाजिक स्थिति है, जिसमें अन्तर्निहित मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के अन्तर्गत यह आवश्यक है कि दोनों व्यक्ति परस्पर उत्तर-प्रत्युत्तर करते रहें। यद्यपि साक्षात्कार में सामाजिक शोध के उद्देश्य से सम्बन्धित पक्षों से अध्ययन विषय के सम्बन्ध में काफी कुछ उत्तर प्राप्त होने चाहिये।"[1]

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता में परिस्थितियों से रूबरू होने के लिये निरीक्षण प्रविधि का भी प्रयोग किया है। जिसके बारे में प्रो0 गुड एण्ड हाट (1952:119) ने लिखा हे कि, "विज्ञान निरीक्षण से प्रारम्भ होता है और फिर सत्यापन के लिये अन्तिम रूप से निरीक्षण पर ही लौटकर आना पड़ता है।"[2] वास्तव में कोई भी शोधकर्ता किसी भी घटना या अवस्था को उस समय तक स्वीकार नहीं करता जब तक कि वह स्वयं उसका अपनी इन्द्रियों से निरीक्षण (Observation) न कर लें।

सामाजिक विज्ञानों के बारे में भी यह तथ्य सत्य है। कोई भी शोधकर्ता तब तक सफलता प्राप्त नहीं कर पाता जब तक शोध में निरीक्षण विधि का प्रयोग नहीं किया गया हो। इसी निरीक्षण प्रविधि का समाज वैज्ञानिक द्वारा अपने ही साथी एवं स्वजातीय मनुष्यों एवं स्त्रियों तथा संस्थाओं के निरीक्षण हेतु प्रयोग किया जाता है। यदि संक्षिप्त में कहा जाये तो निरीक्षण कार्य कारण अथवा पारस्परिक सम्बन्ध को जानने के लिये स्वाभाविक रूप से घटित होने वाली घटनाओं का सूक्ष्म निरीक्षण है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से तथ्य संकलन का कार्य किया है। शोधकर्ता ने अनुसूची में अधिकांशतः संयोजित प्रश्न (Structural Question) तथा दोहरे प्रश्नों (Dichotomous Questions) का ही निर्माण

---

1. पालमार, वी.एम.(1928)फील्ड स्टडी इन सोशियोलोजी,पृष्ठ-170
2. विलियम, जे.गुड एण्ड पौल, के हाट (1952) मैथड इन सोसल रिसर्च मैकग्रोहिल बुक कम्पनी न्यूयार्क पृष्ठ-15

किया तथा खुले प्रश्नों (Open ended Questions) को नहीं रखा गया क्योंकि उनके वर्गीकरण में तथा सारणीकरण में पर्याप्त समय तथा धन की आवश्यकता पड़ती है। इस कार्य के लिये उसने साक्षात्कार की निम्न प्रक्रिया को अपनाया :-

1. <u>साक्षात्कार :-</u> साक्षात्कार में सामाजिक अन्तः क्रिया के द्वारा शोधकर्ता ने उत्तरदाताओं से अध्ययन से सम्बन्धित सूचनाऐं प्राप्त करने के लिये साक्षात्कार किया। शोध की परिशुद्धता बनाये रखने के लिये शोधकर्ता ने स्वयं साक्षात्कार अनुसूची के अनुसार निदर्शनों से आमने-सामने की परिस्थिति में बैठ कर तथ्यों को एकत्र किया तथा किसी उत्तरदाता के अनुपस्थित होने पर दूसरे उत्तरदाता का चयन करके सूचनाऐं एकत्र की।

2. <u>सहयोग की याचना :-</u> शोधकर्ता ने शोध के उद्देश्य को निदर्शनों के सम्मुख स्पष्ट किया तथा सहयोग की प्रार्थना की तथा उन्हें विश्वास दिलाया कि उनके द्वारा दी गई सभी सूचनाऐं अत्यन्त गोपनीय रखी जायेंगी और यह भी बताया कि आपके सहयोग के बिना मलिन आवासों के निवासियों की सामाजिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक समस्याओं का निदान असम्भव है।

3. <u>साक्षात्कार का प्रारम्भ :-</u> सहयोग की याचना के बाद शोधकर्ता ने साक्षात्कार प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम शोधकर्ता ने प्राथमिक प्रश्नों नाम, आयु, शिक्षा, व्यवसाय आदि पूछे उसके बाद अध्ययन से सम्बन्धित प्रश्न पूछे । वास्तव में निदर्शनों से सूचना प्राप्त करना साक्षात्कार का प्रमुख उद्देश्य होता है।

4. <u>उत्साहवर्धक वाक्यों का प्रयोग :-</u> शोधकर्ता ने साक्षात्कार प्रक्रिया की अवधि में ''आपकी सूचनाऐं मलिन आवासों के निवासियों की समस्याऐं हल करने में काफी सहायक है'' तथा ''आपने कई नई बातें बताई जो महत्वपूर्ण है'' ऐसे वाक्यों को बीच-बीच में दोहराकर साक्षात्कारदाताओं का उत्साहवर्धन किया ।

5. <u>स्मरण कराना :-</u> शोधकर्ता को जब भी ऐसा लगा कि साक्षात्कारदाता अपने-अपने अनुभवों व भावना में बह गया है और मुख्य विषय से दूर हो गया है तो शोधकर्ता ने उसे मुख्य विषय का ध्यान दिलाया।

6. <u>सूचना को नोट करना :-</u> साक्षात्कार की स्वतन्त्र प्रक्रिया में शोधकर्ता ने निदर्शनों द्वारा प्रदान की गई सूचनाओं को अनुसूची के प्रश्नों के सम्मुख नोट भी किया ताकि सूचनादाता से वार्तालाप में कोई विघ्न न पड़े।

शोधकर्ता को तथ्यों को एकत्र करने में साक्षात्कार प्रक्रिया के दौरान कुछ कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ा :-

1. उत्तरदाता का घर पर न मिलना।
2. कुछ उत्तरदाताओं द्वारा साक्षात्कार के लिये मना कर देना।
3. अधिक समय लगाना तथा
4. व्यक्तिगत मामलों में तथ्यों को छिपाना आदि।

शोधकर्ता ने जो उत्तरदाता घर पर नहीं मिले उनके स्थान पर अगले उत्तरदाता का चयन कर लिया। जिन उत्तरदाताओं ने साक्षात्कार के लिये मना कर दिया उनके सम्बन्धियों से हस्तक्षेप कराकर राजी करा लिया गया। व्यक्तिगत मामलों में तथ्यों को छिपाने की समस्या को उनकी प्रशंसा करके तथा "उनके अनुभव बहुमूल्य है" कहकर उन्हें व्यक्त करने हेतु प्रेरित किया।

<u>तथ्यों का वर्गीकरण :-</u>

सामाजिक अनुसंधान, शोध का आधार अध्ययन विषय से सम्बन्धित वास्तविक तथ्य हैं। इन तथ्यों को निरीक्षण, साक्षात्कार, अनुसूची तथा प्रश्नावली की सहायता से एकत्र किया जाता है, परन्तु इस प्रकार एकत्र तथ्यों के ढेर से कुछ भी निष्कर्ष निकाला नहीं जा सकता और न ही विषय के सम्बन्ध में कुछ भी जाना जा सकता है। तथ्यो का पहाड़ कुछ नहीं कहता जब तक उसे कुछ व्यवस्थित स्वरूप प्रदान न किया जाए और इसके लिये तथ्यों का वर्गीकरण आवश्यक होता

है। जब हम तथ्यों को उसमें पाई जाने वाली समानता या भिन्नता के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में व्यवस्थित रूप में विभाजित करते हैं, तो वह वर्गीकरण कहलाता है।

तथ्यों के वर्गीकरण पर प्रकाश डालते हुऐ श्री कोनोर (1936:18) ने लिखा है कि, ''वर्गीकरण तथ्यों को उनकी समानता तथा निकटता के आधार पर समूहों तथा वर्गो में क्रमबद्ध करने तथा व्यक्गित इकाईयों की भिन्नता के बीच पाये जाने वाले गुणों की एकात्मकता को प्रगट करने की एक प्रक्रिया है।''[1] श्री एलहान्स ने तथ्यों के वर्गीकरण के सम्बन्ध में कुछ ऐसे ही विचार व्यक्त किये है -''सादृश्यताओं व समानताओं के अनुसार तथ्यों को समूहों एवं वर्गो में व्यवस्थित करने की प्रक्रिया परिभाषिक दृष्टि से वर्गीकरण कहलाती है।''[2]

सामाजिक अनुसंधान में वर्गीकरण का अत्यन्त महत्व है क्योंकि इसके द्वारा जटिल, बिखरे हुऐ, परस्पर असम्बद्ध तथ्यों को थोड़े से, समझने योग्य तथा तर्कसंगत समूह में रखना पड़ता है। इकाईयों की समानता तथा असमानता वर्गीकरण के द्वारा स्पष्ट होती है। वर्गीकरण के द्वारा दो वर्गो के तुलनात्मक अध्ययन का कार्य सरल हो जाता है। वर्गीकरण के द्वारा संकलित की गई सूचनाऐं जब वर्गो में रखी जाती है तो वह स्वतः प्रगट हो जाती है। वर्गीकरण तथ्यों को विश्लेषण व व्याख्या के लिये सरल बनाता है तथा वर्गीकरण के द्वारा संकलित तथ्य संक्षिप्त तथा बोधगम्य हो जाते है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सूचनाओं को एकत्र कर शोधकर्ता ने उन्हें गुणात्मक अर्थात् सरल या विभेदात्मक और बहुगुणी वर्गीकृत किया । इसके साथ-साथ गणनात्मक वर्गीकरण में खण्डित श्रेणी के अनुसार भी तथ्यों का वर्गीकरण किया है। ऐसा करने से सूचनाओं को समझने में बुद्धि पर अनावश्यक

1. कोनोर, एल.आर.(1936) ए स्टैटिस्टिक्स इन थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस, पृष्ठ-18
2. एलहान्स, डी. एन. फण्डामेण्टल ऑफ स्टेटिसटिक्स, पृष्ठ-56

जोर नहीं देना पड़ा और इस प्रकार वर्गीकरण सांख्यिकीय दृष्टि से भी शुद्ध हो गया।

<u>तथ्यों का सारणीयन :-</u>

सामाजिक अनुसंधान में वर्गीकरण की प्रक्रिया के पश्चात् सामग्री को और भी स्पष्ट तथा बोधगम्य करने के लिये तथ्यों का सारणीयन किया जाता है। वास्तव में, सारणीयन वर्गीकरण के पश्चात् विश्लेषण कार्य में अगला कदम होता है। इसके माध्यम से तथ्यों में सरलता और स्पष्टता आती है और गणनात्मक तथ्य अधिक व्यवस्थित होकर प्रदर्शन के योग्य बन जाते है। इसके अन्तर्गत तथ्यों को विभिन्न स्तम्भों (Columns) तथा पंक्तियों में प्रस्तुत किया जाता है। जिससे तथ्यों को समझाने में सुविधा व सरलता हो। सर्वश्री जहोदा, ज्यूड्स, कुक आदि ने लिखा है कि, "जिस प्रकार संकेतन (Coding) को तथ्यों के श्रेणीबद्ध करने की प्राविधिक पद्धति कहा जाता है, उसी प्रकार सारणीयन को सांख्यिकीय तत्वों के विश्लेषण की प्राविधिक प्रक्रिया का अंग माना जाता है।"[1] यही कारण है कि श्री राबर्ट ई० चाड्डाक (1925:43) ने लिखा है कि, "सामाजिक विज्ञानों में वर्गीकरण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि सामाजिक घटनाओं में एक परिस्थिति को अनेक कारक प्रभावित करते हैं तथा उन कारकों में अत्यधिक भिन्नताऐं भी होती है।"[2]

सारणीयन के बारे में एम० के० घोष तथा एस० सी० चतुर्वेदी (1950:94) ने लिखा है कि, "दो दिशाओं में पढ़ा जा सके इस रूप में कुछ पंक्तियों तथा स्तम्भों में तथ्यों को एक क्रमबद्ध तौर पर व्यवस्थित करने की प्रक्रिया को सारणीयन कहा जाता है।"[3] सारणीयन का सामान्य उद्देश्य तथ्यों को सुस्पष्ट तथा बोधगम्य बनाना, उनकी विशेषताओं को प्रदर्शित करना, तथ्यों को संक्षिप्त रूप प्रदान

---

1. जहोडा डच एण्ड डब्लू रिसर्च मैथड इन सोसल इनवेस्टीगेशन पृष्ठ-270
2. रोवर्ट, इ. चन्ढोक (1925) प्रन्शीपल एण्ड मैथड ऑफ स्टेटिक्स, होगटन मिफिन कम्पनी वोस्टन पृष्ठ-43
3. घोष, एम. के. तथा चतुर्वेदी, एस. सी. (1950) स्टेटिक्स थ्योरी एण्ड प्रक्टिस पृष्ठ-94

करना तथा तथ्यों को तुलनात्मक बनाना है। इसलिये श्री सैक्रिस्ट ने लिखा है कि, "सारणी वह साधन है जिससे वर्गीकरण द्वारा की गई विवेचना को स्थायी स्वरूप प्रदान किया जाता है तथा समान व तुलनात्मक इकाई को उचित स्थान पर रखा जाता है।"[1] यही कारण है कि पी0वी0 यंग ने सांख्यिकीय सारणी को सांख्यिकीय की आशुलिपि (Shorthand) कहते हुऐ बताया कि इससे उनमें आकर्षकता, समुचित आकार, तुलना की सुविधा, स्पष्टता तथा सरलता, उद्‌देश्य के अनुकूल तथा वैज्ञानिकता का समावेश हो जाता है। प्रो0 थॉमसन ने ठीक ही लिखा है कि, "एक जंगल को साफ करके उसके स्थान पर एक 'महानगरी' बनाने से सभ्यता व संस्कृति के तत्वों को जिस भांति सुस्पष्टता व सुनिश्चितता प्राप्त होती है, उसी प्रकार संकलित तत्वों के ढेरों का सारणीयन कर लेने से उनके अन्तर्निहित गुण प्रगट हो जाते हैं और सम्पूर्ण विषय के सम्बन्ध में एक सामान्य ज्ञान प्राप्त होता है। वैज्ञानिक अनुसंधान में सारणीयन आवश्यक नहीं अनिवार्य है।"

इस शोध अध्ययन के प्रतिवेदन में शोधकर्ता ने तथ्यों को बोधगम्य बनाने के लिये आवृत्ति सारणी (Frequency Tables) तथा सरल सारणी (Simple Tables) का प्रयोग ही नहीं किया अपितु शोधकर्ता ने सारणी निर्माण के आवश्यक नियम तथा सावधानियाँ भी बरतीं जैसे :-

1. सारणी का शीर्षक लिखना,
2. सारणी के स्तम्भों का आकार उस पेज के आकार के रूप में रखना जिस पर सारणी बनाई गई है,
3. अनुशीर्षक Captions (कालम विशेष में किन आंकड़ों को प्रस्तुत किया गया है)
4. पंक्तियों में सूचना लिखना,
5. स्तम्भों का विभाजन,
6. स्तम्भों को क्रम में लिखना,
7. कुल योग तथा

---

1. होरेश, सैक्रिष्ट सोसल सर्वे एण्ड रिसर्च, पृष्ठ-273

8. टिप्पणियाँ आदि।

सारणीयन से समस्त संकलित तथ्य एक तर्क पूर्ण ढंग से व्यवस्थित हो जाते हैं, सारणीयन में तथ्यों को एक सरल तथा स्पष्ट स्वरूप मिल जाता है। इससें सांख्यिकीय विश्लेषण में बहुत मदद मिलती है, सारणीयन तुलनात्मक अध्ययन कार्य को सरल बना देता है, सारणीयन से समय तथा स्थान की बचत होती है तथा सारणीयन वैज्ञानिक विश्लेषण तथा व्याख्या के कार्य को सरल बनाता है।

तथ्यों का विश्लेषण तथा व्याख्या :- श्रीमती पी0वी0 यंग (1960:509) ने लिखा है कि वैज्ञानिक विश्लेषण यह मानता है कि तथ्यों के संकलन के पीछे स्वयं तथ्यों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण व रहस्योदघाटक (Revealing) और कुछ भी है, यदि सुव्यवस्थित तथ्यों को सम्पूर्ण अध्ययन से सम्बन्धित किया जाये तो उनका महत्वपूर्ण सामान्य अर्थ प्रगट हो सकता है जिसके आधार पर घटना की सप्रमाण व्याख्यायें प्रस्तुत की जा सकती है।''[1] इस कथन का तात्पर्य यही है कि शोध कार्य में केवल तथ्यों का पहाड़ एकत्र कर लेने से ही अध्ययन विषय का वास्तविक अर्थ, कारण तथा परिणाम स्पष्ट नहीं हो सकता जब तक उन एकत्र तथ्यों को सुव्यवस्थित करके उनका विश्लेषण व व्याख्या न की जाये। प्रख्यात फ्रैन्च गणितशास्त्री श्री प्लेवेन केयर ने उचित ही लिखा है कि, "जिस प्रकार एक मकान पत्थरों से बनता है उसी प्रकार विज्ञान का निर्माण तथ्यों से होता है, पर केवल तथ्यों का एक संकलन उसी भांति विज्ञान नहीं है जैसा पत्थरों का एक ढेर मकान नहीं है।''[2]

अतः विज्ञान के लिये यह आवश्यक है कि एकत्र तथ्यों का एक संकलन सुव्यवस्थित करके उनका विश्लेषण व व्याख्या की जाये ताकि विषय के सम्बन्ध में सच्चे ज्ञान की प्राप्ति सम्भव हो।

---

1. यंग, पी.वी. (1960): साईन्टीफिक सोसल सर्वे एण्ड रिसर्च, एसिया पवलिसिंग हाऊस, बोम्बे, पृष्ठ -509
2. प्लेवेन केयर.

तथ्यों के विश्लेषण व व्याख्या की आधारभूत आवश्यकता यह है कि यदि ऐसा न किया गया तो संकलित तथ्य अर्थहीन ही बने रहेंगे और उनसे अध्ययन का कोई भी परिणाम निकालना हमारे लिये सम्भव नहीं होगा। इस अर्थ में तथ्यों के विश्लेषण तथा व्याख्या के बिना शोध कार्य अपूर्ण ही रह जायेगा। यही कारण है कि श्रीमती यंग (1960:309) ने वैज्ञानिक विश्लेषण को "शोध का रचनात्मक पक्ष" कहा है।[1]

सामाजिक शोधकर्ता किसी भी चीज या घटना को स्वयं सिद्ध नहीं मान लेता। यह तो संकलित तथ्यों, विद्यमान आदर्शों तथा अन्तर्निहित सामाजिक दर्शन को सामयिक मानता है और इसलिये कोई भी प्रयोगसिद्ध परिणाम निकालने के लिये संकलित तथ्यों की सावधनीपूर्वक जांच, उनके पारस्परिक सम्बन्धों तथा उनका सम्पूर्ण घटना के साथ सम्बन्ध के सन्दर्भ में करना उसके लिये आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार तथ्यों का विश्लेषण करने के दौरान ही वह पुरानी अवधारणाओं की परीक्षा करने अथवा नवीन चुनौती देने वाली अवधारणाओं को ढूँढ़ निकालने में सफल हो सकता है। साथ ही, इस प्रकार के विश्लेषण से उसे विषय के सम्बन्ध में जो अन्तर्दृष्टि प्राप्त होती है उसी के आधार पर वह अवधारणाओं की पुर्नपरीक्षा करता है और इस प्रकार तथ्यों की व्याख्या के लिये एक अधिक ठोस आधार को प्राप्त करता है। अतः तथ्यों के उचित विश्लेषण के बिना अध्ययन, विषय की वास्तविक व्याख्या सम्भव नहीं और तथ्ययुक्त व्याख्या के बिना शोधकार्य का कोई परिणाम निकल ही नहीं सकता है।

श्रीमती यंग (1960:310) के अनुसार, "क्रमबद्ध विश्लेषण का कार्य एक ठोस बौद्धिक भवन के विचार के एक संगठन का निर्माण करना है जो कि एकत्रित तथ्यों को उनके उचित स्थान तथा सम्बन्धों को प्रस्थापित करने में सहायक होगा ताकि उनसे सामान्य निष्कर्षो को निकाला जा सके।"[2]

---

1. पी. वी. यंग (1960): साईन्टीफिक सोसल सर्वे एण्ड रिसर्च, एसिया पवलिसिंग हाऊस, बोम्बे, पृष्ठ -309
2. यंग, पी.वी. (1960): साईन्टीफिक सोसल सर्वे एण्ड रिसर्च, एसिया पवलिसिंग हाऊस, बोम्बे, पृष्ठ -310

इस प्रकार तथ्यों के विश्लेषण के बिना किसी भी विषय या घटना के कार्यकारण सम्बन्ध की व्याख्या सम्भव नहीं है और इस प्रकार की व्याख्या के बिना न तो विज्ञान की कोई उन्नति सम्भव है और न ही वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति। विश्लेषण व व्याख्या के आधार पर ही वास्तविक वैज्ञानिक नियमों को प्रतिपादित किया जा सकता है। पुराने सिद्धान्तों या नियमों की परीक्षा करने, नवीन सिद्धान्तों या नियमों को प्रतिपादित करने अथवा पुराने सिद्धान्तों या नियमों को गलत प्रमाणित करने के लिये एकत्रित तथ्यों का विश्लेषण व व्याख्या आवश्यक है। स्वयं तथ्य मूक होते हैं वे कुछ नहीं कहते पर उनका क्रमबद्ध विश्लेषण व व्याख्या करके उन्हें मुखरित किया जाता है।

इस शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने उपरोक्त सभी मार्ग दर्शनों एवं सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर एकत्र तथ्यों को वर्गीकृत कर उनको सारणीबद्ध करके अभिवृत्तियों को प्रतिशतों में विश्लेषण किया है जो सरस, सरल तथा सुबोध भी हो गया। विश्लेषण की व्याख्या जैसी समाज शास्त्र के शोध प्रतिवेदनों में प्रस्तुत की जाती है उसी प्रकार इसमें भी की गई है।

<u>तथ्यों का चित्रमय प्रदर्शन :-</u>

सांख्यिकीय विज्ञान का मुख्य कार्य सांख्यिकीय तथ्यों को सरलतम रूप प्रदान करना है। जिससे कि उन तथ्यों को शीघ्र एवं सरलता से समझा जा सके और उनके विषय में निष्कर्ष निकाला जा सके। प्रायः यह देखा गया है कि तथ्यों का वर्गीकरण और सारणीयन कर लेने से बिखरे हुऐ संकलित तथ्यों के ढेर को क्रमबद्ध, व्यवस्थित व संक्षिप्त रूप मिल जाता है जिसके कारण उन्हें समझना सरल हो जाता है। परन्तु इन संकलित तथ्यों का और भी प्रभावशाली रूप इस का चित्रमय प्रदर्शन है। आधुनिक समय में संख्यात्मक तथ्यों का चित्रों द्वारा प्रदर्शन एक विस्तृत कला बन गई है और इस दिशा में निरन्तर प्रगति करने के सम्बन्ध में प्रयत्नशीलता भी बढ़ती जा रही है। इसका कारण भी स्पष्ट है,

साधारण व्यक्ति के लिये संख्याऐं या आंकड़े प्रायः नीरस, जटिल तथा अरूचिकर होते है। इसलिये संख्या की ओर न तो वह ध्यान देता है और न ही संख्याओं में उसकी कोई रूचि होती है। इसके विपरीत चित्र स्वतः ही आकर्षक होते हैं और उन्हें देखकर वह प्रभावित हुऐ बिना नहीं रह सकता है। चित्रों द्वारा तथ्यों के प्रदर्शन की यही सार्थकता और यही चित्रों की बढ़ती हुई लोकप्रियता का रहस्य है। इसलिये वेडिंग्टन को लिखना ही पड़ा कि, " भली प्रकार से रचित एक चित्र आंखों को प्रभावित करता है और मस्तिष्क को भी, क्योंकि चित्र उन व्यक्तियों के लिये व्यवहारिक, स्पष्ट तथा शीघ्र समझने योग्य होता है जो प्रदर्शन की पद्धति से अनभिज्ञ होते है।"[1]

यथार्थ सारणीयन तथ्यों के वैज्ञानिक विश्लेषण तथा व्याख्या में अत्यन्त सहायक सिद्ध होता है। फिर भी साधारण जनता के लिये सारणीयन में दिये गये अंक विशेष अर्थ नहीं रखते । ऐसे व्यक्तियों के लिये सारणी में उल्लेखित तथ्यों की अन्तर्निहित प्रकृति व परिणामों को समझना बहुत कठिन होता हैं। इसके विपरीत इन्हीं अंकों का चित्र में प्रदर्शन करने पर तथ्यों की वास्तविकताओं को समझने में देर नहीं लगती। इतना ही नहीं, चित्रों द्वारा तथ्यों का तुलनात्मक महत्व जितना स्पष्ट रूप में प्रगट होता है उतना ही किसी और साधन द्वारा सम्भव नहीं। इसलिये सामाजिक अनुसंधान के प्रत्येक विद्यार्थी के लिये तथ्यों के चित्रमय प्रदर्शन की कला से परिचित होना आवश्यक है। श्री वाउले ने ठीक ही कहा है कि, "चित्र आँख के सहायक और समय बचाने के साधन मात्र हैं।"

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने तथ्यों का चित्रमय प्रदर्शन किया है। जिसमें सरल छड़ चित्र (Simple Bar Diagram), बहुगुणी छड़ चित्र (Multiple Bar Diagram) तथा पाई चित्र मुख्य हैं ताकि

1. तथ्यों का आकर्षण तथा प्रभावपूर्ण प्रदर्शन सम्भव हो,

1- Bodington,Statiatics and its application to commerce, P-140

2. तथ्य सरल तथा समझने योग्य बने,
3. समय की बचत हो सके,
4. आसानी से तथ्यों की तुलना हो सके,
5. एक ही दृष्टि में तथ्य स्पष्ट हो जाये,
6. शोध के लिये उपयोगी सिद्ध हो तथा
7. भविष्य की ओर संकेत प्रदान कर सकें।

प्रतिवेदन का प्रस्तुतिकरण :-

प्रत्येक सामाजिक सर्वेक्षण अथवा सामाजिक अनुसंधान में सर्वप्रथम प्राथमिक स्तर पर वैज्ञानिक पद्धति व प्रविधियों द्वारा तथ्यों को संकलित किया जाता है तत्पश्चात् उनका वर्गीकरण व सारणीयन किया जाता है। परन्तु वर्गीकरण व सारणीयन बिना विश्लेषण व व्याख्या के निरर्थक है। विश्लेषण व व्याख्या की प्रक्रिया भी व्यर्थ चली जायेगी यदि निष्कर्षों को लिखित रूप न दिया जाये। इस दृष्टि से प्रतिवेदन किसी भी शोध कार्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अन्तिम सोपान है। अनुसंधान प्रक्रिया के प्रत्येक चरण का संयुक्त परिणाम प्रतिवेदन में निहित रहता है। प्रतिवेदन में प्रारम्भ से अन्त तक की सर्वेक्षण प्रक्रिया, शब्दों तथा धारणाओं की परिभाषा, प्रयुक्त विधियों तथा प्रणालियों का परिचय, आंकड़ों का प्रदर्शन आदि तथा सर्वेक्षण के निष्कर्ष दिये जाते है। प्रतिवेदन ही सर्वेक्षण की सफलता तथा असफलता का आधार है।

शोधकर्ता द्वारा मध्यम वर्गीय परिवारों की सामाजिक, आर्थिक तथा मनौवैज्ञानिक समस्याओं तथा उनके समाधान हेतु उनके विचार जानने की जिज्ञासा एवं इस समस्या के प्रस्तुतिकरण हेतु 'अन्वेषणात्मक पद्धति' को अपनाया गया है ताकि मौलिक निष्कर्ष तार्किक रूप में प्राप्त किये जा सके। चूंकि संकलित प्राथमिक तथा द्वितीयक तथ्यों का निर्वाचन करना शोध का वह आवश्यक तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू होता है जो विश्लेषण के द्वारा परिणाम

निकालने से सम्बन्ध रखता है। ऐसा करने के लिये शोधकर्ता ने साक्षात्कार अनुसूची द्वारा संकलित प्राथमिक/क्षेत्रीय आंकड़ों को व्यवस्थित करके प्रकरणतः "मास्टर शीट" निर्मित कर "सांख्यिकीय पद्धति" द्वारा प्राथमिक तथा द्वितीयक आंकड़ों का सारणीयन विश्लेषण तथा तथ्यसम्बन्धित निर्वाचन करके शोध परक वैज्ञानिक निष्कर्ष उद्घाटित किये है। अध्ययन के प्रस्तुतीकरण को सरल, सुगम, ग्राह्यय, तार्किक तथा वैज्ञानिक बनाने के लिये शोध प्रबन्ध में आंकड़ों के यथास्थान आरेखीय चित्र भी दिये गये हैं। शोधकर्ता को आशा ही नहीं बल्कि यह पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत शोध अध्ययन, "मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव तथा विघटन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन" विषय-विशेषज्ञों तथा शोध अध्येताओं को तो रुचिकर लगेगा ही, साथ ही समाजशास्त्रीय सन्दर्भो में "मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव व विघटन की समस्याओं" जिन्हें वे लोग वास्तव में अनुभव कर रहे हैं तथा भोग रहे हैं, उनके निराकरण समाधान के लिये सुझाये गये व्यवहारिक सुझाव उपयोगी तथा सार्थक सिद्ध तो होंगे ही, साथ ही यह शोध अध्ययन समाजशास्त्र विषय के क्षेत्र के लिये विभिन्न नवीन उपयोगी आयाम भी उदघाटित करेगा तथा मध्यम वर्गीय परिवारों की विभिन्न प्रकार की समस्याओं को सुलझाने में सहायक सिद्ध होगा।

अध्याय -3

साहित्य

का

पुनरावलोकन

अध्याय -3

साहित्य का पुनरावलोकन

निःसंदेह, सामाजिक अनुसन्धान के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक शोध के प्रमुख सोपानों के अन्तर्गत ''साहित्य का पुनरावलोकन'' तथा पूर्व अध्ययनों की समीक्षाऐं कर ली जाय तो यह जान लेता है कि प्रस्तुत अनुसंधान कार्य अनुभविक रूप में सम्पादित किए जा चुके है, तथा कौन-कौन सी अध्ययन पद्धतियां व प्रविधियां उन में प्रयोग की गयीं, और किस अनुसंधान-अभिकल्प को अपनाया गया; साथ ही तथ्यसम्बन्धित प्रमुख निदान तथा समस्याऐं क्या-क्या रहीं है? यह निर्विवाद सत्य है कि प्रत्येक सामाजिक समस्या का देश एवं परिस्थियों से घनिष्ठ तथा प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है, अतः इस दृष्टि से भी पुर्व अध्ययनों से सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा करना अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण ही नही होता; अपितु कि अनिवार्य आवश्यकता होती है। परिवर्ती परिवेश में अपने अनुसंधान कार्य में क्या-क्या समस्याऐं जनित हो सकती हैं? किन पद्धतियों व प्रविधियों से अध्ययन करना उपयुक्त रहेगा? किन-किन पहलुओं, आयामों तथा कारकों का अध्ययन; पुर्व (अतीत) में हो चुका है? और किन पहलुओं का नहीं; तथा किस दृष्टिकोण से अध्ययन करना अवशेष है? अध्ययन किस भाँति (कैसे) किया जाय; कि अनुसंधान कार्य सरलता, सहजता तथा सुगमता से वस्तुनिष्ठ तथा वैज्ञानिक रूप में पुर्ण हो जाय तथा शोधकर्ता को समय,धन तथा श्रम भी कम अपव्यय करना पड़े; इत्यादि यह सब कुछ एक अध्ययनकर्ता को साहित्य के पुनरावलोकन तथा पूर्व अध्ययनों की समीक्षा कर लेने से स्पष्ट हो जाता है। इस प्रसंग में प्रो. बेसिन का कथन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बेसिन एफ.एच.1 (1962:42) के अनुसार,

"प्रत्येक अनुसंधान कार्य में सम्बन्धित साहित्य एवं पूर्व अध्ययनों की समीक्षा"[1] अनुसंधान योजना का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सोपान हुआ करता है क्योंकि प्रत्येक अनुसंधान कार्य, आरम्भ में अस्पष्ट होने के कारण दुरूह एवं जटिल प्रतीत होता है। सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधान की जटिलता एवं अस्पष्टता दोनों ही समस्याऐं लगभग समाप्त हो जाती है। इसका कारण यह है कि साहित्य के पुनरावलोकन से यह स्पष्ट हो जाता है कि शोध अध्ययन के लिए विश्वसनीय, तथा वस्तुनिष्ठ अध्ययन-सामग्री किस भाँति तथा कैसे प्राप्त हो सकती है? साहित्य के पुनरावलोकन तथा समीक्षा करने के कुछ अन्य प्रमुख लाभ इस प्रकार है-

1. अध्ययनकर्ता को शोध समस्या के सन्दर्भ में सामान्य ज्ञान विकसित हो जाता है।
2. अनुसंधान कार्य हेतु अनुसंधान प्रारूप एवं उपयोगी तथा प्रविधियां अनुसंधित्सु को स्पष्ट हो जाती है कि अध्ययन कैसे सम्पादित करना है।
3. साहित्य के पुनरावलोकन से अध्ययनकर्ता को अनुसंधान सम्बन्धी भ्रमात्मक तथा सन्देहात्मक स्थितियां सुस्पष्ट हो जाती है; सम्प्रति अनुसंधान कार्य के सम्बन्ध में अनुसंधानकर्ता का शोध स्पष्ट हो जाने की बजह से अध्ययन करने में सरलता हो जाती है। इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन तथा पुर्व अध्ययनों की समीक्षा कर लेने से अध्ययनकर्ता को अनुसंधान हेतु शोध-प्रारूप, अध्ययन-पद्धतियां तथा प्रविधियों के ज्ञान के अतिरिक्त, दिशा बोध हो जाता है क्योंकि ऐसा करने से अनुसंधित्सु में अतिरिक्त अभिज्ञान तथा अन्तर्दृष्टि विकसित हो जाती है।

प्रोफेसर बोर्ग जी.पी. (1963:48) के शब्दों में, "सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन किसी भी अनुसंधानकर्ता को इस योग्य बना देता है किवह पूर्व में किए हुए अनुसंधान कार्यो का पता लगा सकें, और उनका अध्ययन करके

1. बेसिन, एफ.एच. (1962): व्यवहारिक विज्ञानों में साहित्य समीक्षाऐं, मैकमिलन कम्पनी (प्रा.लि.)मद्रास,पृष्ठ-40

तथ्यसम्बन्धित समीक्षा कर सके ऐसा करने से अध्ययनकर्ता अपने अनुसंधान कार्य के लिए उपयुक्त उपकरणों तथा पद्धतियों इत्यादि का उचित चयन करके अतिरिक्त ज्ञानार्जन का आधार पर अनुसंधान हेतु स्पष्ट दिशा प्राप्त कर लेता है''।[1]

सर्वश्री पुरुषोत्तम (1991:110) के अनुसार ''सामान्यतः मानव-ज्ञान के तीन पक्ष-(1) ज्ञान को एकत्रित करना (2) एक दूसरे तक पहुँचाना (3) अतिरिक्त ज्ञान में वृद्धि करना, होते हैं। ये तीनों ही मूलभूत तत्व अनुसंधानों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण होते है, जो कि वास्तविकता के समीप/निकट आने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहते हैं। अतिरिक्त ज्ञान के अर्जन तथा विस्तृत ज्ञान-भण्डार में इनका योगदान, प्रत्येक क्षेत्र में मानव द्वारा किए गए निरन्तर प्रयासों की सफलता को सम्भव बनाता है। उसी भाँति अनुसंधान-प्रक्रिया में ''साहित्य का पुनरावलोकन'' अनुसंधान उपक्रम का एक ऐसा महत्वपूर्ण वैज्ञानिक सोपान होता है; जो कि वर्तमान के गर्त में निहित होता है अर्थात् मनुष्य अपने अतीत में संचरित एवं आलेखित ज्ञान के आधार पर अनुसंधान कार्य के माध्यम से नवीन ज्ञान का सृजन करता है।

सर्वश्री सिंह एस. पी. (1975:14) के अनुसार, किसी भी शोध-समस्या का चयन कर लेने के पश्चात, यह आवश्यक ही नहीं; अपितु शोध की अनिवार्य आवश्यकता होती है कि उस अनुसंधान-विषय से सम्बन्धित उपलब्ध साहित्य का पुरावलोकन कर; तथ्यसम्बन्धित विषयगत समीक्षाएं कर ली जांय क्योंकि ऐसा करने से-

1. शोधकर्ता के मन पटल में अध्ययन-समस्या के सन्दर्भ में एक स्पष्ट अन्तर्दृष्टि तथा ज्ञान बोध विकसित हो जाता है।

---

1. वोर्ग, जी.वी. (1963): सामाजिक विज्ञानों के अनुसंधानों में साहित्य का सिंहावलोकन, जैन ब्रदर्स एण्ड संस पवलीसर्स एण्ड डिस्ट्री ब्यूटरस बाम्बे, पृष्ठ-48

2. शोधकर्ता को अनुसंधान कार्य हेतु उपयुक्त पद्धतियों तथा प्रविधियों का आभास तथा समुचित ज्ञान हो जाता है।

3. साहित्य की समीक्षा; अध्ययनार्थ निर्मित परिकल्पनाओं/शोध-प्रश्नों के निर्माण में सहायक होती है।

4. विभिन्न शोध-अध्येताओं द्वारा एक ही अनुसंधान कार्य को फिर से दोहराने की गलती नहीं हो पाती और अध्ययन-समस्या से सम्बन्धित उन आयामों (पहलुओं) पर, जिन पर अन्य शोध-अध्येताओं ने ध्यान नहीं दिया अथवा अछूते रह गए; या फिर अज्ञानतावश छूट गए; शोधकर्ता को उन समस्त अछूते आयामों का भी आभास हो जाता हैं।

सर्वश्री स्टॉउफर सेम्युल रिब्यू (1962:73) का कहना है कि सम्बन्धित साहित्य के गहन अध्ययन एवं उसकी समीक्षा के अभाव के अभाव में कोई भी अन्वेषण कार्य करना, "अन्धे के तीर" के तुल्य होता है। साहित्य समीक्षा के अभाव में कोई भी अनुसंधान कार्य एक कदम भी प्रगति पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता; जब तक कि अनुसंधानकर्ता को इस बात का ज्ञान तथा जानकारी नहीं है कि प्रस्तुत अनुसंधान के क्षेत्र में किन-किन पक्षों पर कितना कार्य हो चुका है? कौन-कौन से स्रोत प्राप्त है? तब तक वह अध्ययनकर्ता न तो अध्ययन-समस्या का चयन कर सकता है, और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर, अनुसंधान कार्य को गति प्रदान कर सकता है। इसका मौलिक कारण यह है कि प्रत्येक अनुसंधान कार्य का प्रमुख उद्देश्य; किसी समस्या विशेष पर नवीन दृष्टिकोण से चिन्तन तथा विचार करके उसमें नवीनता लाना अथवा समस्या की नवीन ढंग से तार्किक व्याख्या प्रस्तुत करना होता है। उपरोक्त समस्त प्रतिनिधि बिन्दुओं को दृष्टिपथ में रखकर शोधकर्ता ने अपने अनुसंधान कार्य के सुचारू संचालन तथा सफलता हेतु अध्ययन करने से पूर्व सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन तथा पूर्व अध्ययनों की

समीक्षा करने का प्रयास किया है ताकि प्रस्तुत अध्ययन को उचित दिशा एवं वैज्ञानिक स्वरूप प्राप्त हो सके''।[1]

वट्रेन्ड रसल (1916), ''प्रिन्सीपल ऑफ सोसल रिकन्सटेक्शन'' में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि, '' विचार और ज्ञान की वृद्धि तथा भौतिक जगत पर बढ़ती हुयी नियंत्रण की शक्ति में, प्रगति की नवीन सम्भावनाओं को जन्म दिया है। इन नवीन सम्भावनाओं ने नवीन वायदे किए जिन्हें पूर्ण करना अति आवश्यक है। ये संस्थाऐ जिन्होने कुछ व्यक्तियों की अधिक सुविधाऐं और मान्यताऐं दी थी अपेक्षाकृत दूसरे वर्ग के, उनको अब निम्न वर्ग के व्यक्ति जो भाग्य हीन समझे जाते थे नहीं मानेगे हालांकि भाग्यशील व्यक्ति इस प्रकार की सस्थाओं का कठोर समर्थन करेगें। इस तरह स्वतंत्रता तथा न्याय को लेकर समाज में गम्भीर क्रांति पैदा हो जायेगी। परम्परा और शक्ति स्वतंत्रता न्याय के विरूद्ध लड़ेगे क्योंकि हमारी प्राचीन संस्थाऐं शक्ति प्राप्त करने की मांगो की पूर्ति करने में सफल नहीं हो पाते है। सत्ता अपनी शक्ति से व्यक्तियां को कुचलना चाहिती है।उसी समय जनता यह अनुभव करती है कि केवल कुछ व्यक्तियों को प्रसिद्ध बनाने के लिए नहीं पैदा हुए है। जनता अपनी मांगों के लिये न्याय के आधार पर लड़ती है। इस प्रकार समाज मेंएकता के स्थान पर विघटन कारी कार्यो का जन्म होने लगता है। अस्तु सामाजिक पुर्न निर्माण के मामले या कार्य में अगर सामान्य व्यक्तियों की आवश्यकताओं पर ध्यान नहीं दिया गया तो सम्पूर्ण समाज में अव्यवस्था उत्पन्न होने की तीव्र सम्भावनाऐं उत्पन्न होगी जो समाज को अव्यस्थिति और विघटित बना देगी। शक्ति पर आधारित संस्थान (परिवार) समायोजन के भूत-पूर्वीय अभाव के कारण आज विघटित हो रहा है।''[2]

---

1. सर्वश्री स्टॉउफर सेम्युल रिव्यू (1962:73): ए मैजर स्टैप आफ इन्वेस्टीगेशन इन सोसल साइन्सेज,अमेरिकन सोशियोलोजीकल रिव्यू अंक 23, पृष्ठ-73
2. वट्रेन्ड रसल (1916), "प्रिन्सीपल ऑफ सोसल रिकन्सटेक्शन" पृष्ठ-26

गिडिंग्स, एफ.एच. (1922:231) सामाजिक अन्तक्रिया का गतिशील स्वभाव निरन्तर पुर्नगठन एवं पुर्न-प्रबन्धन को जो समाज की इकाईयों द्वारा होता है, को नुकसान पहुँचाती है। इसके परिणाम स्वरूप जो परिवर्तन आता है उससे संख्यागता तथा व्यवहार प्रतिमानों में जो सामाजिक ढाँचे में होते हैं, उसमें बाधा पहुँचाते हैं। यह सामाजिक गडबड जो नये जोड़ के लिए मार्ग प्रसस्थ करती है, वह विघटन के लिए विचार करने हेतु जागरूक करती है। इस प्रकार का भ्रम निश्चित तौर पर करता है जब पुर्न संगठन के स्वाभाविक शक्ति उभरने से अधिक तेजी से जब विघटन होता है"।[1]

थोमस, डब्लू.आई. (1923) ने अपनी पुस्तक 'द अनएडजस्टेड गर्ल' में लिखा है कि- परिवार के आशक्तिपूर्ण प्रकार्य पति-पत्नी के पारस्परिक प्रत्युत्तरों का इच्छाओं के आधार पर होते है। ये भावनाऐं प्रारम्भिक रूप से प्रेम मनोवृत्ति से सम्बन्धित होती है और इन प्रकृतियों में जिनके द्वारा एक-दूजे की पसन्द व तारीफ के चिन्हों में विधमान होती है जो अन्यव्यक्तियों से सम्बन्धित होते है। विशुद्ध स्वतंत्र प्रेम आशा करता है कि प्रत्येक समय तथा प्रत्येक स्थान पर प्रेम के प्रतीक का इजहार किया जाये यथार्थ में (प्रेम) अपने जीवन में प्रत्येक खुशहाली क्रियाओं में व्यतीत करे वैसी ही जैसी शादी करने के पश्चात् कुछ सप्ताह या माह तक नजदीकियाँ रही परन्तु इस प्रकार की नजदीकियाँ आगे चलकर निरन्तर नहीं रह पाती । उस वेग में तथा सन्तुष्टिकरण के स्तर में जब तक पारिवारिक आशक्ति के पूरक शान्ति आनन्द का परिचय नहीं दिया जाता। इस रोमान्टिक प्रेम की कम होती अवधि में बहुत व्यक्ति विवाह की वैधता के ऊपर प्रश्न चिन्ह लगाते है। वे यह अनुभव नहीं करते कि सफल जीवन के लिए रोमान्स ही सग कुछ रही

---

1. गिडिंग्स, एफ.एच. (1922)

है। यौनिक आकर्षण, सहानुभूति और पारिवारिक आशक्तियाँ में महत्वपूर्ण तत्व है जो परिवार को संगठित रखते है।''[1]

पार्क एण्ड वरगेस (1925:508) ने विघटन के मनोवैज्ञानिक कारकों पर विवरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि, "यहाँ पर पाँच क्रियाऐं अनुसरण सम्प्रेक्षण, संघर्ष, प्रतियोगता, व्यवस्थापन तथा आत्मघाती कारण है जो परिवार एवं सामाजिक संगठन में गतिशीलता प्रदान करती है। जब सामाजिक सदस्य अधिक भौतिक नजदीकियों के साथ रहते हैं तब उनमें निरन्तर सम्प्रेक्षण होता रहता है। यह संचार तभी प्रभावित होता है जब उनके मध्य समान समझ तथा चेतना होती हैं। आज समाज में पूर्ण रूप से प्रेमाभाव की मनोवृत्तियाँ तथा मूल्य शायद ही प्रवेश किए हो, संचार अधिकतर अपूर्ण तथा टुकड़ों में होता है। जिन प्रतीकों को संचार में,प्रयोग में लाया जाता है उनका भी वैसा ही प्रभाव नहीं पड़ता जैसा कि सम्प्रेक्षण कर्ता उन्हें प्रयोग में लाता है। शब्द तथा लोकोत्तियाँ जो सम्प्रेक्षण में प्रयोग की जाती है उनका अभिप्राय विचारों में गलत निकाला जाता है। विभिन्न व्यक्तियों के द्वारा एक परिवार तथा समाज में असन्तुलन उभर आता है। इस प्रकार सम्प्रेक्षण प्रक्रिया का फल कभी परिवार में समरसता अथवा कभी तनाव का फल निकल आता है। कभी-कभी संघर्ष और प्रतियोगिता में फल आपेक्षित ही निकलता है जबकि ये दोनों प्रक्रियाऐं विघटनकारी हैं। परिवार तथा समाज जैसे समूहों के लिए, ये प्रक्रियाएं सांस्कृतिक, आर्थिक, रातनैतिक, तथा धार्मिक क्षेत्रों में क्रियारत होती हैं।''[2]

क्वीन, एस.ए.एण्ड मन्न (1925) ने अपनी पुस्तक "सोशल पैथोलॉजी" में पारिवारिक विघटन की तीन अवस्थाऐं बताते हुए लिखा है कि," प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को पुर्नगठन की सम्भव आवश्यकता का सामना करता है ताकि वह

1. थोमस, डब्लू.आई. (1923): 'द अनएडजस्टेड गर्ल' पृष्ठ-17
2. पार्क एण्ड वरगेस (1925:508)

अपना स्थाई जीवन रख सके। जब वह अपने जीवन नियोजन में रूकावट अनुभव करता है या तो किसी सम्बन्धी की अचानक मृत्यु से या व्यापार में हानि होने से या नौकरी छूट जाने से या अन्य विघ्न के कारण। इससे कुछ व्यक्ति दूसरी परिस्थिति से भली-भाँति समायोजित कर लेते है। अधिकांशतः व्यक्ति प्रथम तो परेशान हो जाते है, अपने स्वयं निर्मित नियोजन के व्यवहार को लाने में। यह समय व्यक्ति के लिए असमायोजित होने की प्रथम अवस्था होती है या विघटन की। यदि व्यक्ति उपयुक्त समाधान खोज लेता है तो उसका जीवन पुनः पटरी पर आ जाता है। किसी भी तरह व्यक्ति कतिपय प्रयासों के बाद भी जीवन के साथ समायोजना नहीं कर पाता और वह अपना स्वामित्व खो बैठता है तो उसका मानसिक सन्तुलन खो जाता है। यदि यहां पर सन्तोष जनक हल नहीं मिलता है तो वह विघटन की दूसरी अवस्था पर पहुँच जाता है, जिसे असमायोजित कहते है, जिससे कम और अधिक स्थाई रूप से असमायोजित हो जाता है। अपराधी या वैश्यागमन करने वाले जो सामाजिक मूल्यों का बन्धन नहीं करते वे इस अवस्था में आते है। वैयक्तिक विघटन भी आत्महत्या की ओर अग्रसर करता है, जो विघटन की अन्तिम अवस्था होती है। कुछ व्यक्ति तो इस अवस्था में दूसरी अवस्था के बिना भी स्थिति में पहुँच जाते हैं"।[1]

हारनेल एण्ड हार्ट इला (1927) ने अपनी पुस्तक, "अनयूज फुल मैरिज" में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते है कि-"वैयक्तिक या पारस्परिक तनाव के कारक अवैयक्तिक पर्याप्त शक्ति वैयाक्तिक विरोधावाद इन तनावों के परिणाम होते है। वैसे भी वैयक्तिक विरोधावाद आत्मयिता को भंग करने में अधिक भूमिका प्रदान करते हैं जिसका अर्थ मनोवृत्तियों तथा मूल्यों में असमान्यता जो जीवन को एक दूसरे के लिए असहनीय बना देती है। विवाह यौनिक सम्बन्धों से कुछ अधिक है अर्थात निरन्तर बच्चों की देखभाल। यथार्थ में यह दो व्यक्तियों के मध्य

---

1. क्वीन, एस.ए.एण्ड मन्न (1925):

प्रकार्यात्मक सम्बन्ध है जो कुछ विपरीत मामलों जैसे आदत, मित्रता, संम्पत्ति, आदर्श, धारणाए, उद्देश्य और क्षमताऐं। जब पति-पत्नी आपस में स्नेह करते हैं तब दोनों व्यक्तित्व अधिक प्रभावी ढंग से कार्य करते हैं क्योंकि उनमें वैवाहिक सम्बन्ध होता है और जब पति-पत्नी एक दूसरे को पृथक समझते है और एक दूसरे को दास बनाने का प्रयास करते हैं तभी विवाह घातक या विघ्नवंसक हो जाता हैं''।[1]

मर्टन, आर. के. (1957) ने अपनी पुस्तक में विवेचन किया है कि- जब संस्थागत साधनों, जो वातावरण में उपलब्ध होते हैं, और लक्ष्यों, जिनका अपने वातावरण में आकांक्षा रखना व्यक्तियों ने जान लिया है, में विसंगति उत्पन्न हो जाती है तब पारिवारिक तनाव व कुष्ठा पैदा होते हैं और व्यवहारिक प्रतिमान टूट जाते हैं परिणाम स्वरूप पति-पत्नी के व्यवहार में पारस्परिक रूप में विचलन जन्म लेता है''।[2]

वर्गेस, इ. उब्लू, एण्ड कोट रेल, एल.एस. (1939) ने अपनी पुस्तक ''प्रीडिक्टिग सक्सेस और फैलोर इन मैरिज'' में लिखा है कि,''व्यवसाय तनाव आर्थिक तनाव से सम्बन्धित होते है, जिनका प्रादुभाव दैनिक कार्य के स्वभाव से विकसित होते हैं। किसी व्यक्ति विशेष पर कार्य करने की अनिवार्य गतिशीलता परिवार के तनाव का श्रोत होता है। कुछ समय वे पृथक रहने के लिए आदतन हो जाते है और वे जब लम्बे समय तक एक-दूसरे के साथ रहते है। इसी प्रकार अस्थाई व्यवसाय एक लिपिक का यदि बीमा व्यवसाय हो जाये या माल विक्रेता को एक खिड़की का विक्रेता बना दिया जाये तो उसकी कम आय उसके परिवार में कम समायोजन करते है। तब पति-पत्नी भिन्न-भिन्न संस्कृतिक पृष्ठ भूमि से लेते हैं तो उनमें स्वभाव, रूचियां एक सी होती हैं परन्तु यदि उनमें उपरोक्त

1. होरनेल एण्ड हर्ट, इला (1927): अन सक्सेस फुल मैरिज इन द जर्नल आफ द वर्ल्ड द्मोरो जून-1927
2. मर्टन, आर.के. (1957): सोसल थ्योरी एण्ड सोसल स्टेक्चर' द फ्री प्रेसगिलीन को इलीनोयस, पृष्ठ-672-682

समानताओं का अभाव पत्नी की एक होता है तो उन्हें समायोजन में कठिनाई होती है। अतः सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि पति-पत्नी की एक होनी चाहिए''।[1]

पी.ए., सोरोकिन (1941) अपनी पुस्तक ''द क्राइसिस आफ अवर ऐज'' में अपने विचार प्रगट करते हुए लिखा है कि, ''पारिवारिक विघटन का मुख्य कारण सांस्कृतिक तथा संस्थागत विघटन है । इन दोनों के विघटन से अपराध, आत्महत्याऐं तथा मानसिक रोगों में वृद्धि होती है । आधुनिक युग में संघर्ष के फल स्वरूप विघटन उत्पन्न होता है। वर्तमान संघर्ष सामान्य न होकर असामान्य हैं । ये केवल पारिवारिक सामाजिक तथा आर्थिक असामंजस्य नहीं है। अपितु इसमें सम्पूर्ण पाश्चात्य संस्कृति है यह संघर्ष कला, विज्ञान, दर्शन, धर्म, कानून,आचरण, व्यवहार, रूढि आदि में सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक संगठन के रूप में घटित हो रहा है। यह संघर्ष परिवार तथा विवाह की प्रकृति में भी हो रहा है जो विघटन को जन्म दे रहा है''।[2] पारिवारिक विघटन के कारणों पर प्रकाश डालते हुए सोरोकिन कहते है कि, ''वर्तमान जीवन में मूल्यों के क्षेत्र में सांस्कृतिक विखराव जिससे अधिक संघर्ष, अपराध, क्रांति, आत्महत्याऐं, मानसिक रोग हैं। वर्तमान में हायतोवा प्रजातंत्र और अधिनायकतंत्र के संघर्ष का परिणाम नहीं और न पूँजीवाद बनाम साम्यवाद से है और न राष्ट्रवाद बनाम अर्न्तराष्ट्रवाद के और न गुलामी बनाम स्वतंत्रता के और न संस्कृति पराकाष्ठा पर पहुँच गई हैं,विशेषकर कला, विज्ञान, दर्शन, धर्म, विधि, राजनीति, अर्थ एवं परिवारके क्षेत्रों में । संक्षिप्त में, यह सब पाश्चात संस्कृति तथा समाज के आधार भूत स्वरूप में विखराव का फल जो सशक्ति प्रमुख के कारण गत चार शताब्दी से हो रहा है''।[3] सोरोकिन विभिन्न संस्कृतियों को परिवार एवं समाज के विघटन को उत्तरदाई बताते हुए लिखते हैं कि समाज में तीन प्रकार की संस्कृतियां पाई जाती हैं- मूर्तमान संस्कृति,

---

1. बर्गेस, इ. डब्लु, एण्ड कोट रेल, एल.एस. (1939): प्रीडिक्टिग सक्सेसे और फैलोर इन मैरिज
2. सोरोकिन,पी.ए. (1941): 'द क्राइसिस आफ अवर ऐंज' पृष्ठ-17
3. तदैव, पृष्ठ-316

आदर्शात्मक संस्कृति तथा अतिरिक्तात्मक संस्कृति में मूर्तमान एवं आदर्शात्मक संस्कृति की सम्मिलित व्यवस्था जो यथार्थ के मूल्यों के सर्वोच्च सिद्धांत होते है, जो सर्वोच्च बौद्धिक भगवान जो सर्वशक्ति मान है सर्व व्यापक है, जो पूर्ण है, जो कल्याणकारी है तथा सुन्दर है और जो संसार तथा व्यक्ति का रचियता हैं। मूर्तमान संस्कृति में सत्य यथार्थ एवं मूल्य के स्नायुक्त यथार्थ का सिद्धांत लागू होता है। प्रायः जो हम देखते है, सुनते है, स्पर्स करते तथा सूघते है। यद्यपि हमारे स्नापुतंत्र सजीव है और उनका मूल्य भी है। इन स्नायुतंत्रीय यथार्थ में कुछ नहीं है। यदि यहां सब कुछ है जिसे हम नकार देते है। इन दो संस्कृति के मध्य हम तीसरी को आदर्शात्मक संस्कृति के रूप में जानते है। उसका मुख्य क्षेत्र कुछ स्नायुतंत्रीय और कुछ सर्वोच्च स्नायुतंत्रीय है। अतिरिक्त संस्कृति का पतन 20 वीं शताब्दी में प्रारम्भ हो गया था। उस समय आदर्शात्मक संस्कृति अस्तित्व में थी। वर्तमान में मूर्तमान संस्कृति का प्रमुख मूल्य सच एवं स्नायुतंत्रीय प्रभुत्व जो कर्म, विचार तथा कानून को घुमाते हैं। आज के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक संगठनों, अपनी प्रभुत्वमयशैली में एवं मानसिकता में।

इस प्रकार हमारी वर्तमान संस्कृति एवं समाज में हडकंप आधुनिक संस्कृति को प्रभुत्वपूर्ण भौतिकवादी व्यवस्था में विखराव ही है। लेकिन यह विखराव का स्तर ऐसा नहीं जिसका उपचार न हो। यहां हमें दो उदाहरण देने होगें कि किस प्रकार कला तथा परिवार के क्षेत्र में भौतिकवाद संस्कृति ने विखराव लाया है, उस विखराव का केन्द्र है भौतिकवादी संस्कृति जो व्याधिक है, व्यक्तियों तथा घटनाओं पर केन्द्रित है क्योंकि भूतकाल के व्यक्ति या नायक देवता सन्त एवं योग्य प्राणी थे जो सकारात्मक मूल्यों को धारण करते थे। इस का केन्द्र अपराधियों, पुलिस तथा लैगिग अंगो तक पहुँच गया है और समाज के गम्भीर स्तर तक कुप्रभावित किया है। यदि हम इन्हें स्वीकार करते है तो यह समाज का प्रतिनिधित्व करे तो हमारी संस्कृति जप्त हो, साथ ही व्यक्ति परिवार तथा समाज

का सम्मान तथा गौरव ये स्वयं संस्कृति मूल्यों के समाप्त करने के मार्गो को प्रसस्त कर रही है। परिवार के प्रसंग में जो पति-पत्नी और माता-पिता व बच्चों की सामाजिक स्वीकृति का कल है।......आज विभिन्न रूप में जो विखराव दृष्टिगोचर हो रहा है, जहां पति-पत्नी एक इकाई लिए बधे रहते है। सामान्यतः वह वह जीवन भर, आज कमजोर पड़ गये हैं। वे आज अधिकतर परित्याग तथा प्रथककरण से ग्रसित हो गये हैं क्योंकि बिना बच्चों के विवाह करना प्रारम्भ हो गया। यह निश्चित ही रूढ़ियों, विश्वासों, मानसिकता तथा समाज व माता-पिता और बच्चों के आचरण के विरूद्ध है। जिससे पिता-पुत्र के सम्बन्ध बडे तेज एवं गहरे हो गये हैं। वैसे संघ, जिसमें सम्बन्धों का केन्द्र भी नहीं हो। धार्मिक रूप से परिवार तो रहा ही नहीं। अब यह अधिक से अधिक सविंदा हो गया है। गत कुछ दशक पुराने परिवार अब बहुत अस्थाई हो गये हैं और विखराव के बिन्दु पर पहुँच गये हैं। इसके अलावा यही मार्ग रह गया है कि भौतिक संस्कृति आधार भूत संस्कृति की ओर बडे या तो विचारात्मक या आदर्शात्मक या एकीकृति रूप में। हमारा पूर्ण उपचार समकालीन मानसिकता में, आधार भूत मूल्य व्यवस्था में परिवर्तन तथा हमारे आचरण में बदलाव दूसरे व्यक्ति के सांस्कृति मूल्यों में और सम्पूर्ण संसार में पूर्ण परिवर्तन''।

इलियट एण्ड मैरिल (1941) ''डिस ओर्गराइजेशन'' में, ''पारिवारिक विघटन सम्बन्धी तनावों की छः विशेषताओं का उल्लेख किया है, जिनके आधार पर परिवार में उत्पन्न विघटन की सीमा का भी अनुमान लगाया जा सकता है। ये तनाव ऐसी दशाऐं उत्पन्न करते हैं जिरके फलस्वरूप :-

1. सामान्य उद्देश्य धीरे-धीरे समाप्त हो जाते है और परिवार के लक्ष्यों की अपेक्षा व्यक्तिगत लक्ष्यों का महत्व बड़ जाता है,
2. सहयोगी प्रयत्नों की गति धीमी पड़ जाती है,
3. पति और पत्नी के बीच पारस्परिक सेवाऐंब न्द हो जाती है,

4. अन्तः वैयक्तिक सम्बन्धों में कोई सामन्जस्य रहीं रह जाता,
5. पति-पत्नी का अन्य समूहों के प्रति दायित्व परिवर्तन हो जाता है,
6. पति-पत्नी की भावात्मक मनोवृत्तियां एक दूसरे की विरोधी हो जाती है।''[1]

इलियट एण्ड मैरिल आगे कहते है कि,''विघटन एक असामान्य अवस्था है। विघटन का अध्ययन परम्पराओं के अनुसार साधारण और असाधारण की विचार धाराओं से सम्बन्धित है जो मूल्यांकन पर निर्भर विघटित समाज असामान्य अवस्था माना गया है''।[2] ..... प्रत्येक स्त्री-पुरूष विवाह करते हैं, जिनका भिन्न-भिन्न पूर्व का जीवन होता है। जिसमें उनके विचार तथा मनोवृत्तियां होती है। जिन्हें वे अपने जीवन अनुभवों द्वारा प्राप्त करते हैं। प्रत्येक एक निश्चित समूह सन्दर्भ में निर्मित विविध मूल्य रखते हैं। परिस्थिति बस यदि एक चेतन और अचेतन रूप में दूसरे के व्यक्तित्व गुणों को पाकर आश्चर्य व्यक्त करता है।'' इसलिए वह आगे कहता है कि, ''विघटन के अध्ययन में क्या कुल प्रभाव पड़ता है? उस समय हमें सामाजिक घटना के ग्रन्थिपूर्ण होने को ध्यान में रखना चाहिए। व्यक्ति द्वारा की गई निष्फल खोज एक विचित्र कारक में जिन्हें वह, कारकों के रूप में पहचान की गई है, जो आधुनिक समाज की विशेषता है क्योंकि उसके द्वारा धर्म की स्वीकृति को कम कर दिया है, परिवार के बदलते ढाँचे के लिए केन्द्रीय सरकारी बढ़ती हुयी महत्ता तथा गिरती हुई नैतिकता के सम्बन्ध में। पहले एक कारक को ही परिवार विघटन के लिए उत्तरदाई माना जाता था। बहुत सी समाजे आपत्तियों की विघटन की जड़ में पायो को मानते हैं। उनका विश्वास है कि महान आत्माऐं आज के समाज में अपराध, अनैतिकता, राजनैतिक भ्रष्टाचार, बेरोजगारी तथा तलाक की दर को बड़ा रही है क्योंकि व्यक्तियों ने परम्परागत

---

1. इलियट एण्ड मैरिल (1941): डिसओरगनाईजेशन, पृष्ठ-34
2. इलियट एण्ड मैरिल (1941): डिसओरगनाईजेशन, पृष्ठ-96

नियत्रंण के साधनों का पालन करना बंद कर दिया है, खास कर ईसाईवाद ने। कोई भी वास्तविक समझदारी को इन सभी कारकों जो विघटन के सम्बन्ध में जो अभिव्यक्त किए गये हैं, आज के क्षणों में शोधाधीन हैं।...... इलिएट एण्ड मैरिलन ने विघटन के मुख्य चार कारण बताये है- (1) सांस्कृतिक-राजनैतिक तथा आर्थिक शीर्षक तले सामाजिक प्रक्रियाए, (2) सांस्कृति बिलम्वना, (3) मनोवृतियों एवं मूल्यों के बीच संघर्ष प्रक्रिया तथा (4) सामाजिक बाधाऐं''।[1]

वर्गिस एण्ड लाक (1943), ''यद्यपि विवाह एक वैधानिक और धार्मिक बन्धन माना जाता है, यह वास्तव में वैयक्तिक बन्धन है, जिसमें पति-पत्नी के विचारों इच्छाओं और मनोकृतियों का परिवार की संस्थात्मक संरचना में भी अधिक महत्व है। इसलिए पारिवारिक तनाव की प्रकृति तथा पारिवारिक विघटन से उनके सम्बन्ध को जानना आवश्य हो जाता है''।[2]

वर्गिस एण्ड लाक (1943) अपनी पुस्तक ''द परिवार'' में पारिवारिक तनावों को विभाजित किया है- (1) आर्थिक तनाव, (2) यौन तनाव, (3) स्वास्थ सम्बन्धी तनाव, (4) अनादर सम्बन्धी तनाव, (5) सांस्कृतिक सम्बन्धी तनाव, (6) स्वाभव सम्बन्धी तनाव तथा (7) जीवर यापन के ढंग सम्बन्धी तनाव''।[3]

मावरर (1943), विघटन से उस अवस्था का बोध होता है जिसमें सांस्कृतिक विघटन हो और विभिन्न सांस्कृतिक पहलुओं का सन्तुलन नष्ट हो जाय । वैयक्तिक विघटन व्यक्ति के इन आचरण को व्यक्त करता है, जो संस्कृति के द्वारा अनुमोदित आदर्शो से इतनाच्युत होते है कि उनमें सामाजिक अस्वीकृति उत्पन्न हो जाती है। विघटन व्यक्ति की चार विशेषताऐं होती है-(1) विघटित व्यक्तित्व का व्यवहार संस्कृति द्वारा सहमत प्राप्त व्यवहार से पृथक होता है, (2) सामाजिक रूप से असहमत प्राप्त व्यवहार जो हिंसक भी हो सकता है, (3)

---

1. इलियट एण्ड मैरिल (1941): डिसओरगनाईजेशन, पृष्ठ-343-45
2. वर्गिस एण्ड लाक (1943): द फेमिली फिरोम इन्सट्शन टू कम्पेनियनशिप, रूटलैज एण्ड कीगनपॉल,लन्दन पृष्ठ-7
3. तदैव, पृष्ठ-9

असहमत व्यवहार का सकारात्मक एवं नकारात्मक रूप में अभिव्यक्तिकरण। सकारात्मक इस ध्येय से एक दूसरे भी ऐसा व्यवहार करते है तथा नकारात्मक इस ध्येय से जो दमनकारी हो तथा (4) सकारात्मक प्रत्युत्तर के उद्देश्य को भी दो तरह से परिभाषित किया गया है। एक जिसे समाज कल्याण के रूप में; दूसरे सुख व्यवहार के रूप में"[1]।

..........प्रत्येक विवाह में शान्ति तथा विरोध पाया जाता है। वैवाहिक सुख एक सापेक्षित तथ्य है। सुख और शांति पति-पत्नी के व्यक्तित्व, मनोवृतियों, स्वभाव तथा विचारों पर निर्भर करता है। प्रत्येक दो व्यक्तियों में अल्पाधिक मात्रा में शांति तथा विरोध के तत्व पाये जाते है। जब उनमें सहमति और एकमत्य सामन्जस द्वारा भी नहीं हो पाता तब विघटन की प्रक्रिया तीव्र हो जाती है और परित्याग विलगाव तथा तलाक की स्थिति पहुंच जाती है। मावरर का मानाना है कि विघटन कारक तथा फल दोनों ही है, परन्तु यही बात व्यक्तिगत विघटन के विषय में भी कही जा सकती है। सामाजिक विघटन संस्थाओं संस्थागत संगठन को छिन्न-भिन्न कर देता है। वह सामाजिक बन्धनों से मुक्त होकर फिर एक बार स्वतंत्रता पूर्वक कार्य करे। यह संस्थात्मक नियंत्रण का दिखवहीपन तथा बाहरीपन है जो मानव पर बाहर से प्रभाव डालता है, जिसके अन्दर वह बिना किसी नियंत्रण अथवा पथ प्रदर्शन के रह जाता है, जो अवस्था सामाजिक विघटन में धीरे-धीरे परिणित होती जाती है और अपना प्रभाव खो बैठती है"।[2] ....डा. मावरर ने विघटन को समझने के लिए मुख्य छः पहुंचो पर बल दिया है-(1) सामाजिक संरचना की पहुंच, (2) जैव मनोविज्ञानी पहुंच, (3) भूगोलीय पहुंच, (4) सांस्कृति पहुंच, (5) भौतिक पहुंच तथा (6) माहक्रोस्थिक पहुंच आदि जो व्यक्ति समाज से सम्बन्धित होती है"।[3] ....मावरर का मानना है कि मानव व्यवहार की प्रवृतियों की विभिन्नता

---

1. माइवर (1943): सोसल एण्ड परसनल डिस आर्गनाइजेशन, पृष्ठ-25
2. माइवर (1941): सोसल एण्ड परसनल डिस आर्गनाइजेशन, पृष्ठ-310
3. तदैव

अधिकतर मिश्रित समाजों में पाई जाती है बजाय सरल समाजो के, जहां पर परिवार समूह सांस्कृतिक अभिकरणों के रूप में कार्य करते हैं तथा वहां जहां किसी निश्चित सामाजिक व्यवस्था में सांस्कृतिक बाहर सहभागिता होती है। इसके बाद अभिनव अल्पता से नवीन संस्कृतियों को स्वीकार करके तैयार हो जाते है, विशेषकर वहां, जहां भौतिकवाद व अभौतिकवादी संस्कृति के रूप मिलते हैं, क्योंकि प्रारम्भिक तौर पर वे संस्थागत प्रतिमानों में कोई एकीकृत भाग नहीं बनाते । जब हम वैयक्तिक तथा सामाजिक विघटन की बात करते हैं। जहां भी संस्कृति सन्दर्भ में जो सयोजन के प्रतिमानों को गति देता है अथवा विघटित करता है वही सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करता है, तो विघटन का प्रतिनिधित्व करता है। किसी भी भिन्न व्यवहार के रूप में जो मनोवृतियों की एकीकृत व्यवस्था को गड़बड कर देता है। व्यक्तित्व में तब वैयक्तिक विघटन होता है''।[1] ....डा. मावरर ने व्यक्तियों के विचलित व्यवहार के अतिरिक्त तीन कारकों का वर्तमान समाज में उल्लेख किया है। प्रथम, ग्रन्थिपूर्ण समाज में विशेषीकृत कार्य प्रक्रिया । मिश्रित समाज में व्यक्तियों के द्वारा, संस्कृति द्वारा पारिभाषित प्रत्युत्तरों को सीखा नहीं जा सकता क्योंकि सामाजिक व्यवस्था में विशेषीकृत व्यवसाय हर व्यक्ति के लिए उपयुक्त नहीं होता । दूसरा, आधुनिक एकांकी परिवार संस्कृति द्वारा पारिभाषित अभितंत्र के रूप कार्य करते है। विशेष भावनात्मक दशाओं में परिवार सामान्य ग्रंथिपूर्ण संस्कृति की व्याख्या करता है। उसके परिणाम स्वरूप सामान्यतः स्वीकृति किए गये विचारों में भिन्नता आ जाती है। तीसरा, व्यक्ति के द्वारा अन्य सामाजिक व्यवस्था में सांस्कृतिक सहभागिता भी करनी पड़ती है। व्यक्ति इन ग्रन्थिपूर्ण समाजों में अपने जीवन का एक भाग व्यतीत करता है, सतर्कता पूर्ण या काल्पनिक ढंग से । अन्य संस्कृतियों में या तो स्वयं यात्रा करके या संचार माध्यमों से वहां वह विभिन्नता के प्रत्युत्तर प्राप्त करते

---

1. माइवर (1941): सोसल एण्ड परसनल डिस आर्गनाइजेशन, पृष्ठ-310

है। इन सब कारकों के फलस्वरूप विविध प्रकार के विभिन्न व्यवहार प्रतिमान उनमें आ जाते है। जिनके परिणाम स्वरूप विघटन विकसित होता है व्यक्ति में परिवार में तथा समाज में। आधुनिक नगर समाज में उच्च व्यक्तिवादी जीवन जहां व्यक्ति अधिक स्वयं अधिक प्ररित होता है अपेक्षाकृत सामुदायिक प्रसंगों से, वहां बड़ी कठिनाई से व्यक्तिगत स्वार्थो में समझोता होता है। सामाजिक समरसता अक्सर प्रतिस्पर्दा तथा संघर्ष से छिन्न-भिन्न हो जाती है। समाज विरोधी व्यक्तियों की; संस्थाओं की, वर्गो की तथा राष्ट्रों की । संगठन तथा विघटन दोनों सहसम्बन्धी विचार है जो विभिन्न स्तर, स्वार्थो तथा श्रेणियों की समरसता पर निर्भर करते हैं, खास कर एक गतिशील समाज में । यह भी संकेत किया जा सकता है कि स्वार्थो की पूर्ण समरसता एवं मनोवृतियॉ आत्मिक ठहराव उत्पन्न करती है। सामान्य स्वीकृति वर्तमान में विधमान सामाजिक मूल्यों की जैसा कि आधुनिक समाज अधिकाधिक मिश्रित हो गई है और सामाजिक परिवर्तन शीघ्रता सा बड़ा रहा है। सामाजिक संगठनों पर सघन रूप से दबाव बड़ रहा है और विघटन एक परिताशक है जिसके लिए तेज गति का परिवर्तन व सामाजिक प्रगति को बलिदान करना पड़ेगा''।[1]

लेडिस; जे.जे. (1946) ने ''अमेरिकन सोशियो लोजीकल रिव्यू'' में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि-''यहां बहुत से स्त्री-पुरूष होते है जिनका वैवाहिक जीवन असुखी होता है। एक बदली हुयी आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था इन बन्धनों से मुक्त करने की सुविधाऐं प्रदान करती है जहां तक दो सुविधा दलो का प्रसंग है, वहां विवाह के वैयक्तिक पहलुओं में इच्छाऐं एवं मनोवृतियां का सम्बन्ध होता है...... विघटन का हमारा तात्पर्य पारिवारिक नियंत्रण का इस प्रकार भंग हो जाना है जिससे सम्पूर्ण परिवार में अव्यवस्था फैल जाना है।

1. माइवर (1941): सोसल एण्ड परसनल डिस आर्गनाइजेशन, पृष्ठ-

अव्यवस्था का अर्थ है कि सदस्यों के मध्य अविश्वास तथा अस्थिरता की भावना में वृद्धि होना''[1]।

फैरिस, आर.ई.आई. (1948)ने अपनी पुस्तक सामाजिक विघटन में विघटन और उसके स्वरूपों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि, ''विघटन मानव सम्बन्धों के आदर्शों और संचालन में पड़ने वाली बाधा है। विघटन व्यक्तियों के कार्य सम्बन्धी सम्बन्धों का इतना अधिक नाश हो जाता है जिससे समूह के स्वीकृति कार्यों को करने में बाधा आती है। एक परिवार उस समय विघटित अनुभव करता है जब उसके विभिन्न भाग अपनी पूर्णता खो देते है और अपने उद्देश्यों के अनुसार कार्य नहीं कर पाते। .....फैरिस ने मानव आदर्शों, कार्य सम्बन्धी सम्बन्धों का नाश होने तथा उपलक्षित उद्देश्यों को पूरा न होने को ही विघटन कहा है। परन्तु इसमें सांस्कृतिक कारक को ध्यान में रखना चाहिए। किसी संस्कृति में एक अवस्था विघटित मानी जाती है तथा दूसरी में वही संगठित मानी जाती है। ....फैरिस न विघटन के आठ लक्षण बतायें है-(1) दिखावापन, (2) पवित्र विचारों का ह्रास, (3) स्वार्थ तथा रूचि में व्यक्तिगत भेद, (4) व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अधिकारों पर बल देना, (5) सुख-सम्बन्धी व्यवहार, (6) जनसंख्या में मित्रता, (7) पारस्परिक अविश्वास तथा (8) अशान्ति की स्थिति''।[2]

मैकाइवर एण्ड पेंज (1950) ''सुसाइटी'' में लिखा है कि, ''तीन मुख्य कारकों पर जोर देते हुए कहा है जो स्त्री की भूमिका में परिवर्तन ला रहे है, और जिनसे पारिवारिक जीवन प्रभावित हो रहा है।........प्रथम-विवाह संविदा के नियंत्रण का कम होना, द्वितीय-स्त्री के आर्थिक कार्य में परिवर्तन तथा तृतीय-धार्मिक नियंत्रण का ह्रास। आज विवाह का संविदा कुछ अधिक ही स्वचालित हो गया है वह भी नर-नारी द्वारा। आज लोग माता-पिता के विषय से

---

1. लेडिस, जे.जे. (1946): 'अमेरिकन सोशियोलोजीकल रिव्यू' पृष्ठ-62
2. फैरिस, आई.ई.आई. (1948): सामाजिक विघटन, पृष्ठ-

और सामाजिक दबावों से वे कब तथा किससे विवाह रचायेगे? स्त्री के आर्थिक कार्य से पुरूष के प्रभुत्व और स्त्री की आज्ञा-कारिनी सिद्धांत में परिवर्तन आ गया है और इस प्रकार एक नये कारक जिसके तहत स्त्री ने आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त की है। विवाह आवश्यक रूप से बन कर रह गया हैं। यद्यपि यह धार्मिक संस्कार में ही हो रहा है। इसने यौनिक व्यवहार में परिवर्तन किया है और स्त्री की प्रस्थिति को भी महसूस कराया है। वे आगे कहते है- कि केवल आर्थिक एवं धार्मिक परिवर्तन ही नही आए अपितु सम्पूर्ण आधुनिक सभ्यता की प्रक्रिया में जिसके अर्न्तगत जिसमें स्त्री को प्रस्थिति प्रदान की गई है विशेषकर व्यक्ति के सम्बन्ध में । परिवार के कार्यो में उदासीनता, गृह कार्य का कम होना, स्त्रीयों हेतु अधिक आराम के घन्टे, बच्चे कम पैदा करने का भार तथा दो बच्चों में अधिक अन्तराल, ये सब दशाऐं बदलने से परिवार एक नये हिस्सेदारी के रूप में आने से नवीन समस्याओं को जन्म दिया है खास कर परिवार के वर्तमान तथा भविष्य के लिए''।[1]

कार्ल मारहीम (1951) फ्रीडम - पॉवर एण्ड डेमो क्रेटिक प्लानिंग में लिखा है कि, ''विघटन का उत्तरदायित्व अनियंत्रित पूंजीवाद तथा अहस्तक्षेप की नीति है। किस प्रकार निश्चित सामाजिक दशाओं के अर्न्तगत तथा नियोजन के अभाव में उदारवादी अवस्था में आकर विघटन हो जाता है, और सम्पूर्ण सांस्कृतिक व राजनैतिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाती है। प्राचीन अहस्तक्षेप का सिद्वांत अब कार्य नही करता, फिर भी उनका औद्योगिक समाज में नियोजन आवश्यक है। प्रजातंत्र स्वयं अपने विरूद्ध बीजों को बोता है, अपने शत्रुओं को उत्पन्न करता है क्योंकि इस समाज में (आज के) तर्कहीन कार्य किए जाते है। यदि मुख्य शक्तियों के संयुक्तीकरण को नियंत्रण में नही रखा गया जो उससे समाज में अनेक प्रकार के विघटन उत्पन्न होगें । परिवर्तन शीघ्रता से हो रहे है और उन्हें नियंत्रण करने

1. मेकाइवर एण्ड पेज (1950): 'सुसाइटी' पृष्ठ-5

की आवश्यकता है। लोकतंत्र की अपेक्षा अधिनायक तंत्र समाज की बदली हुई परिस्थिति के लिए अधिक उपयोगी है। मशीनरी ने श्रम विभाजन को जन्म देकर वैज्ञानिक कार्य प्रणाली की नीव रखी है। इस परिवर्तन की दिशा में परिवार पड़ोस और समुदाय उसी रूप में कार्य नही कर सकते है। परम्पराऐं तब तक कार्य करती है जब तक सामाजिक परिवर्तन की गति काफी मन्द होती है। परिवर्तन की तीव्रता समाज में विघटन लाती है जिस समाज में नियोजन तथा हस्तक्षेप की नीति का अभाव होता है वह समाज निंत्रणहीन होकर विघटन होने लगता है। अनियोजित पूंजीवाद तथा लेजर फेयर की नीतियां वर्तमान में किसी भी विघटन के लिए उत्तरदाई है"।[1]

न्यूमेयर, एम.एच. (1953).''सोसल प्रोबलमस एण्ड चेन्जिग सुसाइटी'' में व्याख्या करते हुए कहते है कि, ''विघटन एक असन्तुलित दशा ही नहीं वह एक मुख्यतः एक प्रक्रिया है। इस प्रकार यह उन घटनाओं और परिस्थितियों को प्रदर्शित करती है जो व्यक्तियों और समूहों की स्वाभाविक क्रियाशीलता में बाधा उत्पन्न करती हैं। विघटन की दशा एक प्रक्रिया के रूप में आगे बढ़ती है। यदि पुरानी संस्थाओं के द्वारा व्यक्तियों की आवश्यकताएं पूरी नही हो पाती तो धीरे-धीरे परिवार का सदस्य अर्जक की अवहेलना करने लगता है। इस प्रकार परिवार की नियंत्रण शाक्ति कमजोर पड़ती जाती हे तथा व्यवहार के ऐसे ढंगो को प्रोत्साहन मिलने लगता है जिनमें से बहुत ढंग सांस्कृतिक तथा सामाजिक रूप से मान्यता प्राप्त नहीं होते । परिणाम, परिवार का एकमत्य नष्ट होने लगता है। परिवार की संरचना के बारे में भ्रम पैदा होने लगता हैं। इस स्थिति में व्यक्ति की प्रस्थिति एवं भूमिका में अधिक सामन्जस नहीं रह जाता; व्यक्ति अवैध साधनों द्वारा अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयत्न करने लगता है तथा परिवर्तन के अधिक तेज होने के कारण अधिकांश व्यक्ति अपनी परिस्थितियों से अनुकूल

1. कार्ल मानहीम (1951): फ्रीडमः पोवर एण्ड डेमो क्रेटिक प्लानिंग पृष्ठ-8

करने में कठिनाई अनुभव करने लगते हैं। ये सब दशाऐं संयुक्त रूप में जिस असन्तुलित स्थिति को जन्म देती है उसी का विघटन कहते हैं जिस समूह में एकमत्य तथा उद्देश्यों की एकता भंग हो जाये, पारिवारिकी संरचना छिन्न-भिन्न हो जाय और परिवार के क्रियाशील सम्बन्ध टूट जाय तो यह बात मान लेना चाहिए कि पारिवारिक विघटन के लक्षण उत्पन्न हो गये है। ....पारिवारिक विघटन सदस्यों में मतैक्य और निष्ठा का समाप्त हो जाना अथवा पहले के सम्बन्धों का टूट जाना, पारिवारिक चेतना की समाप्ति हो जाना अथवा पृथकता में विकास हो जाना है''।[1]

थामस जेनिकी (1958) ''पोलिस पीजेन्ट इन यूरोप एण्ड अमेरिका'' नामक ग्रन्थ में बताया है कि,''पारिवारिक या सामाजिक विघटन कोई एक असामान्य घटना नहीं है जो किसी काल में या समाजों तक जीवित हो। इसमें कुछ तो हमेशा और हर जगह पाया जाता है क्योंकि हर जगह सामाजिक नियम भंग होने की व्यक्तिगत घटनाएं होती हैं। जो सामाजिक संस्थाओं पर विघटित करने वाला प्रभाव डालती है। यदि उनका प्रतिकार किया तो बढ़ सकती है और सामाजिक संस्थाओं जैसे विवाह तथा परिवार का पूर्ण नाश कर सकती हैं। व्यक्ति जो स्वभाव से सृजक है जो अनेक सामाजिक योजनाओं को अस्वीकृति करता है, व्यवस्थिति व्यवस्था को भंग कर देता है और अधिकतर खतरों के बीच में भी समायोजित हो जाता है और समूह की सुरक्षा को निरन्तर रखता है। परन्तु जो मकजोर है वह सामाजिक योजनाओं को नकारकर अपना ही विघटान कर लेता है''।[2] .... थामस जैनिकी ने अपने-अपने संस्कृति सिद्धांत में यह प्रतिपादित किया कि अमेरीका तथा पोलेन्ड में बसे हुए पोलेन्ड बासियों की संस्कृति अमरीका तथा अन्य देशों की संस्कृति में संघर्ष पाया गया है। जब एक से अधिक संस्कृतियां एक दूसरे

---

1. न्यूमेयर, एम.एच. (1953): सोसल प्रोवलम्स एण्ड चेंजिंग सुसाइटी, पृष्ठ. डी. वान नोटेण्ड कं. इनक्लेव न्यूजर्सी.
2. थामस जैनिकी, (1958): पोलिस पीजेटन्स इन यूरोप एण्ड अमेरिका बोलम-4,पृष्ठ-2

के निकट आती है तो उनमें असमानता का वेमेल के कारण संघर्ष होता है। ऐसा संघर्ष एक ही समूह के वृद्ध वर्ग में भी होता है। वृद्धजन पुरानी रूढ़ियों तथा रीतियों का तथा परत्पराओं के पोषक होते है और युवा नवीनता के पुजारी। इस प्रकार इन दोनों वर्गो में संघर्ष होते हैं और वह संघर्ष वैयक्तिक, पारिवारिक तथा सामाजिक विघटन का कारण होता है। भारत में जब मुगल आए तो वे अपने साथ अपनी संस्कृति लाये। यहां के हिन्दुओं को अपनी संस्कृति पसन्द थी, फलतः इन दोनों संस्कृतियों में सदैव संघर्ष होता रहा जिससे समाज विघटित हुआ। भारत का विभाजन इसी का परिणाम है। इसी प्रकार जब अंग्रेज आये तब अपनी संस्कृति के पोषक तथा प्रचारक थे। इस प्रकार देश में तीन संस्कृतियां एक दूसरे के निकट आई उनमें सदैव संघर्ष होता रहा और समाज विघटन की प्रक्रिया से सदैव गुजरता रहा''।[1]

थामस जेनिकी (1960).........सांस्कृतिक विलम्वना के अनुसार आज का परिवार विघटित दशा को इसलिए प्राप्त होता है क्योंकि आधुनिक औद्योगिक संगठन ने जिसमें अनेक भौतिक वस्तुओं का आविष्कार हुआ है, परिवार के मूल-भूत कार्यो को पूर्ण रूप से बदल दिया है और इस प्रकार की आवश्यकता बढ़ गई है जो भौतिक संस्कृति के परिवर्तन के साथ सामन्जस्य कर सकें। परन्तु पारिवारिक सम्बन्धों शासन करने वाली लोकरीतियां ओर रूढ़ियों में आवश्यक परिवर्तन नहीं हो सका। पारिवारिक सम्बन्धों के आदर्श उस समय की देन है जब परिवार पूर्ण इकाई था''।[2]

आगवर्न निमकाफ (1960), ''हैण्ड बुक आफ सोशियोलोजी'' ने विघटन का अर्थ किसी सामाजिक इकाई जैसे समूह, संस्था या समुदाय के कार्यो का विच्छेद बताया है। इसके साथ ही उन्होंने विघटन के लक्षण भी निम्न रूप में

---

1. थामस जैनिकी, (1958): पोलिस पीजेटन्स इन यूरोप एण्ड अमेरिका बोलम-4, पृष्ठ-2
2. थामस जैनिकी, (1958): पोलिस पीजेटन्स इन यूरोप एण्ड अमेरिका बोलम-4, पृष्ठ-5

निरूपित किए हैं। जिस समाज में सदैव उन्नति तथा सुधार के तत्व पाये जाते हैं तथा जिस समाज में सदैव नये प्रयोग होते रहते है तथा विफलता की प्रक्रिया होती रहती है। विघटित परिवार में युवकों की मान्यता होती है तथा वृद्धों की पूछ कम हो जाती है। विघटित समाज में व्यवहार के नियम निश्चित नहीं पाये जाते । इसके विपरीत संगठित समाज में व्यवहार के नियम बढ़-चढ़ कर रहते है। खाने-पीने से लेकर पूंजापाठ तक के नियम निश्चित रहते है। उन्होंने अपनी पुस्तक में विघटन के निम्न करणों का वर्णन किया है-(1) सामाजिक परिवर्तन की दर में असमानता, (2) विभिन्न संस्कृतियों में संघर्ष, (3) प्राकृतिक पर्यावरण में परिवर्तन का प्रभाव, (4) वंशागत प्रकृति का संस्कृति तथा पर्यावरण के साथ अनुपर्यक्त अनुकूलन, (5) बेकारी, (6) व्यापार में गिरावट, (7) पारिवारिक तनाव तथा (8) श्रम समस्या''।

आगवर्न निमकाफ (1960), ''सांस्कृतिक विलम्बनों के सिद्धांत'' में, ''सामाजिक विलम्बना पारिवारिक एवं सामाजिक विघटन का मुख्य कारण है। यह धारणा भौतिक तथा अभौतिक संस्कृति के अन्तर पर निर्भर करती है। भौतिक संस्कृति के अन्तर्गत उपकरण, मशीन औजार, वर्तन आदि आते है। अभौतिक संस्कृतिक के अन्तर्गत लोकरीतियां, रूढ़िया, विधियां, दर्शन और विश्वास ज्ञान और कला शामिल है। आविष्कार तथा उधार की प्रक्रिया द्वारा जो कि मानव की उत्सुकता तथा इच्छा के सहारे प्रगतिशील होती है, भौतिक संस्कृति शीघ्रता से समझ में आती है तथा व्यक्ति उसे सरलता से अपना लेता है। वह उसके सहारे अपने कार्यो को करता है परन्तु भौतिक संस्कृति के परिवर्तन को उत्प्ररित करता है । इस प्रकार नीति, नैतिकता, धर्म और अन्य सामाजिक संस्थाओं के और कार्यो में परिवर्तन होना आवश्यक हो जाता है। जब संस्कृति के दोनों भौतिक व अभौतिक में परिवर्तन होना आवश्यक हो जाता है। जब संस्कृति के दोनों भौतिक व अभौतिक

भागों में समान रूप से परिवर्तन तथा सामन्जस्य नहीं होता तो पारिवारिक व सामाजिक परिवर्तन होना अनिवार्य हो जाता है''।[1]

आगवर्न निमकाफ (1960), ने सामाजिक समस्याओं की विवेचना सांस्कृतिक पिछड़पन के उपागम के आधार पर की है। यद्यपि परिवर्तन सभी समाजों में होना अनिवार्य विशेषता है लेकिन फिर भी परिवर्तन की दशा में संस्कृति के सभी अंगों के बीच समान मात्रा तथा समान गति से परिवर्तन नहीं होता। भौतिक संस्कृति के तत्वों पैसे उपकरणों, यंत्रों तथा विश्वासों में होने वाले परिवर्तन अभौतिक संस्कृति के तत्वा जैसे नैतिकता सामाजिक मूल्यों का तथा विश्वासों में हाने वाले परिवर्तन की तुलना में बहुत तेज गति होती है। इसका अर्थ है कि परिवर्तन की दशा में संस्कृति का अभौतिक पक्ष भौतिक पक्ष से बहुत पिछड़ जाता है। यह स्थिति सांस्कृतिक पिछड़ेपन अथवा सांस्कृतिक विलम्बना की स्थिति है। सांस्कृतिक पिछड़ेपन की स्थिति में समाज के एक बहुत बड़े भाग को अपने व्यवहारों में नये सिरे से अभियोजन करना आवश्यकता हो जाता है। इसके फलस्वरूप उपयोगी संस्थाओं (परिवार) के कार्य दूसरी संस्थानों हस्तान्तरित होने लगते है। परम्परागत आदर्श नियम अनुउपयोगी प्रतीत होने लगते है बहुत से व्यक्तियों की प्रस्थिति तथा भूमिकाओं में एक भ्रम स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ये वे परिस्थितियां है जो पारिवारिक तथा सामाजिक समस्याओं को जन्म देती है जैसे- औद्योगिक विकास के कारण स्त्रियों को कारखानों तथा कार्यलयों में नौकरी करने के पर्याप्त अवसर प्राप्त हो गये है। लेकिन अभौतिक क्षेत्र में स्त्रीयों की प्रस्थिति एवं भूमिका से सम्बन्धित हमारे विचारों में संकुचित परिवर्तन न हो सकने के कारण आज हमें पारिवारिक विघटन, दापत्य संघर्ष, विवाह विच्छेद जैसी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है''।[2]

---

1. आगवर्न निमकाफ (1960): 'सांस्कृतिक विलम्बना का सिद्धांत'.
2. आगवर्न निमकाफ (1960): हेण्डबुक आफ सोसियोलोजी, पृष्ठ -540-41

अब्राहम सेन, डेविड (1960) अपराध का मनोविज्ञान, में लिखते है कि - "पारिवारिक तनाव पति-पत्नी के मध्य विरोध तथा घृणा से उत्पन्न होता है। तनाव से भरे पारिवारिक वातावरण में बच्चे भी सुरक्षित एवं संतुष्ट महसूस नहीं करते। लम्बे समय से चलता तनाव परिवार की समरसता को कम कर देता है और माता-पिता के संतोषजनक शिशुपालन और पारिवारिक समस्या निवारण के लिए प्रेरक वातावरण प्रदान करने की क्षमता को प्रभावित करता है। वे परिवार, जहां तनाव तथा विरोध व्याप्त होते हैं, भविष्य में बाल अपराधियों के अच्छे जन्म स्थल बन जाते है"।[1]

Khan Nadir Ali (1963), in his study of U.P. revealed that due to the prevalence of extended family system the interference from the in-laws is too much. In this survey conducted amony 414 couples in u.p. , who married under the special marriage Act, 1954, it was found that 92 out of 114 respondents reported had some irritants in their marriage life, they were 54 husbands and 38 wives and the rest did not answered the question. The irritants reporled by the marriage partners related to almost all aspect of married life, Age, attitudes and temper, health, house keeping, income and expenditure, in-laws, servants relations, manner of talking and language used among these the most frequent reported irritants in the married life of these respondants were those relatkng to attitudes and temper of spose. These were the greatest-source of annoyance for the husbands and the second

1. अब्राहम सेन डेविड (1960): साइकिलोजी आफ क्राइम, कोलम्बिया प्रेस, न्यूयार्क, पृष्ठ-43

greatest for the wives in laws become that next greatest source of irritation in the material life of the couple, complaints in regard to them obtained the highest frequeney in the wives list and the third highest in the husbands list. Their narrow mindedness, uncertain tamper partial treatment and interference in the couples affairs this was, the first complaint of both thee husbands and the wives, living with in laws, for some wives a nuisance in order of frequent the third group of irritants related to family income and expemditure. The forth group of irritants pertained to the condition of ealth in the family while behaviour of spouse, habbits talk and language were the next three source of friction in married life."[1]

Mohan, Bring (1963), He found in his research that many of the married couples committed suicide in India due to conflect with their in-laws. An analysis of 37 female mental patients (10% of the total institutional female population) revealed that most of them had unhappy relations with their apouses and in laws espeeially with mother in laws."[2]

मुखर्जी, राधाकमल (1964),"सिकनेस आफ सिविलाईजेशन" ने पारिवारिक तनाव तथा विघटन के लिए संस्कृति कारक को उत्तरदाई मानते हुए यह विचार अभिव्यक्त किया कि आधुनिक युग में मानव चरित्र का पतन हुआ है

1. Khan, Nasir Ali (1963): The emerging pattern of marriage (A sociologically srudy of civil marriage), Ph.D. thesis of Lucknow University PP-242-43
2. Mohan, Btih (1963): social work and the problem of mental disorers ph. D. thers Lucknow university P-308

तथा मानव मूल्यों के बारे में उसके हरिष्ठकोण में परिवर्तन आया है। विज्ञान तथा प्रविधिकी ने व्यक्ति की व्यवहारिक दक्षता में वृद्धि की है। व्यक्ति मूल्यों के कारण उठने वाली विचलन कारी घटनाओं पर नियंत्रण कर सके और वस्तुओं; व्यक्तियों तथा घटनाओं के मूल्यों का अनुभव करे और उसे समर्थ नहीं बनाते कि निश्चित वस्तुओं को पूर्णता एवं परिस्थितियों को सार के रूप में अपने आप अनुभव करे जैसा कि वे आन्तरिक मूल्य तथा इकाइयां उनकी विविध ऊर्जाऐं जिन्हें जीवन के अनुभवों के द्धारा प्राप्त किया है। रोग ग्रसित संस्कृति में कोई सुधार नहीं किया जा सकता, बिना विचारों तथा मूल्यों की एकीकृति कार्य प्रणाली बनाए जो सम्पूर्ण मानव मात्र के लिए वैध हो, उसे हम बहु सभ्यता कहते हैं क्योंकि यह बहुकारकी सभ्यता मानव मूल्यों के दर्शन के साथ परिस्थितिशास्त्र, नीतिशास्त्र, मनोविज्ञान तथा समाज विज्ञान का समन्वय एवं एकीकरण करना है''।[1]

स्टीनस मूट्स एस.के. एण्ड स्टोस, एस (1974): वायलेन्स इन फैमिली में कहा है कि, ''कम आय, बेरोजगारी, एकांकीपन, अनचाहा गर्भ और पति-पत्नी। सास-ससुर से झगड़े ऐसे संरचनात्मक तनाव उत्पन्न करते हैं जो झगड़े को निबटाने के लिए हिंसा को सांस्कृतिक समर्थन मिलने के साथ जुड़कर, घर पर शक्ति का प्रयोग और हिंसा करने का कारण बनते हैं। ऐसे सामाजिक कारक जो पारिवारिक तनाव उत्पन्न करते हैं''।[2]

आहूजा, राम (1987-1998) ने अपने, ''महिलाओं के विरूद्ध अपराध अध्ययन के आंकड़ों के अनुसार,''(1) मध्यम वर्ग की स्त्रियों के उत्पीड़न की दर उच्चवर्ग या निम्न वर्ग की स्त्रियों से अधिक होती है, (2) लगभग 70% पीड़िता 21-24 वर्ष आयु समूह की होती है, (3) यह समस्या निम्न जाति की समस्या की अपेक्षा मध्यम वर्गो में अधिक है, (4) वास्तविक हत्या से पूर्व युवा वधू को कई

---

1. मुखर्जी, राधाकमल (1964): सिक्नेस आफ सिविलाईजेशन, पृष्ठ-6
2. स्टीन मट्स,एस.के.एण्ड स्टोस,एम (1974): 'वायलेन्स इन फेलिजी' हार एण्ड रो,न्यूयार्क,उद्धत द्वारा राम अहूजा, 'सामाजिक समस्याऐं', द्वितीय संस्करण पृष्ठ-239-341,रावत पवलीकेशन जयपुर एण्ड बम्बई.

प्रकार से सताया/अपमानित किया जाता है जो कि पीड़िता के परिवार के सदस्यों के सामाजिक व्यवहार के अथवा स्थिति संरूप को दर्शाता है, (5) दहेज हत्या के कारणों में सबसे महत्वपूर्ण समाज वैज्ञानिक कारक अपराधी पर वातावरण का दबाव या सामाजिक तनाव है जो उसके परिवार के आन्तरिक और बाह्य कारणों से उत्पन्न होते हैं, (6) परिवार की रचना नव वधू को जलाने में निर्णायक भूमिका अदा करती है''।[1]

मुकेश अहूजा (1996) ने अपने शोध अध्ययन ''विधवा'' में निष्कर्ष निकाला कि, (1) हिंसा के अपराधकर्ता अधिकांशतः पति के परिवार के सदस्य होते हैं, (2)पत्नी उत्पीड़न के तीन सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्यों में शांति सम्पत्ति और कामवासना, सम्पत्ति मध्यम वर्ग में उत्पीड़न का निर्णायक कारक होता है, (3)आयु, शिक्षा और वर्ग का शोषण से महत्वपूर्ण पारस्परिक सम्बन्ध दिखाई देता है, परन्तु परिवार की रचना और उसके आकार से; उसके कोई परस्पर सम्बन्ध नहीं होते''।[2] साहित्य की समीक्षा अध्ययनार्थ निर्मित परिकल्पनाओं/शोध-प्रश्नों के निर्माण में सहायक होती है।विभिन्न शोध-अध्येताओं द्वारा एक ही अनुसंधान कार्य को फिर से दोहराने की गलती नहीं हो पाती और अध्ययन-समस्या से सम्बन्धित उन आयामों (पहलुओं) पर, जिन पर अन्य शोध अध्येताओं ने ध्यान नहीं दिया अथवा अछूते रह गए; या फिर अज्ञानतावश छूट गए; शोधकर्ता को उन समस्त अछूते आयामों का भी आभास हो जाता है।

केवलरमानी सी.एस. (1983) ''बाल दुर्व्यवहार'' ने राजस्थान में किया गया आनुभाविक यह स्पष्ट करता है कि पारिवारिक तनाव सम्बन्धी कारक पत्नी दुर्व्यवहार की यथेष्ट कारण व्याख्या करते है। परिस्थिति के तनाव ने स्त्रीयों के शारीरिक दुर्व्यवहार के प्रमुख कारणों के चार रूप इंगित मिले हैः (अ) पति-पत्नी के बीच सम्बन्ध, (ब) माता-पिता व बच्चों के बीच सम्बन्ध, (स) संरचनात्मक

---

1. आहूजा, राम (1987): ''महिलाओं के विरूद्ध अपराध,'' रावत पब्लिकेशन पृष्ठ-243, जयपुर
2. मुकेश अहूजा (1996): विधवा, न्यू ऐंज पब्लिकेशन, दिल्ली,

तनाव और (द) बच्चों द्वारा उत्पन्न किया गया तनाव''[1]। पारिवारिक तनाव के कारण 26.0% में पिताओं को मदिरा को तनाव का कारण बताया। पिता 44% प्रतिदिन मदिरापान करते हैं।

क्रूगर (2000) ''नगरीय समाज शास्त्र'' ने अपने अध्ययन मेंपारिवारिक तनाव को पारिवारिक विघटन का प्रमुख कारण माना है। पारिवारिक तनाव अनेक परिस्थितियों से उत्पन्न होते हैं; जिन्हें उन्होंने निम्न भांति स्पष्ट किया है-(1) परिवार के सदस्यो में उद्‌देश्यों की एकता समाप्त हो जाना तथा वैयक्तिक स्वार्थो का महत्व बढ़ जाना, (2) सहयोगी प्रयत्नों में बाधा पड़ना अथवा उसका समाप्त हो जाना, (3) एक दूसरे के हित में होने वाली सेवाओं का अवरूद्ध हो जाना, (4) परिवार का अन्य समूहो से सम्बन्ध विच्छेद हो जाना अथवा उसकी प्रकृति में परिवर्तन हो जाना, (5) पति-पत्नी के सम्बन्धों में स्नेह-मधुरता और सहानुभूति जैसी विशेषताओं का लुप्त हो जाना तथा, (6) पति और पत्नी की संवेगात्मक मनोवृतियो में विरोध हो जाना अथवा इनमें उदासीनता आ जाना''।[2]

आहूजा, राम (2002): सामाजिक समस्याऐं सदस्यों की अव्यवस्थिति कार्य प्रणाली परिवार में मन मुटाव पैदा करती है, जिसके फल स्वरूप न केवल पति एवं उसकी पत्नी के बीच प्रणाली उत्पन्न हो जाते है, अपितु माता-पिता और बच्चों के बीच में झगड़े होने लगते है। कभी-कभी बेरोजगार पति की पत्नी नौकरी करता चाहती है, परन्तु पत्नी के नौकरी करने का विचार ही उसके पारस्परिक और रूढ़िवादी मूल्यों वाले पति को इतना उत्तेजित कर देता है कि घर में भंयकर झगड़ा हो जाता है। कई पति अपनी पत्नियों को इन क्षेत्रों में जो वे (पति) परम्परागत रूप से अपने समझते है, महत्वपूर्ण सत्ताधारण करने पर आपत्ति करते है। पति अपनी पत्नी को कहे और यही घर में छोटे बच्चे होने के कारण इसके लिए अपेक्षा व्यक्त करे''।[3]

---

1. केवलरमानी, सी.एस. (1983): ''बाल दुर्व्यवहार, रावत पब्लिकेशन जयपुर
2. क्रूगर, डा.वी. एन. सिंह, वी.ए. एवं जे. ने. (2000): ''नगरीय समाजशास्त्र द्वारा उद्धत पृष्ठ-45
3. आहूजा, राम (2002): ''सामाजिक समस्याऐं'', पृष्ठ-82 रिपिन्ट रावत पवली मंशन जयपुर एवं नयी दिल्ली.

कूले, सी.एच. ने अपनी पुस्तक, "सोसल ऑगनाईजेशन" में पारिवारिक जीवन को एक सावयवी प्रक्रिया के रूप में देखा, जिसके अन्दर समाज और व्यक्ति के बीच पारस्परिक प्रक्रिया होती है। विघटन व्यक्तियों और उनके समाज की संस्थाओं के प्रगतिशील सम्बन्धों की प्रकृति में पाया जाता है। सामाजिक संस्थाएं मनुष्य की आवश्यकताओं की संतुष्टी के साधन है, ही व्यक्तियों के कार्यो पर नियंत्रण करती है परन्तु एक ऐसी अवस्था भी आती है जब संस्थाऐं परिवर्तन के कारण व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकती और व्यक्तियों के कार्यो पर नियंत्रण भी उठ जाता है। इस दशा में विघटन बार-बार होता रहता है। व्यक्ति और समाज दोनों ही पारिवारिक जीवन के मित्र पक्ष है। समाज और व्यक्ति दोनों उस वृहत वास्तविकता के दो पूरकपक्ष हैं। जिसमें दोनों शामिल होते है। जब हम पारिवारिक जीवन की उन इकाईयों के हाश्र्टकोण से देखते है जिनसे वह बना है तब हम व्यक्ति को देखते है। इसके विपरीत हम सामूहिकता की दृष्टि से देखते है तब हम समाज को देखते हैं"।[1]

टरमल, एम.एल. ने अपनी पुस्तक "साइकोलोजीकल फैक्टर इन मेरीटल हेपीनेश" में विवरण प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि- "वैयक्तिक तनाव के क्षेत्र में स्वभाव को कुछ प्रमुख विशेषताऐं होती हैं- (1) वे बहुत भावुक और उद्वेगात्मक होते है, (2) वे सरलता से क्रोधित हो जाते हैं, (3) अपनी स्वार्थसिद्धी से सदैव झगड़ालू प्रकृति के हो जाते है, (4) दूसरे व्यक्तियों की आलोचना में सुख का अनुभव करते है, (5) अन्य व्यक्तियों की भावनाओं पर ध्यान नहीं देते, (6) स्वभाव से ही व्यक्तियों से शत्रुता रखते है, (7) दूसरे के प्रति घृणा के भाव को शीघ्रता से प्रदर्शित करने लगते है, (8) किसी के द्वारा प्रसंशा करने अथवा आरोप लगाने से शीघ्र ही प्रभावित हो जाते है, (9) उनमें आत्मविश्वास की कमी हो जाती है, (10) वे शीघ्र ही बहकावे में आ जाते है और (11) बिना किसी विशेष कारण के शीघ्र ही प्रसंन अथवा दुखी हो जाते हैं"।[2]

---

1. कूले, सी.एच. सोसल ओरगनाइजेशन
2. कूले, सी.एच. सोसल ओरगनाईजेशन

आहूजा, राम (2002) ''सामाजिक समस्याऐं'' नामक पुस्तक में लिखते हैं कि,'' भारत जैसे समाज में पत्नी को पीटने का समाजशास्त्री अध्ययन हिम कन्दुक पद्धति (Snowball Method) से हो सकता है क्योंकि इस मामले की शिकायत पुलिस में कभी भी दर्ज नहीं कराई जाती। अध्ययन सामान्यतया यह संकेत देता है कि इसमें निम्न आय वर्ग की स्त्रीयां अधिक कष्ट भोगी होती है। इसलिए मध्य वर्गो की पिटने वाली स्त्रियों के आंकड़े उपलब्ध नहीं होने के कारण सामाजिक निष्कर्षो और परिकल्पनाओं पर इसका निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार वेतन योगी स्त्रीयों की भूमिका समायोजन का अध्ययन यदि निम्न वर्ग तक सीमित होता है तो वे पहले ही पति और पत्नी के अलग होने, परित्याग या तलाक की स्थितियों की ओर संकेत करता है, परन्तु मध्यम वर्ग की वेतन भोगी स्त्रीयों का अध्ययन ऐसी समस्याओं- अलग होने परित्याग व तलाक की सम्भावनाओं को अधिक व्यक्त करता है''।[1]

मर्टन, आर.के.एण्ड निसविट (1971): ''कन्टेमपरी सोसल प्रोब्बलम्स'' में व्याख्या की है कि- ''लक्ष्यों और साधनों में नियोजन और उसके परिणाम स्वरूप उत्पन्न तनाव की स्थिति व्यक्तियों की संस्कृति द्वारा निर्धारित किए गये लक्ष्यों या संस्थात्मक साधनों या दोनों के प्रति वचनबद्धता में निर्बलता आ जाने के कारण आती है। इस प्रकार व्यक्तियों की विशेषताओं में तनाव के श्रोत्रों को ढूढ़ने के बजाय उनको संस्कृति और या सामाजिक संरचना में ढूढते हैं। सामाजिक समस्या व्यक्त्यिों की अपनी सामाजिक प्रस्थितियों की आवश्यकताओं के अनुरूप आचरण नहीं करने से उत्पन्न नहीं होती है अपितु इन सामाजिक प्रस्थितियों को यथोचित सुसंगत सामाजिक व्यवस्था में बाधने के प्रयत्न में दोषपूर्ण संगठन द्वारा होती है''।[2]

♣♣♣

---

1. आहूजा, राम (2002) ''सामाजिक समस्याऐं'' अध्याय-1, पृष्ठ-16, रावत पब्लिकेशन, सत्यम अपार्टमेन्ट सेक्टर 3 जैन मन्दिर रोड, जवाहर नगर, जयपुर

2. मर्टन, आर.के.एण्ड निसविट (1971) कन्टेम्परेरी सोसल प्राब्लम्स हारकोर्ट व्रास, न्यूयार्क.

अध्याय -4

उत्तरदाताओं की सामाजिक जनांकिकीय विशेषताऐं

अध्याय -4

उत्तरदाताओं की सामाजिक एवं जनांकीय विशेषताएं

यदि हम धूमपान तथा वक्ष के केन्सर के बीच सम्बन्ध स्थापित करना चाहे तो हमें सूचनाओं की आवश्यकता पड़ती है; यदि हम धर्म एवं कानून की सामाजिक संगठन हेतु क्षमता का परीक्षा करना चाहे तो हम तथ्यों की आवश्यकता पड़ती है; यदि हम किसी व्यक्ति-परिवार तथा समाज का विघटन की स्थिति जानना चाहे तब भी हमें सांख्यकी की आवश्यकता पड़ती है।''[1]

प्रत्येक राज्य परिवारों की सुख-शांति एवं समवृद्धि से सम्बन्धित होता है कि उसके सदस्यों की क्या कतिपय सुख-शान्ति एवं समवृद्धि की समस्याऐं हैं, उनका क्या स्वभाव है, क्या आकार है तथा उनका जनसंख्या में क्या स्वरूप है, जनसंख्या के किस सामाजिक वर्ग की क्या दशा है? क्या स्थान विशेष की परिस्थितियां है? और उनमें क्या परिवर्तन हो रहा है ? उन वाह्‌य दशाओं जैसे आर्थिक एवं सामाजिक कारकों से, इसी प्रकार की समीक्षा के लिए कुछ नाप-तौल आवश्यक होती है क्योंकि व्यक्तियों ने राज्य का निर्माण किया है और राज्य व्यक्तियों के लिए है तथा राज्य साधन है और उसके भूगोलिक क्षेत्र में रहने वाले व्यक्तियों के परिवार साध्य हैं''।[2] इन्हीं को सामाजिक, आर्थिक तथा जनांकीय सूचनाऐं कहते हैं । जो जन्म-मृत्यु-विवाह, उनके स्वरूप, व्यवसाय, प्रतिव्यक्ति आय, शैक्षिक स्तर, जाति, धर्म, जनसंख्या का घनत्व से सम्बन्धित होते हैं। उचित रूप से सम्पादित, वर्गीकृत, एवं विश्लेषित तथ्य सामाजिक एवं पारिवारिक उतार-चढ़ाव मापक यंत्र होते हैं; जो सामाजिक गतिशीलता, सुख-दुख,

---

1. Society for social Medicines (1966): Evidences submitted to the Royal common social medical Education, Beit, Pre. Soc. Medi, 20,158
2. Mill, J.S.

गरीबी-अमीरी संगठन व विघटन, विकास तथा अवनति को बताते हैं कि किस वर्ग की क्या दशा है? उसके कौन-कौन से उत्तरदाई कारक हैं?,उनका व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

यदि हम परिवार की "वर्तमान प्रस्थिति एवं कार्य को ही ले, जैसे- बाल अपराध आधुनिक परिवर्तन, मद्यपान, द्यूतक्रीड़ाएं, भ्रष्टाचार, वलात्कार, परस्त्रीगमन, मानसिक स्वास्थ्य, शोषण, परिवार का आकार, आवास, स्त्रीयों का सशक्तिकरण तथा इनको प्रभावित करने वाले कारक तथा सरकार द्वारा इनके नियंत्रण तथा संगठन हेतु उठाये जाने वाले कदम यथा-बचाव, समवृद्धि उपचारात्मक तथा पुर्नवास सेवाएँ आदि"।[1]

समाज की एवं परिवार की जनांकिकी, जिसको डा० एन०एन० अग्रवाल ने "अध्ययन की गणितीय शाखा बताया है, अर्थात् जनसंख्या अध्ययन जिसमें होता है" ; तथा सामाजिक-आर्थिक सूचनाओं के अभाव में एक ऐसा समुन्द्री जहाज बताया है जिसमें उसका दिशा प्रदान करने वाला यंत्र नहीं होता"।[2] समाज में समरसता को मापने और सामाजिक व्याधिकिओं की पहिचान करने के लिए, उनका स्वरूप, आकार एवं क्षेत्र विशेष में उनका वर्गीकरण विशेष समूहों की संरचना में ताकि सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिए आवश्यक प्रयास किए जा सके और सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन में किसी भी तरह की क्षेपण पर अकुंश किया जा सके, जो पूर्व से वर्तमान में व्यक्ति, परिवार तथा समाज व्यवहार में परिवर्तन के रूप में दृष्टिगोचर होता है; ताकि तुलनात्मक अध्ययन किया जा सके, वर्तमान की आवश्यकता की समीक्षा करना सम्भव हो और उन्हें ठीक करने के लिए उद्देश्य तथा लक्ष्यों को निर्धारित किया जा सके। क्योंकि

---

1. Brockington, C.E. (1958): World Health, 2nd Edi, churchil London.
2. अग्रवाल, एस.एन. (1970): ट्रेनिंग इन्डियास डेमोग्रफरस, एन इन्टरव्यूह बाई के.एन. एल.पिल्लई,स्पान, पृष्ठ-31

सामाजिक-आर्थिक एवं जनांकिकीय कारक सदैव गतिशील रहते हैं और ये समाज के सभी प्रकार के सम्बन्धों एवं प्रबन्धनों को प्रभावित करते हैं''।[1]

इस प्रकार सामाजिक-आर्थिक तथा जनांकिकीय सूचनाएं किसी शोध अध्ययन के विषय में एक अनिवार्य आधार होती हैं। क्योंकि सामाजिक सन्दर्भ में ही यदि हम ले तो ये तथ्य समाज व्यवस्था को चुस्त-दुरूस्त रखने में अहम भूमिका प्रदान करते हैं और विचलनों के रूप में जाने जाते हैं । यही कारण है कि उत्तरदाताओं को उजागर करने वाली ये सूचनाऐं शोधकर्ता के लिए अनिवार्य होती हैं। समुदाय स्तर पर इनका एकत्रीकरण कठिन होता है क्योंकि उत्तरदाता स्वयं एवं परिवार के बारे में समस्याऐं सम्बन्धी प्रश्नों के प्रत्युत्तर टाल जाते हैं तथा असत्य बतलाते हैं। यहां तक प्राकृतिक विज्ञानों के अध्ययन में जैसे चिकित्सा विज्ञान में भी व्यक्ति के बारे में आधारभूत सूचनाऐं एकत्र की जाती हैं तथा उनका कारण विज्ञान द्वारा निदान निश्चित करके उपचार देने का प्रयत्न किया जाता है''।[2]

किसी भी शोध अनुसंधान का लक्ष्य एक समस्या विशेष के सम्बन्ध में वैज्ञानिक निष्कर्ष निकालना होता है ताकि तथ्यों को निरूपित करने में कठिनाई न हो; क्योंकि वास्तविक तथ्यों पर आधारित यथार्थ ही निश्चित निष्कर्ष होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट हैं कि सामाजिक अनुसंधान की बुनियादी बातें अध्ययन विषय से सम्बन्धित होनी चाहिए अर्थात् "निदर्शनों से सम्बन्धित प्राथमिक सूचनाऐं जैसे उनकी आयु, शिक्षा, लिंग, व्यवसाय, मासिक आय, जाति-धर्म, वैवाहिक स्तर, परिवार का प्रकार तथा आवास की दशाऐं तथा सूचना श्रौत्र । इनके विशुद्ध अध्ययन के लिए इनकी कल्पना नहीं की जा सकती क्योंकि शोध का एक क्षेत्र भी होता है । जिसमें शोध हेतु निदर्शनों का चुनाव किया जाता है। इस लिए

---

1. अग्रवाल, एस.एन. (1970): ट्रेनिंग इन्डियास डेमोग्रफरस, एन इन्टरव्यूह बाई के.एन. एल.पिल्लई,स्पान, पृष्ठ-31
2. डब्ल्यू. एच.ओ. (1976): डब्ल्यू.एच.ओ. किरानी की, 30 (2) 58.

उत्तरदाताओं के सम्बन्ध में जो तथ्य एकत्र किए जाते हैं उन्हें उन उत्तरदाताओं से सम्बन्धित सामाजिक एवं जनांकिकीय तथ्य कहते हैं"।[1] किसी भी समस्या के उद्भव होने के निर्धारण के तत्व तथा कारक होते हैं। उन समस्या के वितरण को समझने के लिए आयु, लिंग, परिवार का स्वरूप, शिक्षा, व्यवसाय तथा आर्थिक परिस्थितियाँ होती हैं जो समस्या के अभिकर्ता (Agent) संक्रमण को स्वस्थ्य व्यक्ति एवं परिवार तक पहुचाने के श्रौत्र (Host) तथा पर्यावरण (Environment) जो समस्या के स्वभाव, आकार दर तथा व्यापकता को सूचित करते हैं। समाजशास्त्रीय अध्ययनों में व्यक्ति तथा उसका व्यवहार-चिन्तन, अनुभूतियाँ, तथा आचरण ही समस्या का अभिकर्ता, श्रौत्र एवं माध्यम तथा पर्यावरण सृजनकर्ता होता है। इसलिए उसकी समाजशास्त्रीय विशेषताओं के सम्बन्ध में तथ्य एकत्र करना शोध के लिए परम आवश्यक होता है। समस्या का सम्पूर्ण अध्ययन करने के लिए इकाई के सम्पूर्ण पहलुओं जैसे उसकी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, प्राणीशास्त्रीय आदि दृष्टियों का अध्ययन अनिवार्य होता है। सर्व श्री गुड और हाट ने वर्णन करते हुए कहां हैं कि- "शोध के आकड़ों को इस प्रकार संगठित किया जाये ताकि समस्या के कारणों का निदर्शकों से सम्बन्धित प्राथमिक सूचनाओं से सम्बन्धित करके सहसम्बन्ध को खोजा जा सके क्योंकि प्रायःसामाजिक घटना के कारक घटना के आन्तरिक एवं वाहय पर्यावरण में ही विद्यमान होते है"।[2]

किसी भी मनुष्य को अधिकाधिक जानने, समझने के लिए उसके सामाजिक पर्यावरण को जानना आवश्यक होता है क्योंकि यही उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि है। मानव अन्य प्राणियों की भाँति जैवकीय प्राणी है परन्तु उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि उसे अन्य प्राणियों से भिन्न बनाती हैं क्योंकि वह सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, वैयक्तिक तथा शैक्षिक विशेषताओं का सम्मिलित रूप है।

---

1. मुखर्जी रवीन्द्र नाथ (2001): सामाजिक शोध व सांख्यिकी 8 वॉ संस्करण बालाजी आफसेट, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32, पृष्ठ-175
2. गुड एण्ड हाट (1952): मेथड इन सोशल रिसर्च, माइग्रोहिल बुक को. न्यूयोर्क पृष्ठ-331

मनुष्य उपरोक्त विभिन्न पक्षों से मिलकर ही सम्पूर्णता को प्राप्त करता है। सुस्पष्ट है कि सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत मनुष्य की सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसी सन्दर्भ में श्री लवानिया (1967:203) ने लिखा है कि-''सम्पूर्ण रूप से यह 'सजीव चित्र' मनुष्य मात्र के लिए सामाजिक पृष्ठभूमि है, जो वंशानुक्रमण तथा पर्यावरण का विशेष प्रभाव पड़ता है''।[1]

जहां एक ओर व्यक्ति को शरीर रचना (आँख, कान, नाक, रंगरूप आदि) वंशानुक्रमण से प्राप्त होते हैं वही दूसरी ओर उसे शिक्षा, संस्कार, जीवनमूल्य, व्यवसाय, व्यवहार, आदतें, लगाव आदि पर्यावरण से प्राप्त होते हैं, इसलिए कोई भी व्यक्ति वंशानुक्रमण तथा पर्यावरण के पड़ने वाले प्रभाव को नकार नहीं सकता जैसी कि सारस्वत (1993:157) की राय हैं- ''मनुष्य की सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि उस समुदाय की व्यवस्था का अभिन्न अंग होती है जिसमें कि वह सामाजिक प्राणी (मनुष्य) रह रहा होता है''।[2] सुस्पष्ट है कि सामाजिक व्यवस्था के अर्न्तगत मनुष्य की सामाजिक पृष्ठभूमि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। श्री र्‍यूटर तथा हार्ट ने सामाजिक व्यवस्था के संदर्भ में लिखा है कि-''समाज में मनुष्य की सामाजिक पृष्ठभूमि उसके सांस्कृतिक पर्यावरण का एक अभिन्न अंग होती है जिसमें कि व्यक्ति रह रहा होता है अथवा रह चुका होता है''।[3] अनुसंधान के क्षेत्र में सामाजिक विज्ञान के प्रायः सभी शोधाध्ययनों में निदर्शितों की सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं का अध्ययन अवश्य किया जाता है जबकि प्राकृतिक विज्ञानों के शोध अध्ययनों में भी इनका गहन अध्ययन किया जाता है। इसलिए सामाजिक विज्ञानों के शोध अध्ययनों में इनके अध्ययन की

---

1. लवानिया, एस.एम.(1990):प्रक्टीकल सोशियोलाजी, प्राब्लम्स एण्ड एक्ट्स,प्रकाशन केन्द्र लखनऊ,उ.प्र.पृष्ठ-320
2. सारस्वत, आर.पी. (1993): 'ऐन इन्ट्रोडक्शन टू सोशियोलाजी' मैक्ग्रोहिल बुक कं.,न्यूयार्क लन्दन, पृष्ठ-57
3. स्यूटर, एम.आर. (1960): 'ऐन इन्ट्रोडक्शन टू सोशियोलाजी' मैक्ग्रोहिल बुक कं.,न्यूयार्क लन्दन.

महत्ता बढ़ जाती है क्योंकि उत्तरदाताओं की सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताओं की अवहेलना नहीं की जा सकती है।

यही कारण है कि किसी सामाजिक विज्ञान के अनुसंधान में यह आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य होता है कि अध्ययन की इकाईयों के सामाजिक-आर्थिक तथा जनांककीय पक्षों को जानकर उनका गहन तथा सूक्ष्म अध्ययन किया जाये क्योंकि व्यक्ति की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का निर्माण कई कारकों से मिलकर होता है। इसी सन्दर्भ में श्री सत्येन्द्र (1992:40) ने लिखा है कि-"विशेषकर सामाजिक विज्ञानों के शोध अध्ययनों में सूचनादाताओं की सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अहम दशाऐं होती है"।[1]

शोध अध्ययनों में उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं का अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है कि अगर हम उत्तरदाताओं की समस्याओं का अध्ययन गम्भीरता तथा सूक्ष्मता से करना चाहते हैं तो हमें उनकी सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक आदि विशेषताओं का ज्ञान होना आवश्यक है तभी हम उनकी समस्याओं के कारणों को ठीक से समझ सकेगें। चूँकि शोधार्थी का शोध विषय मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव व विघटन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन से सम्बन्धित है। अतः शोध अध्ययन में उनकी सामाजिक-आर्थिक एवं जनांककीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यावश्यक तथा महत्वपूर्ण हो जाता है।

सामाजिक घटनाओं के अध्ययनों में कार्य-कारण सम्बन्धों की स्थापना आवश्यक होती है। अतः कार्य-कारण सम्बन्धों को स्थापित करने के लिए सामाजिक विशेषताओं का जानना आवश्यक है, साथ ही इन कार्य-कारण सम्बन्धों का सामाजिक घटनाओं पर क्या प्रभाव पड़ता है, इन्हें जानना सरल हो जाता है क्योंकि व्यक्ति के रहन-सहन, चिन्तन, जीवन शैली आदि सभी पर उसके

1. सत्येन्द्र, के. एण्ड भटनागर, पी.के.(1992): रिसर्च डिजाइन इन सोसल साइन्सेज सोसल कन्डीशन एण्ड प्रावलम्स, जगन्नाथ पब्लिकेशन प्रा.लि. दरभंगा (बिहार, द्वितीय एडीशन) पृष्ठ-89

चारों ओर की भौतिक सांस्कृतिक विशेषताओं का प्रभाव अवश्य ही पड़ता है। कोई भी शोध तभी सफल हो सकता है जब उसमें सामाजिक घटना के सभी पक्षों का अध्ययन गहनता से किया जाये । इसलिए शोध में उत्तरदाताओं की सभी विशेषताओं का अध्ययन करना अनिवार्य हो जाता है।

सामाजिक एवं आर्थिक विशेषताऐं अधिकांशतः जनसंख्या से सम्बन्धित होती है क्योंकि मध्यम वर्गीय परिवारों में समूह जीवन सदस्यों के गत्यात्मक सम्बन्धों जो अन्तः क्रियाओं के रूप में होते है, पर निर्भर करता है। साथ ही उनमें आकार तथा कार्य कुशलता आत्मसात् होती है जिसके आधार पर वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते है। मानव जीवन को निर्धारित करने में उसके सामाजिक पर्यावरण का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। पर्यावरण मनुष्य के जीवन को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करता है तथा उसके सामाजिक तथा आर्थिक स्वरूप को भी निश्चित करता है। किसी विशिष्ट पर्यावरण में व्यक्ति की कार्य पद्धति तथा जीवन शैली का स्वरूप किस प्रकार का होगा, यह बहुत कुछ उसके पर्यावरण पर निर्भर करता है क्योंकि पर्यावरण मनुष्य को वाह्य करता है कि वह अपने उसके अनुरूप ढाले । मनुष्य की अवाधि प्रगति उसकी सामाजिकता का ही परिणाम है। समाज के सम्पर्क में आने पर ही वह जैवकीय प्राणी से सामाजिक प्राणी के रूप में परिवर्तित होता है। मनुष्य और उसके चारों ओर का परिवेश एक दूसरे के पूरक होते हैं । मनुष्य को उसके पर्यावरण से अलग नहीं किया जा सकता । श्री तिलैरा (1990:132) ने भी इस कथन की पुष्टि करते हेए कहा है, "मनुष्य एक चिन्तनशील तथा जिज्ञाशु सामाजिक प्राणी है जिसका जीवन समाज में ही पनपता है और निकटवर्ती भौतिक परिवेश के मध्य अन्तःक्रियाऐं करते हुए सामाजिक परिवेश में जीवन यापन करता है, जिसे सामाजिक पर्यावरण से कदापि

पृथक नहीं किया जा सकता है क्योंकि पर्यावरण एक प्रकार का 'ताना' है जिसमें प्राणी रूपी 'बाना' डालने से ही समाज के सजीव चित्र का निर्माण होता है''।[1]

किसी मनुष्य की आदतें, स्वभाव, रहन-सहन का स्तर, जीवन शैली, वैचारिकी आदि उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से ही निर्धारित होती है अर्थात उसके चारों ओर के भौतिक परिवेश का उसके जीवन के प्रत्येक पहलू पर अनावश्यक प्रभाव पड़ता है। इस सन्दर्भ में प्रोफेसर अग्रवाल का कथन है कि-''मानव केवल एक जैवकीय प्राणी ही नहीं है अपितु इसके अतिरिक्त भी कुछ है और इसके अतिरिक्त वह जो भी है उसके कारण उसके व्यवहार, आचार-विचार, चिन्तन तथा जीवन शैली आदि प्रभावित होते है''[2]

यह भी सर्व स्वीकार तथ्य है कि प्रत्येक सामाजिक प्राणी की सामाजिक प्रस्थिति तथा भूमिका के निर्धारण में उसकी सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। इसी प्रसंग में सर्व श्री मिश्रा, पी0के0 (1997:37) ने लिखा है कि-''चूँकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसलिए उसकी आकांक्षाऐं तथा आवश्यकताऐं अनन्त है। इन आकांक्षाओं एवं आवश्यकताओं के प्रति उसकी क्रियाशीलता, सफलता, असफलता उसके सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन की पृष्ठभूमि को निर्धारित करती है''।[3]

प्रत्येक राष्ट्र अपनी सीमाओं में निवास करने वाले प्राणियों से सम्बन्धित होता है, अतः उसे समाज की आवश्यकताओं तथा समस्याओं का बोध होना चाहिए जैसे- उनका स्वभाव, आकार तथा संपूर्ण जनसंख्या में उनका वितरण आदि। किस प्रकार ये समस्याएं एक स्थान से दूसरे स्थान पर परिवर्तित होती है और

---

1. तिलेरा,के.एस.(1990): प्रक्टीकल सोशियोलाजी, प्राबलम्स एण्ड सोसल एक्टस प्रकाशन केन्द्र लखनऊ, पृष्ठ-132
2. अग्रवाल भारत (1981): 'भारतीय समाज' अतीत से वर्तमान तक, मनमोहनदास पुस्तक मन्दिर प्रा.लि.भरतपुर (राज), पृष्ठ- 103
3. श्री मिश्रा पी. के. (1997:37)

वे एक समयावधि में सामाजिक आर्थिक परिस्थितिवस परिवर्तित होती हैं। इस प्रकार की किसी भी समीक्षा के लिए कुछ निश्चित मापक अनिवार्य होते है। यही सामाजिक-आर्थिक तथा जनांककीय तथ्य कहलाते है जो जन्म, मृत्यु, शिक्षा, व्यवसाय,लिंग, आय, विवाह, जीवित सन्तान से सम्बन्धित होते हैं। जो सामुदायिक जीवन में विद्यमान होते है। यथार्थ रूप में सम्पादित-वर्गीकृति तथा विश्लेषित घटनाऐं समाज की वर्तमान स्थिति एवं समस्याओं को मापने के यंत्रों का कार्य करते हैं। संक्षेप में हम कह सकते है कि "सामाजिक शोध में या अनुसंधान में विभिन्न प्रकार की सूचनाएं या तथ्यों की आवश्यकता पड़ती है। इन्हें मोटे तौर पर दो भागों में विभाजित किया गया है। (1) प्राथमिक सूचनाएं तथा (2) द्वितीय सूचनाएं । प्राथमिक सूचनाएं वे मौलिक तथ्य होते हैं जो कि एक शोधकर्ता वास्तविक चयनित किए निदर्शनों से (जीवित प्राणी) साक्षात्कार करके अनुसूची की सहायता से उनकी सामाजिक विशेषताओं जैसे- शिक्षा, व्यवसाय, आय, जाति, धर्म तथा आवसीय दशा और जनांककी विशेषताओं जैसै- आयु, वैवाहिक स्तर, जीवित बच्चों की संख्या, परिवार का आकार, प्रजनन क्षमता आदि एकत्र करता है जो किसी शोध के लिए अनिवार्य सामग्री प्रस्तुत करते हैं"।[1]

प्रस्तुत शोध अध्ययन के इस अध्याय में निदर्शनों की सामाजिक एवं जनांकिकीय विशेषताओं का उल्लेख किया गया है जो निम्न प्रकार हैः-

---

1. मुखर्जी रवीन्द्र नाथ (2001): सामाजिक शोध व सांख्यिकी 8 वॉं संस्करण बालाजी आफसेट, नवीन शाहदरा,पृ159

तालिका संख्या-1

आयुवार उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्र. सं.	आयु वर्ग	आवृति	प्रतिशत
1.	21-25	-	-
2.	26-30	18	6.00
3.	31-35	24	8.00
4.	36-40	57	19.00
5.	41-45	99	33.00
6.	46-50	30	10.00
7.	51-55	54	18.00
8.	56-60	12	4.00
9.	60 से ऊपर	06	2.00
	योग	300	100.00

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि 99अधिकांश 33प्रतिशत उत्तरदाता 41-45 के आयु समूह के, 57 उत्तरदाता 19 प्रतिशत 36-40 आयु समूह के, 54 उत्तरऊदाता 18 प्रतिशत 51-55 आयु समूह के, 30 उत्तरदाता 10 प्रतिशत 46-50 आयु समूह के, 24 उत्तरदाता 8 प्रतिशत 31-35 आयु समूह के, 12 उत्तरदाता 4 प्रतिशत 56-60 आयु समूह के तथा 6 उत्तरदाता 2 प्रतिशत 60 से ऊपर आयु वर्ग के थे।

तालिका संख्या-2

उत्तरदाताओं का लिंगवार वर्गीकरण

क्र. सं.	लिंग	आवृति	प्रतिशत
1.	पुरूष	183	61
2.	स्त्री	117	39
	योग	300	100

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि 183 अधिकांश 61 प्रतिशत उत्तरदाता पुरूष तथा 117 उत्तरदाता 39 प्रतिशत महिलाऐं थी

तालिका संख्या-3

उत्तरदाताओं का शैक्षिक स्तरवार वर्गीकरण

क्र. सं.	शिक्षा	आवृति	प्रतिशत
1.	प्राइमरी	-	-
2.	जूनियर	-	-
3.	हा0 स्कूल	-	-
4.	इन्टर	30	10
5.	बी0ए0	210	70
6.	एम0ए0	60	20
	योग	300	100

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि 210 अधिकांश 70 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक स्तर, 60 उत्तरदाता 20 प्रतिशत परास्नातक स्तर तथा 30 उत्तरदाता 10 प्रतिशत इन्टर स्तर की शैक्षिक योग्यता रखते थे।

तालिका संख्या-4

जातिवार उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्र. सं.	जति	आवृति	प्रतिशत
1.	सामान्य	162	54
2.	पिछड़ी	78	26
	दलित	60	20
	योग	300	100

उपरोक्त सारणी से विदित होता है कि 162 अधिकांश उत्तरदाता 54 प्रतिशत सामान्य जाति के, 78 उत्तरदाता 26 प्रतिशत पिछड़ी जाति के तथा 60 उत्तरदाता 20 प्रतिशत अनुसूचित जाति के परिवार थे।

तालिका संख्या-5

उत्तरदाताओं का धर्मवार वर्गीकरण

क्र. सं.	धर्म	आवृति	प्रतिशत
1.	हिन्दू	200	66.67
2.	मुस्लिम	75	25.00
3.	सिख	17	5.67
4.	ईसाई	8	2.66
5.	बौद्ध	-	-
6.	जैन	-	-
	योग	300	100.00

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है, कि 200 अधिकांश 66.67 प्रतिशत उत्तरदाता हिन्दू , 75 उत्तरदाता 25 प्रतिशत मुस्लिम, 17 उत्तरदाता 5.67 प्रतिशत सिख, 8 उत्तरदाता 2.66 प्रतिशत ईसाई धर्म के अनुयायी थे।

तालिका संख्या-6

उत्तरदाताओं का व्यापारवार वर्गीकरण

क्र. सं.	व्यवसाय	आवृति	प्रतिशत
1.	कृषि	-	-
2.	नौकरी	231	77
3.	व्यापार	99	23
4.	प्राइवेट वर्क	-	-
5.	योग	300	100

उपरोक्त सारणी से पता चलता है कि 231 उत्तरदाता अधिकांश 77 प्रतिशत नौकरी पेशा थे तथा 99 उत्तरदाता 23 प्रतिशत व्यापार का कार्य करते थे।

तालिका संख्या-7

उत्तरदाताओं का मासिक आयवार वर्गीकरण

क्र. सं.	आय	आवृति	प्रतिशत
1.	रु0 15,000-20,000	33	11
2.	रु0 20,001-25,000	69	23
3.	रु0 25,001-30,000	99	33
4.	रु0 30,001-35,000	75	25
5.	रु0 35,001-40,000	24	8
6.	रु0 40,001से 50,000	-	-
	योग	300	100

ग्राफ संख्या - १

उत्तरदाताओं का व्यापारवार वर्गीकरण
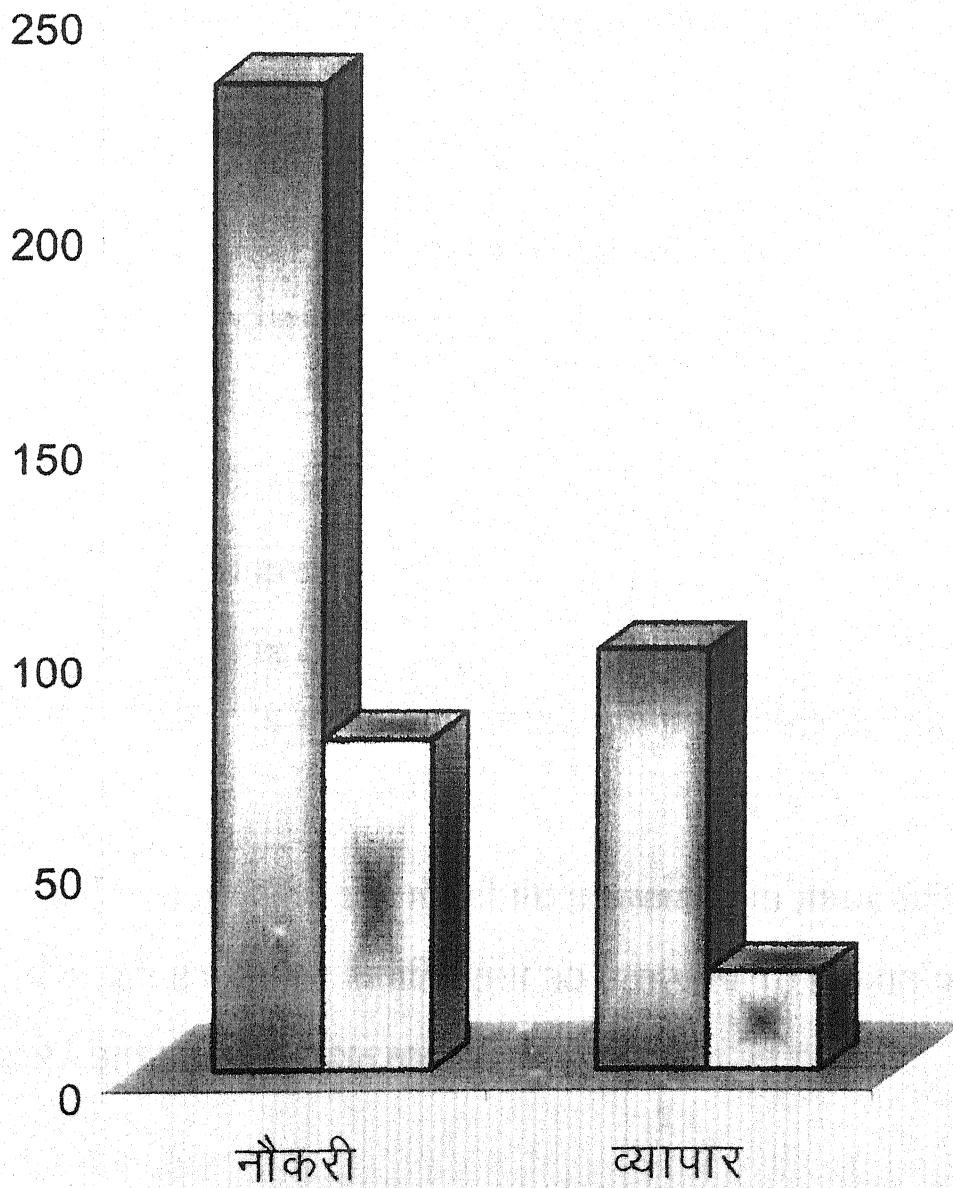
उपरोक्त सारणी संज्ञान प्रदान करती है कि अधिकांश 99 उत्तरदाता 33 प्रतिशत की मासिक आय रू0 25,001-30,000 । 75 उत्तरदाताओं 25 प्रतिशत की मासिक आय रू0 30,001-35,000 । और 69 उत्तरदाताओं 23 प्रतिशत की मासिक आय रू0 20,001 तथा 33 उत्तरदाताओं 11 प्रतिशत की रू0 15,000-20,000 एवं 24 उत्तरदाताओं 8 प्रतिशत का मासिक आय रू0 35,000 से रू0 40,000 थी।

तालिका संख्या-8

उत्तरदाताओं का विवाह स्तर सम्बन्धी वर्गीकरण

क्र. सं.	विवाहित स्तर	आवृति	प्रतिशत
1.	विवाहित	243	81
2.	पृथककरण	30	10
3.	तलाक शुदा	27	9
	योग	300	100

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि अधिकांश 243 मध्यम वर्गीय परिवारों के उत्तरदाता 81 प्रतिशत विवाहित तथा 30 उत्तरदाता 10 प्रतिशत पृथककरण तथा 27 उत्तरदाता 9 प्रतिशत तलाक शुदा थे।

ग्राफ संख्या - २

उत्तरदाताओं का विवाह स्तर सम्बन्धी वर्गीकरण
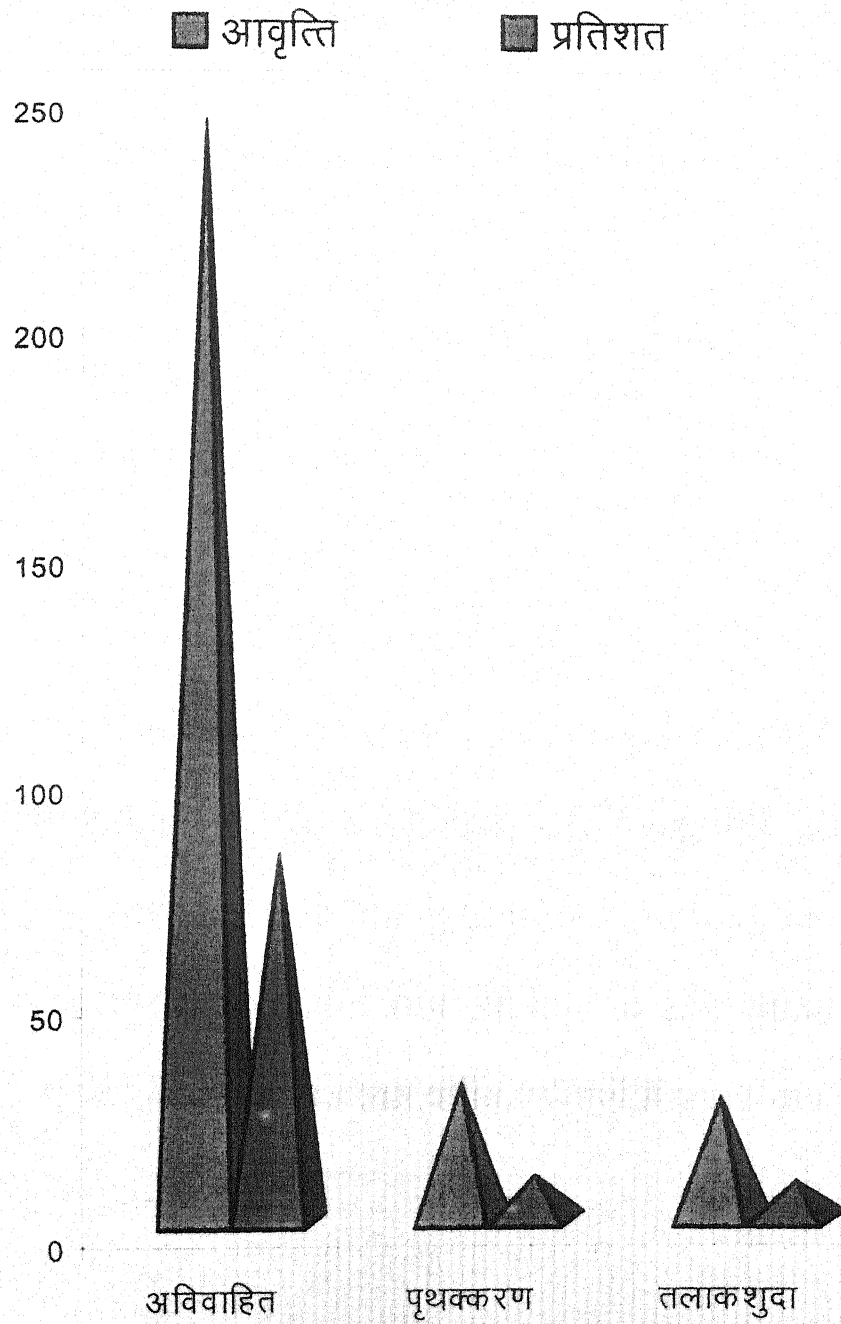
तालिका संख्या-9

बच्चों वार उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्र. सं.	जीवित बच्चों की संख्या	आवृति	प्रतिशत
1.	1	12	4
2.	2	144	48
3.	3	102	34
4.	4	42	14
5.	5	-	-
	योग	300	100

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि अधिकांश 144 उत्तरदाता 48 प्रतिशत 2 बच्चों वाले थे, 102 उत्तरदाता 34 प्रतिशत 3 बच्चों के धारक थे, 42 उत्तरदाताओं 14 प्रतिशत 4जीवित बच्चे थे तथा 12 उत्तरदाता 4 प्रतिशत ऐसे थे जिनके 1 जीवित बच्चा था। अंकगणितीय औसत में जब गणना करके देखा गया तो योगिक 300 उत्तरदाता में 2.8 औसतन जीवित बच्चों के पिता थे।

अनुसंधानकर्ता ने योगिक 774 बच्चों में जब लिंग अनुपात को ज्ञात किया तो पुरूष लिंग के 445 बच्चे तथा स्त्री लिंग के 329 जीवित बच्चे थे। अर्थात 740/1000 लिंग अनुपात मध्यम वर्गीय परिवारों में पाया गया।

तालिका संख्या-10

उत्तरदाताओं द्वारा किए गये विवाहों के स्वरूप का विवरण

क्र. सं.	विवाह का रूप	आवृति	प्रतिशत
1.	परम्परागत	150	50
2.	प्रेम विवाह (संगठित)	90	30
3.	कोर्ट मैरिज	60	20
	योग	300	100

उपरोक्त सारणी से पता चलता हैं कि आज भी मध्यम वर्गीय परिवारों में 150 अधिकांश लोग 50 प्रतिशत परम्परागत विवाह के स्वरूपों के माध्यम से विवाह रचा गया, 90 उत्तरदाताओं 30 प्रतिशत ने प्रेम विवाह रचा तथा 60 उत्तरदाताओं 20 प्रतिशत कोर्ट मैरिज द्वारा विवाह किया।

तालिका संख्या-11

उत्तरदाताओं के परिवार के स्वरूप का विवरण

क्र. सं.	परिवार	आवृति	प्रतिशत
1.	एकांकी	258	86
2.	विस्तृत	-	-
3.	संयुक्त	42	14
	योग	300	100

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 258 अधिकांश उत्तरदाताओं 86 प्रतिशत के परिवार का स्वरूप एकांकी तथा 42 उत्तरदाताओं 14 प्रतिशत संयुक्त परिवार को बनाये हुए थे।

ग्राफ संख्या - ३

उत्तरदाताओं द्वारा किये गये विवाहों के स्परूप का विवरण
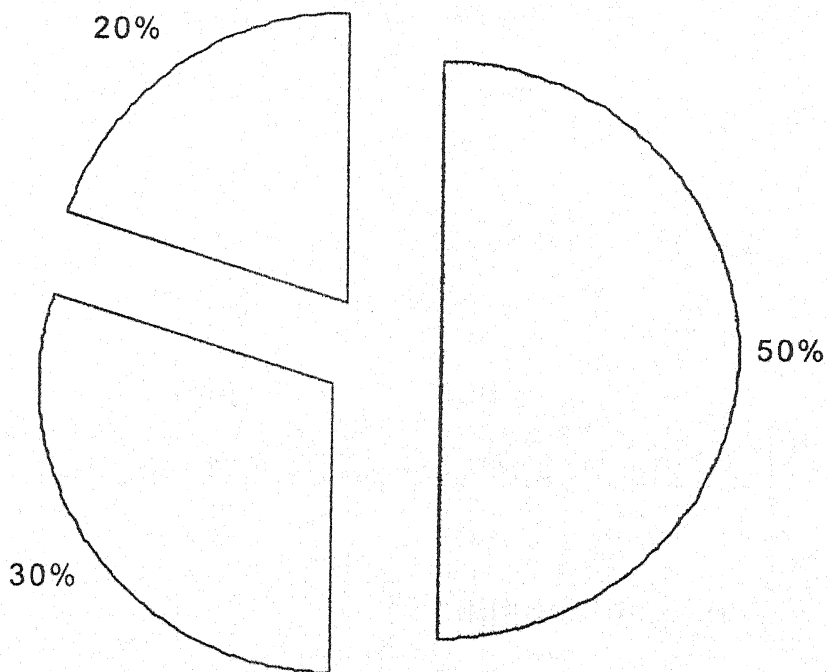
तालिका संख्या-12

उत्तरदाताओं की आवासी दशा का विवरण

क्र. सं.	आवासीय दशा	आवृति	प्रतिशत
1.	सन्तोष जनक	42	14
2.	असन्तोष जनक	-	-
3.	आराम दायक	258	86
	योग	300	100

उपरोक्त सारणी से विदित होता है कि 258 अधिकांश 86 प्रतिशत मध्यम वर्गीय परिवारों के परिवारों की आवासीय दशा आराम दायक (जिसमें अलग से शौचालय, चौकालय, स्नान गृह, आंगन, छोटा सा लोन, नल, विद्युत के साथ इन्वेटर या डीजल इंजन, कार, संचार सुविधाऐं) थी तथा 42 उत्तरदाताओं 14 प्रतिशत ने अपनी आवासीय दशा को सन्तोषजनक बताया।

तालिका संख्या-13

उत्तरदाताओं के सूचना श्रौत्रों का विवरण

क्र. सं.	सूचना श्रौत्र	हां	नहीं	प्रतिशत
1.	समाचार पत्र	300 (100%)	- -	300 (100%)
2.	पत्रिकाएं	205 (60.33%)	95 (31.67%)	300 (100%)
3.	टी0बी0/रेडियों	300 (100%)	- -	300 (100%)
4.	सिनेमा	99 (33%)	201 (67%)	300 (100%)
5.	टेलीफोन	300 (100%)	- -	300 (100%)
6.	अन्य	-	-	-

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अधिकांश 100 प्रतिशत मध्यम वर्गीय परिवारों में सूचना श्रौत्र हेतु समाचार पत्रों, 100 प्रतिशत, पत्रिकाओं में 60.33 प्रतिशत, टी0बी0 तथा टेलीफोन श्रौत्रों का 100 प्रतिशत उपयोग करते थे।

अध्याय -5

मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव

- ❖ पारिवारिक तनाव के अध्ययन की आवश्यकता
- ❖ शोध का महत्व
- ❖ पारिवारिक तनाव की अवधारणा
- ❖ तनाव के भेद
- ❖ तनाव की प्रकृति
- ❖ तनाव के लक्षण
- ❖ तनाव के कारक

अध्याय -5

मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव

पारिवारिक तनाव के अध्ययन की आवश्यकता :

प्रत्येक परिवार में सहयोग, संघर्ष, संगठन तथा तनाव उत्पन्न करने वाली प्रक्रियाएं साथ-साथ क्रियाशील रहती हैं। पारिवारिक संरचना के निर्माण करने वाले सदस्य जहां अपनी लम्बी सेवाओं तथा अनुभवों द्वारा पारिवारिक जीवन को व्यवस्थिति बनाने का प्रयत्न करते है वही अन्य सदस्य अपने निजी स्वार्थो अथवा दोषपूर्ण मनोवृत्तियों के कारण परिवार की व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करने में तनिक भी संकोच नहीं करते । समाज में जिन नियमों, सामाजिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक प्रतिमानों को एक अनुशासित और व्यवस्थित जीवन के लिए आवश्यक समझा जाता है, यह व्यक्ति इसके प्रतिकूल आचरण करके पारिवारिक व्यवस्था के लिए गम्भीर खतरा उत्पन्न कर देते है। साधारण भाषा में इन्हीं परिवार विरोधी तथा जन कल्याण के विरूद्ध किए जाने वाले आचरण से घर में तनाव झगड़े, विघटन तथा सामाजिक तौर पर अकार्य कहते हैं।

पारिवारिक तनाव के अध्ययन की आवश्यकता

समाज जो आगे प्रगति करना चाहती है उसे अपनी समस्याओं के प्रति जागरूक होना चाहिए । सामाजिक समस्याएं व्यवहार के वे प्रतिमान या शर्ते जिनका विरोध किया जाता है अथवा समाज के बहुत व्यक्तियों द्वारा अनिच्छिक होती हैं । जिनकी समाज के सदस्य पहिचान करते है, इनसे बचाव या सुधार की नीतियां, कार्यक्रम तथा सेवाएं इनके साथ मिलकर चलने तथा इनको कम करने

हेतु उपाय करते है''।[1] सामाजिक विघटन की धारण तथा सामाजिक विघटन की धारणा परस्पर सम्बन्धित है। जब कोई निश्चित सामाजिक समस्या इस स्तर पर बढ़ जाये कि समाज के कार्य-कलाप सुचारू रूप से न चल पाये, समझना चाहिए सामाजिक विघटन अस्तित्व में है। दूसरे शब्दों में कई सामाजिक समस्याऐंहै जिन्होंने सामाजिक विघटन को जन्म दिया है। इस प्रकार सामाजिक प्रगति रूकने लगे, सामाजिक प्रक्रियाऐं सुचारू रूप से न चले तो हम उसे सामाजिक विघटन की अवस्था के नाम से पुकारेगें।

जैसा कि सामाजिक समस्याओं का सामाजिक विघटन का सम्बन्ध है वैसा ही वैयक्तिक विघटन के साथ सह-सम्बन्ध है। जब एक व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह विघटित हो गया है तथा समाज के द्वारा निर्मित मूल्यों के अनुसार प्रकार्य नहीं कर पा रहा है तो समझलो सामाजिक समस्याऐं अस्तित्व में हैं। सामान्य बोलचाल में सामाजिक समस्याओं का सामाजिक स्तरों और सामाजिक यथार्थ में विभिन्नताऐं दृष्टिगोचर होने लगती हैं''।[2] व्यक्ति जो सामाजिक मूल्यों को पहिचानता है वही सामाजिक रूप से सामान्य है और इसके फलस्वरूप वह भी स्वयं को सामान्य समझता है लेकिन वह जो सामाजिक मूल्यों के विपरीत व्यवहार करने के लिए खोज लिया जाता है वह ही विचलन माना जाता है फिर चाहे वह समूह हो या व्यक्ति अकेला। यही विचलक ही सामाजिक समस्या का प्रतिनिधित्व करते है''[3] सामान्य तौर पर वह व्यक्तियों का समूह ही होता है जो एक समान समस्या से घिरे होते है, सामाजिक समस्याओं का प्रतिनिधित्व करते है जैसे कई व्यक्ति जो बेरोजगार हैं, इसी लिए बेरोजगारी की समस्या अस्तित्व में हैं। वैयक्तिक विघटन तथा सामाजिक विघटन में आपसी सह-सम्बन्ध है। जब एक

1. रिचार्ड, सी.फुलर एण्ड मार्यस (1941): सम आसपेक्ट्स आफ ए थ्योरी आफ सोसल प्रोबलम्स, अमेरिकन सोशियोलोजी रिव्यू, पृष्ठ- 24-32
2. मर्टन, आर. के. (1961): सोसल प्रोबलम्स एण्ड सोशियोलोजीकल थ्योरी इन कनटेमपरेरी सोशल प्रोबलम्स ऐडी. पृष्ठ-70.
3. वेनवर्ग, एस. के. (1961): सोसल प्रोबलम्स इन अवर टाउन, पृष्ठ-4

व्यक्ति विघटित हो जाता है तो वह दूसरों को भी सम्मित करता है और पारिवारिक विघटन की समस्या को जन्म देता है। इस प्रकार एक परिवार को संक्रमित करता है तो इस फैली हुई समस्या को सामाजिक विघटन कहते हैं।

सभी परिवार पारिवारिक एकता की कसौटी को लेकर अनिश्चित स्तर पर होते है। पूर्णरूपेण संगठित परिवार बहुत कम होते है जैसे पूर्णरूपेण विघटित परिवार; सभी परिवार संघर्षरत रहते हैं। पारिवारिक सम्बन्ध अक्सर तनावों के कारण टूटते-जुड़ते रहते है, वे फिर भी कार्य करते हुए वे एक निश्चित योजनानुसार चलते रहते हैं। कुछ के लिए जब ये तनाव इतने हो जाते हैं कि व्यक्ति आगे सम्बन्ध निरन्तर रखने में असमर्थ हो जाता। ये ही तनाव आगे धीरे-धीरे विकसित होकर सांस्कृतिक मूल्यों के विपरीत हो जाते हैं। इन तनावों की निरन्तर वृद्धि व्यक्ति तथा परिवार को विघटित कर देती है। जब आये दिन तनाव होते रहते है तो उनसे पारिवारिकताऐं नष्ट होने लगती हैं, परिणाम स्वरूप सदस्यों के मध्य मधुर सम्बन्ध नहीं रहते। यद्यपि इनसे वाह्यरूप में परिवार का औपचारिक रूप से टूटना नहीं होता। कभी-कभी ये तनाव अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचकर परित्याग तथा पति-पत्नी के बीच तलाक तक करा देते हैं।

आज के परिवार इस तीव्र गति से भागते जीवन में, आवश्यकता की वृद्धि और उनके पूर्ण न कर पाने की क्षमताओं, सब कुछ पाने की ललक ऊपर मेहगाई, बेरोजगारी, गरीबी, उच्च शिक्षा की समस्याऐं, दहेज की मार, रोग का उपचार, पति या पत्नी द्वारा व्यवधान, बहु के मामलों में नन्द-सांस की छीटाकसी प्राय आवासों के कुछ मध्यान्तरों पर श्रव्य-दृश्य होती रहती है। स्त्रीयों का जला देना, उनके द्वारा आत्म हत्या कर लेने की घटनाऐं रोज का आलम हो गई हैं। महिलाओं संग मार-पीट, गाली-गलोज, लतिया देना, थप्पड़ मार देना इत्यादि ऐसी घटनाएं है जो परिवार की एक आवयश्क विशेषता सी हाती जा रही हैं। उपरोक्त सभी असामान्य व्यवहार इस शोध अध्ययन की आवश्यकता है। ताकि यह ज्ञात हो सके

कि परिवारों में तनावों तथा झगड़ों का मूल कारण क्या है । आर्थिक मामलों में परिवारों के दृष्टिकोण में कैसे भिन्नता आई है? समाज में स्थिति बनाने की इच्छा का मध्यम वर्गीय परिवारों में दृष्टिकोण, कुछ पुरुषों व उनके मित्रों, सम्बन्धियों के बीच अपने को धनी दिखाने की चेष्टा व पारिवारिक सदस्यों विशेषकर पति-पत्नी में अनुकूलन न हो तो परिवार में तनाव इन सभी स्थितियों का अध्ययन किया गया है । धार्मिक मामलों की भिन्नता के पनपने से तनाव का आधार परिवार में तैयार हो जाता क्यों? जिन परिवारों में राजनैतिक चेतना है उनके सदस्य क्या-क्या भिन्न राजनैतिक विचार रखते हैं उनसे उत्पन्न परिवार में तनाव की स्थिति का भी अध्ययन सम्भव होगा । आखिर बदलती हुई सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्तियों का दृष्टिकोण, विवाह, धर्म, जाति-पाति आदि के सम्बन्धों में आज की पीढ़ी के दृष्टिकोण व परिवार में शिक्षित नवयुवक बदलते हुए दृष्टिकोण का अध्ययन करना इस शोध में ध्येय था ।

विवाह और परिवार में ही कुछ भूमिकाओं का निभाना आवश्यक होता है । जब परिवार के सदस्य विशेषकर पति-पत्नी अपने-अपने सम्बन्धों के प्रति लापर हो जाते है तो पारिवारिक तनाव उत्पन्न हो जाता हैं । पति-पत्नी परस्पर अपनी सेवाओं की आशाएं करते हैं । इस शोध में इन सम्बन्धों को लेकर परिवार में इनके तनावों का अध्ययन किया गया है। आधुनिक युग में परिवारों में यौन सम्बन्धी तनाव अधिकांश पाया जाता है। यौन सम्बन्धी इच्छाओं की पूर्ति की पूर्ण सन्तुष्टि न होने पर पति-पत्नी में उत्पन्न असंतोष तथा इसी कारण उत्पन्न तनाव का अध्ययन इस शोध में किया गया है । जब पति-पत्नी में से कोई भी मनोब्यधिकीय होता है तो ऐसे परिवारों में तनाव सहज ही हो जाता है। कभी-कभी पति-पत्नी परस्पर विगत जीवन पर संदेह करते हैं । इस स्थिति में उत्पन्न तनाव व अन्य तनावों के कारणों का शोध किया गया है । नई पीढ़ी आज की भौतिकवादी मूल्यों की ओर अग्रसर हो रही है । इस प्रकार जीवन के प्रत्येक क्रिया कलाप की

उपयोगिता और लाभ की दृष्टि से अपनाना चाहिती है। जबकि परिवारों में पुरानी पीढ़ी के लोग अपनी परम्परागत रूढ़ियों से बाहर आना नहीं चाहते तथा उन परम्पराओं से अलग व्यवहार को अधर्म कहते है। इस कारण विवाह पर्दा, संतति, विरोध, तलाक आदि मामलों में मत भिन्नता होने के कारण नई पीढ़ी तथा पुरानी पीढ़ी के व्यक्तियों में तनाव उत्पन्न हो जाता है। व्यक्तिगत आदतों के कारण भी मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव हो जाता है। इसका अध्ययन भी इस शोध में किया गया हैं।

पारिवारिक तनाव

आधुनिक भौतिकवादी सभ्यता तथा संस्कृति में विकास ने नगर के मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव को उत्पन्न किया है। जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि ने व्यक्ति को भीड़ में रहने हेतु विवस किया है। औद्योगिक तथा नगरीकरण की प्रक्रिया ने व्यक्ति को महात्वाकांक्षी, स्वार्थी, अवसरवादी, घूर्त और भ्रष्ट बनाया है। व्यक्ति ने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने संयुक्त परिवार से विस्तृत तथा विस्तृत परिवार से एकांकी परिवार का निर्माण किया है। इन्ही सभी चीजों ने मिलकर पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि में तनावों को उत्पन्न किया है। तनाव पारिवारिक जीवन की एक सारभौमिक विशेषता है। वास्तव में तनाव ही विभिन्न प्रकार के संघर्ष का कारण है। कोई संघर्ष चाहे वह घृणा के रूप में, वेमनस्य के रूप में या चाहे असहयोग के रूप में प्रदर्शित होता हो अथवा शत्रुतापूर्ण व्यवहार के रूप में, प्रत्येक संघर्ष के पीछे कुछ तनाव अवश्य पाये जाते हैं। जहां तक पारिवारिक तनाव का प्रश्न है, हमारे समाज में पारिवारिक तनावों का इतिहास बहुत प्राचीन रहा हैं। वैदिक काल में राम का बनवास महारानी कैकई के मानसिक तनाव का कारण था। द्वापर युग में महाभारत युद्ध के पीछे परिवार जनों के तनाव ही थे। यदि हम सामाजिक पृष्ठभूमि में तनाव का अवलोकन

करे तो प्रजाति स्तर पर वर्ण व्यवस्था का जन्म स्मृति काल में जाति व्यवस्था को क्रमशः सामाजिक तथा व्यावसायिक तनाव के कारण प्रर्दुभाव हुआ। अस्पृश्यता अपने को उच्च समझने के कारण ही समाज में पनपी। सच तो यह है कि आज हमारे सामाजिक जीवन का कोई भी पक्ष ऐसा नहीं जो किसी न किसी प्रकार के तनाव से प्रभावित न हो। यदि कारण है कि समाजशास्त्रीय व समाज-सुधारक सामाजिक तनावों का विश्लेषण करके इनका समुचित समाधान खोजने लगे हैं। प्रस्तुत विवेचन में हम सर्व प्रथम तनाव के अर्थ को स्पष्ट करेगें तथा उसके पश्चात् पारिवारिक तनाव के विभिन्न रूपों को उल्लेख करते हुए उनके कारणों की विवेचना करेगें।

साधारण शब्दों में कहा जाता है कि "जब कभी परिवार का सदस्य अपने विचारों शब्दों अथवा व्यवहारों के द्वारा दूसरे सदस्य के प्रति अविश्वास, घृणा अथवा विरोध का प्रदर्शन करता है तब इस दशा को पारिवारिक तनाव कहते है"।[1] वैसे 'तनाव' मूल रूप से शरीर विज्ञान अथवा भौतिक मनोविज्ञान से सम्बन्धित है। व्यक्ति की स्नायविक व्यवस्था में जब कभी भी तनाव की स्थिति उत्पन्न होती हैं तब उसके व्यवहार असामान्य हो जाते है। इसका तात्पर्य यह है कि तनाव जीवित पदार्थो की किसी विशेष इकाई से सम्बधित एक विशेषता अथवा लक्षण है। यह लक्षण एक ऐसी अशांति स्थिति को स्पष्ट करता है जिसका यदि शीघ्र ही समाधान न किया जाय तो वह सम्पूर्ण शरीर में विकार उत्पन्न कर देती है। इससे स्पष्ट होता है कि जब किन्ही दशाओं के अन्तर्गत पारिवारिक जीवन में अशांति की अवस्था उत्पन्न होती है तब इसी दशा को हम पारिवारिक तनाव की संज्ञा प्रदान करते है। घुरिये का कथन है कि "समाज में अनेक परिवार की समग्रता होती है। इस दृष्टि से जब कभी भी परिवारों के सदस्यों पति-पत्नी तथा

1. श्री वास्तव, जी. के. (1985): 'सामाजिक विघटन' आगरा बुक स्टोर 1/125 पचकुइयां - 282010

बच्चों के बीच पारस्परिक अविश्वास के कारण तनाव की दशा उत्पन्न होती है तब इस दशा को हम पारिवारिक तनाव कह सकते हैं''।[1]

तनाव बहुत कुछ समाज की प्रकृति पर निर्भर करता है। समुदाय जो अति सरल है, जहां भिन्नताएं और जनसंख्या तथा औद्योगिकरण का दबाव कम है। इसके विपरीत जिन समुदायों में उपर्युक्त विशेषताएं पायी जाती है वहां अपेक्षाकृत तनाव अधिक पाया जाता है जिस समुदाय में आदर्श, मूल्य, सोच, वैयक्तिक स्वार्थ में जितनी अधिक भिन्नताएं होगी उस समुदाय में अधिक तनाव पाया जायेगा। नगर जटिलता और भिन्नताओं के समुदाय हैं इस लिए नगर के मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव किसी न किसी रूप में सदैव विद्यमान रहता है।

तनाव को मोटे तोर हम दो भागों में बांट सकते है। प्रथम वैयक्तिक तनाव- जो किन्हीं वैयक्तिक कारणों से उत्पन्न हो सकता है जैसे- लम्बी बीमारी, बेकारी, गरीबी, अधिकारी से मन-मुटाव तथा पारिवारिक वातावरण। द्वितीय तनाव- जो विभिन्न कारणों से उत्पन्न होते हैं जैसे- धर्म, जाति, सम्प्रदाय या किसी घटना या विचार से। आर्थिक व राजनैतिक घटनाऐं भी तनाव उत्पन्न करती है।

समाज की अनेक सामाजिक समस्याओं में तनाव की समस्या बहुत महत्वपूर्ण है। देश के उत्तरोत्तर औद्योगीकरण के साथ-साथ यह समस्या भी निरन्तर बढ़ती जा रही है। अधिकतर पारिवारिक तनाव पति-पत्नी के बीच बिगड़ते सम्बन्धों से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार का तनाव होना स्वाभाविक है क्योंकि पति-पत्नी और बच्चों के बीच एक अन्तर होता है। पत्नी भी कार्य करने के पश्चात भी यह देखती है के उसकी उपेक्षा हो रही है और उसके द्वारा की गई मेहनत, त्याग का पति द्वारा नहीं आंका या देय नहीं तो पत्नी में तनाव उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। यही प्रक्रिया पति पर भी लागू होती है।

---

1. घुरिये, जी. एस. भारत में सामाजिक तनाव, पृष्ठ - 5

पारिवारिक तनाव वह अस्थाई तत्व है जिसमें पति-पत्नी के बीच, पति-पत्नी तथा बच्चों के मध्य या पति-पत्नी व माता-पिता के बीच किसी व्यवहार प्रतिमान को लेकर मन-मुटाव, टीस, चुभन या फाँस का मनोवैज्ञानिक रूप से सामाजिक पृष्ट भूमि में (सम्बन्धी) अनुभव होता है, जिससे पारिवारिक सम्बन्धों में परस्पर उपेक्षा, अशांति, विरोध, प्रतिक्रिया, असहयोग, का समावेश हो जाता है और उनमें धीरे-धीरे क्षय, टूटन, विघटन और अन्त में पृक्करण व परित्याग की घटनाएं घटित हो जाती हैं।

<u>राबर्ट पार्क ने तनाव पर प्रकाश डालते हुए बताया कि-</u>"तनाव एक अभिवृति है जो सद्भाव की कमी तथा पारस्परिक क्षोभ और उत्तेजना की दशा को स्पष्ट करता है। तनाव की अभिव्यक्ति जब किसी परिवारजन द्वारा परिवार के सदस्य के साथ की जाती है तब इस पारिवारिक तनाव कहते है"।[1]

<u>विलियम ने तनाव के मनोविज्ञान पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि-</u>"पारिवारिक तनाव एक ऐसा लक्षण है अथवा स्थिति है जिसमें पूर्वाग्रह, भेदभाव तथा आक्रमण जैसी तीनों विशेषताओं का मिश्रण देखने को मिलता है"।[2]

<u>पारिवारिक तनाव की प्रकृति</u>

नगरी परिवारों के विश्लेषण से हमें विदित होता हैं के तनाव दनकी निम्न विशेषताओं में उनके प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप दिखाई देते हैं-

1. नगरी तनाव की पृष्ठ भूमि में धर्म, जाति समूह तथा वर्ग की परस्पर विरोधी धारणाएं विद्यमान हैं।

2. तनाव के पीछे निहित स्वार्थ छिपा रहता है जब परिवार के किसी सदस्य के स्वार्थो की पूर्ति नहीं होती अथवा जब उद्देश्य की पूर्ति में परिवार के दूसरे व्यक्ति बाधक बनते हैं तो परिवार में तनाव उत्पन्न होता है।

---

1. पार्क एण्ड वर्गिस (1924): इन्ट्रोडक्सन आफ साइंस आफ सोशियोलोजी, पृष्ठ- 631
2. विलियमस, रिडक्सन आफ इन्टर ग्रुप टेनसन, पृष्ठ- 4-5

3. तनाव प्राय अस्थाई होते हैं परन्तु जब तनाव स्थाई स्वरूप धारण करता है तो परिवार का विघटन सुनिश्चित समझना चाहिए।

4. तनाव आंतरिक तथा वाह्य दोनों प्रकार के प्रेरक तत्वों के कारण होते हैं।

5. पारिवारिक तनाव एक मनोवैज्ञानिक घटना भी है जो एक व्यक्ति से परिवार के दूसरे सदस्य से स्वतः विभिन्न कारकों, परिस्थितियों, संदेहों तथा भ्रांतियों के फलस्वरूप उत्पन्न होते हैं जिनसे प्रत्येक परिवारीजन का क्रिया, प्रतिक्रिया तथा अन्तक्रिया प्रभावित होती है।

पारिवारिक तनाव के लक्षण

पारिवारिक तनाव के प्राय पति द्वारा पत्नी अथवा बच्चों की मार-पीट, गाली-गलोज, ताना मारना, बात-बात में विरोध प्रदर्शित करना, झगड़े करना, मुंह फुला लेना, बार्तालाप बन्द कर देना, घर त्याग की धमकी देना, आत्म हत्या की चेतावनी देना, बात पकड़कर बैठ जाना, खाना-पीना छोड़ देना, उपेक्षा करना, घर के उत्तरदायित्व निभाने में असमर्थता, बिलम्ब से घर लौटना, मद्यपान करना, घर में तोड़-फोड़ करना, अधिक बोलना, शांत रहना, कार्य में मन न लगना, शीघ्र चिड़ना, कार्य पर न जाना, बच्चों के स्वास्थ्य एवं विकास के प्रति लापर वाही दिखाना, घर में शांति भंग करना, पड़ोस में सहभागिता का अभाव, अलगाव अनुभव करना, "मेरी जिन्दगी बेकार हो गई बोलना", संदेही होना, अपने को दुख देना, दूसरों को दुख पहुँचे ऐसे कार्य करना, संचार में अन्योक्तियों का प्रयोग करना, घर से बाहर प्रसन्नता अनुभव करना, घर में हाय तौबा मचाये रखना, स्वार्थ पूर्ति में मधुरता का अभाव, निणयों की प्रक्रिया में अनुपस्थिति, व्यापारिक मनोरंजन में रूचि आदि लक्षण।

तनाव के कारण

विवाह जीवन का एक ढंग है जिसमें पति और पत्नी द्वारा एक दूसरे की मनोवृत्तियों, आदर्शो, लक्ष्यों, महात्वकांक्षाओं, सम्पत्ति, आय, सामाजिक सम्पर्क

और सम्पूर्ण जीवन में समान रूप से भाग लेना आवश्यक होता है। इस महत्वपूर्ण कार्य में बाधा पडने से ही पारिवारिक तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है। समाजशास्त्रीयों ने इन्हें वैयक्तिक तनाव, पारिवारिक तनाव, सामाजिक तथा आर्थिक तनाव की संज्ञा प्रदान की है।

(1) वैयक्तिक तनाव को प्राथमिक तनाव भी कहां जाता है क्योंकि ये तनाव प्राथमिक रूप से पति-पत्नी की व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं से उत्पन्न होते है। विभिन्न प्रकार के वैयक्तिक तनावों के सम्बन्ध में अंगाकित रूप में समझा जा सकता है-(क) परस्पर विरोधी स्वभाव, (ख) सामाजिक मूल्यों में विरोध, (ग) व्यवहार प्रतिमानों में विभिन्नता, (घ) यौगिक असंतोष, (ङ) वैवाहिक असंतोष तथा (च) मानसिक विकारयुक्त व्यक्तित्व आदि।

(2) सामाजिक तनाव इस प्रकार का तनाव पति-पत्नी की सामाजिक स्थिति में भिन्नता होने से उत्पन्न होते है। यहां पर हम इन्ही सामाजिक तनावों को स्पष्ट करेगें। विभिन्न सामाजिक वर्गो में तनावः विवाह से पूर्व पति-पत्नी की अपने प्राथमिक समूहों में एक सामाजिक प्रस्थिति होती है। विवाह पश्चात इसमें परिवर्तन हो जाने से अक्सर तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिन्हें पृथक-पृथक वर्गां में निम्न प्रकार से देखा जा सकता है:

(क) उच्च वर्ग में ये तनाव दो प्रकार से होते है- पुराने तथा नये। पुराने उच्च परिवार अपने ही स्तर में विवाह सम्बन्ध स्थापित करने पर जोर देते है और अपने से किसी तनाव को प्रगट नहीं होने देते, जबकि हाल ही में अधिक आर्थिक साधन प्राप्त करने वाले परिवार सभी व्यवहारों द्वारा अपने को बहुत ऊँचा दिखाने का प्रयत्न करते हैं। उनमें अपव्यय, मादक द्रव्यों का सेवन, आलोचना की प्रवृत्ति, बच्चों के प्रति उदासीनता और मानसिक अस्थिरता प्रमुख विशेषताएं होती हैं। ऐसी स्थिति में एक पुराने परिवार की लड़की एक नये धनी परिवार के अपव्यय से क्षुब्ध हो सकती है और नये परिवार की लड़की पुराने परिवार में जाकर अपने परिवार में

जाकर अपने पति तथा सास-ससुर को कंजूस अथवा लालची कह सकती है। इससे पारिवारिक तनाव में वृद्धि होती है और पारिवारिक विघटन की सम्भावना बढ़ जाती है।

मध्यम वर्गीय परिवारों के सदस्यों में उच्चवर्ग के समान व्यवहार प्रदर्शित करने की प्रेरणा सबसे अधिक होती है। उनकी आय मामूली होती है जबकि रहन-सहन के स्तर में वे अपने को उच्च वर्ग के समान ही रखने का प्रयत्न करते है। मध्यम वर्ग में व्यक्ति ऊँची महात्वाकांक्षाओं के अभ्यासी होते है जबकि उनकी उपलब्धियाँ बहुत साधारण होती है। यही स्थिति उनमें निराशा स्थिति सम्बन्धी तनाव उत्पन्न करती है जो पारिवारिक विघटन का कारण है। इसके अतिरिक्त स्वभाव सम्बन्धी अयोग्यता, सामाजिक मूल्यों में अन्तर, यौनिक असंतुष्टि से उत्पन्न निराशा और बच्चों पर माता-पिता के नियंत्रण में कमी आदि भी मध्यम वर्ग की ऐसी विशेषताएं है जो पारिवारिक तनाव उत्पन्न करती है।

निम्न वर्ग में हम उन व्यक्तियों को सम्मिलित करते है जो कम वेतन तथा कम मजदूरी पर काम करते हैं, अशिक्षित होने के कारण शारीरिक परिश्रम के द्वारा जीविका उपार्जन करते हैं, तथा विकास की कम सुविधाएं प्राप्त करते है। इन परिस्थितियों में इस वर्ग के व्यक्तियों में मानसिक और आर्थिक सुरक्षा अपनी चरम सीमा पर होती है। दिन-प्रतिदिन के पारिवारिक झगड़े, ऋण लेने का स्वभाव, सस्ते मादक द्रव्यों का प्रयोग तथा स्त्रीयों का शोषण इस वर्ग की सामान्य विशेषता होती है। बच्चों को साधारण दण्ड देने के कारण वे कभी-कभी क्रूर हो जाते है। वे सभी परिस्थितियां सदस्यों में मानसिक तनाव उत्पन्न करके परिवार को विघटित करती है।

(3) आर्थिक तनाव निम्न परिस्थितियों में उत्पन्न होते हैं-

(क) निर्धनता के कारण पति परिवार की आवश्यकताएं पूरी नहीं कर पाता , पत्नी स्वयं भी कुछ समय बाद पति को निकम्मा समझने लगती हैं । यदि वह स्वयं

कार्य की खोज में घर से बाहर रहती है तो पुरूष का शंकालु मन उसे पत्नी के विरूद्ध बना देता है। निर्धनता की दशा में बच्चे उचित शिक्षा न मिलने से उद्धण्ड हो जाते है और इस प्रकार पारिवारिक तनावों में वृद्धि होती है।

(ख) बेरोजगारी के फलस्वरूप निर्धनता के कारण सभी दशाएं सामने आती ही हैं, लेकिन आजीविका कोई प्रबन्ध न होने के कारण पति और पत्नी को एक दूसरे से पृथक ही रहना पड़ता है। इससे पुरूषों में मद्यपान और खाली समय के शैतान से उत्पन्न दुर्गुण प्रबल हो जाते है जबकि स्त्रीयां और बच्चे अक्सर नियंत्रण के अभाव के कारण अनैतिक जीवन व्यतीत करने लगते हैं।

(ग) पति-पत्नी की आर्थिक स्वतंत्रता के कारण धीरे-धीरे स्त्री में स्वतंत्र विचार जन्म ले लेते है और वह घर के सभी कार्यो में समान अधिकारों की मांग करने लगती है। यद्यपि यह उचित है लेकिन हमारे जैसे समाज में पुरूष के 'अहम्' और परम्परावादी स्वभाव के कारण घर की शांति में बाधा पड़ती है और कभी-कभी परिवार तनावों से भर जाता है।

(घ) पत्नी की आर्थिक पराश्रिता भी कभी-कभी आर्थिक तनाव उत्पन्न कर देती है। यद्यपि सभी स्त्रीयां कुछ सीमा तक आर्थिक स्वतंत्रता चाहती हैं, लेकिन शिक्षित और प्रशिक्षण प्राप्त स्त्रीयां विशेष रूप से पराश्रय की स्थिति में कष्ट अनुभव करती है। यह समझते हुए भी कि वे जीविका उपार्जित कर सकती है- अपने खर्चो को कम करना, बच्चों को तकलीफ में देखना और मनोरंजन की सुविधा प्राप्त न कर सकना उनके लिए असध्य हो जाता है। भारत में शिक्षित स्त्रीयों की आर्थिक परश्रिता आज बहुत बड़ी सीमा तक उनके पारिवारिक तनाव का कारण बना हुआ है।

(4) व्यवसायक तनाव कुछ व्यवसायों की प्रकृति इस प्रकार की होती है कि उनके परिणाम स्वरूप तनावों में वृद्धि होने की अधिक सम्भावना रहती है। उदाहरण के लिए-

(क) व्यवसाय में रूचि की कमी, इसके फलस्वरूप उनकी प्रस्थिति तथा भूमिका का संतुलन बिगड़ जाता है। यथा-साहित्य रूचि के व्यक्ति को यदि सर्कस कम्पनी में मेनेजर का काम करना पड़े तब निश्चित ही उसके मन में अपने व्यवसाय के प्रति कोई रूचि उत्पन्न न हो सकेगी। ऐसे व्यक्ति आर्थिक जीवन में कितने ही सफल क्यों न हो लेकिन मानसिक रूप से उनकी स्थिति तनाव पूर्ण ही रहेगी। ऐसे व्यक्ति अक्सर विवाह को इन परिस्थितियों का कारण मान लेते है और फलस्वरूप पारिवारिक स्नेह की कमी तनाव की स्थिति उत्पन्न कर देती हैं।

(ख) अस्थाई व्यवसाय होने से व्यक्ति आर्थिक एवं सामाजिक रूप से अपने को सदैव असुरक्षित अनुभव करता है। कुछ व्यक्तियों की प्रकृति एक व्यवसाय को छोड़ने और दूसरे को करने की बनी रहती है। ऐसे व्यक्तियों में तनाव सबसे अधिक होता है क्योंकि अन्य व्यक्ति उनको अस्थिर प्रकृति का तथा अकुशल समझते हैं। जबकि वे स्वयं आर्थिक रूप में तनाव का शिकार होते हैं। कुछ विशेष प्रकृति के व्यवसाय स्वयं में ऐसी प्रकृति के होते है कि उनके कारण पारिवारिक तनाव की आशंका बनी रहती है। एक अध्ययन से यह निष्कर्ष सामने आया है कि चलचित्र अभिनेत्रियों तथा अभिनेताओं में विवाह विच्छेद की दर सबसे अधिक पायी जाती है जिसका कारण उनके व्यवसाय की स्वतंत्रतापूर्ण प्रकृति है। दूसरा स्थान भ्रमण व्यवसायिक प्रतिनिधियों का है जो वर्ष में नौ महीनें से अधिक बाहर रहते हैं। इनके परिवारों में पत्नी के असन्तोष तथा बच्चों की समस्याओं में वृद्धि होने से पारिवारिक तनावों में वृद्धि होती है। तीसरा स्थान उन व्यवसायों में लगे व्यक्तियों का है जिनका व्यवसाय विषम लिंग के व्यक्तियों से अधिक सम्पर्क रहता है जैसे- डाक्टर, वकील, प्रोफेसर, संगीतकार, चित्रकार आदि।

तालिका संख्या-14

उत्तरदाताओं में तनाव ग्रस्तता सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	तनाव का प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
1.	हाँ	270	90
2.	नहीं	30	10
	योग	300	100

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 270 उत्तरदाता 90 प्रतिशत तनाव ग्रस्तता अनुभव करते थे शेष 30 उत्तरदाता 10 प्रतिशत तनाव ग्रसित नहीं थे।

तालिका संख्या-15

उत्तरदाताओं में तनाव के प्रभाव की सीमा सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	तनाव का स्तर	आवृति	प्रतिशत
1.	कम	86	28.00
2.	अधिक	146	48.67
3.	सामान्य	40	13.33
	योग	300	100.00

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि 146 अधिकांश उत्तरदाता 48.67 प्रतिशत का तनाव से ग्रसित होने का स्तर अधिक था। 86 उत्तरदाता 28 प्रतिशत कम मात्रा में तथा शेष 40 उत्तरदाता 13.33 प्रतिशत सामान्य रूप से तनाव को अनुभव करते थे।

ग्राफ संख्या - ४

उत्तरदाताओं में तनावग्रस्तता सम्बन्धी विवरण
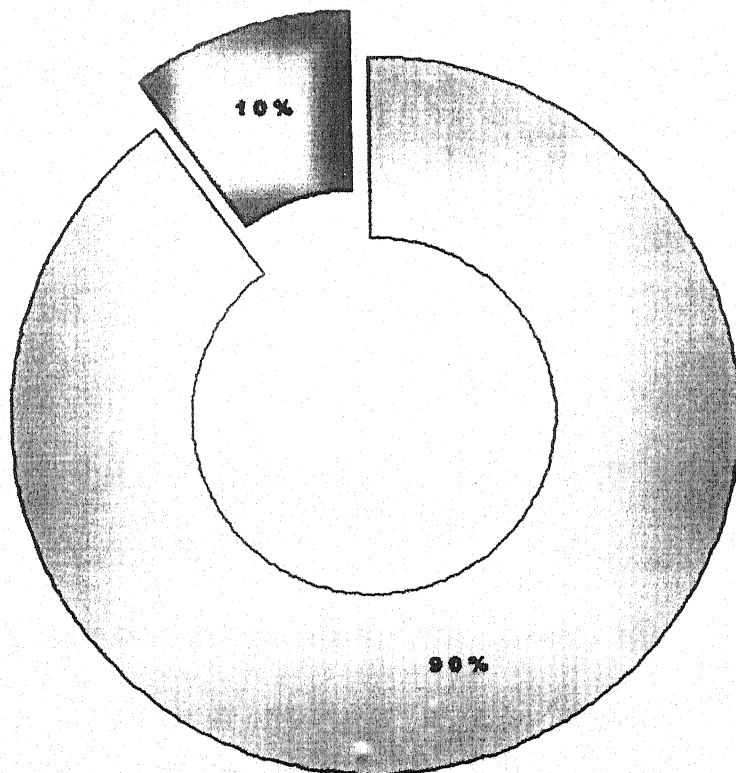
तालिका संख्या-16

उत्तरदाताओं में तनाव की समस्याओं सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	समस्याएं	कम	कभी-कभी	अक्सर	नहीं
1.	पुत्री की शादी	30 (10प्रति.)	60 (20प्रति.)	90 (30प्रति.)	120 (40प्रति.)
2.	घर में बीमारी	30 (10प्रति.)	60 (20प्रति.)	120 (40प्रति.)	90 (30प्रति.)
3.	घर के सदस्य का व्यवहार	90 (30प्रति.)	120 (40प्रति.)	69 (23प्रति.)	21 (7प्रति.)
4.	पुत्र की बेरोजगारी	30 (30प्रति.)	75 (25प्रति.)	135 (45प्रति.)	30 (10प्रति.)
5.	पति-पत्नी के बीच समस्या	15 (5प्रति.)	90 (30प्रति.)	180 (60प्रति.)	15 (5प्रति.)

जब उत्तरदाताओं से पूछा गया कि घर में वे कौन सी कतिपय समस्याएं है और उनका तनाव निर्माण में कैसा स्वभाव है तो 180 उत्तरदाताओं (60प्रतिशत) ने पति-पत्नी के मध्य समस्या को अक्सर तनाव निर्माण की समस्या मानी, 30 प्रतिशत ने कभी-कभी तथा 5प्रतिशत ने कम बताया ।135 उत्तरदाता (45प्रतिशत) ने पुत्र की बेरोजगारी अक्सर, 25 प्रतिशत ने कभी-कभी तथा 10 प्रतिशत कम तनाव की समस्या बतायी। घर में बीमारी को 40 प्रतिशत ने अक्सर, 20 प्रतिशत ने कभी-कभी तथा 10 प्रतिशत कम तनाव की समस्या बताया। घर में किसी के व्यवहार को 93 प्रतिशत ने जिसमें 40 प्रतिशत कभी-कभी, 30 प्रतिशत कम तथा 23 प्रतिशत अक्सर शामिल थे। 60 प्रतिशत उत्तरदाता पुत्री की

ग्राफ संख्या - ५

उत्तरदाताओं में तनाव की समस्या सम्बन्धी वर्गीकरण
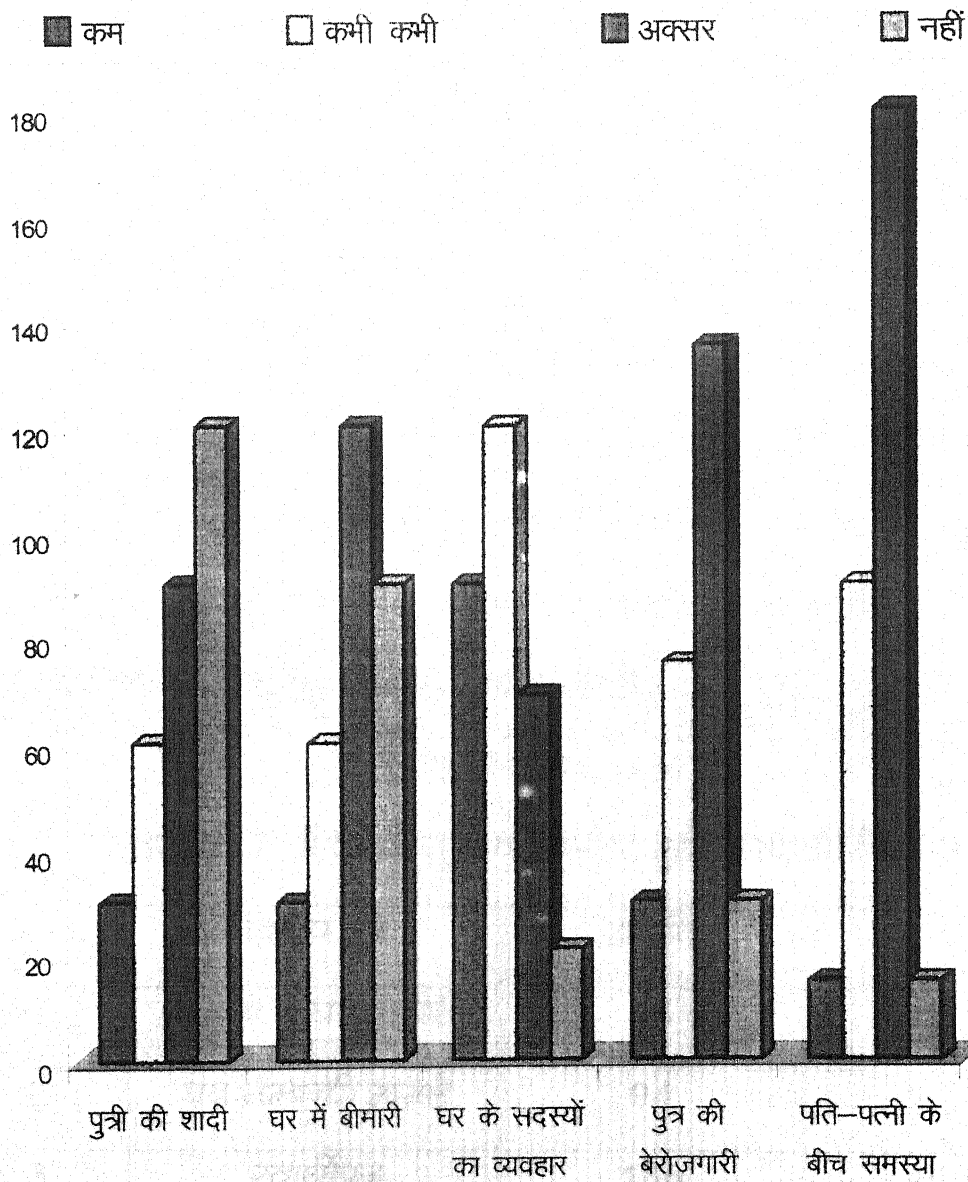
शादी जिसमें 30 प्रतिशत अक्सर, 20 प्रतिशत कभी-कभी तथा 10 प्रतिशत कम तनाव का कारक मानते थे।

तालिका संख्या-17

उत्तरदाताओं में कहा-सुनी के सामान्य मुद्दों का विवरण

क्र. सं.	सामान्य मुद्दें	आवृति	प्रतिशत
1.	मद्यपान	51	17.00
2.	पारस्परिक हस्तक्षेप	96	32.00
3.	कार्यो में असहयोग	108	36.00
4.	उत्तरदायित्व हीनता	45	15.00
	योग	300	100.00

जब उत्तरदाताओं से पूछा गया कि मध्यम वर्गीय परिवारों में 'कहा-सुनी' के सामान्य मुद्दें क्या होते हैं तो 108 अधिकांश 36.00 प्रतिशत ने कार्यो में असहयोग, 32 प्रतिशत ने बताया कि पारस्परिक कार्यो में हस्तक्षेप करना, 17 प्रतिशत की राय थी कि मद्यपान तथा 15 प्रतिशत उत्तरदाता उत्तरदायित्व हीनता का पारिवारिक कहा-सुनी का सामान्य मुद्दा मानते थे।

तालिका संख्या-18

उत्तरदाताओं में कहा-सुनी के विशेष मुद्दों सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	विशेष मुद्दें	आवृति	प्रतिशत
1.	विलम्ब से घर वापिसी	35	16.67
2.	धन सम्बन्धी मामले	94	31.33
3.	स्वार्थीपन	136	45.33
4.	मित्रों को प्राथमिकता	35	11.67
	योग	300	100.00

ग्राफ संख्या -६

उत्तरदाताओं मे कहा सुनी के विशेष मुद्दों सम्बन्धी विवरण
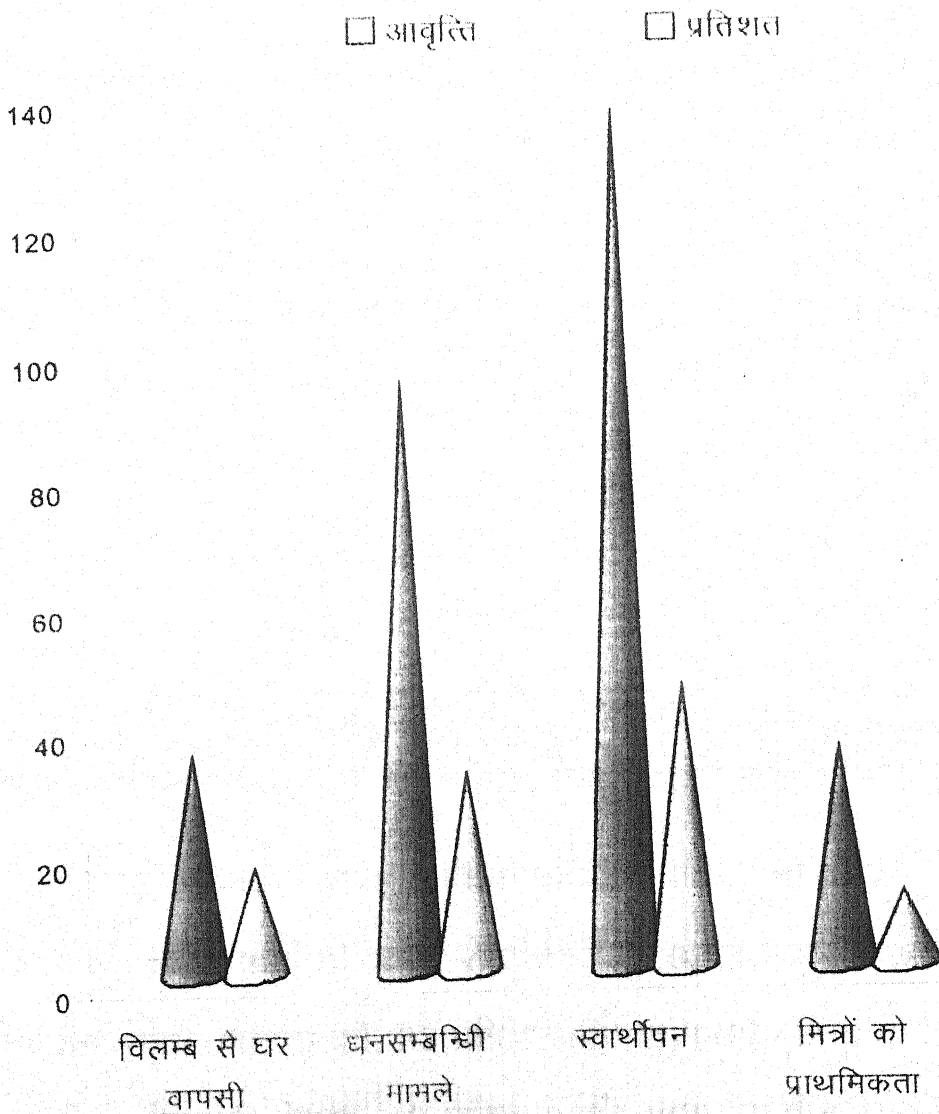
उक्त तालिका 'कहां-सुनी' के विशेष मुद्दों पर प्रकाश डालती है जिसके अन्तर्गत 136 अधिकांश 45.33 प्रतिशत उत्तरदाता पति-पत्नी के मध्य स्वार्थीपन को, 31.33 प्रतिशत उत्तरदाता धन सम्बन्धी मामलों को, तथा 11.67 प्रतिशत क्रमशः मित्रों को प्राथमिकता देने तथा पति द्वारा विलम्ब से घर वापिसी को तनाव का विशेष मुद्दा मानते थे।

तालिका संख्या-19

उत्तरदाताओं में कहा-सुनी की समाप्ति सम्बन्धी सूचनाएं

क्र. सं.	कहा-सुनी के अन्त	आवृति	प्रतिशत
1.	सहन-शीलता	92	30.67
2.	डाट-डपट	69	23.00
3.	गाली-गलौज	37	12.33
4.	पारस्परिक चेतावनी	57	19.00
5.	मन-पीट कर	45	15.00
6.	अन्य	-	-
	योग	300	100.00

जब उत्तरदाता से यह ज्ञात किया गया कि पति-पत्नी के बीच 'कहा-सुनी' की समाप्ति किस कार्य के करने से होती है तो 92 अधिकांश 30.67 प्रतिशत उत्तरदाता सहन-शीलता को, 23 प्रतिशत पति द्वारा डाट-डपट को, 19 प्रतिशत पारस्परिक चेतावनी देकर, 15 प्रतिशत पति द्वारा मारपीट कर तथा 12.33 प्रतिशत ने गाली-गलौज का 'कहा-सुनी' समाप्ति का पटापेक्ष होना स्वीकार किया।

तालिका संख्या-20

उत्तरदाताओं में तना-तनी के मध्य हस्तक्षेपकों का विवरण

क्र. सं.	हस्त क्षेपक	आवृति	प्रतिशत
1.	घरवाले	200	66.67
2.	पड़ोसी	63	21.00
3.	रिस्तेदार	37	12.33
4.	कोई नहीं	-	-
	योग	300	100.00

जब उत्तरदाताओं से पूछा गया कि पति-पत्नी की तना-तनी के मध्य कौन हस्तक्षेप करने आता है तो 200 अधिकांश 66.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि 'घरवाले', 63 उत्तरदाताओं 21 प्रतिशत ने बताया 'पड़ोसी' तथा 37 उत्तरदाताओं 12.33 प्रतिशत ने बताया कि 'रिस्तेदारों' द्वारा हस्तक्षेप किया।

तालिका संख्या-21

उत्तरदाताओं में तना-तनी को लेकर पुलिस स्टेशनों तक पहुँच का विवरण

क्र. सं.	पहुँच	आवृति	प्रतिशत
1.	हां	63	21
2.	नहीं	237	79
	योग	300	100

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 237 उत्तरदाता 79 प्रतिशत पारिवारिक तना-तनी को लेकर पुलिस थानों में अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत नहीं करते

जबकि 63 उत्तरदाताओं ने अपने तना-तनी के प्रकरण पुलिस थानों में प्रेषित किए।

तालिका संख्या-22

उत्तरदाताओं में पुलिस रिपोर्ट के कोर्ट केसेज सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	कोर्ट केसेज	आवृति	प्रतिशत
1.	हां	63	21
2.	नहीं	237	79
	योग	300	100

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि 237 अधिकांश 79 प्रतिशत उत्तरदाता ने न्यायालय में पहुँच नहीं की, जबकि 63 प्रतिशत उत्तरदाता 21प्रतिशत ने पति-पत्नी के बीच तना-तनी के केसेज दायर किए।

तालिका संख्या-23

उत्तरदाताओं के कोर्ट केसेज के परिणाम सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	केस का पणिाम	आवृति	प्रतिशत
1.	राजीनामा	18	28.57
2.	पृथकीकरण	18	28.57
3.	तलाक	13	20.63
4.	केस विचाराधीन	14	22.23
	योग	300	100.00

जब उत्तरदाताओं से न्यायालय प्रकरणों के परिणामों के बारे में ज्ञात किया तो 28.57 प्रतिशत उत्तरदाताओं के या तो पारस्परिक 'राजीनामा' अथवा

पृथकीकरण ले लिया। 20.63 प्रतिशत ने आपस में तलाक ले ली और अन्य 22.23 प्रतिशत उत्तरदाताओं के मुकद्दमें न्यायालय के विचाराधीन थे।

तालिका संख्या-24

उत्तरदाताओं में तनाव के मनोवैज्ञानिक कारकों का विवरण

क्र. सं.	मनोवैज्ञानिक कारक	सहमत	असहमत	अनिश्चित	योग (%)
1.	पति-पत्नी का क्रोधित होना	179 (59.67%)	82 (27.33%)	39 (13%)	300 (100%)
2.	पति-पत्नी का भावुक होना	179 (59.67%)	82 (27.33%)	39 (13%)	300 (100%)
3.	पति-पत्नी का झगडालूपन	237 (79%)	33 (11%)	30 (10%)	300 (100%)
4.	एकदूजे के प्रति घृणा प्रदर्शन	171 (57%)	99 (33%)	- -	300 (100%)
5.	परस्पर आलोचना करना	183 (61%)	117 (39%)	- -	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि निम्न मनोवैज्ञानिक कारक मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव के लिए उत्तरदाई पाये गये। 237 उत्तरदाताओं (79%) सहमत थे कि पति-पत्नी का झगडालू प्रवृति तनाव की कारण थी, 183 उत्तरदाता (61%) इस बात से सहमत थे कि 'परस्पर आलोचना' करना पारिवारिक तनाव का कारक है, और 59.67% उत्तरदाता क्रमशः पति-पत्नी का शीघ्र क्रोधित स्वभाव, पति-पत्नी का भावुक होना तनाव का कारक था तथा 57%

उत्तरदाता ऐसे थे जो 'एक दूजे के प्रति घृणा प्रदर्शन' को पारिवारिक तनाव का मनोवैज्ञानिक कारक मानते थे।

तालिका संख्या-25

उत्तरदाताओं में तनाव के कटु प्राथमिक सम्बन्धी कारक

क्र. सं.	कटु प्राथमिक कारक	सहमत	असहमत	अनिश्चित	योग (%)
1.	माता-पिता व संतानों के विपरीत सम्बन्ध	179 (59.67%)	100 (33.33%)	21 (7%)	300 (100%)
2.	सास-बहू के विपरीत सम्बन्ध	204 (68%)	63 (21%)	33 (11%)	300 (100%)
3.	दो भाईयों के बीच मतभेद	185 (61.67%)	91 (30.33%)	24 (8%)	300 (100%)
4.	देवरानी-जिठानी में मतभेद	201 (67%)	63 (21%)	36 (12%)	300 (100%)
5.	ननद-भावज में मतभेद	188 (62.67%)	37 (12.33%)	75 (25%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से तनाव के सामाजिक उत्तरदाई कारक ज्ञात होते हैं जिसमे माता-पिता व संतानों के विपरीत सम्बन्ध 59% तनाव के कारक थे। सास-बहू के विपरीत सम्बन्ध 68% तनाव के लिए उत्तरदाई थे। दो सगे भाईयों के बीच मतभेद पारिवारिक तनाव के लिए 61% जिम्मेदार थे। देवरानी-जिठानी में मतभेद 67% तथा ननद-भावज में मतभेद 62% उत्तरदाई थे। यदि हम इनका

विश्लेषण करें तो सास-बहू, देवरानी-जिठानी, ननद-भावज, दो भाईयों के मध्य मतभेद तथा माता-पिता व संतानों के मतभेद मुख्य सामाजिक कारक थे।

तालिका संख्या-26

उत्तरदाताओं में पति की आदतों के कारण पारिवारिक तनाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	पति की आदतें	सहमत	असहमत	अनिश्चित	योग (%)
1.	मद्यपान	188 (62.67%)	64 (21.33%)	48 (16%)	300 (100%)
2.	धूम्रपान	171 (57%)	111 (37%)	18 (6%)	300 (100%)
3.	द्यूतक्रीड़ा	166 (55.33%)	122 (40.67%)	12 (4%)	300 (100%)
4.	देर से लौटना	196 (65.33%)	83 (27.67%)	21 (7%)	300 (100%)
5.	पत्नी की अपेक्षा	186 (62%)	63 (21%)	51 (17%)	300 (100%)
6.	बात-बात में टोकना-डाटना	183 (61%)	108 (36%)	9 (3%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका पति की आदतों के कारण पारिवारिक तनाव के कारणों पर प्रकाश डालती है जिसमें 65.33% सर्वाधिक 196 उत्तरदाता 'देर से घर लौटने की आदत' कारक से सहमत थे, 62.67% उत्तरदाता 'मद्यपान' से, 62%

उत्तरदाता पत्नी की उपेक्षा से, 61% उत्तरदाता 'बात-बात में पत्नी को टोकने' से, 57% उत्तरदाता धूम्रपान से तथा 55.33% उत्तरदाता जुआ खेलने की आदत से सहमत थे।

तालिका संख्या-27

उत्तरदाताओं में पत्नी के व्यवहार के कारण पारिवारिक तनाव का विवरण

क्र. सं.	पति की आदतें	सहमत	असहमत	अनिश्चित	योग (%)
1.	पत्नी का संदेहीपन	171 (57%)	93 (31%)	36 (12%)	300 (100%)
2.	मायके की प्रशंसा	159 (53%)	123 (41%)	18 (6%)	300 (100%)
3.	बिना पूछे कार्य करना	162 (54%)	102 (34%)	36 (12%)	300 (100%)
4.	पति से बाहर घुमाने की जिद	195 (65%)	84 (28%)	21 (7%)	300 (100%)

जब उत्तरदाताओं से पत्नी व्यवहार के कारण मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव उत्पन्न होता, पूछा गया तो 195 सर्वाधिक (65%) उत्तरदाता पति से पत्नी को बाहर घुमाने की जिद पूरा न करने से सहमत थे, 171 उत्तरदाता (57%) ने पत्नी का संदेहीपन पारिवारिक तनाव का कारक स्वीकार किया, 162 उत्तरदाता (54%) पत्नी के बिना पूछे कार्य कर लेने का तनाव के कारक से तथा 159 उत्तरदाता (53%) पत्नी द्वारा मायके की प्रशंसा करने से तनाव के कारक से सहमत थे।

तालिका संख्या-28

उत्तरदाताओं में पारिवारिक तनाव के सांस्कृतिक कारकों का विवरण

क्र. सं.	सांस्कृतिक कारक	सहमत	असहमत	अनिश्चित	योग (%)
1.	विश्वासों की भिन्नता	217 (72.33%)	65 (22.67%)	18 (6%)	300 (100%)
2.	परिवार नियोजन	186 (62%)	78 (26%)	36 (12%)	300 (100%)
3.	पति-पत्नी के मध्य सम्पत्ति को लेकर	187 (62.33%)	77 (25.67%)	36 (12%)	300 (100%)
4.	पति-पत्नी द्वारा आराम को लेकर	207 (69%)	81 (27%)	12 (4%)	300 (100%)
5.	बच्चों के शैक्षिक विषयों को लेकर	156 (52%)	105 (35%)	39 (13%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका मध्यम वर्गीय परिवारों में सांस्कृतिक मूल्यों एवं उनकी सोच को पारिवारिक तनाव के कारकों पर प्रकाश डालती है जिससे ज्ञात होता है कि 217 अधिकांश (72.33%) उत्तरदाता पति-पत्नी के मध्य 'विश्वासों में भिन्नता' कारक से, 69% उत्तरदाता अपने-अपने आराम को लेकर, 62.33% पति-पत्नी के मध्य 'सम्पत्ति' के कारक, 62% उत्तरदाता 'परिवार नियोजन' तथा 52% उत्तरदाता 'बच्चों के शैक्षिक विषयों' को पारिवारिक तनाव के कारकों से सहमत थे।

तालिका संख्या-29

उत्तरदाताओं में पारिवारिक तनाव के आर्थिक कारकों सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	आर्थिक कारक	सहमत	असहमत	अनिश्चित	योग (%)
1.	पति-पत्नी का काम-काजी होना	156 (52%)	81 (37%)	33 (11%)	300 (100%)
2.	पत्नी का काम-काजी होना	174 (58%)	99 (33%)	27 (9%)	300 (100%)
3.	पति का अस्थाई व्यवसाय	162 (54%)	117 (39%)	21 (4%)	300 (100%)
4.	पत्नी की अधिक आत्मनिर्भरता	201 (67%)	63 (21%)	36 (12%)	300 (100%)
5.	कुसमय व्यवसाय की समाप्ति	174 (58%)	99 (33%)	27 (9%)	300 (100%)
6.	पति की ऋण ग्रस्तता	165 (55%)	90 (30%)	45 (15%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव के (1) पति-पत्नी दोनों का काम काजी होना, (2) पत्नी का काम-काजी होना, (3) पति का अस्थाई व्यवसाय, (4) पत्नी की पति पर अधिक आत्मनिर्भरता, (5) कुसमय व्यवसाय की समाप्ति तथा (6) पति की ऋणग्रस्तता, मुख्य कारक थे। जिसमें वरीयता क्रम में पत्नी की अधिक आत्मनिर्भरता 67%, पत्नी का काम-काजी होना तथा कुसमय व्यवसाय की समाप्ति 58%, पति की ऋणग्रस्तता

55%, पति का अस्थाई व्यवसाय 54% तथा पति-पत्नी दोनों का काम-काजी होना 52% उत्तरदाई थे।

तालिका संख्या-30

उत्तरदाताओं में पारिवारिक तनाव के जैवकीय कारकों का विवरण

क्र. सं.	जैवकीय कारक	सहमत	असहमत	अनिश्चित	योग (%)
1.	पति की नपुसंकता	180 (60%)	80 (26.67%)	40 (13.33%)	300 (100%)
2.	पत्नी का बांझपन	171 (57%)	93 (31%)	36 (12%)	300 (100%)
3.	यौनिक असन्तोष	156 (52%)	90 (30%)	54 (18%)	300 (100%)
4.	लड़की जनना	147 (49%)	108 (36%)	45 (15%)	300 (100%)

जब उत्तरदाताओं से यह पूछा गया कि मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव के जैवकीय कौन-कौन से कारक उत्तरदाई होते हैं। उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि (1) पति की नपुसंकता 60%, (2) पत्नी का बांझपन 57%, (3) पति-पत्नी के मध्य यौनिक असन्तोष 52% तथा (4) लड़की जनना 49% तनाव के कारकों से सहमत थे।

तालिका संख्या-31

उत्तरदाताओं में पारिवारिक तनाव के अन्य कारक सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	अन्य कारक	सहमत	असहमत	अनिश्चित	योग (%)
1.	अधिक सन्तानें	174 (58%)	84 (28%)	42 (14%)	300 (100%)
2.	पति-पत्नी में किसी एक का दुर्वल स्वास्थ्य	205 (68.34%)	64 (21.33%)	31 (10.33%)	300 (100%)
3.	वैवाहिक असन्तोष	204 (68%)	66 (22%)	30 (10%)	300 (100%)
4.	पति-पत्नी आयु में अधिक अन्तर	171 (57%)	71 (27%)	48 (16%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से पारिवारिक तनाव के अन्य कारक ज्ञात होते हैं-जिसमें 204 सर्वाधिक 68% उत्तरदाता वैवाहिक असन्तोष को पारिवारिक तनाव के कारक से सहमत थे, 68.34% पति-पत्नी में से किसी एक के दुर्बल स्वास्थ्य पारिवारिक तनाव के कारक से सहमत थे, 58% व्यक्ति के अधिक सन्तानें होने के कारक से तथा 57% उत्तरदाता पति-पत्नी की आयु में अधिक अन्तर को पारिवारिक तनाव के कारक से सहमत थे।

अध्याय -6

मध्यम वर्गीय परिवारों में पारिवारिक विघटन के कारक

- ❖ वैयक्तिक कारक
- ❖ सामाजिक कारक
- ❖ आर्थिक कारक
- ❖ मानसिक कारक

अध्याय -6

मध्यम वर्गीय परिवारों में पारिवारिक विघटन के कारण

मध्यम वर्गीय परिवारों में विघटन के अध्ययन की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि आज परिवार की संरचना तथा प्रकार्यो में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहे हैं। ये आधुनिक परिवर्तन सामाजिक संगठन, सन्तुलन तथा सुख समवृद्धि के लिए सकारात्मक कम नकारात्मक अधिक हैं। नकारात्मक परिवर्तनों को वैयक्तिक विघटन के लक्षणों जैसे- सामाजिक मूल्यों के प्रति विपरीत मनोवृतियों का निर्माण, प्रस्थिति तथा व्यक्ति की भूमिका में असामन्जस, शारीरिक एवं मानसिक दोष का प्रार्दुभाव, सामाजिक आदर्श नियमों का विचलन तथा अलगाव की पनपती भावना। परिवार की पृष्ठभूमि में इन नकारात्मक परिवर्तनों को अवलोकते है तो पारिवारिक विघटन के कतिपय भयाभय रूप दृष्टि गोचर होते हैं यथा- अपराध, बाल-अपराधों की दर में वृद्धि, मद्यपान की चषक, वैश्यावृति, मानसिक रोग, पति-पत्नी के मध्य तनाव, झगडे, परित्याग, आत्महत्या तथा विवाह विच्छेद की अधिक घटनाएं होना। कम और अधिक इन नकारात्मक परिवर्तनों का समाज के ऊपर भी स्थिति तथा भूमिका की अनिश्चितता, नियंत्रण के साधनों की शक्ति में कमी, एकमत का अभाव, लोकाचारों तथा संस्थाओं के बीच संघर्ष, समितियों और समूहों के कार्यो का हस्तानान्तरण, व्यक्तिवादिता में वृद्धि के रूप मेंसहज ही देखा तथा अनुभव किया जा सकता है।

पारिवारिक विघटन का अध्ययन का कतिपय रूप से आज महत्वपूर्ण है। विघटन के कारकों के ज्ञात होने से परिवारों के विघटन की प्रक्रिया को रोका जा

सकेगा । सामाजिक नियंत्रण को शक्ति प्रदान होगी, समष्टिवाद को प्रोत्साहन मिलेगा अपराध बाल अपराधों का निरोधन होगा, भारत की पुरानी संस्कृति तथा सभ्यताओं को संजाये रखा जाना सम्भव होगा । सामाजिक संरचना को समवृद्धिता प्रदान होगी, सामाजिक नकानात्मक परिवर्तन की गति को मंद किया जा सकेगा । परिवार में सुख-शांति का अनुरक्षण करना सरल होगा, सामाजिक प्रक्रियाओं सहयोग, व्यवस्थापन, समाजीकरण को बड़ावा तथा संघर्ष तथा प्रतियोगिता पर नियंत्रण होगा, पारिवारिक तनाव-झगड़े-मारपीट, हिंसा की मात्रा में कमी आयेगी इसके साथ-साथ वैयक्तिक विघटन पर नियंत्रण करने में सरलता मिलेगी ।

पारिवारिक विघटन

परिवार समाज की एक मौलिक सार्वभौतिक संस्था है । इसी के द्वारा मानव की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति होती है । परिवार आदि काल से ही अनेक महत्वपूर्ण कार्यो को करता आ रहा है । प्राथमिक एवं वैयक्तिक सम्बन्धों पर आधारित यह संस्था आज परिवर्तन की ओर अग्रसर है । जब परिवर्तन जीवन के सभी क्षेत्रों में हो रहा है तो परिवार उससे अछूता कैसे रह सकता है । समाज की एक इकाई के रूप में परिवार आज परिवर्तन के मध्य है । समाज में व्याप्त संगठन और विघटन का परिवार पर निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है । आज आर्थिक, राजनैतिक, मनोरंजनात्मक, मनोवैज्ञानिक तथा धार्मिक कारक व्यक्ति की अभिवृतियों, मूल्यों और व्यवहार को बदलने में महत्वपूर्ण योग दे रहे हैं । इसका प्रभाव परिवार पर भी पड़े नहीं रह सकता । यही कारण है कि आज परिवार बदल रहा हैं, परिवार के बहुत से कार्य छिनते जा रहे है, आज परिवर्तन की प्रक्रिया के फलस्वरूप अनेक परिवार विघटित हो रहे हैं, कई परिवार टूट रहे हैं और छोटे परिवारों में बदल रहे हैं ।

टालकोट पारसंन के अनुसार, "पारिवारिक विघटन, सामाजिक संरचना में होने वाले परिवर्तनों से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं। विवाह के बाद पति एवं पत्नी दोनों को ही नवीन प्रस्थिति एवं भूमिकाएं प्राप्त हो जाती है जो उन्हें अपने भावी जीवन में निभानी होती हैं। कई सदियों तक परिवार संरचना के परम्परागत प्रतिमान में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुए तथा पति-पत्नी समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप परम्परागत ढंग से अपनी भूमिका निभाते हैं परन्तु आज परिस्थितियाँ इतनी तेजी से बदल रही है कि पति-पत्नी के लिए यह अनुमान लगाना कठिन हो गया है कि उनसे क्या आशाएं की जा रही हैं, कौन से कार्य उन्हें करने है और कौन से नहीं , किन भूमिकाओं को उन्हें निभाना है और किनकों नहीं। ऐसी स्थिति में पति-पत्नी के लिए सह जानना कठिन हो गया है कि परिवार और समाज उनसे किस प्रकार के व्यवहार की आशा करता है। आज व्यवहार के पुराने प्रतिमान तो बदल चुके है परन्तु नवीन प्रतिमान पूर्ण तरह स्थापित नहीं हो गये हैं। भूमिका सम्बन्धी प्रतिमान की अस्पष्टता को अंशों में परिवारों को विघटित करने के लिए उत्तरदाई है"।[1]

वर्तमान में परिवर्तन के कारण भूमिका सम्बन्धी अस्पष्टता हो जाती है। आज यह निश्चित करने में कठिनाई हो रही है कि पत्नी नौकरी करे या नहीं। बच्चों एवं वृद्ध माता-पिता की देखभाल कौन करे तथा परिवार प्रवन्धन का कार्य कौन संभाले। भूतकाल में परिवार में विभिन्न सदस्यों की भूमिकाएं निश्चित थी, इस सम्बन्ध में कोई अस्पष्टता नहीं थी। परन्तु अब स्थिति काफी बदल चुकी है। आज कौन किस भूमिका को निभाये और वही उस भूमिका को क्यों निभाये? यह पूर्णतः निश्चित नहीं है। परिणाम स्वरूप बहुत सदस्य यह निश्चय नहीं कर पाते है कि उन्हें क्या करना है और क्या नहीं। पत्नी के सामने भूमिका सम्बन्धी कठिनाई सर्वाधिक हैं। पति या पत्नी की भूमिका उतनी नहीं बदली हैं जितनी पत्नी या महिला

1. पारसन, टालकोट एण्ड आर.बी. बेल्स, फेमिली , सोसिलाइजेशन एण्ड इनट्रेक्शन पृष्ठ- 19

की। पुरूष अब भी परिवार के लिए जीविका कमाने वाले एवं मुखिया के रूप में भूमिका निभाता है। लेकिन पत्नी की भूमिकाएं आज काफी बढ़ चुकी है। इतना अवश्य है कि वह आज भी परिवार की देखभाल करने वाली स्त्री और माता के रूप में अपनी भूमिका निभाती है, लेकिन साथ ही उससे अनेक नवीन अपेक्षाएं भी की जाती है। परिणाम यह हुआ है कि उससे अपेक्षित आचरण और उसके द्वारा व्यवहार रूप में व्यक्त किए जाने वाले आचरण में अन्तर पाया जाता है। इसके फलस्वरूप उसके व्यवहार में जटिलता आ गई है। उसकी प्रस्थिति और उसकी भूमिका सम्बन्धी जटिलता के बारे में कहा गया है कि अक्सर वह नौकरी करती है, उच्च शिक्षा ग्रहण करने में अधिक रूचि लेती है और पहले की तुलना में अब उसके कम बच्चे हैं। इन भूमिकाओं के अतिरिक्त उससे एक संगिनी, सलाहकार, व्यवहारिक नर्स, भाविक प्रेमपात्र और गृह स्वामी होने की अपेक्षा की जाती है। यह ऐसी परिस्थितियाँ है जिनको संतोषप्रद ढंग से पूर्ण करना कठिन है, चाहे उनकी जटिल प्रकृति के सम्बन्ध में मतैक्य सम्बन्ध ही क्यों न हो।

आज की युवा पत्नी भूमिकाओं की विविधता के कारण अपने कार्यों की कुशलतापूर्वक नहीं कर पाती। परम्परागत पारिवारिक संरचना में स्त्री की सीमित सर्व स्वीकृति भूमिकाएं थी। लेकिन आज विभिन्न व्यवसायिक और वर्गीय समूहों में पत्नी से अनेक भूमिकाएं निभाने की आशा की जाती है। पत्नी से अपेक्षित भूमिकाओं की विविधता उसके सामने भ्रान्ति की स्थिति उत्पन्न कर देती है। स्पष्ट है कि आज वस्तुतः परिवार वह नहीं रहा है जो कुछ समय पूर्व था। वर्तमान में पति-पत्नी की परम्परागत परिस्थितियों में अन्तर आया है।

<u>पारिवारिक विघटन की प्रकृति</u>

पारिवारिक विघटन से तात्पर्य परिवार की स्थिति का अशान्तिमय होना है, जबकि पारिवारिक सम्बन्धों में तनाव पैदा हो जाय और असन्तुलन की स्थिति हो जाय। इससे पारिवारिक एकमत्य का लोप हो जाता है। प्रत्येक सदस्य चाहे वह

पति-पत्नी ही क्यों न हो, अपना-अपना कार्य करने में अनिच्छा दिखाते हैं और उनके बीच सामन्जस की गम्भीर समस्या हो जाती है। वह तनाव केवल पति-पत्नी के बीच ही नहीं अपितु माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्य तथा बच्चों के बीच भी हो सकता है। पारिवारिक विघटन परिवार के किसी सदस्य के मरने पर भी हो सकता है।

गिलिन एण्ड गिलिन ने पारिवारिक विघटन की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए निम्न अवस्थाओं का वर्णन किया है,

(1) वैवाहिक पवित्रता की भावना में ह्रास होता है। पहले विवाह एक धार्मिक संस्कार माना जाता है। उसमें लोगों की निष्ठा तथा श्रद्धा रहती थी। परन्तु अब विवाह को समझौते के रूप में माना जाता है, विवाह से सम्बद्ध धार्मिक मान्यताओं का प्रभाव कम होता जा रहा है।

(2) पारिवारिक कार्यो का स्थानान्तरण हो गया है। परिवार के कार्यो को शीघ्रता के साथ अन्य सामाजिक संस्थाएं ग्रहण करती जा रही है। बच्चे के स्वास्थ्य, शिक्षा-दीक्षा आदि का कार्य अस्पताल, स्कूल ने ले लिया है। खाना बनाने तथा खिलाने का काम धीरे-धीरे होटल और भोजनालओं ने लेना प्रारम्भ कर दिया है।

(3) पारिवारिक कार्य में दिन पर दिन कमी आती जा रही है। परिवार एक आत्म निर्भर इकाई थी, खाने-पीने से लेकर पहनने व ओढ़ने आदि सभी वस्तुओं का उत्पादन करता था, परन्तु आज के औद्योगिक युग में सब कार्य दूसरी संस्थाओं द्वारा ले लिये गये हैं और इस प्रकार इसके कार्य में भारी कमी आ गई है।

(4) पारिवारिक सम्बन्धों का ढीला पड जाना-पुराने आत्मनिर्भर परिवार के सदस्यों के सम्बन्ध घनिष्ठ थे। सभी सदस्यों की सभी आवश्यकताओं परिवार की परिधि में पूरी हो जाती थी, परन्तु अब जब सदस्यों की सब आवश्यकताएं इसमें

पूरी नहीं होती थी उसका सम्बन्ध बाहर की अन्य संस्थाओं से बढ़ता जा रहा है और उत्तरोत्तर इस प्रकार परिवार के अन्दर सदस्यों के पारस्परिक सम्बन्ध धीरे-धीरे कमजोर होते जा रहे हैं।

(5) संतानोत्पत्ति की अवहेलना से आज के युग में परिवार संतान की अपेक्षा भौतिक सुख सुविधाओं की वस्तुओं का अत्याधिक पसन्द करता है तथा संतुति निरोध के लिए अनेक उपायों तथा विधियों की शरण ली जाती रही है, जिसके कारण पारिवारिक सम्बन्ध में घनिष्ठता और प्रेम की भावना का लोश हो रहा है और पति-पत्नी के सम्बन्ध में प्राकृतिक भावना का ह्मस हो रहा है। इसी प्रकार परिवार में आज माता-पिता का नियंत्रण कम हो रहा हैं, आये दिन अनुशासन हीनता बढ़ रही है। परिवार सामाजिक कार्यो का केन्द्र नहीं रहा है और निश्चित ही उसके कार्यो में अन्तर आ गया है। अत्याधिक परित्याग, विवाह विच्छेद की बढ़ती हुई संख्या से स्पष्ट है कि आज का परिवार अस्थाई दशा में है।

<u>पारिवारिक विघटन एक प्रक्रिया के रूप में</u>

पारिवारिक विघटन यकायक नहीं होता। यह एक प्रक्रिया या क्रम का रूप धारण करता है। जब ऐसा कोई संकट उत्पन्न होता है जो पारिवारिक विघटन का कारक होता हैं , तो उसकी जड़ बहुत दिनों से पारिवारिक सम्बन्धों में पाई जाती है। प्रत्येक परिवार में एक न्यून मात्रा में असमान्जस और विद्रण को सहन करने की शक्ति होनी चाहिए। जब कभी संकटपूर्ण स्थिति उत्पन्न होती है फिर चाहे उसका कारण सन्तान का जन्म हो, परिवार के मकान का बदलना हो, या नौकरी में एक स्थान से दूसरे स्थान को स्थानान्तरण हो- इस तरह के सभी प्रकार के अवसरों पर, संघर्ष की स्थिति आ सकती है, सामान्जस भी होता रहता है। इस प्रकार असमान्जस एक स्वाभाविक स्थिति है। जब परिवार के सामन्जस की प्रक्रिया निरन्तर होती रहती है तो परिवार में शांति की स्थिति बनी रहती है अन्यथा विघटन

प्रारम्भ होता है । कुछ परिवारों में संघर्ष की स्थिति रहते हुए भी परिवार का विघटन भौतिक रूप में नहीं हो पाता । बहुत से परिवार इसलिए विघटित नहीं होते कि धार्मिक विचार अत्यन्त प्रभाव पूर्ण होते हैं । स्त्री धर्म तथा पुरोहितों के भय से सब प्रकार की आवस्थाओं को सहन करती है । बहुत सी माताएं अपनी संतान के प्यार के कारण परिवार में सभी यातनाएं सहन करती हैं। कुछ अपनी सामाजिक, आर्थिक सुरक्षा की दृष्टिकोण से अलग नहीं होती । इस प्रकार अनेक कारणों से परिवार का ह्रास एकायक नहीं होता, पर उस में इस प्रकार की क्रिया चलती रहती है।

इस प्रसंग में मारवर के विचार रखना उपयुक्त होगा, "प्रत्येक व्यक्ति कुछ योग्यताओं और सामन्जस के प्रतिरोध के लिए हुए विवाह करता है । यह परिसम्पत्ति और दायित्व इस बात पर निर्भर करते है कि व्यक्ति विवाह को क्या समझता है, उसकी आदतें कैसी हैं, उसके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएं क्या हैं? इसका फल यह होता है कि यदि दो व्यक्ति विपरीत या विरोधी विचारों या दशाओं को लिए विवाह करते हैं, तो संघर्ष अनिवार्य है और चूंकि दो व्यक्तियों के मनोभावों और विचारों में पूर्ण समानता कभी नहीं पाई जाती है, थोड़ा बहुत संघर्ष प्रत्येक विवाद में उत्पन्न हो ही जाता है"।[1]

मारवर ने यह भी कहा है, कि प्रत्येक विवाह में शांति तथा विरोध पाया जाता है । विवाहिक सुख एक सापेक्षिक तथ्य है । सुख और शांति पति-पत्नी के अभिव्यक्तियों, मनोवृतियों, स्वभाव तथा विचारों पर निर्भर करता है । प्रत्येक दो व्यक्तियों में अल्पाधिक मात्रा में शांति तथा विरोध के तथ्य पाये जाते है । जब उसमें सहमत तथा एकमत सामन्जस द्वारा भी नहीं हो पाता तब विघटन की प्रक्रिया तीव्र हो जाती है और परित्याग, विलगाव तथा तलाक की स्थिति पहुँच जाती है । ऐसी

1. मारवर (1941): सामाजिक एवं वैयक्तिक विघटन.

परिस्थिति में परस्पर सामन्जस ही उपयुक्त विधि है जिससे परिवार विघटन को रोका जा सकता है"।[1]

न्यूमेयर, पारिवारिक विघटन के बारे में बताया कि "पारिवारिक विघटन केवल एक असंतुलित अवस्था ही नहीं है क्योंकि यह मुख्यतः एक प्रक्रिया है। इस रूप में यह उन घटनाओं के क्रम और उनकी उपस्थिति को व्यक्त करता है जो कि व्यक्तियों की पारिवारिक क्रियाशीलता में बाधा डालते हैं.........पारिवारिक विघटन एक अवस्था से कुछ अधिक है, यह मौलिक रूप से एक प्रक्रिया या प्रक्रियाओं का क्रम है। घटनाओं में यह क्रम, जिससे यह प्रक्रिया निर्मित होती है के अर्न्तगत संघर्ष, अत्याधिक प्रतिस्पर्धा, विभेद और अन्य विघटनकारी उपक्रियाएं आती है"।[2]

थामस एण्ड जैनिकी ने लिखा है "पारिवारिक विघटन असाधारण या असामान्य घटना नहीं है जो किसी समय विशेष अथवा परिवार विशेष तक सीमित हो। यह तो प्रत्येक परिवार में हर समय मौजूद रहता है तथा हमेशा व हर जगह किसी न किसी रूप में पारिवारिक नियम तोड़ता रहता है जो परिवार पर विघटात्मक प्रभाव डालता रहता है और यदि उसे रोका न जाय तो वह बढ़ सकता है एवं परिवार को पूरी तरह नष्ट कर सकता है"।[3]

पारिवारिक विघटन की जटिलता

परिवार समाज की इकाई होने के कारण अनेक कारकों से प्रभावित हुआ है। इनमें आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन मुख्य है। औद्योगिक क्रांति के कारण अनेक परिवर्तनों का उद्‌भव हुआ। 'नारी जागरण' का समय आया तथा स्त्री के पद एवं कार्य अत्यधिक परिवर्तन हुआ। आज स्त्री पुरूष की भाँति घर और घर के

---

1. मारवर (1941): सामाजिक एवं वैयक्तिक विघटन.
2. मोरटिन, एच.न्यूमेयर: ओपसिट पी.पी. 9-17 उद्धत द्वारा एम.एल. गुप्ता एवं डी. वी. शर्मा (1994): 'सामाजिक विघटन' साहित्य भवन आगरा पृष्ठ-4
3. थामस एण्ड जैनिकी : ओपसिट पी.पी. 34, उद्धत द्वारा एम.एल. गुप्ता (1994): 'सामाजिक विघटन' पृष्ठ-4

बाहर काम करती है। पुरूष की भाँति वह समाज के विभिन्न सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनैतिक कार्यों में भाग लेती है। इन सभी कारणों से स्त्री की मनोवृति में परिवर्तन हुआ है। अव नारी पुरूष की भाँति ही काम करने लगी है और पुरूष के तरह पद ग्रहण कर रही है। सम्भव है उसकी मनोवृति में भी परिवर्तन हुआ हो। राजनीति द्वारा जनमत में मत प्रदान करने तथा अन्य स्थान ग्रहण करने को छूट से भी उसकी मनोवृति में परिवर्तन हुआ है। व्यक्तिवाद के कारण तलाक तथा संतानोत्पादन में ह्मस अवस्थाएं दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही हैं। इसके साथ-साथ, सामाजिक परिवर्तन ने ऐसे सामाजिक मूल्यों को जन्म दिया है जो पूर्ण रूप से अपनाएं नहीं गये तथा उनका रूप निखरा नहीं है। इस प्रकार कोई निश्चित स्तर नहीं रहता जिसका परिवार तथा नई पीढ़ी के लिए निर्धारित किया जा सके।

आज के समाज में तलाक को मान्यता मिल गई है तथा वह एक आदरपूर्ण स्थान ग्रहण कर चुका है। इलियट तथा मैरिल के अनुसार-''तलाक ने एक नया आदर का पद पा लिया है और यह सत्य है कि इसको (तलाक) अनेक समाजशास्त्रीयों, विचारकों, सुधारकों तथा आम जनता के द्वारा मान्यता मिल गई है। परन्तु कोई ऐसा सारभौमिक एकमत्य नहीं है कि यह (तलाक) विवाह समस्या का एक मात्र निदान है। तलाक की सामान्य मान्यता इस बात को सिद्ध करती है कि परिवार में नये सामाजिक मूल्य तथा नियम का समावेश हो गया है। विवाह अब सुख व शांति का साधन नहीं रहा, वरन वह अपने में एक अन्त है। जहां तक मानवीय सुख का उत्पादन है उसे अच्छा समझा जाता है और जब वह पति अथवा पत्नी के व्यक्तित्व का बिनासक बन जाता है। उसको बहुत कम महत्ता दी जाती है''।[1]

---

1. इलियट एण्ड मैरिल (1941): डिस ओरगनाईजेशन सामाजिक,व्यैक्तिक, पृष्ठ -25

भारत में पारिवारिक विघटन

भारत में पारिवारिक विघटन आज हमारी महत्वपूर्ण समस्याओं में से एक है। औद्योगिक क्रांति से पहले तक भारतीय परिवारों का रूप संयुक्त था, लेकिन औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा तथा पश्चिमी जीवन दर्शन के प्रभाव से भारतीय परिवारों की संरचना तथा कार्यों में तेजी से परिवर्तन होने लगा। इन परिवर्तनों ने न केवल परिवार की संरचना को असंतुलित बना दिया अपितु सदस्यों के पारस्परिक सम्बन्धों, सामन्जस की प्रक्रिया, परिवार के अनुशासन तथा व्यवहार प्रतिमानों को विघटित करने के लिए भी यही परिवर्तन सबसे अधिक उत्तरदाई सिद्ध हुए। भारत में आज परिवार की संरचना, सदस्यों की मनोवृतियों तथा परिवार के प्रकार्यों से सम्बन्धित अनेक ऐसी समस्याओं ने जन्म ले लिया है जिनके आधार पर भारतीय परिवारों का विघटन प्रक्रिया के अन्तर्गत माना जा सकता है।

वर्तमान भारतीय परिवारों की पति-पत्नी के बीच असामन्जस सबसे विषम समस्या है। परम्परागत रूप से परिवारों के अनुशासन, स्त्रीयों की अशिक्षा तथा बाल विवाह के कारण पति-पत्नी के बीच असामन्जस की समस्या अनुभव नहीं की जाती थी। हमारे धर्मशास्त्र तथा सामाजिक सीख बचपन से ही स्त्रीयों को अपने पति को देवता तथा स्वामी के रूप में मानने का प्रशिक्षण देते थे। आज स्त्रीयों की शिक्षा का तेजी से प्रसार हुआ है। संयुक्त परिवार के स्थान पर एकांकी परिवारों की स्थापना हुई है तथा आर्थिक क्षेत्र में स्त्रीयों का सहयोग बढ़ता जा रहा है। इस स्थिति में एक ओर स्त्रीयाँ दासी जीवन की जंजीरों को तोड़ देने के लिए बेचैन है तो दूसरी ओर पुरूष ऊपर से भले ही समानता तथा स्वतंत्रता का ढ़ोग रचाते हैं लेकिन मानसिक रूप से वे आज भी पत्नी को एक आश्रित नारी सेविका, ग्रहणी तथा बच्चों की संरक्षिका के रूप में ही देखना चाहते हैं। इस स्थिति में पति-पत्नी की

प्रति आशाओं तथा व्यवहारों असंतुलन तथा पृथक्करण सामान्य की घटना बनती जा रही है।

भारतीय परिवारों में विघटन की एक अन्य अभिव्यक्ति विवाह विच्छेद की दर में निरन्तर वृद्धि है। आज पारस्परिक त्याग, सहिष्णुता तथा विवाह बन्धन की पवित्रता के मूल्य अत्यधिक कमजोर पड़ गये हैं। विवाह को एक ऐसे समझौते के रूप में देखा जाने लगा है जिसका उद्देश्य आर्थिक सुरक्षा तथा यौनिक सुख प्राप्त करना है। इसके फल स्वरूप नगरी क्षेत्रों में आज तलाक की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी पृथक्करण की समस्या आज पहले से अधिक गम्भीर है।

बच्चों के समुचित पालन-पोषण का अभाव हमारे परिवारों की एक स्थायी विशेषता बनती जा रही है। परम्परागम रूप से भारतीय परिवार बच्चों के समाजीकरण का आदर्श केन्द्र थे जहां उन्हें सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, शैक्षिक तथा अन्य सभी प्रकार की शिक्षा देना परिवार के सदस्यों का नैतिक दायित्व था। आज परिवार में व्यक्ति का जीवन आत्म केन्द्रित, अत्यधिक व्यस्त तथा भौतिक सुखों की ओर उन्मुख है। अधिकांश माता-पिता अपने दायित्व को भूलकर शिक्षा संस्थाओं को ही बच्चे का अन्तिम संरक्षक मानने लगे है। परिवार में बच्चों को नैतिक व सांस्कृतिक प्रशिक्षण के स्थान पर सदस्यों से तिरस्कार और उदासीनता का व्यवहार मिलने लगा है। बल्कि बच्चों की अनुशासनहीनता सामाजिक जीवन को भी विशाक्त करने लगी है।

परिवार के नियंत्रण में शिथिलता भी हमारी प्रमुख समस्याओं में से एक हैं। आधुनिक युग में व्यक्ति इस बारे में अस्वस्थ हो गया है कि परिवार की परम्पराओं तथा मर्यादाओं को तोड़कर भी वह जीवन में सभी सुख-सुविधाएं प्राप्त कर सकता है। परिवार के हास्य, व्यंग तथा तिरस्कार का व्यक्ति के जीवन में कोई महत्व नहीं है। दूसरी ओर, वर्तमान परिवार व्यक्ति के लिए वे कार्य भी नहीं कर

रहे है जिसके कारण उसके जीवन पर परिवार का नियंत्रण बना हुआ था। आज व्यक्ति अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षिणिक, मनोरंजनात्मक और यहां तक कि जैवकीय आवश्यकताओं की पूर्ति भी परिवार के बाहर रहकर कर सकता है इसके फलस्वरूप परिवार एक संस्था न रह कर एक सुविधापूर्ण तथा हित प्रदान समिति के रूप में परिवर्तित हो रहे हैं।

परिवार के संस्तरण का भंग हो जाना भी भारत में पारिवारिक विघटन की समस्या को स्पष्ट करता है। परम्परागत रूप से भारतीय परिवारों में प्रत्येक सदस्य की प्रस्थिति दूसरे सदस्य की तुलना में पूर्व निर्धारित थी। यह संस्तरण परिवार के अनुशासन तथा सामाजिक सीख की प्रक्रिया को प्रभावपूर्ण बनाए रखने में अत्यधिक सहायक था। आज अनियमित स्वतंत्रता तथा व्यक्तिवादी मनोवृतियों के कारण परिवार का प्रत्येक सदस्य अधिक से अधिक अधिकारों की मांग करने लगा है। आयु, नातेदारी तथा नैतिकता के सभी आधार धूमिल पड़ गये हैं। परिवार में वृद्ध सदस्यों का तिरस्कार करना तथा उन्हें सुविधाओं से वंचित रखना बुरा नहीं समझा जाता। इस स्थिति में एक ऐसी पारिवारिक संरचना का निर्माण किया है जिसमें सभी सदस्य परिवार में शासक और अधिनायक की स्थिति में है लेकिन किसी की भी रूचि दूसरे के कल्याण में नहीं है।

गृहणियों की स्थिति तथा भूमिका में संघर्ष में भारतीय परिवारों की एक प्रमुख समस्या है। भारत में आज मध्यम और उच्च वर्ग परिवारों में शायद ही कोई परिवार ऐसा मिले जिसमें स्त्रीयां अपनी प्रस्थिति से संतुष्ट हो तथा पुरूष स्त्रीयों की भूमिका के प्रति अस्वस्थ हों। आज स्त्रीयां शिक्षित होने के बाद सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करना चाहती है, बच्चों के प्रशिक्षण तथा घरेलू प्रबन्ध में वे पुरूष को बराबर का सहयोगी बनाना चाहती है तथा जीवन की स्वतंत्रता एवं भौतिक सुखों में उनकी रूचि निरन्तर बढ़ रही है। पुरूष वर्ग इन आकांक्षाओं के अनुरूप स्त्रीयों

की स्थिति को मान्यता देने के लिए तैयार नहीं है। इसके फलस्वरूप भारत में परिवार विघटन का खतरा निरन्तर बढ़ता जा रहा है।

नैतिकता के नये मानदण्ड भी भारत में पारिवारिक विघटन की समस्या को स्पष्ट करते हैं। परिवार में आज नैतिकता के परम्परागत मूल्यों का प्रभाव धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। सबसे अधिक ह्रास्य एवं यौन सम्बन्धों मूल्यों में देखने को मिलता है। आज माता-पिता के समान ही परिवार के विवाहित युवा सदस्यों द्वारा विषम लिंग के मित्रों से घनिष्ठता प्रदर्शित करना तथा उत्तेजित साहित्य का अध्ययन करना बुरा नहीं समझा जाता है। विवाह के पूर्व तथा पश्चात् यौनिक स्वतंत्रता की प्रवृति निरन्तर बढ़ रही। परिवार को यौनिक संतुष्टि का साधन समझने के कारण यह अपने मूल उद्देश्यों से दूर हटता जा रहा है तथा रोमांटिक प्रेम पर आधारित विवाह करना आधुनिकता की कसौटी बनती जा रही है। फ्रायडवादी विचारों तथा पश्चिमी जीवन दर्शन के अनुसार भले ही अच्छे मान लिए जाय परन्तु भारतीय जीवन पद्धति में इन व्यवहारों ने यौनिक विषमता की समस्या को जन्म देकर हजारों परिवारों को विघटित कर दिया है।

परिवार में व्याप्त रूढ़ियां तथा इसके दुष्परिणाम हमारे समाज में पारिवारिक विघटन का ज्वलन्त उदाहरण है। भारत में आज ग्रामीण तथा नगरीय श्रेणी क्षेत्रों के 90 प्रतिशत से भी अधिक परिवार अन्धविश्वासों, कुरीतियों, अनुपयोगी कर्मकाण्डों तथा विघटनकारी प्रथाओं के बीच जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जिन परिवारों में प्रत्येक सदस्य भाग्य की दुहाई देता हो, बाल विवाह, दहेज, जाति-भेद, कुलीनता तथा सैभव जीवन की निर्योग्यताओं को अपने लिए आदर्श समझता हो, ऋण लेकर भी कर्मकाण्डों को पूरा अनिवार्य समझता हो तथा पुरूषों द्वारा स्त्रीयों का एवं वृद्ध स्त्रीयों द्वारा नव विवाहिता स्त्रीयों का शोषण किया जाता हो, उन्हें किस प्रकार संगठित परिवार कहा जा सकता है।

पारिवारिक विघटन के स्वरूप

सामाजिक विघटन का दूसरा प्रमुख स्वरूप पारिवारिक विघटन है। इसकी व्याख्या करते हुए इलियट तथा मैरिल ने लिखा है कि, "पारिवारिक विघटन से हम किन्हीं भी उन बन्धनों की शिथिलताओं, असमान्जस अथवा पृथक्करण को सम्मिलित करते है जो समूह के एक सदस्य को दूसरे से बांधे हुए थे"।[1] पारिवारिक संगठन का अर्थ है कि परिवार के सदस्य अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों की जागरूकता एवं पारिवारिक कर्त्तव्यों तथा परम्पराओं तथा परिवार के अनुकूल आचरण करना है लेकिन जब परिवार के सदस्य अपने दायित्वों का निर्वाह नहीं कर पाते तभी पारिवारिक विघटन होता है जिसके निम्न स्वरूप होते हैः- (1) पारिवारिक तनाव, (2) विवाह विच्छेद, (3) पारिवारिक प्रतिमानों में तीव्र परिवर्तन, (4) पारिवारिक संघर्ष, (5) पारिवारिक अशांति और अव्यवस्था, (6) परित्याग तथा (7) परिवार के किसी सदस्य का परिवार से चला जाना।

मावरर ने पारिवारिक विघटन को पारिवारिक सम्बन्धों में बाधा माना है अथवा यह संघर्ष की चरम श्रृखला का चरम रूप है जो परिवार की एकता को खतरा पैदा कर देता है। ये संघर्ष किसी भी प्रकार के हो सकते है और संघर्षो के इसी क्रम को पारिवारिक विघटन कहा जा सकता है"।[2] जिसमें निम्न लक्षण होते हैः-

(1) परिवार के सदस्य अपने स्वार्थो के प्रति परिवार से सम्बन्ध तोड़ लेते है।

(2) नित प्रति छोटी-छोटी बातों को लेकर परिवार के सदस्यों में झगड़ा होता है।

(3) समाज के विभिन्न अंगों में परिवार के सदस्य अपने दायित्वों का निर्वाह न करते हो तथा

(4) परिवार में प्रेम, सहानुभूति तथा त्याग की भावना का समाप्त हो जाना।

---

1. इलियट एण्ड मैरिल (1941): डिस ओरगनाईजेशन सामाजिक,वैयक्तिक, पृष्ठ -27
2. फैरिस

फैरिस ने विघटन के लिए निम्न कारकों की एक सूची प्रस्तुत की है जिसका विवरण इस प्रकार है:- (1) दिखावा, (2) पवित्र विचारों का ह्रास, (3) स्वार्थ और रूचि में व्यक्तिगत भेद, (4) व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा अधिकार पर बल, (5) सुख-सम्बन्धी व्यवहार, (6) जनसंख्या में भिन्नता तथा (7) अशांति।

विघटन का क्षेत्र

पारिवारिक संरचना के सभी अंग, परिवार विघटन की प्रक्रिया से प्रभावित होते है। इन अंगों में पारस्परिक सम्बन्ध होने से जब किसी एक अंग में विघटन के लक्षण दिखाई पड़ते हैं तो उसका प्रभाव अन्य अंगों पर पड़ना स्वाभाविक है। पारिवारिक परिवर्तन कई रूपों में प्रभावित करता है। इसका प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिविम्बिति होने लगता है। जब पारिवारिक परिवर्तन के फलस्वरूप बदली हुई परिस्थितियों में पारिवारिक संरचना के विभिन्न अंग सम्पूर्ण व्यवस्था को बनाए रखने में अपनी भूमिका ठीक से नहीं निभा पाते तो विभिन्न क्षेत्रों में पारिवारिक विघटन के लक्षण दिखाई पड़ने लगते हैं जो इस प्रकार हैं:-

(1) वैयक्तिक विघटन : वैयक्तिक क्षेत्र में उस समय विघटन दिखाई पड़ने लगता है जब किसी समाज के काफी व्यक्तियों की व्यक्तित्व रचना में असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि समाजीकरण की प्रक्रिया के दौरान में व्यक्ति परिवार द्वारा मान्य व्यवहार प्रतिमानों को अपने आप में नहीं ढाल सकें, परिवार के मूल्यों को अपने में आत्मसात नहीं कर सकें और उनके अनुरूप सामाजिक अभिवृतियों का विकास करने में असमर्थ रहें। हत्या, आत्महत्या, बाल अपराध, यौन-अपराध, मद्यपान, व्यसन, मानसिक असन्तुलन आदि वैयक्तिक क्षेत्र में पारिवारिक विघटन की क्रियाशीलता को व्यक्त करते हैं। (2) सांस्कृतिक विघटन : सांस्कृति क्षेत्र में पारिवारिक विघटन उस समय दिखाई पड़ता है जब भौतिक संस्कृति में शीध्रता से परिवर्तन हो जाते है। परन्तु अभौतिक क्षेत्र में आसानी से परिवर्तन नहीं हो पाते। फलस्वरूप भौतिक व अभौतिक संस्कृति में

असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। भौतिक संस्कृति में जितनी तीव्रता से परिवर्तन होता है उतनी ही तीव्रता से विचार, अभिवृतियों, मूल्यों, नैतिकता, शिक्षा आदि में परिवर्तन नहीं हो पाते। फलतः असन्तुलन की दशा उत्पन्न होती है साथ ही पुरानी नवीन पीढ़ी के विचारों, मूल्यों एवं अभिवृतियों में भिन्नता के कारण भी असन्तुलन, तनाव एवं संघर्ष की स्थिति परिवारजनों में उत्पन्न हो जाती है इसका परिणाम पारिवारिक विघटन के रूप में सामने आता है।

(3) आर्थिक विघटन : आर्थिक क्षेत्र में उस समय विघटन उत्पन्न होता है जब परिवार की आर्थिक व्यवस्था अपने सदस्यों की भौतिक आवश्यकताओं की सही ढंग से पूर्ति करने में असमर्थ रहती है। जब लोग मान्यता प्राप्त तरीको से अपनी भौतिक आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं कर पाते तो परिवार में अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है। आर्थिक क्षेत्र में असन्तुलन, सम्पत्ति एवं आय का असमान वितरण बढ़ती हुई निर्धनता एवं बैकारी आदि सम्पूर्ण पारिवारिक जीवन का अस्त-व्यस्त कर देते हैं यह स्थिति पारिवारिक विघटन की परिचायक है।

(4) धार्मिक विघटन : धार्मिक क्षेत्र में भी पारिवारिक असामंजस्य की दशा हो सकती है। धर्म अपनी प्रकृति से रूढ़िवादी है। यह बदलती हुई परिस्थितियों के साथ नवीन परिवर्तनों का शीघ्रता से स्वीकार नहीं कर लेता। परिणाम यह होता है कि यह लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ रहता है। साथ ही पुरानी धार्मिक मान्यताओं, आदर्शों तथा विश्वासों का नये मूल्यों एवं आदर्शों से टकराव होता है। परिणाम स्वरूप पारिवारिक विघटन को बढ़ावा मिलता है। आज की बदलती हुई परिस्थितियों में धर्म का पारिवारिक नियंत्रण के प्रमुख साधन के रूप में घटता हुआ प्रभाव भी विघटन का उत्तरदाई है।

(5) सामुदायिक विघटन : सामुदायिक विघटन के अर्न्तगत समुदाय का स्वाभाविक जीवन अस्त-व्यस्त तथा असन्तुलित हो जाता है। इसमें कार्यरत

संस्थाएं समितियां और समूह अपने पूर्व निश्चित उद्देश्यों और कार्यो को त्याग कर मनमाने ढंग से कार्य करने लगते हैं।

इलियट एवं मैरिल, ''सामुदायिक विघटन ऐसी जटिल प्रक्रिया है जिसमें उन सभी समूहों, संस्थाओं और स्वैच्छिक समितियों का आंशिक अथवा सम्पूर्ण विकास निहित रहता है जिसकी संयुक्त गति विधियां समुदाय की विघटनकारी अन्तःक्रियाऐं उत्पन्न करती है''।[1]

(6) राजनैतिक विघटन : राजनैतिक क्षेत्र में विघटन के लक्षण पाये जाते हैं। जब राजनैतिक दल और स्वयं सरकार अपने संकुचित स्वार्थो की पूर्ति में लग जाती है, जनहित की अवहेलना करते हैं, अपने को समाज व देश से भी बड़ा समझने लगते हैं तो क्षुद्र स्वार्थो की राजनीति पनपती है जो विघटन को बढ़ावा देती है। राजनैतिक दलों की गुटबन्दी, राजनैतिक भ्रष्टाचार, अपनी कुर्सी बचाने हेतु कई नेताओं द्वारा अपनाने जाने वाले भ्रष्ट तरीके, बढ़ते हुए करों का बोझ, मंहगाई आदि जनजीवन को अस्त-व्यस्त एवं सुरक्षा व शांति को खतरा पैदा कर देते है। परिणाम स्वरूप समाज में असंतोष एवं तनाव बढ़ता है जो विघटन की प्रक्रिया को तीव्र करने में योगदान देते है।

(7) पारिवारिक विघटन : परिवार के क्षेत्र में विघटन उस समय उत्पन्न होता है जब महत्वपूर्ण परिवर्तन परिवार की संरचना पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। परिवर्तन के फलस्वरूप सदस्यों की प्रस्थितियों एवं भूमिकाओं में बदलाव आता है, और वे सफलता पूर्वक अनुकूलन नहीं कर पाते। इस स्थिति में पारिवारिक विघटन के लक्षण स्पष्टतः दिखाई पड़ने लगते है। पारिवारिक जीवन में तनाव, कलह, परित्याग, विवाह विच्छेद, पारिवारिक एकता का ह्रास, कमाने वाले की मृत्यु आदि पारिवारिक क्षेत्र में विघटन को व्यक्त करते है।

---

1. इलियट एण्ड मैरिल (1941): डिस ओरगनाईजेशन सामाजिक,व्यैक्तिक, पृष्ठ -27

तालिका संख्या-32

पारिवारिक विघटन पर वैयक्तिक कारकों के प्रभाव का विवरण

क्र. सं.	वैयक्तिक कारक	हाँ	नहीं	योग (%)
1.	मद्यपानी पति	222 (74%)	78 (26%)	300 (100%)
2.	अपव्ययी पति	198 (66%)	102 (34%)	300 (100%)
3.	विपरीत दृष्टिकोण	216 (72%)	84 (28%)	300 (100%)
4.	धूतक्रीड़ा	201 (67%)	99 (33%)	300 (100%)
5.	पर स्त्री गमन	159 (53%)	141 (47%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 222 उत्तरदाता 74 प्रतिशत के मद्यपान का, 201 उत्तरदाता 67 प्रतिशत पति की धूतक्रीड़ा, 72 प्रतिशत पति-पत्नी का पृथक दृष्टिकोण, 198 उत्तरदाता 66 प्रतिशत पति की अपव्ययता, 159 उत्तरदाता पति-पत्नी द्वारा अन्य से यौन सम्बन्धों का परिवार विघटन के वैयक्तिक कारक मानते थे।

तालिका संख्या-33

पारिवारिक विघटन में पारिवारिक तनाव की भूमिका सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	पारिवारिक कारक	हाँ	नहीं	योग (%)
1.	पति-पत्नी के उद्देश्यों में भिन्नता	238 (79.33%)	62 (20.67%)	300 (100%)
2.	पारस्परिक कार्यों में असहयोग	225 (75%)	75 (25%)	300 (100%)
3.	कल्याणी सेवा में कमी	193 (64.33%)	107 (35.67%)	300 (100%)
4.	सहानुभूति का अभाव	210 (70%)	90 (30%)	300 (100%)
5.	संदेहात्मक उदासीनता	178 (59.33%)	122 (40.67%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से पारिवारिक कारकों का ज्ञान होता है जो मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव उत्पन्न करते हैं जिसमें 238 सर्वाधिक (79.33 प्रतिशत) उत्तरदाता ने पति-पत्नी के जीवन उद्देश्यों में भिन्नता होती है, 225 उत्तरदाता (75 प्रतिशत) ने पति द्वारा पारस्परिक कार्य में असहयोग का कारक माना, 70 प्रतिशत उपभोगता पति में सहानुभूति के अभाव को, 64.33 प्रतिशत उत्तरदाता परिवार के हेतु कल्याण सेवा में कमी (बीमा-बचत खाते) तथा 59.33 प्रतिशत पति-पत्नी द्वारा परस्पर सन्देह के कारण उदासीनता बरतना परिवार विघटन के कारक मानते थे।

तालिका संख्या-34

पारिवारिक विघटन में परिवार के कार्यों में परिवर्तन की भूमिका

क्र. सं.	पारिवारिक कार्यों में परिवर्तन	हाँ	नहीं	योग (%)
1.	उत्तरदायित्व हीनता	234 (78%)	66 (22%)	300 (100%)
2.	निर्भरता में कमी	172 (57.33%)	128 (42.67%)	300 (100%)
3.	पत्नी की राजनीति में सहभागिता	172 (57.33%)	128 (42.67%)	300 (100%)
4.	निर्णयां में पत्नी का हस्तक्षेप	187 (62.33%)	113 (37.67%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि आधुनिक युग में परिवार के कार्यों में आये परिवर्तनों के कारण भी पारिवारिक विघटन होता है। 234 उत्तरदाताओं 78 प्रतिशत ने बताया कि पति-पत्नी की उत्तरदायित्व हीनता से परिवार विघटित होते है। 57.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना था कि पत्नी का रातनीति में सहभागिता परिवार विघटन का कारक है। 57.33 प्रतिशत उत्तरदाता घरेलू निर्णयों में पत्नी का हस्तक्षेप पारिवारिक विघटन कराता है। 172 उत्तरदाता 57. 33 प्रतिशत पति-पत्नी की आत्म निर्भरता को परिवार विघटन का कारक मानते थे।

तालिका संख्या-35

पारिवारिक विघटन पर परिवार की संरचना में परिवर्तन के प्रभाव का विवरण

क्र. सं.	परिवार की संरचना में परिवर्तन	हाँ	नहीं	योग (%)
1.	भूमिका में बहुलता	195 (65%)	105 (35%)	300 (100%)
2.	मात्र पृथक से अस्थाई परिवार	207 (69%)	93 (31%)	300 (100%)
3.	पति सत्ता में ह्रास	174 (58%)	126 (42%)	300 (100%)
4.	एकांकी परिवार की स्थापना पर बल	168 (56%)	132 (44%)	300 (100%)
5.	पश्चिमी मनोवृतियों का हावी होना	195 (65%)	105 (35%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि परिवार की संरचना में आये परिवर्तन पारिवारिक विघटन के कारक होते हैं जिससे सर्वाधिक 69 प्रतिशत सम्बन्धों में मात्र पृथक से अस्थाई परिवार, 65 प्रतिशत क्रमशः पति-पत्नी की भूमिका में आई बहुलता व पश्चिमीकरण की प्रक्रिया, 58 प्रतिशत परिवार के पुराने मूल्यों के प्रति उदासीनता तथा 56 प्रतिशत नव विवाहित दम्पत्तियों द्वारा एकांकी परिवारों की स्थापना पर बल देने के कारक होते हैं।

तालिका संख्या-36

पारिवारिक विघटन पर सामाजिक कारकों के प्रभाव का विवरण

क्र. सं.	सामाजिक कारक	हाँ	नहीं	योग (%)
1.	महिलाओं की अन्तक्रिया में वृद्धि	233 (74.33%)	77 (26.67%)	300 (100%)
2.	महिला उच्च शिक्षा	198 (66%)	102 (34%)	300 (100%)
3.	जनसंख्या गतिशीलता	216 (72%)	84 (28%)	300 (100%)
4.	नगरीकरण	178 (59.33%)	122 (41.67%)	300 (100%)
5.	वाणिज्य मनोरंजन	159 (53%)	141 (47%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से विदित होता कि निम्न सामाजिक कारक पारिवारिक विघटन करते हैं, जिसमें 223 सर्वाधिक उत्तरदाता 74.33 प्रतिशत महिला की अन्तक्रिया में वृद्धि को, 72 प्रतिशत जनसंख्या में गतिशीलता का, 66 प्रतिशत महिलाओं में उच्चशिक्षा का, 59.33 प्रतिशत नगरीकरण प्रक्रिया को तथा 53 प्रतिशत वाणिज्य मनोरंजन का कारक मानते थे।

तालिका संख्या-37

पारिवारिक विघटन पर आर्थिक कारकों का प्रभाव

क्र. सं.	आर्थिक कारक	हाँ	नहीं	योग (%)
1.	पारिवारिक निर्धनता	208 (69%)	93 (31%)	300 (100%)
2.	पति की बेरोजगारी	180 (60%)	120 (40%)	300 (100%)
3.	पत्नी की आर्थिक स्वतंत्रता	177 (59.33%)	122 (40.67%)	300 (100%)
4.	पत्नी की अधिक आर्थिक निर्भरता	192 (64%)	108 (36%)	300 (100%)
5.	आय के साधन की विफलता	177 (59.33%)	123 (40%)	300 (100%)

उपरोक्त सारणी से ज्ञात है कि आर्थिक कारक पारिवारिक विघटन करते है, जिसमें 208 सर्वाधिक सूचनादाता 69.33 प्रतिशत पारिवारिक निर्धनता को, 64 प्रतिशत पत्नी की पति पर अधिक आर्थिक निर्भरता, 60 प्रतिशत उत्तरदाता पति की बेरोजगारी को, 59.33 प्रतिशत पत्नी की आर्थिक स्वतंत्रता को उत्तरदाई मानते थे।

तालिका संख्या-38

पारिवारिक विघटन पर मानसिक विकारों का प्रभाव

क्र. सं.	मानसिक कारक	हाँ	नहीं	योग (%)
1.	पति का क्रूर व्यवहार	204 (68%)	96 (32%)	300 (100%)
2.	पत्नी संग शारीरिक हिंसा	181 (60.33%)	119 (39.67%)	300 (100%)
3.	दैनिक गाली-गिलौज	231 (77.33%)	68 (22.67%)	300 (100%)
4.	पति का अहमवादी	174 (58%)	146 (42%)	300 (100%)
5.	मिर्गी/दौड़े पड़ना	159 (53%)	141 (47%)	300 (100%)

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि मानसिक विकार के कारक पारिवारिक विघटन करते हैं जिसमें 232 सर्वाधिक उत्तरदाता 77.33 प्रतिशत दैनिक गाली देने को, 68 प्रतिशत सूचनादाता पति को क्रूर व्यवहार को, 60.33 प्रतिशत पत्नी संग शारीरिक हिंसा को, 58 प्रतिशत पति का अहमवादीपन तथा 53 प्रतिशत दौड़े पड़ना कारक को मानते थे।

तालिका संख्या-39

पति-पत्नी के मध्य तनावों का पारिवारिक विघटन पर प्रभाव

क्र. सं.	पति-पत्नी के मध्य तनाव	हाँ	नहीं	योग (%)
1.	परस्पर विरोधी स्वभाव	211 (70.33%)	89 (29.67%)	300 (100%)
2.	यौनिक असन्तोष	177 (59%)	123 (41%)	300 (100%)
3.	वैवाहिक असन्तोष	180 (60%)	120 (40%)	300 (100%)
4.	प्रतिमानों में भिन्नता	213 (71%)	87 (29%)	300 (100%)
5.	व्यक्तिवादिता	176 (58.67%)	124 (41.33%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से प्रगट होता है कि पति-पत्नी के मध्य तनाव पारिवारिक विघटन का कारक होता है, जिसमें 213 अधिकांश उत्तरदाता 71 प्रतिशत व्यवहार प्रतिमानों की भिन्नता को, 70.33 प्रतिशत सूचनादाता पति-पत्नी का विरोधो स्वभाव को, 60 प्रतिशत उत्तरदाता वैवाहिक असन्तोष का 58.67 उत्तरदाता व्यक्तिवाद को तथा 59 प्रतिशत सूचनादाता यौनिक असन्तोष का कारक मानते थे।

♣♣♣

अध्याय -7

पारिवारिक तनाव का व्यक्ति-परिवार व समाज पर प्रभाव

- व्यक्ति पर प्रभाव
- परिवार पर प्रभाव
- समाज पर प्रभाव

अध्याय -7

पारिवारिक तनाव का व्यक्ति-परिवार व समाज पर प्रभाव

(अ) पारिवारिक तनाव का व्यक्ति पर प्रभाव

मोवरर ने तनाव तथा विघटन के प्रभाव को तीन रूपों में चित्रित किया है।

1. सांस्कृतिक रूप से स्वीकृति व्यवहार प्रतिमानों के विरुद्ध व्यक्ति का कार्य करना।
2. व्यक्ति का व्यवहार सामाजिक रूप से अधिक या अधिकतम रूप से अस्वीकृति हो जाता है।
3. व्यक्ति सामाजिक रूप से तिरस्कार का प्रत्युत्तर दो ढंगों से देता है, या तो सकारात्मक रूप से या नकारात्मक रूप से। सकारात्मक व्यवहार में वह अन्य द्वारा प्रत्युत्तरों को अपनाता है और नकारात्मक व्यवहार में दूसरों को दमन करना।
4. सकारात्मक व्यवहार का उद्देश्य दो हो सकते है या तो समाज का कल्याण या सुखवादिता।

राल्फ क्रेमर ने तनाव और विघटन को समाज पर पड़ने वाले प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि, "समाज के नाटक में व्यक्ति अभिनेता है और उसके सम्बन्ध वे बन्धन है जो उन्हें आपस में बाधते है। प्रत्येक व्यक्ति उतना ही शक्तिशाली है, जितना कि उसके सामाजिक सम्बन्ध, क्योंकि कोई व्यक्ति केवल अपने को लेकर नहीं रह सकता। इसलिए परिवारिक तनाव तथा विघटन केवल व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों की असफलता ओर विनास की ओर इशारा

करता है, परन्तु अभिनेता भी इस प्रक्रिया में अनिवार्य रूप से सम्मिलित है और इससे प्रभावित होता है''।

पारिवारिक विघटन में फसे हुए, अनेक व्यक्ति अत्यन्त महत्वपूर्ण सम्बन्धों से वंचित रह जाते है। बहुधा वे अपने जीवन से निराश हो जाते है और आत्मसुरक्षा की भावना खो देते हैं। समाज सामाजिक बन्धनों का वह जाल है जो व्यक्ति को कार्य करने वाली एक सामूहिक शक्ति के रूप आपस में बाधता है पारिवारिक तनाव में वे सम्बन्ध टूट जाते है जो व्यक्ति सामान्य उद्देश्यों के लिए सुचारू रूप से काम करना बन्द कर देता हैं।

पारिवारिक तनाव और विघटन का व्यक्ति के सामाजिक सम्बन्धों पर प्रभाव के सम्बन्ध में कूले ने निष्कर्ष निकाला कि, ''एक विघटित परिवार में ही विघटित व्यक्ति पाया जा सकता है। व्यक्ति का विकास एक पारिवारिक साज-सज्जा के अन्दर ही होता है, जहां व्यक्ति का विघटन हो जाता है तब उसे यह जानना कठिन हो जाता है कि कौन सा उसका कार्य है तथा कौन कर्त्तव्य है। उसके अपने परिवार, कुटुम्ब तथा मित्रों से सम्बन्ध टूट जाते है''।

पारिवारिक तनाव व झगड़ों से व्यक्ति जीवन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। सी0एच0कूले के अनुसार- आत्महत्या, मद्यपान, बाल अपराध, युवापराध, व्यभिचार तथा पागलपन बहुत अधिक बढ़ जाते है, ये व्यक्ति जीवन पर पड़ने वाले पारिवारिक तनाव के प्रभाव के परिणाम हैं। इससे व्यक्ति की शक्ति भंग हो जाती है तथा एकमत्यता का ह्रास होता है''।

व्यक्ति जब पारिवारिक तनाव व झगड़ों से ग्रसित हो जाता है तब उसका जीवन निराशाओं, चिन्ताओं तथा तनावों से घिर जाता है तब थोड़ी देर सब कुछ भूल जाने के लिए वह मद्यपान का सहारा लेता है, लेकिन धीरे-धीरे वह व्यक्ति मद्यपान का आदी हो जाता है। आज उच्च तथा मध्यम परिवारों में मद्यपान का प्रयोग पुरूषों

तथा कहीं पुरूषों व स्त्रीयों द्वारा होने लगा है। पूछने पर पता लगता है कि "बस यू ही रिलक्स होने के लिए"। नसे की दशा में ये लोग कोई भी कार्य कर सकते हैं तथा अपने पद तथा भूमिका को भी भूल जाते हैं।

<u>व्यक्ति की प्रतिष्ठा-सम्मान तथा श्रेणी पर प्रभाव :</u>

पारिवारिक तनाव तथा विघटन व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति को भी प्रभावित करते हैं। व्यक्ति की प्रस्थिति तो अन्य परिवार के व्यक्तियों की भाँति समान होती है परन्तु कुछ सदस्यों को आय, शिक्षा तथा घर का कर्ता धर्ता होने के कारण पृथक-पृथक प्रतिष्ठा तथा सम्मान होता है। जब परिवार का कोई व्यक्ति घर में कलह-झगडे, गाली-गिलौज तथा मानपीट जैसी क्रियाऐं करता है तो परिवार के अन्य सदस्यों की नजर में उसकी पूर्व प्रतिष्ठा तथा सम्मान की छवि धूमिल हो जाती है जिसे पुनः स्थापित करना कठिन होता है क्योंकि सम्मान सदस्य को उसी मात्रा में मिलता है जिस मात्रा में वह अपने उत्तरदायित्वों को सही ढंग से पूरा करते है।

<u>आत्महत्या को प्रोत्साहन :</u>

मावरर, "आत्महत्या को व्यक्तिगत विघटन की एक अत्यन्त विकृत अवस्था है"।[1] केवन के अनुसार "आत्महत्या की संख्या तलाक दिए गये व्यक्तियों में अधिक पायी जाती हैं। तलाक और त्याग आदि के कारण पारिवारिक बन्धन टूट जाते हैं अतः पति-पत्नी के संगठन को एक गम्भीर समस्या पैदा हो जाती है"।[2] दुर्खीम ने आत्महत्या के लिए अहमवादी (Egoistic) कारण माना है। वह कहता है कि जब व्यक्ति के पारिवारिक सम्बन्ध इतने ढीले पड़ जाते है कि व्यक्ति अपने को परिवारीजनों से तनावों के कारण उखडा हुआ महसूस करता है। परिवार के अन्य लोग अपने कार्यो में व्यस्त रहते हैं कि कोई भी उसकी परवाह

---

1. मारवर (1943): वैयक्तिक एवं सामाजिक विघटन
2. केवन (1928): सुसाइड, पृष्ठ- 148-177

नहीं करते। तब वह समझता है कि परिवार में उसका कोई नहीं है, सभी उसकी उपेक्षा कर रहे है और कोई भी प्रेम एवं सहानुभूति प्रदर्शित करने वाला नहीं है। इस स्थिति में वह ऊब जाता है, अपमान महसूस करता है, उसके अहम को ठेस लगती है और आत्महत्या कर बैठता है''।[1]

जब व्यक्ति का पारिवारिक जीवन संघर्षमय एवं तनावपूर्ण होता है तो परिवार का व्यक्ति पर अस्वस्थ प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति की शांति सुरक्षा भंग हो जाती हैं। पति-पत्नी, भाई-भाई, माता-पिता, सास-बहू आदि में कलह होने पर परिवार का नियंत्रण एवं अनुशासन समाप्त हो। प्रतिदिन के कलह से छुटकारा पाने के लिए व्यक्ति आत्महत्या कर लेता है। पति-पत्नी में से कोई भी एक दूसरे से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाने की स्थिति में मानसिक तनाव, घृणा, क्रूरता, क्रोध आदि से ग्रसित रहता है जिससे छुटकारा आत्महत्या करके प्राप्त किया जाता है। सौतेली मां का बच्चों के प्रति भेदभाव पूर्ण व्यवहार, सास का बहू के प्रति र्दुव्यवहार, पति द्वारा पत्नी के साथ मारपीट करने, उसके भरण-पोषण का प्रबन्धन न करने और उसके साथ अमानवीय व्यवहार करने आदि स्थितियाँ भी आत्महत्या के लिए उत्तरदाई हैं''।[2]

पारिवारिक तनाव तथा विघटन के कारण व्यक्ति सामाजिक मूल्यों, रूढ़ियों, परम्पराओं तथा रीति-रिवाजों की अवहेलना करता है। वह समाज के अन्य व्यक्तियों के नियंत्रण को भी स्वीकार नहीं करता। धीरे-धीरे वह मानसिक पतन की उस अवस्था पर पहुंच जाता है, जब दूसरे व्यक्तियों की सम्पत्ति, जीवन तथा हितों के लिए खतरा हो जाता है। जब व्यक्ति गरीबी की उस अवस्था में पहुंच जाये, जब दूसरों की दया पर उसे रहना पड़े तो उसकी दशा को भी विघटित दशा कह सकते हैं।

---

1. दुर्खीम
2. गुप्ता, एम.एल. (1994) : सामाजिक विघटन, पृष्ठ -105

पारिवारिक तनाव व विघटन का व्यक्ति पर प्रभाव में यह सहज ही देखने को मिलता है कि व्यक्ति सामाजिक नियमों तथा परम्पराओं का उल्लंघन करता है। उसके कार्य समाज द्वारा अस्वीकृति होते हैं। समाज के द्वारा अस्वीकृति आचरण को अनेक प्रकार से वर्गित किया गया है और इस प्रकार सामाजिक अवरोधन के कारण व्यक्ति में अनेक प्रकार की प्रतिक्रियाएं होती है यथा (1) नम्र, और (2) तीव्र। व्यक्ति अस्वीकृति की इन अवस्था के प्रति या तो स्वीकारात्मक रूप में व्यवहार करता है अथवा अस्वीकारात्मक रूप में की भी अनेक शाखाएं विकसित हो जाती हैं, यहां तक कि व्यक्ति काल्पनिक लोक में विचरण करने लगता है अथवा खिन्न दशा को प्राप्त हो जाता है या निराशावादी बन जाता है और अपना सम्बन्ध तोड़ लेता है। कभी-कभी उसका व्यवहार प्रतिक्रियात्मक रूप धारण कर लेता है"।[1]

पारिवारिक तनाव तथा विघटन के फलस्वरूप अनेक समस्याएं उपस्थित हो जाती है जिसमें नशाखोरी मुख्य है। कुछ विचारकों का मत है कि मादक द्रव्य के सेवन से व्यक्ति को कुछ समय के लिए मानसिक संघर्षो तथा तनावों से छुटकारा मिलता है। यही कारण है, इनके सेवन की ओर स्वाभिक झुकाव होता है। लाइण्ड स्मिथ के मतानुसार लोग सामान्य बनने की इच्छा के कारण इनका प्रयोग करते हैं। जहां इनका सेवन निरन्तर हो जाता है वही इनके प्रयोग की व्यक्ति को लत पड़ जाती हैं और इनको छोड़ने में उन्हें फिर कष्ट अनुभव होता है। इस प्रकार नशाखोरी से अपराधों में वृद्धि होती है जैसे अनैतिकता, व्यभिचार, वेश्यागमन, काल, मानपीट आदि में वृद्धि होती है। परिवार का स्वामी नशा के कारण वीवी-बच्चों का ध्यान नहीं करता, उनकी शिक्षा-दीक्षा की उपेक्षा करता है जिसका कुप्रभाव परिवार पर पड़ता है।

---

1. जीत कृष्ण सिंह (1977) : प्रकाशन केन्द्र लखनऊ, न्यू बिलडिंग अमीनाबाद, पृष्ठ- 98

तालिका संख्या-40

पारिवारिक तनाव का व्यक्ति की जीवनशैली पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	जीवन शैली पर प्रभाव	कम	अधिक	अनिश्चित	योग (%)
1.	उत्तरदायित्व हीनता में वृद्धि	63 (21%)	231 (77%)	6 (2%)	300 (100%)
2.	घृणा-द्वेष का जन्म	91 (30.33%)	193 (64.34%)	16 (5.33%)	300 (100%)
3.	यौन सम्बन्धों में तनाव	90 (30%)	185 (61.67%)	25 (8.33%)	300 (100%)
4.	व्यक्तिवादिता का विकास	54 (18%)	222 (74%)	24 (8%)	300 (100%)
5.	विश्वास की कमी	81 (27%)	204 (68%)	15 (5%)	300 (100%)
6.	दृष्टिकोण में परिवर्तन	95 (31.67%)	174 (58%)	31 (10.33%)	300 (100%)

प्रसंगाधीन प्रस्तुत तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि पारिवारिक तनाव के कारण व्यक्ति की जीवनशैली पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। निदर्शित 300 उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 231 उत्तरदाता 77 प्रतिशत मानते थे कि पारिवारिक तनाव से उत्तरदायित्व हीनता अधिक बढ़ जाती है, जबकि 63 उत्तरदाता 21प्रतिशत मानते थे कि कम बढ़ती है। इसी प्रकार 222 उत्तरदाताओं 74प्रतिशत के अनुसार तनाव के कारण व्यक्ति में व्यक्तिवादिता अधिक बढ़ जाती है जबकि 54उत्तरदाताओं 18प्रतिशत के अनुसार कम बढ़ती है। 204 उत्तरदाताओं 68 प्रतिशत से स्वीकार किया कि तनाव से विश्वासहीनता में अधिक कमी आ जाती है जबकि 81उत्तरदाताओं 27 प्रतिशत के अनुसार कम। इसी प्रकार 193 उत्तरदाताओं 64.34प्रतिशत का मत था कि तनाव से घृणाद्वेष का जन्म अधिक

होने लगता है जबकि 91प्रतिशत उत्तरदाताओं 30.33 प्रतिशत के मतानुसार कम। 185 उत्तरदाताओं 61.67 प्रतिशत ने स्वीकार किया कि पारिवारिक तनाव से यौन सम्बन्धों में अधिक तनाव उत्पन्न हो जाता है जबकि 90 उत्तरदाताओं 30 प्रतिशत के अनुसार कम । इसी तरह से निदर्शित 300 उत्तरदाताओं में से 174 उत्तरदाताओं 58प्रतिशत के अभिमतानुसार पारिवारिक तनाव से व्यक्ति से दृष्टिकोण में अधिक परिवर्तन आ जाता है जबकि 95 उत्तरदाता 31.67प्रतिशत मानते थे कि व्यक्ति के दृष्टिकोण में कम परिवर्तन होता है । स्पष्ट है कि पारिवारिक तनाव का व्यक्ति की जीवनशैली पर प्रभाव पड़ता है तथा उसमें बदलाव आ जाता है ।

तालिका संख्या-41

पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के मानसिक व्यवहार पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	मानसिक व्यवहार पर प्रभाव	कम	अधिक	अनिश्चित	योग (%)
1.	मानसिकता का कमजोर होना	90 (30%)	192 (64%)	18 (6%)	300 (100%)
2.	भ्रम में वृद्धि	112 (37.33%)	156 (52%)	32 (10.67%)	300 (100%)
3.	स्मृति ह्रास	98 (32.67%)	189 (63%)	13 (4.33%)	300 (100%)
4.	अलगांव में वृद्धि	72 (24%)	185 (61.67%)	43 (14.33%)	300 (100%)
5.	दुराचार को प्रोत्साहन	98 (32.67%)	175 (58.33%)	27 (9%)	300 (100%)
6.	मनोविकृति में वृद्धि	90 (30%)	201 (67%)	9 (3%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि निदर्शित 300 उत्तरदाताओं में से 201 उत्तरदाता 67 प्रतिशत मानते थे कि पारिवारिक तनाव से व्यक्ति के मानसिक व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है तथा व्यक्ति की मनोविकृति अधिक बढ़ जाती है जबकि 90 उत्तरदाताओं 30 प्रतिशत के अनुसार मनोविकृति कम बढ़ती है। 192 उत्तरदाताओं 64 प्रतिशत का मानना था कि पारिवारिक तनाव में व्यक्ति में अधिक मानसिक कमजोरी आ जाती है जबकि 90 उत्तरदाताओं 30 प्रतिशत के अनुसार कम। 189 उत्तरदाताओं 63 प्रतिशत की राय थी कि तनाव से व्यक्ति की याददाश्त में अधिक ह्रास होता है जबकि 98 उत्तरदाता 32.67 प्रतिशत मानते थे कि याददाश्त में कम ह्रास होता है। 185 उत्तरदाताओं 61.67 प्रतिशत का मत था कि तनाव के कारण व्यक्ति का मन अकेलेपन को अधिक करता है। 175 उत्तरदाताओं 58.33 प्रतिशत ने स्वीकार किया कि पारिवारिक तनाव से व्यक्ति दुराचार के निकट हो जाता है अर्थात उसमें दुराचारी प्रवृत्ति बढ़ जाती है जबकि 98 उत्तरदाता 32.67 प्रतिशत मानते थे कि दुराचारी प्रवृत्ति कम बढ़ती है। इसी तरह 156 उत्तरदाताओं 52 प्रतिशत की राय थी कि पारिवारिक तनाव से भ्रम की दशा अधिक बढ़ जाती है जबकि 112 उत्तरदाता 37.33 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से भ्रम की दशा कम बढ़ती है। स्पष्ट है कि पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के मन-मस्तिष्क पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है जिसके कारण उसका मानसिक व्यवहार प्रभावित हो जाता है।

तालिका संख्या-42

पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के स्वास्थ्य पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	व्यक्ति के स्वास्थ्य पर प्रभाव	कम	अधिक	अनिश्चित	योग (%)
1.	स्वास्थ्य जागरूकता के अभाव में	116 (38.67%)	178 (59.33%)	6 (2%)	300 (100%)
2.	रोग उपचार में आलसीपन	61 (20.33%)	220 (73.34%)	19 (6.33%)	300 (100%)
3.	वैयक्तिक अस्वच्छता की आदत का उदय	69 (23%)	198 (66%)	33 (11%)	300 (100%)
4.	कुसमय भोजन करना	98 (32.67%)	178 (59.33%)	24 (8%)	300 (100%)
5.	कुपोषण	66 (22%)	189 (63%)	45 (15%)	300 (100%)

प्रस्तुत सारणी के अध्ययन से विदित होता है कि पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के स्वास्थ्य व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभावों के सम्बन्ध में निदर्शित 300 उत्तरदाताओं में से 220 उत्तरदाता 73.34 प्रतिशत मानते थे कि पारिवारिक तनाव से व्यक्ति द्वारा रोग उपचार में आलसीपन अधिक बढ़ जाता है जबकि 61उत्तरदाताओं 20.33 प्रतिशत के अनुसार तनाव का प्रभाव कम पड़ता है। 198 उत्तरदाताओं 66 प्रतिशत की राय थी कि तनाव से व्यक्ति में व्यक्तिगत स्वच्छता में उदासी अधिक बढ़ जाती है जबकि 69 उत्तरदाता 23 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से व्यक्तिगत स्वच्छता की भावना में कम बढ़ती है। 189 उत्तरदाताओं 63 प्रतिशत की राय थी कि पारिवारिक तनाव से व्यक्ति अधिक कुपोषित होता है। इसी प्रकार 178 उत्तरदाताओं 59.33 प्रतिशत के मतानुसार तनाव से व्यक्ति की

स्वयं स्वास्थ्य जागरूकता पर अधिक प्रभाव पड़ता है तथा इतने ही उत्तरदाता मानते थे कि तनाव से व्यक्ति में समय पर भोजन न करने की आदत अधिक बढ़ जाती है जबकि 116 उत्तरदाताओं 39.67 प्रतिशत के मतानुसार तनाव का व्यक्ति स्वयं स्वास्थ्य जागरूकता पर प्रभाव कम तथा 98 उत्तरदाताओं 32.67 प्रतिशत के मतानुसार तनाव से व्यक्ति में समय पर भोजन न करने की आदत कम पड़ती है । स्पष्ट है कि पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के स्वास्थ्य व्यवहार पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

तालिका संख्या-43

पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के व्यवहारिक प्रतिमानों पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	व्यावहारिक प्रतिमानों पर प्रभाव	कम	अधिक	अनिश्चित	योग (%)
1.	व्यवहार में अशिष्ट आना	93 (31%)	192 (64%)	15 (5%)	300 (100%)
2.	विवाद की स्थिति उत्पन्न होना	82 (27.33%)	208 (69.34%)	10 (3.33%)	300 (100%)
3.	निर्णयों पर कुप्रभाव	120 (40%)	155 (51.67%)	25 (8.33%)	300 (100%)
4.	सभ्य व्यवहार का अभाव	100 (33.33%)	163 (54.34%)	37 (12.33%)	300 (100%)
5.	समरसता की कमी	87 (29%)	180 (60%)	33 (11%)	300 (100%)
6.	असमायोजनना	82 (27.33%)	190 (63.34%)	28 (9.33%)	300 (100%)

प्रसंगाधीन प्रस्तुत सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि निदर्शित 300 उत्तरदाताओं में से 208 उत्तरदाताओं 69.34 प्रतिशत की राय थी कि पारिवारिक तनाव से व्यक्तियों के बीच विवाद की स्थिति अधिक पैदा होती है जबकि 82 उत्तरदाताओं 27.33 प्रतिशत के अनुसार कम। 192 उत्तरदाताओं 64 प्रतिशत का मानना था कि तनाव से मानव व्यवहार में अधिक अशिष्टता आती है। 190 उत्तरदाता 63.34 प्रतिशत मानते थे कि पारिवारिक तनाव के कारण व्यक्ति को दूसरों के संग समायोजित होने में अधिक कठिनाई होती है जबकि 82 उत्तरदाताओं 27.33 प्रतिशत के अनुसार कम। 180 उत्तरदाताओं 60 प्रतिशत के मतानुसार तनाव से समरसता में अधिक कमी आ जाती है जबकि 87 उत्तरदाता 29 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से समरसता में कमी कम होती है। 163 उत्तरदाताओं 54.34 प्रतिशत की राय थी कि तनाव से सभ्य व्यवहार पर अधिक प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार 155 उत्तरदाता 51.67 प्रतिशत मानते थे कि तनाव का प्रभाव व्यक्ति के निर्णय लेने के ढंगों पर अधिक पड़ता है जबकि 120 उत्तरदाताओं 40 प्रतिशत के अनुसार तनाव का व्यक्ति के निर्णय लेने के ढंगों पर कम प्रभाव पड़ता है। सुस्पष्ट है कि पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के व्यावहारिक प्रतिमानों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

तालिका संख्या-44

पारिवारिक तनाव का व्यक्ति की व्याधिकी पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	व्यक्ति की व्याधिकी पर प्रभाव	कम	अधिक	अनिश्चित	योग (%)
1.	मद्यपान में वृद्धि	90 (30%)	203 (67.67%)	7 (2.33%)	300 (100%)
2.	अपराध प्रवृत्ति में वृद्धि	103 (34.33%)	178 (59.34%)	19 (6.33%)	300 (100%)
3.	धूतक्रीड़ा का उदय	99 (33%)	186 (62%)	15 (5%)	300 (100%)
4.	व्यवहार में उत्तेजना	84 (28%)	195 (65%)	24 (8%)	300 (100%)
5.	व्यक्तित्व में संदेहीपन उभरना	82 (27.33%)	182 (60.67%)	36 (12%)	300 (100%)
6.	शारीरिक क्षति में वृद्धि	60 (20%)	213 (71%)	27 (9%)	300 (100%)

प्रस्तुत तालिका के अवलोकन से विदित होता है कि निदर्शित 300 उत्तरदाताओं में से 213 उत्तरदाता 71 प्रतिशत मानते थे कि पारिवारिक तनाव से शारीरिक हानियाँ अधिक होने लगती है जबकि 60 उत्तरदाताओं 20 प्रतिशत के अनुसार शारीरिक हानियाँ कम होती है। 203 उत्तरदाताओं 67.67 प्रतिशत के अनुसार तनाव से व्यक्ति अधिक मद्यपायी हो जाता है जबकि 90 उत्तरदाता 30 प्रतिशत मानते थे कि व्यक्ति तनाव से कम मद्यपायी होता है। 195 उत्तरदाताओं 65 प्रतिशत की राय थी कि तनाव से व्यक्ति का उत्तेजनात्मक व्यवहार अधिक बढ़ जाता है जबकि 84 उत्तरदाताओं 28 प्रतिशत के अनुसार कम बढ़ता है। 186

उत्तरदाताओं 62 प्रतिशत के मतानुसार तनाव से व्यक्ति में धूतक्रीड़ा का उदय अधिक होता है जबकि 99 उत्तरदाता 33 प्रतिशत मानते थे कि यह कम होता है। 182 उत्तरदाताओं 60.67 प्रतिशत का मानना था कि तनाव से व्यक्ति दूसरों के प्रति अधिक संदेही हो जाता है जबकि 82 उत्तरदाता 27.33 प्रतिशत मानते थे कि संदेह कम होता है। इसी प्रकार 178 उत्तरदाताओं 59.34 प्रतिशत की राय थी कि पारिवारिक तनाव से व्यक्ति में अपराधीवृत्ति अधिक बढ़ जाती है जबकि 103 उत्तरदाताओं 34.33 प्रतिशत का मानना था कि तनाव से अपराधीवृत्ति कम बढ़ती है। सुस्पष्ट है कि पारिवारिक तनाव से व्यक्ति में अनेक व्याधिकीय दुष्प्रभाव पड़ते हैं।

तालिका संख्या-45

पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के आर्थिक व्यवहार पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	आर्थिक व्यवहार पर प्रभाव	कम	अधिक	अनिश्चित	योग (%)
1.	व्यवसाय में अरूचि में वृद्धि	84 (28%)	180 (60%)	36 (12%)	300 (100%)
2.	समय पाबन्दी में कमी	85 (28.33%)	190 (63.34%)	25 (8.33%)	300 (100%)
3.	कार्य में अनुपस्थिति में वृद्धि	77 (25.67%)	208 (69.33%)	15 (5%)	300 (100%)
4.	ऋणग्रस्तता में वृद्धि	99 (33%)	156 (52%)	45 (15%)	300 (100%)
5.	आर्थिक स्तर में गिरावट	71 (23.67%)	175 (58.33%)	54 (18%)	300 (100%)
6.	साख में कमी	60 (20%)	177 (59%)	63 (21%)	300 (100%)

प्रसंगाधीन उपरोक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के आर्थिक व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव के सम्बन्ध में 208 उत्तरदाताओं 69.33 प्रतिशत की राय थी कि पारिवारिक तनाव के कारण व्यक्ति कार्य पर अधिक अनुपस्थित होने लगता है जबकि 77 उत्तरदाता 25.67 प्रतिशत मानते थे कि व्यक्ति कम अनुपस्थित होता है। 190 उत्तरदाताओं 63.34 प्रतिशत के मतानुसार तनाव के कारण व्यक्ति काम पर अधिक देर से जाने लगता है जबकि 85 उत्तरदाताओं 28.33 प्रतिशत के अनुसार व्यक्ति काम पर देर से कम जाता है। 180 उत्तरदाताओं 60 प्रतिशत के मतानुसार तनाव से व्यक्ति का मन व्यवसाय में बहुत कम लगता है जबकि 84 उत्तरदाता 28 प्रतिशत मानते थे कि व्यक्ति का मन व्यवसाय में कम लगता है। 177 उत्तरदाताओं 59 प्रतिशत की राय थी कि तनाव के कारण व्यक्ति की अर्थ साख अधिक कम हो जाती है जबकि 60 उत्तरदाताओं 20 प्रतिशत के अनुसार अर्थ साख थोड़ी कम होती है। 175 उत्तरदाता 58.33 प्रतिशत मानते थे कि तनाव के कारण व्यक्ति का आर्थिक स्तर अधिक निम्न हो जाता है जबकि 71 उत्तरदाता 23.67 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से आर्थिक स्तर कम निम्न होता है। इसी प्रकार 156 उत्तरदाताओं 52 प्रतिशत के अनुसार तनाव से व्यक्ति अधिक ऋणग्रस्त हो जाता है जबकि 99 उत्तरदाता 33 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से व्यक्ति कम ऋणग्रस्त होता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि पारिवारिक तनाव का सीधा प्रभाव व्यक्ति के आर्थिक व्यवहार पर भी पड़ता है।

तालिका संख्या-46

पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के नैतिक मूल्यों पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	नैतिक मूल्यों पर प्रभाव	कम	अधिक	अनिश्चित	योग (%)
1.	पूजा-पाठ में अरुचि	90 (30%)	175 (58.33%)	35 (11.67%)	300 (100%)
2.	वृद्धों के प्रति आदर में अभाव	88 (29.33%)	187 (62.34%)	25 (8.33%)	300 (100%)
3.	सामाजिक बन्धनों की अवहेलना	87 (29%)	177 (59%)	36 (12%)	300 (100%)
4.	धार्मिक कार्यों में असहभागिता	90 (30%)	166 (55.33%)	44 (14.67%)	300 (100%)
5.	पाप की ओर अग्रसर	73 (24.33%)	179 (59.67%)	48 (16%)	300 (100%)
6.	व्यक्ति की अव्यवहारिकता में वृद्धि	84 (28%)	183 (61%)	33 (11%)	300 (100%)

प्रस्तुत तालिका से विदित होता है कि पारिवारिक तनाव का निदर्शित 300 उत्तरदाताओं के नैतिक मूल्यों पर प्रभाव के सम्बन्ध में ज्ञात हुआ कि 187 उत्तरदाताओं 62.34 प्रतिशत की राय थी कि तनाव से बड़ों के प्रति आदरभाव की भावना अधिक कम हो जाती है जबकि 88 उत्तरदाताओं 29.33 प्रतिशत के

अनुसार इसमें थोड़ी कमी आती है। 183 उत्तरदाता 61 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से व्यक्ति अधिक अव्यवहारिक हो जाता है जबकि 84 उत्तरदाता 28 प्रतिशत मानते थे कि व्यक्ति कम अव्यवहारिक होता है। 179 उत्तरदाताओं 59.67 प्रतिशत के अनुसार तनाव से व्यक्ति पाप की ओर अधिक बढ़ने लगता है जबकि 73 उत्तरदाता 24.33 प्रतिशत मानते थे कि व्यक्ति पाप की ओर कम बढ़ता है। 177 उत्तरदाताओं 59 प्रतिशत का मानना था कि तनाव से व्यक्ति सामाजिक बन्धनों को अधिक तोड़ने लगता है जबकि 87 उत्तरदाता 29 प्रतिशत मानते थे कि व्यक्ति सामाजिक बन्धनों को कम तोड़ता है। 175 उत्तरदाताओं 58.33 प्रतिशत के मतानुसार तनाव के कारण व्यक्ति का मन पूजपाठ में अधिक नहीं लगता है जबकि 90 उत्तरदाता 30 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से पूजापाठ पर कम प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार 166 उत्तरदाताओं 55.33 प्रतिशत की राय थी कि तनाव से व्यक्ति की रूचि धार्मिक कार्यक्रमों में अधिक कम हो जाती है जबकि 90 उत्तरदाताओं 30 प्रतिशत की राय थी कि तनाव का व्यक्ति के धार्मिक कार्यक्रमों में रूचि पर कम प्रभाव पड़ता है। सुस्पष्ट है कि व्यक्ति के नैतिक मूल्यों में पारिवारिक तनाव के कारण परिवर्तन आ जाता है।

तालिका संख्या-47

पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य प्रभाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव	कम	अधिक	अनिश्चित	योग (%)
1.	दवाव में वृद्धि	87 (29%)	204 (68%)	9 (3%)	300 (100%)
2.	अर्न्तद्वन्द में वृद्धि	100 (33.33%)	176 (58.67%)	24 (8%)	300 (100%)
3.	चिन्ता में वृद्धि	81 (27%)	198 (66%)	21 (7%)	300 (100%)
4.	बुद्धि ह्रास में वृद्धि	109 (36.33%)	174 (58%)	17 (5.67%)	300 (100%)
5.	चिड़चिड़ेपन में वृद्धि	114 (38%)	182 (60.67%)	4 (1.33 %)	300 (100%)
6.	क्रोध में वृद्धि	118 (39.33%)	172 (57.34%)	10 (3.33%)	300 (100%)

प्रसंगाधीन उपरोक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 204 उत्तरदाता 68 प्रतिशत मानते थे कि पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के मन पर अधिक दबाव पड़ता है जबकि 87 उत्तरदाताओं 29 प्रतिशत के अनुसार कम पड़ता है। 182 उत्तरदाताओं 60.67 प्रतिशत का मानना था कि तनाव से व्यक्ति अधिक चिड़चिड़ा हो जाता है जबकि 114 उत्तरदाता 38 प्रतिशत मानते थे कि व्यक्ति कम चिड़चिड़ा होता है। 198 उत्तरदाताओं 66 प्रतिशत की राय थी कि तनाव से व्यक्ति

अधिक चिन्ताशील हो जाता है जबकि 81उत्तरदाता 27 प्रतिशत मानते थे कि व्यक्ति कम चिन्ताग्रस्त होता है। 176 उत्तरदाताओं 58.67 प्रतिशत के मतानुसार तनाव से व्यक्ति में अन्तर्द्वन्द अधिक बढ़ जाता है जबकि 100 उत्तरदाताओं 33.33 प्रतिशत के अनुसार यह कम बढ़ता है। 174 उत्तरदाता 58 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से व्यक्ति में बुद्धिह्रास अधिक होता है जबकि 109 उत्तरदाताओं 36.33 प्रतिशत के अनुसार कम होता है। इसी प्रकार 172 उत्तरदाताओं 57.34 के मतानुसार तनाव से व्यक्ति अधिक शीघ्रता से क्रोधित हो जाता है जबकि 118 उत्तरदाता 39.33 प्रतिशत मानते थे कि तनाव का व्यक्ति के क्रोधित होने पर कम प्रभाव पड़ता है। सुस्पष्ट है कि पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव पड़ता है।

(ब) पारिवारिक तनाव का परिवार पर प्रभाव

यद्यपि यह सत्य है कि कुछ लोग ही पूर्ण प्रसन्नता जीवन में आत्मसात कर पाते हैं। और वे अनुभव करते है कि विवाह उनके लिए खुशियों का भंडार है। बहुत से पति-पत्नी अपनी पारिवारिक समस्याओं के कीचड़ में अपने को सना पाते हैं। उनका विश्वास होता है कि विवाह उन्हें एक मित्रता, पारस्परिक सहानुभूति पूर्ण समझ तथा पारिवारिक प्रेम प्रदान करेगा। यदि घर में बच्चे हुए तो माता-पिता उन्हें मातृत्व एवं पितृत्व के साथ अनुकूल पर्यावरण प्रदान करेगे अपनी जिम्मेदारियां समझते हुए। वे आगे चल कर स्वतः समझ जाते हैं कि खुशियों भरा मनोरंजन स्थाई नहीं रहता और आपस में शास्वत सुखमय भौतिक साहचर्य की मांग नहीं करते। पति-पत्नी परस्पर निर्भरता जीवन के प्रत्येक दिन की अन्तक्रिया में ही प्रसन्नता एक परिवार में विद्यमान होती है। यही कारण है कि अधिकांश पति-पत्नी खुलकर एक दूसरे को समायोजित करते हैं, फिर इसका कारण उनका भाग्य, सामाजिक दबाव तथा पारस्परिक आदते ही क्यों न हो, कुछ

दम्पत्तियों के लिए, जीवन कुछ कारकों की वजह से सहज व्यतीत नहीं होता और पति-पत्नी का साथ-साथ नहीं रहा जा सकता। कुछ इस तरह के लोग समाज के भय, धर्म तथा लोक-लाज के डर से कानूनी तौर पर विघटित होते हुए भी बन्धन में बधें रहते हैं और अन्य लोग या तो पृथक्करण या परित्याग आपस में कर लेते हैं। परित्याग कानूनी तौर पर तलाक है जबकि पृथक्करण जब पति-पत्नी अलग घर में रहते हो।

पृथक्करण तथा परित्याग के निष्कर्ष परिवार पर प्रायः एक से ही पड़ते हैं। परन्तु इसमें पत्नी व बच्चे भावात्मक रूप से अधिक परेशानी में रहते है क्योंकि बच्चों को इस परिस्थिति में अधिक सामाजिक शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है। इस अवधि में उनके जीवन की निश्चितता की कमी रहती है। क्या पति वापिस आयेगा? कब उसकी मृत्यु हो गई कुछ पता नहीं चलता। ये वे समस्याएं है जिनका पत्नी तथा बच्चों द्वारा सामना करना पड़ता है। पारिवारिक विघटन केवल पृथक्करण तथा परित्याग तक ही सीमित नहीं रहता। पति-पत्नी के मध्य पाई जाने वाली प्रथम आत्मयिता तो समाप्त हो जाती है और वे अन्य स्थान पर एक दूसरे से सामन्जस स्थापित कर लेते हैं परन्तु यदि उनके साथ नये परिस्थिति में बच्चे हुए तो उनके सम्मुख एक अजनबीपन की परिस्थिति रहती है।

नैतिक पतन

पारिवारिक तनाव का तथा विघटन ने नैतिकता के नये मानदण्ड ही निर्मित कर दिये हैं। परिवार में आज नैतिकता के परम्परागत मूल्यों का प्रभाव धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। सबसे अधिक ह्रास यौन सम्बन्धी मूल्यों में देखने को मिलता है। आज माता-पिता के सामने ही परिवार के अविवाहित युवा सदस्यों के द्वारा विषम लिंगों के मित्रों से घनिष्ठता प्रदर्शित करना तथा उत्तेजक साहित्य का अध्ययन करना बुरा नहीं समझा जाता। विवाह के पूर्व तथा विवाह के

पश्चात् यौनिक स्वतंत्रता की प्रवृत्ति निरन्तर बढ़ रही है। परिवार के यौनिक सन्तुष्टि का साधन समझने के कारण यह अपने मूल उद्देश्यों से दूर हटता जा रहा है तथा रोमांटिक प्रेम पर आधारित विवाह करना आधुनिकता की कसौटी बनती जा रही है।

फ्रायड वादी विचारों तथा पश्चिमी जीवन दर्शन के अनुसार ऐसे व्यवहार वाले ही अच्छे मानलिए जायें लेकिन भारतीय जीवन पद्धति में इन व्यवहारों में यौनिक विषमता की समस्या को जन्म देकर हजारों को विघटित कर दिया है।

किन्से ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि, "सभी विवाहित व्यक्तियों के एक अथवा एक से अधिक स्त्रीयों से अपनी विवाहित पत्नी के अलावा 50 प्रतिशत के यौनिक सम्बन्ध पाये गये"।[1]

समाजशास्त्रीय अध्ययन के अर्न्तगत यह प्रश्न आज भी बहुत महत्वपूर्ण बना हुआ है कि व्यक्ति के विचारों, मनोवृत्तियों तथा सम्पूर्ण सामाजिक व्यक्तितत्व के निर्माण में किन दशाओं का योगदान सबसे अधिक है। यह तो निश्चयात्मक रूप से कहा जा सकता है कि समाज की संरचना का निर्माण करने वाले व्यक्तियों, समूहों, परिवारों तथा वर्ग व संस्थाओं का रूप विभिन्न समाजों में भिन्न-भिन्न होता है और एक ही परिवार के अर्न्तगत इनके रूप में परिवर्तन होता रहता है। तब हमारे सामने यह प्रश्न उठता है कि इस भिन्नता और परिवर्तन को किस आधार पर समझा जा सकता है? इस प्रश्न का उत्तर सामान्यतया दो आधारों पर दिया जाता रहा है। एक ओर पर्यावरणवादियों का कथन है कि सामाजिक जीवन की इस भिन्नता का कारण अनेक सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताएं हैं। जबकि जीववादी इस समस्या का समाधान वंशानुक्रम के आधार पर करने का प्रयत्न करते हैं।

---

1. किन्से, ए.सी. (1948): सैक्सुअल विहेवियर इन ह्यूमन मेल, पृष्ठ-585

परिवार का अध्ययन करते समय हमारे सामने एक प्रमुख समस्या यह आती है कि यद्यपि वाह्य रूप से मानव प्राणियों की जीव रचना एक समान है लेकिन फिर भी उनके बीच इतनी भिन्नताएं क्यों? वास्तव में परिवार में कोई भी दो व्यक्ति पूर्णतया समान नहीं होते। सभी के आदर्शों, व्यवहारों, आदतों, खान-पान, वेष-भूषा, सामाजिक विश्वासों तथा मनोवृत्तियों में महान अन्तर देखने को मिलता है। जहां तक समान आनुवंशिकता से सम्बन्धित एक ही माता-पिता की संतानों में भी भिन्नता पाई जाती है। यदि विभिन्न स्थानों पर रहने वाले परिवारों तथा उनके सदस्यों का अध्ययन किया जाय तब तो यह भिन्नता इतनी अधिक बढ़ जाती है कि एक दूसरे से तुलना करना भी एक कठिन कार्य हो जाता है। वास्तव में व्यक्तियों की इस भिन्नता का कारण उनका एक दूसरे से भिन्न पर्यावरण है। यह कहा जाता है कि मनुष्य अपने पर्यावरण की उपज है। इसका तात्पर्य है कि प्रत्येक मनुष्य अपने चारों ओर की अनेक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा धार्मिक तथा जनसंख्यात्मक परिस्थितियों से प्रभावित होता रहता है। कुछ व्यक्ति अपनी इन परिस्थितियों से सफलतापूर्वक अनुकूलन कर लेते है जबकि बहुत से व्यक्ति इनसे अनुकूलन नहीं कर पाते।

मनुष्य केवल अपने चारों ओर की भौगोलिक दशाओं से ही प्रभावित नहीं होता अपितु स्वयं वह जिस समुदाय, परिवार तथा समूह में रहता है, उसकी विशेषताओं का भी व्यक्ति की मनोवृत्तियों तथा व्यवहारों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसका तात्पर्य यह है कि हमारे भौतिक पर्यावरण और सामाजिक जीवन के बीच हमेशा अन्तक्रिया चलती रहती है। यही अन्तक्रिया निश्चित करती है कि व्यक्ति जिस परिवार का सदस्य है, वह उसके जीवन को किस प्रकार प्रभावित करेगा तथा स्वयं उस परिवार के विकास में व्यक्ति का योगदान क्या होगा।[1]

---

1. अग्रवाल, गोपाल कृष्ण, (1986): 'मानव समाज' आगरा बुक स्टोर, आगरा, पृष्ठ-148

बच्चों पर समाजीकरण का प्रभाव

प्रसिद्ध समाजशास्त्री क्यूबर का कथन है, "मानव का व्यक्तित्व जन्म से ही पूर्ण नहीं होता। जन्म के समय उसके पास न भाषा होती है, न समझ, उसके न कोई विचार होते है न विश्वास, वह न नियम जानता है न संस्कृति। लेकिन सामाजिक सीख की एक लम्बी प्रक्रिया ओर अनुभवों के द्वारा उसमें व्यक्तित्व सम्बन्धी बहुत से सामाजिक गुणों का समावेश हो जाता है"।[1] इस प्रकार स्पष्ट होता है कि समाजीकरण की प्रक्रिया न केवल व्यक्ति और समाज के घनिष्ठ सम्बन्धों का समझने का आधार है बल्कि इसी कारण मनुष्य में संस्कृति का विकसित करने की क्षमता पैदा हो सकी है। यही वह सामान्य आधार जो जीवशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और मानवशास्त्र को एक दूसरे से निकट ले आता है तभी तो गिलिन एण्ड गिलिन ने बताया कि समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति समूह में एक क्रियाशील सदस्य बनता है, समूह की कर्मविधियों से समन्वय स्थापित करता है, उसकी परम्पराओं का ध्यान रखता है और सामाजिक परिस्थितियों से अनुकूलन करके अपने साथियों के प्रति सहनशीलता की भावना को विकसित करता है"।[2] परन्तु जब परिवार के सदस्यों के बीच कलह, तनाव तथा झगड़े का वातावरण रहता है तो वह छोटे बच्चों को प्रभावित किये बिना नहीं रहता। यही कारण है कि बच्चों द्वारा साम्य व्यवहार सीखने के स्थान पर उनमें चरित्र सम्बन्धी विकृतियात्मक व्यवहार विकसित हो जाता हैं और उनका व्यक्तित्व दोषपूर्ण बन जाता है।

मीड, एम. (1953): इसी प्रसंग में विलकिन स.(1961) कहता है कि माता-पिता के अनभ्य जीवन शैली के कारण बच्चों की पारिवारिक अन्तक्रियाएं

---

1. क्यूबर
2. गिलिन एण्ड गिलिन, कल्चरल सोसियोलोजी, पृष्ठ- 127

दोषपूर्ण हो जाने के कारण उनमें समाज विरोधी व्यवहार विकसित हो जाता है''।[1] बच्चे फिर बड़ों का आदर नहीं करते, वे अनुशासन हीन हो जाते हैं, बालअपराध, मद्यपान, धूम्रपान और सामाजिक व्याधिकी में वृद्धि करते हैं।

पारस्परिक संचार-प्रेरणा-प्रत्यक्षीकरण पर प्रभाव

पारिवारिक तनाव और विघटन का प्रभाव व्यक्ति के वैयक्तिक संचार पर पड़ता है। जब पति-पत्नी या माता-पिता तथा बच्चों के मध्य अनबन रहती है तो सबसे पहले परिवारीजन आपस में विचारों का आदान-प्रदान करना कम कर देते हैं। कभी-कभी तो सम्प्रेक्षण पूर्ण रूपेण बंद ही हो जाता है तथा वायोमीडिया के रूप में बच्चों को प्रयोग में लाया जाता है। वार्तालाप के अप्रत्यक्ष साधन अपनाये जाते हैं। शम्भाषण संचार में गिरावट आ जाती है। ऐसा होने से आंतरिक आवास में एक ऐसी शांति आ जाती है जो आगुन्तक को बाध्य करती है कि वह यह पूछे कि घर में सब ठीक तो है। ''दरसल यह इसलिए पूछा जा रहा है कि आप लोग औसतन कम बोल रहे हो''। पारिवारिक तनाव के कारण परिवारीजनों के मुखों पर खामोशी तथा मायूसी स्पष्ट दिखाई देती है।

पारिवारिक तनाव व विघटन के कारण व्यक्ति अपनी सामाजिक आवश्यकता पूर्ति में भी पर्याप्त कटौती कर लेता है और काम चलाऊ जीवन व्यतीत करता है। वह जानबूझ कर नवीन आवश्यकता की पूर्ति हेतु अनउत्सुक रहता है। पति-पत्नी परस्पर एक दूसरे के कार्यो को महत्व नहीं, प्रदान करते और न कार्य निष्पादन में एक दूसरे को सहायता पहुँचाते। उनके बीच कार्य की सराहना समाप्त हो जाती है। व्यक्ति वही कार्य करता है जो अनिवार्य होता है। उसका समय घर से बाहर अधिक से अधिक अपने मित्रों के साथ व्यतीत होता है, वह विलम्ब से घर लौटता है और बच्चों द्वारा जारकारी प्राप्त कर अपने शयनकक्ष में व्यंग करता है।

---

1. मीड, एम. थ्योरी आफ सोसिलाइज

उसमें प्रेरणा शक्ति कम होने के कारण उसमें प्रभुत्व, प्राप्तियों तथा दूसरों के लिए कुछ करने की भावना का प्राय ही अभाव हो जाता है । क्योंकि पारिवारिक तनाव एक ऐसी परिस्थिति होती है जिसमें व्यक्ति अपने को समेटने का प्रयास करता है। पारिवारिक तनाव विघटन का व्यक्ति के प्रत्यक्षीकरण के ऊपर प्रभाव का उल्लेख करने से पूर्व यह अति आवश्यक होगा कि पहले प्रत्यक्षीकरण की अवधारणा को समझ लिया जाय।

पारिवारिक संगठन पर प्रभाव

पारिवारिक संगठन के नियमित कुछ मानसिक परिस्थितियाँ अनिवार्य होती है। का तनाव तथा विघटन से उन परिस्थितियों का अभाव हो जाता है और दूसरे वाह्य और आन्तरिक कारण उत्पन्न हो जाते है तब परिवार में एकमत्यता का ह्रास हो जाता है और पति-पत्नी सम्बन्ध तनावपूर्ण हो जाते हैं। उसका प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष कुप्रभाव पारिवारिक संगठन पर दिखाई देता है । इस परिस्थिति में संगठन के अनौपचारिक साधन जिनमें मुख्यतः धर्म, प्रथाएं, परम्पराएं, जनरीतियां मुख्यरूप से आती हैं भावी हो जाते है। पति-पत्नी के मध्य, माता-पिता तथा बच्चों के बीच तथा भाई-बहिन के बीच समरूपता का अभाव हो जाता है, अवज्ञाओं में वृद्धि हो जाती है, परिवारीजनों में अनुशासनहीनता विकसित हो जाती है अपने-अपने स्वार्थो की सिद्धि को प्रमुख ध्यान दिया जाता हैं। कभी-कभी तो अनुशाषनहीनता इतनी बढ़ जाती है कि नियंत्रण के औपचारिक अभिकरण ही कारगर साबित होते हैं। औपचारिक नियंत्रण के साधनों से अभिप्राय उन साधनों से है जो समाज द्वारा ही निर्मित होते हैं। ये स्वतः ही मनुष्य को नियंत्रित नहीं करते अपितु मनुष्यों द्वारा ही लागू किए जाते हैं। इस प्रकार, कानून, पुलिस, न्यायालय कारागार ही वे साधन हैं जो विघटन कारी व्यवहार पर अंकुश लगाते हैं।

विवाह विच्छेद-परित्याग तथा पृथक्करण की अधिकता

आज की आर्थिक-राजनैतिक सामाजिक तथा सांस्कृतिक दशाए बड़ी तेजी से बदल रही है। उनके साथ-साथ लोगों की मनोवृति, विचार तथा आदर्श बदल रहे हैं जिससे मध्यम वर्गीय परिवारों की विरोधी शक्तियों का बल मिला है और इन परिवारों को लेकर पति-पत्नी सामाजिक कानूनों का सहारा लेकर आपस में सम्बन्ध विच्छेद कर लेते है और वैवाहिक बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं। यदि विवाह विच्छेद नहीं करते तो पारिवारिक विघटन के कारण एक दूसरे से पति-पत्नी परित्याग कर लेते हैं अर्थात स्वयं एक दूसरे को छोड़कर अलग रहते है तथा आपस में सम्बन्ध नहीं रखते कभी-कभी पति-पत्नी के मध्य तनाव अति तीव्र हो जाते है तो वे परस्पर पृथक्करण कर लेते है जिसमें वे एक दूसरे से दम्पति सहवास तथा सम्भोग के लिए राज्य के नियमों अनुसार वर्जित कर दिए जाते है परन्तु वे सामाजिक रूप से पति-पत्नी कहलाते हैं। यदि इस अवस्था में भी वे अपने आपको समायोजित नहीं कर पाते तो उनमें विवाह विच्छेद हो जाता है।

पारिवारिक स्वास्थ्य चेतना पर प्रभाव

पारिवारिक स्वास्थ्य चेतना पर प्रकाश डालते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन (1948) ने उल्लेख किया है कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक रूप से परिवार के स्वास्थ की कुशल क्षेत्र स्थिति के प्रति गृह स्वामी की जागरूकता एवं क्रियाशीलता"।[1] परिवार तो पति-पत्नी, बच्चे तथा बूढ़े माँ-बाप का समूह होता ही है इन सबके स्वास्थ्य की देखभाल करना ही पारिवारिक स्वास्थ्य चेतना कहलाती है। जिसका सामान्य भाषा में जे0एम0लास्ट के अनुसार "स्वास्थ्य की प्रौन्नति, स्वास्थ्य का अनुरक्षण, स्वास्थ्य को सुरक्षित रखना तथा रोग दर को कम करने से हैं"।[2]

---

1. WHO, (1948): Health For All , Sr. no.1
2. Last, J.M. (1983): A Dictionary of eidennology, ox port university Press.

पारिवारिक तनाव का विघटन की परिस्थिति में गृह स्वामी परिवारीजनों पत्नी, बच्चों तथा बूढ़े मां-बाप के उपचार के प्रति ही लापरवाह नहीं होता अपितु रोग स्थिति में वह अपने स्वास्थ्य के प्रति भी चेतन्य नहीं रहता। घर का कोई सदस्य जब तक वह खटिया न पकड़ ले अथवा उसके द्वारा किया जाने वाला दैनिक कार्य करना कठिन न हो जाये तब तक उसको स्वास्थ्य लाभ के लिए चिकित्सकों के पास नहीं ले जाया जाता। इसका परिणाम निकलता है कि तब तक रोग आगे बढ़ जाता है। लीवेल के अनुसार यह वह स्थिति हो जाती है जब "असमर्थता" विकसित हो जाती है और टूट-फूट तथा असमर्थता को नियंत्रण करने के लिए सभी प्रकार के नियंत्रण उपाय किए जाते है ताकि रोग दूर हो तथा रोगी को पुनः स्वस्थ्य दशा में लाया जा सके"।[1] ऐसा करने से उपचार हेतु रोगी को चिकित्सालय में भर्ती किया जाता है। सभी तरह की जांचे की जाती हैं तथा निदान बनाकर उपचार चलाया जाता है जिसके फल स्वरूप परिवार जो मानसिक रूप से पहले से ही तनाव ग्रस्त था, और भी मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा आर्थिक रूप से कठिनाई की दशा में पहुँच जाते हैं।

<u>पारिवारिकता का अभाव</u>

मारवर ने लिखा है कि पारिवारिक तनाव व विघटन के कारण पारिवारिक सम्बन्धों में बाधा पड़ती है। यह संघर्षो के क्रम का वह चरम रूप है जिसमें परिवार की एकता को खतरा पैदा हो जाता है। ये संघर्ष किसी भी प्रकार के हो सकते है"। मर्टिन न्यूमर के अनुसार, "मतैक्य तथा निष्ठा का भंग होना है, अक्सर पूर्व के सम्बन्धों का टूट जाना या पारिवारिक चेतना का नष्ट हो जाना तथा उदासीनता का विकास हो जाता है। संकुचित अर्थो में पारिवारिक विघटन उस प्रक्रिया का बोध कराता है। जिसका अन्त एक टूटे परिवार में होता है। जब वैवाहिक सम्बन्ध पृथक

---

1. Leavell, H.R. (1965): Preventure Medicine for the Doctors in his community, Mc Graw Hill, New York.

हो जाते है। यद्यपि परिवार के शेष सदस्य तब भी परिवार को बनाए रखते है''। इस प्रकार प्रभाव के रूप में निम्न लक्षण उभर कर आते हैं- (1) हितों की एकता का अभावः अर्थात परिवारीजनों के मध्य एक दूसरे के हितों का ध्यान नहीं रखा जाता जबकि संगठित परिवार में एक दूसरे के हितो का ध्यान रखा जाता है और सदस्य बडे से बड़ा त्याग तक करने को तैयार होते हैं। पारिवारिक विघटन की स्थिति में अपने स्वयं हितो को ही प्रधानता दी जाती है। परिवार के सदस्य एक दूसरे के हितो की बिल्कुल चिन्ता नहीं करते वे अपने-अपने स्वार्थो की पूर्ति में लगे रहते है। (2) पारिवारिक उदेश्यों की एकता का अभाव एक दूसरा प्रभाव है। प्रायः परिवार का समय-समय पर अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं को हल करने के लिए उठाये जाने वाले कदमों के सम्बन्ध में सदस्यों की राय समान होनी चाहिए, उनमें मतैक्य होना चाहिए, परन्तु इस स्थिति का प्राय अभाव पाया जाता है। (3) यौन इच्छाओं की पूर्ति परिवार के बाहर। विघटित परिवार के सदस्य परिवार के दायरे के बाहर अपनी यौन इच्छाओं की पूर्ति करने लगते हैं। ऐसी स्थिति में परिवार की पारिवारिकता में अभाव आ जाता है और सदस्यों के मध्य स्नेह, प्रेम, कर्त्तव्यपरायणता एवं सहयोग समाप्त हो जाता है। (4) विरोधी व्यक्तिगत महत्वाकाक्षाएें पारिवारिक विघटन का परिचायक है। जहां परिवार का प्रत्येक सदस्य अपनी-अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति पर इस सीमा तक जोर दे कि दूसरो की महत्वपूर्ण महत्वाकाक्षाओं की उपेक्षा होती हो उसे पारिवारिक एकता का अभाव ही कहा जायेगा।

<u>बाल अपराधों में वृद्धि</u>

जे0के0 संस्थान लखनऊ द्वारा आठ वार्डो में किए गये सर्वेक्षण- पारिवारिक दशा और मगोडायन में पाया गया कि अधिकांश उन परिवारों के थे जिन के माता-पिता में सम्बन्ध विच्छेद या तलाक हो चुका था या पति-पत्नी के

बीच अनवन और अशांति की स्थिति रहती थी। ऐसा भी देखा गया कि वे बच्चे जिनका सम्बन्ध अपने माता-पिता तथा भाई-बहिनों से अच्छा नहीं होता, भगोडे बन जाते है''।[1] भगोड़पन बालापराध का प्रथम चरण माना जाता है। मानसिक रूप से टूटे परिवार में बालापराधी अधिक पाये जाते है जिनमें परिवारीजन एक साथ तो रहते हैं किन्तु उनमें मन-मुटाव, मानसिक संघर्ष तथा तनाव पाया जाता है''।[2]

पोर्टर फील्ड ने अपने अध्ययन में पाया कि, ''परिवार का असुखकर जीवन बच्चे के मानसिक सन्तुलन को इतना बिगाड सकता है कि वह अपराध करने लग जाय। जहाँ परिवार में निरन्तर तनाव और संघर्ष की स्थिति हो, वहाँ बच्चे के अपराधी होने के अधिक अवसर होते हैं''।[3] इसी प्रकार आवारापन का बच्चों में कारण पारिवारिक परिस्थितिया एवं वातावरण है। उन घरों में जहाँ माता-पिता बच्चों पर आपने आपसी तनावों तथा अनबनी के कारण कोई ध्यान नहीं रखते, आवारा बच्चों की संख्या अधिक होती है। समाज विज्ञान संस्थान आगरा के सर्वेक्षण (1962) के अनुसार 42 प्रतिशत बच्चे उन्हीं घरों के थे जिनके माँ-बाप के बीच सन्तोष जनक सम्बन्ध नहीं थे''।[4]

बाल अपराधों के ऊपर परिवारों का गहरा प्रभाव पड़ता है और इसका मुख्य कारण पारिवारिक तनाव तथा विघटन ही होता है। जब परिवार की एकरूपता समाप्त हो जाती है तो उनमें अनेक प्रकार की सामाजिक बुराइयां पाये जाते हैं जैसे- संघर्षमयी स्थिति (माता-पिता तथा बच्चों में संघर्ष) होते रहना, कम आयु में संवेगात्मक तनाव, अनुचित बच्चे का समाजीकरण, उचित सहानुभूति का अभाव के कारण ही बच्चे बालापराधी हो जाते है''।

---

1. जे. के. संस्थान, पारिवारिक दशा और भगेडूपन का सर्वेक्षण (1963)
2. गुप्ता एस.डी.एण्ड शर्मा, डी.डी. (1994): भारत में सामाजिक विघटन, साहित्य भवन, आगरा, पृष्ठ-168
3. पोर्टरफील्ड
4. आगरा सामाजिक संस्थान (1962)

तालिका संख्या-48

पारिवारिक तनाव का बच्चों के समाजीकरण पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	समाजीकरण पर प्रभाव	कम	अधिक	अनिश्चित	योग (%)
1.	आत्मविश्वास में अवरोध	81 (27%)	207 (69%)	12 (4%)	300 (100%)
2.	नकारात्मक सीखना	103 (34.33%)	174 (58%)	23 (7.67%)	300 (100%)
3.	माता-पिता से तिरस्कृतिपन	108 (36%)	158 (52.67%)	34 (11.33%)	300 (100%)
4.	अनुशासन हीनता में वृद्धि	92 (30.67%)	181 (60.33%)	27 (9%)	300 (100%)
5.	माता-पिता को डाट-डपट में वृद्धि	96 (32%)	189 (63%)	15 (5%)	300 (100%)
6.	भावात्मक ऐकीकरण का अभाव	90 (30%)	177 (59%)	33 (11%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से विदित होता है कि 207 उत्तरदाता 69 प्रतिशत मानते थे कि पारिवारिक तनाव से बच्चों का आत्मविकास अधिक रुक जाता है जबकि 81 उत्तरदाताओं 27 प्रतिशत के अनुसार कम रुकता है। 189 उत्तरदाताओं 63 प्रतिशत की राय थी कि तनाव से बच्चों की डांटडपट अधिक बढ़ जाती है जबकि 96 उत्तरदाताओं के अनुसार कम बढ़ती है। 177 उत्तरदाताओं 59 प्रतिशत की राय थी कि तनाव से बच्चों में भावनात्मक एकीकरण अधिक कम हो जाता है। 174 उत्तरदाताओं 58 प्रतिशत के मतानुसार तनाव से बच्चों की सीखने

की प्रवृत्ति अधिक नकारात्मक हो जाती है जबकि 103 उत्तरदाताओं 34.33 प्रतिशत के अनुसार कम नकारात्मक होती है। इसी प्रकार 158 उत्तरदाताओं 52.67 प्रतिशत की राय थी कि तनाव के कारण बच्चे अपने माँ-बाप द्वारा अधिक तिरस्कृत होते हैं जबकि 108 उत्तरदाताओं 36 प्रतिशत के अनुसार बच्चे कम तिरस्कृत होते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि पारिवारिक तनाव का बच्चों के समाजीकरण पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

तालिका संख्या-49

पारिवारिक तनाव का बच्चों के मनोवैज्ञानिक व्यवहार पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	मनोवैज्ञानिक व्यवहार पर प्रभाव	कम	अधिक	अनिश्चित	योग (%)
1.	असुरक्षा की भावना का उदय	90 (30%)	186 (62%)	24 (8%)	300 (100%)
2.	परिवेश में घुटनशीलता	92 (30.67%)	178 (59.33%)	30 (10%)	300 (100%)
3.	गलत आदतों का समावेश	87 (29%)	190 (63.33%)	23 (7.67%)	300 (100%)
4.	भाई-बहिनों में प्रतिद्वन्दता में वृद्धि	76 (25.33%)	185 (61.67%)	39 (13%)	300 (100%)
5.	हीन भावना का उदय	80 (26.67%)	205 (68.33%)	15 (5%)	300 (100%)

प्रस्तुत तालिका से ज्ञात होता है कि 205 उत्तरदाता 68.33 प्रतिशत मानते थे कि पारिवारिक तनाव के कारण बच्चों में अधिक हीनभावना आ जाती है जबकि 80 उत्तरदाताओं 26.67 प्रतिशत के अनुसार हीनभावना कम आती है। 190

उत्तरदाताओं 63.33 प्रतिशत की राय थी कि तनाव से बच्चे गलत आदतें अधिक सीखने लगते हैं जबकि 87 उत्तरदाताओं 29 प्रतिशत के अनुसार कम सीखते हैं। 186 उत्तरदाता 62 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से बच्चे असुरक्षा का अनुभव अधिक करने लगते हैं जबकि 90 उत्तरदाता 30 प्रतिशत मानते थे कि असुरक्षा का अनुभव कम करते हैं। 185 उत्तरदाताओं 61.67 प्रतिशत के मतानुसार तनाव से भाई-बहिनों में प्रतिद्वन्दता अधिक बढ़ जाती है जबकि 76 उत्तरदाताओं 25.33 प्रतिशत के अनुसार प्रतिद्वन्दता कम बढ़ती है। इसी प्रकार 178 उत्तरदाता 59.33 मानते थे कि तनाव से परिवार का परिवेश अधिक घुटन भरा हो जाता है जबकि 92 उत्तरदाताओं 30.67 प्रतिशत के अनुसार परिवार का परिवेश कम घुटन भरा हो जाता है। सुस्पष्ट है कि बच्चों के मनोवैज्ञानिक व्यवहार पर पारिवारिक तनाव का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

तालिका संख्या-50

पारिवारिक तनाव का परिवार के पोषण पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	परिवार के पोषण पर प्रभाव	कम	अधिक	अनिश्चित	योग (%)
1.	अल्प रक्तता में वृद्धि	90 (30%)	159 (53%)	51 (17%)	300 (100%)
2.	शारीरिक वृद्धि में रूकावट	58 (19.33%)	185 (61.67%)	57 (19%)	300 (100%)
3.	कुपोष्ण में वृद्धि	82 (27.33%)	164 (54.67%)	54 (18%)	300 (100%)
4.	मानसिक विकास में बाधा	88 (28.33%)	168 (56%)	44 (14.67%)	300 (100%)
5.	असन्तुलित आहार का प्रयोग	90 (30%)	188 (62.67%)	22 (7.33%)	300 (100%)

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से विदित होता है कि 188 उत्तरदाताओं 62.67 प्रतिशत की राय थी कि पारिवारिक तनाव के कारण परिवार असन्तुलित आहार अधिक लेने लगता है जबकि 90 उत्तरदाताओं 30 प्रतिशत के अनुसार असन्तुलित आहार कम लेने लगते हैं। 185 उत्तरदाताओं 61.67 प्रतिशत का मानना था कि तनाव से बच्चों की शारीरिक वृद्धि अधिक रूक जाती है जबकि 58 उत्तरदाताओं 19.33 प्रतिशत के अनुसार कम रूकती है। 168 उत्तरदाताओं 56 प्रतिशत के मतानुसार तनाव से बच्चों का मानसिक विकास अधिक कम हो जाता है। 164 उत्तरदाता 54.67 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से बच्चे अधिक कुपोषित हो जाते हैं जबकि 82 उत्तरदाताओं 27.33 प्रतिशत के अनुसार कम कुपोषित होते हैं। इसी प्रकार 159 उत्तरदाता 53 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से परिवार के सदस्यों में अल्परक्तता अधिक होती है जबकि 90 उत्तरदाताओं 30 प्रतिशत के मतानुसार पारिवारिक सदस्यों में अल्परक्तता कम होती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि पारिवारिक तनाव का परिवार के पोषण पर भी प्रभाव पड़ता है।

तालिका संख्या-51

पारिवारिक तनाव का पारिवारिक संगठन पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	पारिवारिक संगठन पर प्रभाव	कम	अधिक	अनिश्चित	योग (%)
1.	पति-पत्नी के मध्य कलह में वृद्धि	87 (29%)	204 (68%)	9 (3%)	300 (100%)
2.	प्रेमभाव का क्षय	91 (30.33%)	194 (64.67%)	15 (5%)	300 (100%)
3.	परपति-पत्नीगमन में वृद्धि	103 (34.33%)	175 (58.34%)	22 (7.33%)	300 (100%)
4.	न्यायालय तक झगड़ों की पहुँच	89 (29.67%)	154 (51.33%)	57 (19%)	300 (100%)
5.	आत्म हत्याओं का प्रोत्साहन	106 (35.33%)	176 (58.67%)	18 (6%)	300 (100%)
6.	तलाकों की संख्या में वृद्धि	102 (34%)	187 (62.33%)	11 (3.67%)	300 (100%)

प्रस्तुत सारणी से ज्ञात होता है कि 204 उत्तरदाताओं 68 प्रतिशत की राय थी कि पारिवारिक तनाव के कारण पति-पत्नी के बीच झगड़े अधिक होने लगते हैं जबकि 87 उत्तरदाताओं 29 प्रतिशत के अनुसार कम होने लगते हैं। 194 उत्तरदाता 64.67 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से परिवार का प्रेमभाव अधिक नष्ट होने लगता है जबकि 91 उत्तरदाता 30.33 प्रतिशत मानते थे कि यह कम नष्ट होता है। 187 उत्तरदाताओं 62.33 प्रतिशत के मतानुसार तनाव से तलाकों की

संख्या में अधिक वृद्धि होती है । 176 उत्तरदाता 58.67 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से आत्महत्याओं को अधिक प्रोत्साहन मिलता है जबकि 106 उत्तरदाताओं 35.33 प्रतिशत के अनुसार आत्महत्याओं को कम प्रोत्साहन मिलता है । 175 उत्तरदाताओं 58.34 प्रतिशत की राय थी कि तनाव से परपति-पत्नीगमन अधिक होने लगता है जबकि 103 उत्तरदाता 34.33 प्रतिशत मानते थे कि तनाव के कारण तनाव-झगड़े के प्रकरण न्यायालय तक अधिक पहुँचते हैं जबकि 89 उत्तरदाताओं 29.67 प्रतिशत के अनुसार न्यायालय तक कम पहुँचते हैं । सुस्पष्ट है कि पारिवारिक तनाव का पारिवारिक संगठन पर अत्यधिक प्रभाव पडता है ।

तालिका संख्या-52

पारिवारिक तनाव का प्राथमिक सम्बन्धों पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	प्राथमिक सम्बन्धों पर प्रभाव	कम	अधिक	अनिश्चित	योग (%)
1.	प्रत्यक्ष सम्प्रेक्षण का अभाव	87 (29%)	168 (56%)	45 (15%)	300 (100%)
2.	हम भावना की कमी	82 (27.33%)	187 (62.34%)	31 (10.33%)	300 (100%)
3.	विचारों में मतभेद पनपना	94 (31.33%)	185 (61.67%)	21 (7%)	300 (100%)
4.	पारस्परिक समझदारी में कमी	99 (33%)	175 (58.33%)	26 (8.67%)	300 (100%)
5.	परिवार के नियंत्रण में शिथिलता	75 (25%)	194 (64.67%)	31 (10.33%)	300 (100%)
6.	परिवार विघटन के कगार में वृद्धि	102 (34%)	186 (62%)	12 (4%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि 194 उत्तरदाताओं 64.67 प्रतिशत की राय थी कि पारिवारिक तनाव से पारिवारिक नियंत्रण में अधिक शिथिलता आ जाती है जबकि 75 उत्तरदाताओं 25 प्रतिशत के अनुसार कम शिथिलता आती है। 187 उत्तरदाता 62.34 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से परिवार की 'हम की भावना' अधिक कम हो जाती है। 186 उत्तरदाताओं 62 प्रतिशत के मतानुसार तनाव से पारिवारिक विघटन अधिक होता है जबकि 102 उत्तरदाताओं 34 प्रतिशत अनुसार यह कम होता है। 185 उत्तरदाताओं 61.67 प्रतिशत का मानना था कि तनाव से विचारों में एकमत्यता का अधिक क्षय होने लगता है जबकि 94 उत्तरदाताओं 31.33 प्रतिशत के अनुसार कम क्षय होता है। 175 उत्तरदाता 58.33 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से पारस्परिक समझदारी अधिक घट जाती है जबकि 99 उत्तरदाताओं 33 प्रतिशत के अनुसार कम घटती है। इसी प्रकार 168 उत्तरदाता 56 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से प्रत्यक्ष संचार पर अधिक प्रभाव पड़ता है जबकि 87 उत्तरदाताओं 29 प्रतिशत के अनुसार प्रत्यक्ष संचार पर तनाव का कम प्रभाव पड़ता है। स्पष्ट है कि पारिवारिक तनाव का प्राथमिक सम्बन्धों पर अधिक असर पड़ता है।

<u>(स) पारिवारिक तनाव का समाज पर प्रभाव</u>

<u>सामाजिक अन्तक्रिया पर प्रभाव</u>

प्रत्येक सामूहिक जीवन में संगठित तथा विघटित करने वाली शक्तियाँ कार्यरत रहती हैं। हमारे अनुभव, जो दूसरों के सम्पर्क में आने में होते है, वे एक दूसरे को निकट लाते हैं। मनुष्य ऐसे अनुभवों को प्रत्येक क्षण सामूहिक जीवन में अनुभव करता है। सेमुअल वटलर के कथनानुसार, "हमारे अनुभव जो दूसरो के साथ होते है उनकी प्रकृति या तो बन्धन की सी होती है अथवा 'कटार' की सी होती

है, वे या तो एक दूसरे को बाँधते या उनके सम्बन्धों को विच्छेद करते हैं"।[1] भारतीय संस्कृति में सामूहिक प्रयासों को अधिक प्रधानता दी जाती है। इसी के फलस्वरूप संयुक्त परिवार का ढाँचा चला आ रहा है। पर जब पारिवारिक तनाव व विघटन, सामाजिक प्रक्रियाओं जिनके द्वारा व्यक्ति सामाजिक अन्तक्रियाऐं करता है, उसमें प्रतियोगिता तथा संघर्ष की सामाजिक प्रक्रिया बढ़ जाती है अर्थात परिवार के सदस्यों में मन-मुटाव, कहासुनी पारस्परिक अलगाव, उपेक्षाऐं बढ़ जाती है तो व्यक्ति की अन्त क्रियाओं पर कुप्रभाव पड़ता है। मीड के अन्वेषणों ने सिद्ध कर दिया है कि, "मानसिक तनाव का व्यक्ति तथा परिवार की प्रक्रियाओं पर अत्याधिक प्रभाव पड़ता है"।[2] और गृह कलह से ग्रसित लोगों का व्यवहार संघर्ष मय व्यवहार हो जाता है जैसा कि गिलिन एण्ड गिलिन पारिभाषित किया कि, जिसमें परिवार के सदस्य परस्पर विरोधियों को मार-पीट या मारने की धमकी देकर अपने लक्ष्यों की प्राप्ति करते है"।[3] इस प्रकार पारिवारिक तनाव तथा विघटन में पति-पत्नी अथवा माता-पिता तथा बच्चों के बीच होने वाले संघर्षमय वे प्रयास है जिनमें प्रत्येक पक्ष हिंसा, विरोध, आक्रमकता, उत्पीड़न अथवा घृणा के द्वारा दूसरे पक्ष के विचारों अथवा लक्ष्यों को नष्ट करने का प्रयत्न करता है। यह स्थिति प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष हो सकती है"।

सामाजिक व्यवहार प्रतिमानों पर प्रभाव

यदि हम सामाजिक जीवन व सामाजिक सम्बन्धों का सूक्ष्म अध्ययन करे तो हमें ज्ञात होता है कि समाज में सभी व्यक्तियों के सम्बन्ध में एक निश्चित व्यवस्था विद्यमान है। परिवार में माता-पिता, भाई-बहिन तथा अन्य सदस्य कुछ विशेष नियमों व आदर्शो में बधें रहते है। कार्यालय में अधिकारी व कर्मचारी तथा उद्योगों

---

1. सेमुअल वटलर
2. गिलिन एण्ड गिलिन, कल्चरल सोसियोलोजी, पृष्ठ- 622
3. किन्सले डेविस, ह्यूमन सोसाईटी, पृष्ठ- 162

में मालिक तथा श्रमिक अनेक नियमों का पालन करने हुए अपने उत्तर दायित्वों को पूरा करते हैं। ये व्यक्ति मनमाने रूप से क्यों कार्य नहीं करते ? केवल इसलिए कि प्रत्येक परिवार में तथा समाज में कुछ आदर्श प्रतिमान होते हैं जो व्यक्ति के प्रत्येक व्यवहार को नियमित ही नहीं करते अपितु उन पर नियंत्रण रखते हैं तथा जो व्यक्ति को यह बताते है कि किस परिस्थिति में कैसा व्यवहार करना चाहिए क्योंकि ये प्रतिमान कोरे आदर्श नहीं होते अपितु सांस्कृतिक प्रतिमानों के अनुसार व्यवहार के प्रतिमानों पर बल देते हैं। वीर स्टीड कहते है कि प्रतिमान एक प्रमाणित कार्य प्रणाली का रूप हैं, यह किसी कार्य को करने का तरीका जो समाज को स्वीकार होता है"।[1] डेविस इन्हें व्यवहार नियंत्रक मानते हुए लिखता है, "कि इनके माध्यम से मानव अपने व्यवहार को इस प्रकार नियमित करता है कि वे अपनी जैवकीय इच्छाओं को दवाकर भी सामाजिक इच्छाओं को पूरा करते है"।[2] परन्तु परिवार के लोग जब पारिवारिक सामान्य व्यवहार जिसमें उनकी पारिवारिक प्रस्थिति अनुसार न करने के स्थान पर विपरीत तथा अनुपर्युक्त व्यवहार करते है तो व्यवहार के प्रतिमानों पर कुप्रभाव पड़ता हैं। पारस्परिक भाईचारा समाप्त हो जाता है। सदियों से निर्मित तथा विरासत प्राप्त सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास होने लगता है और परिणाम स्वरूप वैयक्तिक, पारिवारिक तथा अनंतः सामाजिक विघटन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है साथ ही समूह वाद के स्थान पर व्यक्ति की उत्संखलता का नृत्य होने लगता है जिसे सभ्य नहीं-अक्सर पति-पत्नी पृथक्करण तथा परित्याग की परिस्थिति आने से पूर्व अर्थात पारिवारिक तनाव की परिस्थिति में बहुत से पति-पत्नी अपने व्यक्तियों में अनेक प्रकार के असमान्य व्यवहार के लक्षणों को विकसित हो जाते हैं। यह सब भावात्मक संकट उत्पन्न होने से उनमें अनेक मनोवैज्ञानिक व्याधिकी के लक्षण-

---

1. रोबर्ट वीर स्टीड, दा सोसल आर्डर, पृष्ठ- 14
2. डेविस, ह्यूमन सोसाईटी, पृष्ठ- 52

अवदमन, परदमन वासना तथा प्रेम के मध्य बट जाना, रूक जाना, आत्म विश्वास का समाप्त हो जाना, सन्देह तथा भ्रमपूर्ण हो जाना निर्णय लेने की क्षमता खो देना, रात में घूमना, रोगग्रस्त हो जाना और इससे भी अधिक पुरूष या स्त्री का परित्याग में परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं।

यौन व्यवहार भी पारिवारिक विघटन के बाद एक कठिन समस्या बनकर व्यक्ति के सम्मुख उभरती है। दुराचार के कारण व्यक्ति या स्त्री अपने को पुनः व्यक्तितत्व को संगठित करने में असमर्थ रहते हैं। क्योंकि पुरूष में यौन व्यवहार की आदत एवं स्वभाव विवाहित जीवन जी चुकने के बाद एक प्रकार से परिपक्त हो जाता है इस प्रकार उपरोक्त दोनों शक्तियों के कारण उसके सम्मुख एक खतरनाक समस्या उठ खड़ी होती है। पारिवारिक तनाव या विघटन का स्वभाव चाहे स्थाई या अस्थाई हो उनकी श्रेणी यह निश्चित करती है कि व्यक्ति यौन सन्तुष्टि के लिए कितना वाह्य क्रियाऐं करता है या वह अन्य कार्यो की और अपने को मोड़ने हेतु सफल होता है। जैसे किसी अन्य को चाहना, अपना दमन करना, या संघर्ष करना। प्राय इस स्थिति में पर स्त्री गमन का अभ्यास अक्सर देखा गया है। परित्याग पत्नी इस स्थिति में अधिक कठिनाई का अनुभव करती है। उसे अनैतिक सम्बन्ध स्थापित करने हेतु मन चलो के प्रस्ताव सुनने पड़ते हैं केवल इसलिए कि उसकी सामाजिक प्रस्थिति डमाडोल हो गई है, फिर चाहे वह कितनी ही चरित्रवान क्यों न हो, उसे सदैव काम क्रिया की वस्तु समझकर उसके साथ खेलने का प्रयास किया जाता है। उनमें से कुछ वैश्याएं हो जाती हैं। पारिवारिक विघटन तनाव तथा झगड़े वाले दम्पत्तियों में कुछ ही ऐसे उदाहरण होगे जिनमें पति-पत्नी पृथक्करण तथा परित्याग कि लिए रजामन्द हो। ऐसी परिस्थिति में प्राय यह देखा गया है कि एक पक्ष ही विवाह समझौता को तनाव के कारण तोड़ने के लिए तैयार हो। यह परिस्थिति उस पक्ष के लिए बड़ी हृदय विदारक होती है जिसमें वह यह

अनुभव करता है दूसरे के साथ पूर्ण किया जा सकेगा। जिसका भो (स्त्री या पुरूष) विस्वाकृति किया गया है, जिसका अहम जख्मी हुआ है अक्सर कठिनाई अनुभव करता है अपने व्यक्तित्व को समायोजित करने में।

वैवाहिक जीवन के अनेक सम्पर्क तथा सम्बन्ध आदतन लक्षण होते हैं जिसमें आदतों के कुछ तत्व ऐसे होते है जिनमें कुछ निश्चित अवधिवाद पति एवं पत्नी अपने यौन सम्बन्ध रखने के आदती हो जाते हैं। इसी प्रकार वैवाहिक जीवन की कई अन्य क्रियाऐं भी पूर्ण रूप से नियमित से हो जाते है जैसे स4444 पर मक्खन का चिपकना। जब पारिवारिक जीवन में तनाव तथा विखराव होता है तब ये आदतें अपने स्वाभाव की अभिव्यक्तियों के लिए संघर्ष करती हैं। जब वे असफल होती है तो वे जीवन को तकलीफ, असंतोष तथा सुख से प्रत्येक पक्ष को भर देती हैं।

परिवार में बच्चे प्राय अपने माता-पिता के ओर प्रेम तथा सुरक्षा के लिए देखते हैं। पारिवारिक तनाव तथा विघटन का इन बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में अचानक पति-पत्नी के तनाव ग्रस्त सम्बन्धों का उसके ऊपर कुभाव पड़ता है। इस परिस्थिति में बच्चे बड़ी पैचीदी परिस्थिति में पहुँच जाते है कि वे क्या करें उपरोक्त के कारण वे निम्न परिस्थितियों में पहुँच जाते है। आत्म हत्याएंः- जब व्यक्ति का पारिवारिक जीवन संघर्षमय एवं तनाव पूर्ण होता है तब व्यक्ति पर अस्वस्थ प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति की शांति-सुख भंग हो जाते हैं। पारिवारिक कलह पति-पत्नी, भाई-भाई, माता-पिता, सास-बहु में होने पर परिवार का नियंत्रण एवं अनुशासन समाप्त हो जाता है। प्रत्येक दिन की कलह से छुटकारा पाने के लिए व्यक्ति आत्म हत्या कर लेता है। पति-पत्नी में कोई एक व्यक्ति सामन्जस स्थापित नहीं कर पाने की स्थिति में मानसिक तनाव, घृणा, क्रूरता, क्रोध आदि से ग्रस्त रहता है जिससे छुटकारा पाने के लिए पति-पत्नी में से अधिक

पीड़ित आत्महत्या कर लेती है। सौतेली मां का बच्चों के प्रति भेदभाव पूर्ण व्यवहार, सास का बहु के प्रति र्दुव्यवहार, पति द्वारा पत्नी के साथ मार-पीट करने, उसकी उपेक्षा करने और उसके साथ अमानवीय व्यवहार करने आदि के पारिवारिक तनाव के कारण भी आत्महत्या होती है। और परिवार नष्ट हो जाते है।

तालिका संख्या-53

पारिवारिक तनाव का सामाजिक प्रक्रियाओं पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	सामाजिक प्रक्रियाओं पर प्रभाव	कम	अधिक	अनिश्चित	योग (%)
1.	सम्बन्धों में व्यवस्थापन का अभाव	105 (35%)	171 (57%)	24 (8%)	300 (100%)
2.	आत्मसाती करण का अभाव	94 (31.33%)	166 (55.34%)	40 (13.33%)	300 (100%)
3.	सम्बन्धों में असहयोग	85 (28.33%)	188 (62.67%)	27 (9%)	300 (100%)
4.	संघर्षो का बड़ावा	90 (30%)	178 (39.33%)	32 (10.67%)	300 (100%)
5.	प्रतियोगिता में वृद्धि	108 (36%)	171 (57%)	21 (7%)	300 (100%)
6.	संकुचित अन्तक्रिया का होना	111 (37%)	174 (58%)	15 (5%)	300 (100%)

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि 188 उत्तरदाताओं 62.67 प्रतिशत के अनुसार पारिवारिक तनाव से सामाजिक सहयोग अधिक प्रभावित होता है जबकि 85 उत्तरदाताओं 28.33 प्रतिशत के अनुसार कम प्रभावित होता है। 178 उत्तरदाता 59.33 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से सामाजिक संघर्षो को अधिक बल

मिलता है जबकि 90 उत्तरदाताओं 30 प्रतिशत के अनुसार कम बल मिलता है। 174 उत्तरदाताओं 58 प्रतिशत की राय थी कि तनाव से अंतःक्रियाओं का दायरा अधिक संकुचित हो जाता है जबकि 111 उत्तरदाताओं के अनुसार कम संकुचित होता है। 171 उत्तरदाता 57 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से सामाजिक व्यवस्थापन पर अधिक प्रभाव पड़ता है जबकि 105 उत्तरदाताओं 35 प्रतिशत के अनुसार कम प्रभाव पड़ता है। 171 उत्तरदाताओं 57 प्रतिशत के मतानुसार तनाव से व्यक्ति का व्यवहार अधिक प्रतियोगी हो जाता है जबकि 108 उत्तरदाताओं 36 प्रतिशत के अनुसार कम प्रतियोगी होता है। इसी प्रकार 166 उत्तरदाताओं 55.34 प्रतिशत की राय थी कि तनाव से आत्मसातीकरण अधिक कम हो जाता है। सुस्पष्ट है कि पारिवारिक तनाव से सामाजिक प्रक्रियाओं पर प्रभाव पड़ता है तथा उनमें बाधा उत्पन्न हो जाती है।

तालिका संख्या-54

पारिवारिक तनाव का सामाजिकता पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	सामाजिकता पर प्रभाव	कम	अधिक	अनिश्चित	योग (%)
1.	अन्य समूह से सम्बन्धों में कमी	122 (40.67%)	175 (58.33%)	3 (1%)	300 (100%)
2.	कुशलक्षमता की उपेक्षा	106 (35.33%)	158 (52.67%)	36 (12%)	300 (100%)
3.	सामाजिक सन्दर्भो में भिन्नता	117 (39%)	164 (54.67%)	19 (6.33%)	300 (100%)
4.	सामाजिक समरसता में कटौती	89 (29.67%)	171 (57%)	40 (13.33%)	300 (100%)
5.	सामाजिक असहयोग	102 (34%)	183 (61%)	15 (5%)	300 (100%)

प्रस्तुत सारणी से स्पष्ट है कि 183 उत्तरदाताओं 61 प्रतिशत के मतानुसार तनाव से सामाजिक असहयोग अधिक बढ़ जाता है जबकि 102 उत्तरदाताओं 34 प्रतिशत के अनुसार कम बढ़ता है। 175 उत्तरदाता 58.33 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से परिवार के अन्य समूहों के साथ सम्बन्ध अधिक कम हो जाते हैं। 171 उत्तरदाता 57 प्रतिशत के पारिवारिक तनाव से सामाजिक समरसता अधिक प्रभावित होती है जबकि 89 उत्तरदाताओं 29.67 प्रतिशत के अनुसार कम प्रभावित होती है। 165 उत्तरदाताओं 54.67 प्रतिशत के अनुसार तनाव से सामाजिक मामलों में भिन्नता आ जाती है जबकि 117 उत्तरदाताओं 39 प्रतिशत से अनुसार कम भिन्नता आती है। इसी प्रकार 158 उत्तरदाता 52.67 मानते थे कि तनाव से सामाजिक कुशलक्षमता अधिक उपेक्षित हो जाती है जबकि 106 उत्तरदाताओं 35.33 के अनुसार सामाजिक कुशलक्षमता कम उपेक्षित होती है। सुस्पष्ट है कि सामाजिकता पर पारिवारिक तनाव का भरपूर प्रभाव पड़ता है।

तालिका संख्या-55

पारिवारिक तनाव का सामाजिक नियंत्रण पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	सामाजिक नियंत्रण पर प्रभाव	कम	अधिक	अनिश्चित	योग (%)
1.	नैतिक मूल्यों का ह्रास	89 (29.67%)	175 (58.33%)	36 (12%)	300 (100%)
2.	सामाजिक अलगांववाद	70 (23.33%)	186 (62%)	44 (14.67%)	300 (100%)
3.	पत्नी परित्याग में वृद्धि	111 (37%)	162 (54%)	27 (9%)	300 (100%)
4.	धर्म में अविश्वास	80 (26.67%)	178 (59.33%)	42 (14%)	300 (100%)
5.	सामाजिक स्तरीकरण पर प्रभाव	72 (24%)	195 (65%)	33 (11%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि पारिवारिक तनाव का सामाजिक नियंत्रण पर प्रभाव के सम्बन्ध में 195 उत्तरदाता 65 प्रतिशत मानते थे कि पारिवारिक तनाव से सामाजिक स्तरीकरण पर अधिक प्रभाव पड़ता है जबकि 72 उत्तनदाताओं 24 प्रतिशत के अनुसार यह प्रभाव कम पड़ता है। 186 उत्तरदाताओं 62 प्रतिशत की राय थी कि तनाव से सामाजिक अलगाव अधिक बढ़ता है जबकि 70 उत्तरदाता 23.33 प्रतिशत मानते थे कि यह कम बढ़ता है। 178 उत्तरदाताओं 59.33 प्रतिशत के अनुसार तनाव से सामाजिक धर्म पर विश्वास अधिक कम हो जाता है। 175 उत्तरदाता 58.33 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से नैतिक मूल्यों का

अधिक ह्रास होता है। इसी प्रकार 162 उत्तरदाताओं 54 प्रतिशत की राय थी कि तनाव से समाज में पति-पत्नी परित्याग की दर अधिक बढ़ जाती है जबकि 111 उत्तरदाता 37 प्रतिशत मानते थे कि यह दर कम बढ़ती है। सुस्पष्ट है कि पारिवारिक तनाव से सामाजिक नियंत्रण शिथिल हो जाता है।

तालिका संख्या-56

पारिवारिक तनाव का उत्पादकता पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	उत्पादकता पर प्रभाव	कम	अधिक	अनिश्चित	योग (%)
1.	उत्पादन में संख्यात्मक अभाव	75 (25%)	171 (57%)	54 (18%)	300 (100%)
2.	उत्पादन में गुणवत्ता का लोप	64 (21.33%)	155 (51.67%)	81 (27%)	300 (100%)
3.	कुटीर उद्योगों के विकास में बांधा	77 (25.67%)	150 (50%)	73 (24.33%)	300 (100%)
4.	लघु उद्योगों के विकास में बांधा	93 (31%)	158 (52.67%)	49 (16.33%)	300 (100%)
5.	अनुचित समय पर उत्पादन	90 (30%)	168 (56%)	42 (14%)	300 (100%)

प्रस्तुत सारणी के अवलोकन से विदित होता है कि उत्पादकता पर पारिवारिक तनाव के प्रभाव के सम्बन्ध में 171 उत्तरदाता 57 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से उत्पादन में संख्यात्मक अभाव अधिक हो जाता है जबकि 75 उत्तरदाताओं 25 प्रतिशत के अनुसार संख्यात्मक अभाव कम होता है। 168 उत्तरदाताओं 56 प्रतिशत की राय थी कि तनाव के कारण सही समय पर उत्पादन

अधिक नहीं हो पाता है जबकि 90 उत्तरदाताओं 30 प्रतिशत के अनुसार उत्पादन के सही समय पर होने पर तनाव का प्रभाव कम पड़ता है। 158 उत्तरदाताओं 52.67 प्रतिशत के मतानुसार तनाव से लघु उद्योगों के विकास में अधिक बाधा आती है जबकि 93 उत्तरदाताओं 31 प्रतिशत के अनुसार कम बाधा आती है। 155 उत्तरदाता 51.67 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से उत्पादन की गुणवत्ता अधिक प्रभावित होती है जबकि 64 उत्तरदाताओं 21.33 प्रतिशत के अनुसार गुणवत्ता कम प्रभावित होती है। इसी प्रकार 150 उत्तरदाता 50 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से कुटीर उद्योगों के विकास में अधिक बाधा आती है जबकि 77 उत्तरदाताओं 25.67 प्रतिशत के मतानुसार कम बाधा आती है। सुस्पष्ट है कि पारिवारिक तनाव से उत्पादकता पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है।

तालिका संख्या-57

पारिवारिक तनाव का सामाजिक स्वास्थ्य पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	सामाजिक स्वास्थ्य पर प्रभाव	कम	अधिक	अनिश्चित	योग (%)
1.	रहन-सहन पर कुप्रभाव	112 (37.33%)	161 (53.67%)	27 (9%)	300 (100%)
2.	सामाजिक निपुणता में ह्रास	108 (36%)	153 (51%)	39 (13%)	300 (100%)
3.	अपराधों में वृद्धि	103 (34.33%)	173 (57.67%)	24 (8%)	300 (100%)
4.	बाल अपराधों को प्रोत्साहन	109 (36.33%)	158 (52.67%)	33 (11%)	300 (100%)
5.	सुख, शांति, समवृद्धि में रूकावट	84 (28%)	189 (63%)	27 (9%)	300 (100%)

प्रस्तुत सारणी से स्पष्ट होता है कि 189 उत्तरदाताओं 63 प्रतिशत की राय थी कि पारिवारिक तनाव से सामाजिक शांति, सुख, समृद्धि अधिक रुकती है जबकि 84 उत्तरदाताओं 28 प्रतिशत के अनुसार यह कम रुकती है । 173 उत्तरदाता 57.67 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से अपराधों में अधिक वृद्धि होने लगती है । 161 उत्तरदाताओं 53.67 प्रतिशत के अनुसार तनाव का सामाजिक रहन-सहन के स्तर पर अधिक प्रभाव पड़ता है जबकि 112 उत्तरदाताओं 37.33 प्रतिशत के अनुसार कम प्रभाव पड़ता है। 158 उत्तरदाता 52.67 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से बाल अपराधों को अधिक प्रोत्साहन मिलता है जबकि 109 उत्तरदाताओं 36.33 प्रतिशत के अनुसार कम प्रोत्साहन मिलता है। इसी प्रकार 153 उत्तरदाता 51 प्रतिशत मानते थे कि तनाव से सामाजिक निपुणता का अधिक ह्रास होता है जबकि 108 उत्तरदाताओं 34.33 प्रतिशत के अनुसार तनाव से सामाजिक निपुणता का कम ह्रास होता है। सुस्पष्ट है कि पारिवारिक तनाव का सामाजिक स्वास्थ्य पर भी अधिक प्रभाव पड़ता है।

अध्याय -8

अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में अधिक तनाव के कारण

- ❖ वैयक्तिक कारक
- ❖ सामाजिक कारक
- ❖ आर्थिक कारक
- ❖ महिला सशक्तिकरण
- ❖ धार्मिक कारक
- ❖ अशिक्षितों में कम तनाव के विविध कारक
- ❖ राजनैतिक कारक
- ❖ सांस्कृतिक कारक

अध्याय -8

अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में अधिक तनाव के कारण

शिक्षा का सदैव सकारात्मक प्रभाव पड़ता है यह निश्चित बात नहीं है। शिक्षा तो वह प्रक्रिया है जिसमें श्रृंखलावद्ध सीखना पड़ता है साथ ही गुण-अवगुण का अनुभव करना पड़ता है जिससे मानव व्यवहार में परिवर्तन आता है जिसे शिक्षित व्यक्ति के चिन्तन में, अनुभूतियों तथा आचरण में देखा जा सकता है। शिक्षा का प्रयोग प्रारम्भ से ही बड़े व्यापक अर्थों में किया गया है। डा0 ए0एस0 अल्तेकर ने ठीक ही कहां है कि-"शिक्षा का तात्पर्य व्यक्ति को सभ्य तथा उन्नत बनाना है"।[1] वह अपनी पुस्तक में आगे लिखते है कि-"वैदिक युग से आज तक शिक्षा के सम्बन्ध में भारतीयों की मुख्य धारणा यही रही है कि शिक्षा प्रकाश का वह श्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ प्रदर्शन करता है"।[2] यही कारण है कि मानव जीवन में शिक्षा का अत्याधिक महत्व है। भारतीयों के विचार से शिक्षा का प्रकाश व्यक्ति के सब संशयों का उन्मूलन और उनकी सब बाधाओं का निवारण करता है। शिक्षा व्यक्ति को वास्तविक शक्ति से सम्पन्न करती है, उसके सुख, सुयश एवं समवृद्धि में योग देती है, जिसे जीवन के यथार्थ महत्व को समझने की क्षमता प्रदान करती है और उसे भव सागर को पार करके मोक्ष प्राप्त में सहायता देती है। डा0 अल्तेकर ने शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि-"शिक्षा प्रकाश और शक्ति का ऐसा प्रकाश है जो हमारी शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आत्धात्मिक शक्तियों तथा क्षमताओं का निरन्तर एवं

1. अल्तेकर, ए.एस.: एजूकेशन इन ऐनसीयेन्ट इण्डिया, पृष्ठ- 8
2. तदैव

सामन्जसपूर्ण विकास करके, हमारे स्वाभाव को परिवर्तित करती है और उसे उत्कृष्ट बनाती है''।[1]

कुछ लोग शिक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान का प्रयोग अकार्यो में अर्थात वे क्रियाएं जिनके करने से सामाजिक संतुलन कम होता है (मर्टन) या अतार्किक क्रियाएं जिनका कोई वैज्ञानिक तथा तार्किक ध्येय नहीं होता तथा उनके निष्पादन से पारिवारिक संरचना पर कुप्रभाव पड़ता है (पेरोटा) ! आधुनिक समाज में तो कतिपय प्रकार के नकारात्मक कार्यो में, तथा विघटनकारी क्रियाकलापों में शिक्षित व्यक्ति तथा समूह अधिक लिप्त हो रहे हैं। शिक्षित अपराधी भी होते हैं। शिक्षित लोग ही व्यवसाय की अवधि में जो लम्बी-लम्बी घूस लेते हैं वही तो स्वेत वस्त्र अपराधी होते हैं (सदर लेन्ड) इसके साथ ही वे कौन-कौन सी परिस्थितियां तथा कारण हैं जिनकी बजय से शिक्षित परिवारों में तुलनात्मक अधिक तनाव-झगड़े तथा पारिवारिक विघटन होता है ताकि समाज वैज्ञानिको द्वारा कुछ हस्तक्षेपों का सामाजिक हल निकाला जा सके यथा- बच्चों के समाजीकरण की नवीन प्रणालियां, सामाजिक नियंत्रण की नई तकनीकें तथा व्यवहार के नये प्रतिमानों के लिए नवीन संस्कृति का, साहित्य का सृजन एवं अभिलेखन, समाज में समरसता प्रार्दुभाव के उपाय सोचे जाय जिससे शिक्षित परिवारों में बढ़ते तनाव-झगड़ें तथा विघटन को कम किया जा सके और बुद्धजीवियों को आवश्यक कार्यवाही हेतु सम्प्रेक्षण तथा प्रेरित किये जाये, वरन् शिक्षित परिवारों में होने वाली प्रगति-प्रकाश एवं समवृद्धि उन्हें कही का नहीं छोड़ेगी।

एक ही तथ्य का दो विपरीत परिस्थितियों में अर्थात पारिवारिक तनाव-झगड़े तथा विघटन का शिक्षित परिवारों में अधिक तथा अशिक्षित परिवारों में कम होता है पृष्ठभूमियों में अध्ययन करने की आवश्यकता इसी तथ्य से विदित होती है कि शिक्षित परिवारों में लड़की के विवाह को लेकर अधिक चिन्ता करना,

1. अल्तेकर, ए.एस.: एजूकेशन इन ऐनसीयेन्ट इन्डिया, पृष्ठ- 8

पढ़े-लिखे लड़के के रोजगार को लेकर, अधिक मद्यपान, बच्चों की अपंगुता को, स्थाई व्यवसाय, आवास-सुविधाओं, व्यापारिक मनोरंजन, स्त्री स्वातंत्र्त्व, रोजगार परखता, स्वयं चलित, सामाजिक निर्णय लेने में स्वतंत्रता, स्त्री प्रस्थिति तथा भूमिका में परिवर्तन, महिला सशक्तिकरण के कार्यक्रमों का क्रियान्वयन, उनकी सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी सामाजिक विधानों का निर्माण, धर्म के स्थान पर सामाजिक सोच, परिवार के कार्यों का अन्य अभिकरणों द्वारा निर्वहन करना, व्यक्तिगत मनोरंजन तथा गृह की साज-सज्जा पर अधिक ध्यान देना, रहन-सहन में दिखावा, प्रतियोगिता की दौड़, संघर्ष की तीव्रता, अन्तक्रिया का विस्तार का अवलोकन सहज ही अधिक किया जाता है। अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में अधिक तनाव-झगड़े तथा विघटन पाया जाता है। प्रस्तुत शोध के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। परिवार न्यायालय में पंजीकृति मामले, महिला कर्मचारियों व अधिकारियों की दैनिक जीवन में तनाव तथा विघटन की घटनाएं, का अध्ययन करने की शोधार्थी को आवश्यकता अनुभव हुई। इसी प्रकार हृदय रोग सम्बन्धी चिकित्सा सूचनाएं भी बताती हैं कि लड़की के विवाह को लेकर 40 से 45 वर्षीया महिलाएं तनाव से ग्रसित रहती हैं तो दूसरी ओर शिक्षित युवको को बेरोजगार देखकर उनकी बहिनें व परिवार के भरण-पोषण करने वाले और लगभग रिटार्य होने वाले पिता भी तनाव से ग्रसित देखे गये हैं जो सामाजिक संरचना में विशेषकर मध्यम वर्गीय परिवार हैं।

अशिक्षित परिवार का अभिप्राय केवल साक्षर जो अपना नाम लिख लेते हैं अथवा पढ़ लेते हैं। जिनकी महिलाएं प्राय केवल साक्षर अथवा सामान्य घटना के कार्य कारण का भी जिन्हें ज्ञान नहीं होता। ये परिवार भगवान भरोसे अपना जीवन यापन करने तथा गरीबी रेखा के नीचे रहते हैं। सहिष्णुता के प्रतीक अन्ध विश्वासी, नित रोजी-रोटी उपार्जन में संलग्न परम सन्तोषी, कम आवश्यकता वाले तथा "जो मिल गया मुकद्दर समझ लिया" में विश्वास करते हैं। धर्म परायण,

परम्परावादी तथा सुख-दुख में आपसी साथ देने वाले इन लोगों में 'एकमत्यता', सहयोग, तथा 'हम की भावना' के ये परिवार धनी होते हैं। कम प्रतियोगी तथा संघर्षी इन परिवारों की स्त्रीयों की सामाजिक प्रस्थिति निम्न तथा नगर के मलिन आवासों में अल्परक्तता से जूझने वाले होते हैं।

यही कारण है कि इन परिवारों में अधिक रोगदर, कुपोषणदर तथा मृत्युदर पाई जाती है। फिर भी ये अशिक्षित नगरों में परिवार संकट की परिस्थितियों में संगठित रहते हैं। दुखों को परस्पर बांट लेने के कारण ये परिवार का ही नहीं अपितु सामाजिक संतुलन भी बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। कृषि उत्पादन, भवन निर्माण तथा औद्योगिक उत्पादन में बड़े परिश्रम के बाद शाम को दाल-रोटी खाकर चैन से सो जाते हैं। इनमें तनाव तथा पारिवारिक विघटन सामान्यतः अधिक देखने को नहीं मिलता।

शिक्षित परिवारों का इस शोध अध्ययन में आशय उन परिवारों से हैं जो कक्षा 10 से स्नातकोत्तर तक पढे लिखे होते हैं। इनके पास कतिपय प्रकार की व्यवसायिक शिक्षा-दीक्षा पाई जाती है, जिसके बल पर ये सरकारी व गैर सरकारी संस्थानों में स्थाई मासिक आय रू0 15000के ऊपर तक का उपार्जन करते हैं। इनकी सामाजिक प्रस्थिति प्राय बेहतर होती है। मद्यपान-धूम्रपान तथा धूतक्रीड़ा करने के साथ-साथ ये व्यापारिक मनोरंजन भी करते हैं। सूचना श्रौत्रों के रूपों में समाचार पत्र, पत्रिकाएं, सिनेमा रेडियों तथा टीवी0 को प्रयोग में लाते हैं। सभी तरह के तंत्र-वंत्र सर्वत्र रूप से ये शिक्षित परिवार भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हैं। इनमें यौन असंतोष अधिक पाया जाता है क्योंकि ये महिलाओं के साथ कार्यरत होते हैं। इनकी स्त्रीयां अधिक पढ़ी-लिखी होती हैं। इनके घरों पर भाड़े के नोकर या बाइयां कार्य करती हैं। इनके सदस्य किसी पर शीघ्र विश्वास नहीं करते इनमें व्यक्तिवादिता, प्रतियोगिता तथा संघर्ष की भावना प्रवल होती है और अपनी उपलब्धियों पर कभी संतोष व्यक्त नहीं करते। धन इनका ईश्वर होता है। ये

छोटी-छोटी बातों को लेकर तुरन्त तनाव ग्रस्त हो जाते है। इनमें दहेज पसन्द करते हैं। पत्नी-पृथक्करण तथा परित्याग की इन परिवारों में अधिक दर पाई जाती है। इनके सदस्य गृह कलहों को लेकर सरलता से थाना-कचेहरी पहुंच जाते है। इनमें अधिक वैयक्ति तथा पारिवारिक तनाव पाया जाता है।

कार्य-कारण का दर्शन बहुत पुराना है। कोई चीज ऐसी है तो उसके कारक हैं तथा कोई वस्तु वैसी है तो उसके कारक होते हैं। यह कारण और प्रभाव का सम्बन्ध मानव प्रकृति पर भी पड़ता है। समस्त सामाजिक घटनाओं के कारक होते हैं। इसी प्रकार मानव के अच्छे-बुरे होने के कारक होते हैं। मानव के व्यवहार के कतिपय निर्धारिक होते हैं। मानवीय समाज में शिक्षा एक शक्तिशाली प्रेरक, निर्धारिक तथा महत्वपूर्ण विचलन होता है। शिक्षा के प्रभाव को अधिकांशतः मानव जीवन में सकारात्मक प्रभाव छोड़ने के रूप में अवलोका जा सकता है। प्रस्तुत शोध में यह अनुसंधान की उपकल्पना ही समझनी चाहिए साथ ही शोध का एक उद्देश्य कि,"अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में अधिक तनाव पाया जाता है"।

शिक्षित परिवारों में तनाव तथा विघटन अशिक्षित परिवारों की तुलना में अधिक पाया जाता है उसके भी कतिपय सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, राजनैतिक तथा धार्मिक कारण होते है जिनकी व्याख्या निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत की गई है:-

1. सामाजिक कारण

शिक्षित परिवारों में तनाव ग्रसित होने का मुख्य कारक प्रतिस्पर्दा सामाजिक प्रक्रिया होती है। शिक्षित परिवारों में जो उनके विकास तथा प्रगति के लिए अनिवार्य है उसे प्राप्त करने के लिए अशिक्षित की तुलना में अधिक चेतन्य होते हैं। जैसाकि बोगाडर्स ने लिखा है कि-"प्रतिस्पर्दा किसी ऐसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए होने वाली होड़ है जिसकी मात्रा इतनी अधिक नहीं होती कि उसकी मांग

को पर्याप्त रूप से पूरा किया जा सके"।[1] यही कारण है कि शिक्षित परिवार तुलनात्मक रूप से अधिक तनाव ग्रसित रहते हैं क्योंकि वे वह सब एकत्र करना चाहते हैं जो उनके लिए सुखदाई है तथा अस्तित्व के लिए अनिवार्य है। इसके विपरीत अशिक्षित परिवारों प्रतियोगिता की दर कम पाई जाती है। वे सन्तोषी प्रकृति के होते है, "जो मिल गया मुकद्दर समझ लिया" में विश्वास नहीं करते तथा अप्राप्त के प्रति परेशान नहीं रहते।

(क) महिलाओं की दोहरी प्रस्थिति एवं भूमिका

प्राय यह देखा गया है कि शिक्षित परिवारों की महिला कामकाजी होती है। उन्हें विवाह उपरान्त जो सामाजिक प्रस्थिति प्राप्त होती है वह एक गृहणी की होती है और यदि वह कामकाजी महिला है तो दूसरी प्रस्थिति उसे उस संस्था द्वारा प्रदान की जाती है जिसके अनुसार उसे उपने कार्य एवे उत्तरदायित्वों का निर्वाहन करना पड़ता है। इन दोनों परिस्थितियों में घर एवं कार्यालय दो भिन्न परिस्थितियों में विभिन्न भूमिका पूर्ण न कर पाने के कारण वे तनाव ग्रसित हो जाती है। अशिक्षित परिवार की महिलाओं के साथ ऐसी परिस्थितियों का सर्वथा अभाव होता है। वे प्राय घर के कार्य या अपने पति के साथ कार्य करती है और वे तनाव से मुक्ति रहती हैं। इस प्रकार शिक्षित परिवारों में अशिक्षित परिवारों की तुलना में अधिक तनाव पाया जाता है।

(ख) शिक्षित परिवारों में अधिक संघर्ष शीलता

"संघर्ष किसी व्यक्ति अथवा समूह द्वारा किया गया अर्थपूर्ण प्रयत्न है जो शक्ति, हिंसा, प्रतिकार अथवा विरोध द्वारा अन्य व्यक्तियों अथवा समूहों की क्रिया में बाधा डालता है"।[2] शिक्षित परिवार अपने उच्चतम जीवन लक्ष्यों को आत्मसात करने हेतु अधिक संघर्षरत रहते है। अधिक संघर्ष के कारण उनमें तनाव की मात्रा

---

1. बोगार्डस द्वारा उद्धत
2. अग्रवाल, गोपाल कृष्ण (1986): मानव समाज, आगरा बुक स्टोर आगरा, पृष्ठ -384

भी अधिक रहती है क्योंकि संघर्ष दो समूह में होने वाला प्रयास है तथा एक चेतन प्रक्रिया है जिसमें प्रत्येक पक्ष एक दूसरे के पक्ष की समस्त गति विधियों को ध्यान में रखकर कार्य करता जिससे तनाव होना स्वाभाविक हो जाता है। अशिक्षित परिवार मात्र अपनी आधार भूत आवश्यकताओं- 'रोटी कपड़ा और मकान' तक सीमित रहते हैं। उन्हें बस पेट भर रोटीं मिल जाये फिर वे पैर फैलाकर सोते हैं। उन्हें कल की अधिक चिन्ता नहीं रहती यही कारण है कि उनमें तनाव कम पाया जाता है।

(ग) एकांकी परिवार

अशिक्षित परिवार ग्रामों एवं नगरों में प्राय संयुक्त परिवार में जीवन यापन करते हुए देखे जा सकते हैं। इसके विपरीत शिक्षित परिवार नगरों में प्राय एकांकी परिवार निर्मित करके रहते हैं। क्योंकि एकांकी परिवार- आकार के दृष्टि से एकांकी अथवा केन्द्रक परिवार सबसे छोटी इकाई है। इसमें सदस्य पति-पत्नी उनके अविवाहित बच्चे ही होते है।

हेरिष (1969:70) में लिखी है कि "एक एकांकी परिवार उन व्यक्तियों का छोटा समूह है जो जैवकीय भूमिका निभाने के अतिरिक्त एक दूसरे के संस्थागत सामाजिक दायित्वों को पूरा करते हैं तथा ऐसा करने के साथ ही उन विश्वासों और मूल्यों का पालन करते है जिनकी उनसे परिवार के अन्र्तगत पूरा करने की आशा की जाती है"।[1] "इनके सदस्यों में स्थानीय गतिशीलता अधिक पाई जाने के कारण तथा दृष्टिकोण का अधिक रचनात्मक होने के कारण माता-पिता बच्चों के पालन-पोषण के प्रति अधिक जागरूक रहते है, के कारण उनमें तनाव अधिक पाया जाता है"।[2] इसके विपरीत अशिक्षित परिवारों में सम्पूर्ण उत्तरदायित्व का बोझ संयुक्त परिवार के आय सदस्यों में बट जाता है और वे समय रहते

1. हरिस, सी.सी. (1969:70): "द फैमिली"
2. अग्रवाल, गोपाल कृष्ण (1986): मानव समाज, आगरा बुक स्टोर आगरा, पृष्ठ -443

अपनी-अपनी भूमिका निर्वहन करके कार्य को पूर्ण कर लेते है तथा तनाव से मुक्ति रहते हैं।

2. आर्थिक कारण

व्यक्ति, परिवार एवं समुदाय की मानसिक शान्ति परिवार के आर्थिक तत्व द्वारा निश्चित की जाती है । जब परिवार अपने व्यक्तियों की आर्थिक आवश्यकताएं पूरी नहीं कर पाता तो अनेक व्याधियां उत्पन्न होने लगती है जिसमें तनाव भी सम्मिलित है। आर्थिक कारणों में शैक्षिक परिवारों में अधिक तनाव के जो कतिपय कारक है वे निम्नलिखित हैं -

(क) शिक्षित बेरोजगारी

शिक्षित परिवारों के लड़के-लडकियां शिक्षा प्राप्ति के बाद अनेक युवको एवं युवतियों का कार्य नहीं मिलता । यह बैकारी की भावना अभिभावको एवं छात्रों में प्रारम्भ से ही व्याप्त हो जाती है । भावी बेकारी की आशंका के कारण माता-पिता में बरावर तनाव बना रहता है''।[1] शिक्षित परिवारी अपने बालकों पर अपनी कमाई का सर्वाधिक रूपय व्यय करते है निश्चित रूप में इस आशा में कि व्यवसायिक पाठ्यक्रम उनकी औलादे पास सेवाएं प्राप्त कर लेगे परन्तु, आज शिक्षित पर इसलिए अत्याधिक रूप से तनाव ग्रसित है कि उनके घर शिक्षित बेटे-बेटियां बेरोजगार बैठी हैं। अशिक्षित परिवारों में रोजगार को लेकर न तो बच्चों की पढाई-लिखाई पर इतना व्यय किया जाता, न उनके बच्चे अधिक पढ़े-लिखे होते हैं । जब वे बच्चे बड़े हो जाते है तो 8 या 9 वर्ष बाद ही अपने माता-पिता द्वारा बाल श्रम में सहज ही ढकेल दिए जाते हैं। इस प्रकार अशिक्षित परिवारों में बच्चों की बेरोजगारी को लेकर कोई तनाव नहीं उत्पन्न होता जैसा कि शिक्षित परिवारों में तनाव उत्पन्न होता है।

1. सिंह, जीत कृष्णा (1977:261): अपराध शास्त्र, प्रकाशन केन्द्र, न्यू विल्डिगस, अमीनावाद, लखनऊ

(ख) सीमित आय में भरण-पोषण

शिक्षित परिवार की मासिक आय सर्वदा सीमित होती है । इसके विपरीत उनके परिवार के दैनिक व्यय निश्चित होने होते है यथा- समाचार पत्र, दूध, किराया, आवागमन व्यय, चाय, नास्ता, घरेलू नोकर, वस्त्रों की सफाई का, बिजली, पानी आदि का व्यय । यह सभी वे अपनी मासिक आय से करते है । जिसके कारण उनका तनाव ग्रसित रहना स्वाभाविक है । इसके विपरीत अशिक्षित परिवारों में दाल-रोटी, वर्ष में दो बार कपड़े के दैनिक प्रकृति में अन्य व्यय नहीं होते । उनकी आवश्यकताएं सीमित होती है और वे अपना सरल जीवन व्यतीत करने के आदी हो जाते है यही कारण किवे शिक्षित परिवारों की तुलना में कम तनाव ग्रस्त रहते है ।

(ग) कार्य व्यस्तता

शिक्षित परिवार अपने कार्यो में तथा सेवा योजकों के कार्य में अत्याधिक संलग्न रहते हैं । अक्सर वे सेवा संस्थानों के कार्य की व्यस्तता के कारण परिवार के कार्यो में सहभागिता नहीं कर पाते है उसके कारण भी वे तनाव ग्रस्त हो जाते हैं। कभी-कभी तो वे आत्मग्लानि भी अनुभव करते हैं । परन्तु अशिक्षित परिवार शारीरिक श्रम में कार्य व्यस्त अवश्य रहते है लेकिन मानसिक तौर पर नहीं साथ वे दोहरा उत्तरदायित्व से भी पृथक रहते हैं यही कारण है कि उनमें तनाव कम पाया जाता है ।

(घ) सेवा स्थानों में परिवर्तन

सर्व विदित है, शिक्षित परिवार के सदस्य रोजगार की तलास में प्राय स्थान परिवर्तन करते रहते हैं । जिन शिक्षित परिवारों को सरकारी एवं गैर सरकारी अभिकरणों में रोजगार प्राप्त हो जाता है तो प्रशासन की दृष्टि से उनके द्वारा अच्छा अथवा बुरा कार्य निष्पादन करने पर प्रशासन द्वारा उन्हें पारितोषक (प्रौन्नति) दण्ड (उसी स्थान पर) अन्य स्थानों पर स्थानान्तरण किया जाता है ।

इस स्थानान्तरण से उनके नये स्थान से दूसरे स्थान पर सामान के परिवहन आदि की समस्याओं के कारण, ये शिक्षित पर अक्सर तनाव ग्रसित हो जाते हैं। कुछ तो अपने बच्चों को उसी स्थान पर छोड़ जाते है और अकेले ही नये स्थानों पर अपने आपको व्यवास्थिति एवं समायोजित करने को वाध्य होते हैं। पति एक स्थान पर तथा पत्नी व बच्चे अन्य स्थान पर होने के कारण परिवार के सभी सदस्य प्राय तनाव ग्रहस्त रहते हैं। इसके विपरीत अशिक्षित परिवारों के सम्मुख दो वर्ष या तीन वर्ष बाद स्थान परिवर्तन की कोई समस्या नहीं होती। वे एक स्थान पर रहकर उसकी जीविका का उपार्जन करते रहते हैं और उन्हें मानसिक, आर्थिक एवं सामाजिक तनाव इतना नहीं प्रभावित करता जितना कि शिक्षित परिवारों के सदस्यों को।

3. मनोवैज्ञानिक कारण

मनोवैज्ञानिक कारणों से अभिप्राय उन कारणों से होता है जो व्यक्ति के व्यवहार, प्रेरक, आदतों, इच्छाओं, चाहतों, काम, क्रोध, मद तथा लोभ आदि के साथ अभिरुचियों, धारणाओं, विश्वासों तथा प्रत्यक्षीकरण से सम्बन्धित होते हैं। तनाव के सन्दर्भ में मनोवैज्ञानिक जो कतिपय कारक उत्तरदाई होते हैं उनका उल्लेख निम्नलिखित है-

(क) महत्वाकांक्षा

शिक्षित परिवारों के सदस्यों में अशिक्षित परिवारों की तुलना में अधिक महत्वाकांक्षा पाई जाती है। वे चाहते है कि समाज में उनकी पहिचान हो, लोग उनका अभिवादन करे। वे जहां भी हो लोग उन्हें पदाधिकारी बनाए, उनके पास मान-सम्मान के सभी वस्तुऐं हो। यदि उन्हें यह सब प्राप्त न हो तो वे शीघ्र निराश हो जाते है। वे प्रतिवल के, चिन्ता के तथा निराशा के शिकार हो जाते है। कुछ तो उनमें से जो अपने आपको समायोजित नहीं कर पाते वे अनेक मनोवैज्ञानिक रोगों

से ग्रसित हो जाते हैं। इसके विपरीत अशिक्षित परिवारजन अधिक महत्वाकांक्षी नहीं होते यही कारण है कि उनमें तनाव की मात्रा कम पाई जाती है।

(ख) कार्य क्षेत्र में असन्तुष्टी

शिक्षित परिवारों में अधिक प्यास होती है। वे निरन्तर उचाईयों के शिखरों पर चढ़ना चाहते हैं। यदि धन कमाने की बात हो या वस्तुएं क्रय तथा उनके सग्रह की बात हो वे सब कुछ पाकर भी "कुछ और" पाना चाहते है। नौकरी पेशा शिक्षित अपने नियुक्ताओं से आय व सुविधाओं के बारे में कभी सन्तुष्ट दृष्टिगोचर नहीं होते। अशिक्षित परिवार वस्तुओं से अथवा मासिक आय से शीघ्र सन्तुष्ट हो जाते हैं। यही कारण है कि उनमें शिक्षित परिवारों की तुलना में कम तनाव पाया जाता है।

(ग) अधिक आवश्यकताएं

प्राय यह देखने को मिलता है कि शिक्षित परिवारों की अशिक्षित परिवारों की तुलना में अधिक आवश्यकताएं होती है। अशिक्षितों की आवश्यकताएं केवल आवश्यक आवश्यकताएं जिनमें रोटी-कपड़ा-मकान, सामान्य तन ढकने हेतु वस्त्र आदि शामिल होती है। जिन्हें वे अपने प्रयासों से पूर्ण कर ही लेते है। अशिक्षित होने के कारण वे अपनी आवश्यकताओं को विस्तार नहीं दे पाते क्योंकि वे अशिकांशतः मौसमी रोजगार अथवा असंगठित क्षेत्र के श्रमिक होने के कारण गरीबी के शिकार होते है यही कारण है कि उनकी आवश्यक आवश्यकताएं ही होती हैं इसीलिए शिक्षितों की तुलना में उनमें कम तनाव पाया जाता है। इसके विपरीत शिक्षित परिवारों की कई प्रकार की आवश्यकताएं होती हैं (1)जैसे आवश्यक आवश्यकताऐं- रोटी-कपड़ा-मकान एवं (2) आराम सम्बन्धी आवश्यकताऐं-चिपड़ी रोटी/डवल रोटी, सुविधा युक्त आवास जिसमें अलग से रसोईघर, शौचालय, स्नानगृह, विधुतापूर्ति एवं जलापूर्ति, (3) बिलासता सम्बन्धी

आवश्यकताऐं- पूड़ी/हलुआ/-मौसमो अनुसार रेश्मी-ऊनी कई युगल वस्त्र, वातानुकूल आवास समस्त सुविधाओं के साथ आवागमन के लिए चार पहिया वाहन आदि। उपरोक्त की पूर्ति न होने पर इन परिवारों को तनाव हो जाता है जो प्रत्येक दशा में अशिक्षित परिवारों के सदस्यों से अधिक होता है।

(घ) अलगांव

श्री नेटलर के अनुसार, "अलगांव वह स्थिति है, जबकि व्यक्ति में अपने समाज व संस्कृति के प्रति अलगांव पन की भावना उत्पन्न होती है। समाज व संस्कृति के प्रति व्यक्ति का यह अलगांव पन या पृथक होने की भावना इस कारण नहीं हैं कि समाज या समूह अथवा सामाजिक परिस्थितियों से उसका सफल समायोजन नहीं हो पाया है, अपितु इस कारण कि समाजि व संस्कृति के द्वारा जिन मूल्यों को अधिक महत्व दिया जाता है, उन मूल्यों या विश्वासों को व्यक्ति अपने-अपने दृष्टिकोण से अधिक महत्व नहीं देता अर्थात उनका कम मूल्य लगाता है शिक्षित इसके उदाहरण है। ये लोग अपनी शिक्षा के आधार पर विभिन्न सामाजिक घटनाओं का अपने दृष्टि से मूल्यांकन करते हैं और यह समझते हैं कि सामाजिक मूल्यों से उनका व्यक्तिगत मूल्यांकन अधिक सही है। इस भावना से प्रेरित शिक्षित अपने को अशिक्षित समूह या समाज से कुछ अलग हटा लेते है"।[1] यही कारण है शिक्षित परिवारों में सामाजिक परिवर्तन की द्रुतिगति पाई जाती है साथ ही अधिक सामाजिक गतिशीलता। इस गतिशीलता में असफलता पाने के लिए ये प्राय तनाव ग्रसित रहते है अशिक्षित परिवारों का समूह सरल होता है। इसलिए वे एक सूत्र में बधें रहते हैं। वे संयुक्त रूप से एक-दूजे के अधिक निकट होते हैं तथा शिक्षितों की तुलना में कम तनाव ग्रसित रहते हैं। प्रस्तुत शोध में अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में तनाव के अध्ययन की

1. नेटलर, उद्धत द्वारा-मुखर्जी, रवीन्द्रनाथ, विवके प्रकाशन,7 यू. ए. जवाहर नगर, दिल्ली- पृष्ठ-213

सूचनाओं को तालिकाओं में रख सांख्यकीय विश्लेषण के साथ व्याख्या की गई है:-

तालिका संख्या-57

अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में तनाव अधिक होने के वैयक्तिक कारक

क्र. सं.	वैयक्तिक कारक	हां	नहीं	अनिश्चित	योग (%)
1.	अत्याधिक आत्मसम्मान	234 (78%)	54 (18%)	12 (4%)	300 (100%)
2.	मद्यपान	171 (57%)	60 (20%)	69 (23%)	300 (100%)
3.	निर्णय लेने की स्वतंत्रता	186 (62%)	75 (25%)	39 (13%)	300 (100%)
4.	अहंम की भावना	216 (72%)	30 (10%)	54 (18%)	300 (100%)
5.	असन्तुष्टी	219 (73%)	30 (10%)	51 (17%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 234 सर्वाधिक 78 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अत्याधिक आत्मसम्मान को, 73 प्रतिशत मनोवैज्ञानिक असन्तुष्टि को, 72 प्रतिशत अहंम की भावना को, 62 प्रतिशत निर्णय लेने की स्वतंत्रता को, तथा 57 प्रतिशत मद्यपान के वैयक्तिक लक्षणों से शिक्षित परिवारों में अशिक्षित परिवारों की तुलना में अधिक तनाव होना बताया।

तालिका संख्या-58

अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में तनाव अधिक होने के सामाजिक कारक

क्र. सं.	सामाजिक कारक	हां	नहीं	अनिश्चित	योग (%)
1.	अधिक प्रतियोगिता	231 (77%)	48 (16%)	21 (7%)	300 (100%)
2.	अधिक स्वतंत्रता	202 (67.33%)	71 (23.67%)	27 (9%)	300 (100%)
3.	अधिक गतिशीलता	156 (52%)	66 (22%)	78 (26%)	300 (100%)
4.	संगठनात्मक कार्यो में सहभागिता	192 (64%)	66 (22%)	42 (14%)	300 (100%)
5.	सांस्कृतिक कार्यो में संलग्नता	239 (79.67%)	55 (18.33%)	6 (2%)	300 (100%)

उपरोक्त सारणी से सामाजिक कारक ज्ञात होते हैं जिनके कारण अशिक्षितों परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में अधिक तनाव पाया जाता है-

जिसमें 239 उत्तरदाता 79.67 प्रतिशत सांस्कृतिक कार्यो में संलग्नता, 77 प्रतिशत अधिक प्रतियोगिता, 67.33 प्रतिशत अधिक स्वतंत्रता, 64 प्रतिशत संगठनात्मक कार्यो में सहभागिता तथा 52 प्रतिशत अधिक गतिशीलता की विशेषता सम्मिलित है।

तालिका संख्या-59

अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में तनाव अधिक होने के आर्थिक कारक

क्र. सं.	आर्थिक कारक	हां	नहीं	अनिश्चित	योग (%)
1.	महिला की आत्मनिर्भरता	177 (59%)	99 (33%)	24 (8%)	300 (100%)
2.	धन की अधिक लिप्सा	187 (62.33%)	101 (33.67%)	12 (4%)	300 (100%)
3.	आवश्यकता की अधिकता	208 (69.33%)	53 (17.67%)	39 (13%)	300 (100%)
4.	व्यवसायिक प्रतिद्वन्द्वुता	160 (53.33%)	88 (29.34%)	52 (17.33%)	300 (100%)
5.	अत्याधिक व्यय	220 (73.33%)	60 (20%)	20 (6.67%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से विदित होता कि 220 सर्वाधिक उत्तरदाता 73.33 प्रतिशत ने अत्याधिक व्यय, 208 सूचनादात 69.33 प्रतिशत ने आवश्यकताओं की अधिकता, 187 उत्तरदाता 62.33 प्रतिशत ने धन की अधिक लिप्सा, 177 सूचनादाता 59 प्रतिशत ने महिलाओं की आत्मनिर्भरता तथा 160 उत्तरदाता 53.33 प्रतिशत ने व्यवसायिक प्रतिद्वन्द्वुता आर्थिक लक्षण, शिक्षितों में होने के कारण अशिक्षितों की तुलना में अधिक तनाव पाया जाता है।

तालिका संख्या-60

अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में महिला सशक्तिकरण के कारण अधिक तनाव होते हैं।

क्र. सं.	महिला सशक्तिकरण	हां	नहीं	अनिश्चित	योग (%)
1.	महिलाओं में अधिकारों की सजगता	228 (76%)	36 (12%)	36 (12%)	300 (100%)
2.	महिला शिक्षा	132 (44%)	57 (19%)	111 (37%)	300 (100%)
3.	नारी संरक्षण अधिनियम	159 (53%)	105 (35%)	36 (12%)	300 (100%)
4.	महिला का काम काजी पन	174 (58%)	75 (25%)	51 (17%)	300 (100%)
5.	महिला के सामाजिक दायरा में वृद्धि	168 (56%)	93 (31%)	39 (13%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि महिला-सशक्तिकरण के कारण जिसमें 228 अधिकांश 76 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने शिक्षित परिवारों में अशिक्षित परिवारों की महिलाओं की तुलना में 'अधिकारों की सजगता', 174 सूचनादाता 58 प्रतिशत ने महिलाओं का काम-काजी होना, 168 उत्तरदाता 56 प्रतिशत ने महिलाओं के सामाजिक दायरे में विस्तार, 159 सूचनादाताओं 53 प्रतिशत ने नारी संरक्षण अधिनियम तथा 132 उत्तरदाताओं 44 प्रतिशत ने महिला शिक्षा को अधिक तनाव के कारण निरूपित किए।

तालिका संख्या-61

शिक्षितों की तुलना में अशिक्षितों में कम तनाव होने के कारण

क्र. सं.	कारक	हां	नहीं	अनिश्चित	योग (%)
1.	अशिक्षा	142 (47.33%)	64 (21.34%)	94 (31.33%)	300 (100%)
2.	सन्तोषी	192 (64%)	69 (23%)	39 (13%)	300 (100%)
3.	धर्म परायण	186 (62%)	57 (19%)	57 (19%)	300 (100%)
4.	सहनशीलता	201 (67%)	45 (15%)	54 (18%)	300 (100%)
5.	भाग्यवाद	222 (74%)	39 (13%)	39 (13%)	300 (100%)
6.	लोक लाज का भय	233 (77.67%)	31 (10.33%)	36 (12%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि शिक्षित परिवारों की तुलना में अशिक्षित परिवारों में कम तनाव पाया जाता है जिसमें 233 उत्तरदाताओं ने अशिक्षितों को 77.67 प्रतिशत लोग-लाज का भय, 222 सूचनादाताओं 74 प्रतिशत ने भाग्यवाद को, 201 उत्तरदाताओं 67 प्रतिशत सहनशीलता को, 192 सूचनादाताओं 64 प्रतिशत ने सन्तोषीपन को, 186 उत्तरदाताओं 62 प्रतिशत ने

धर्म परायणता को, 142 उत्तरदाताओं 47.33 प्रतिशत ने उनकी अशिक्षा को कारण बताया।

तालिका संख्या-62

अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में अधिक तनाव के अन्य कारक

क्र. सं.	अन्य कारक	हां	नहीं	अनिश्चित	योग (%)
1.	अधिक प्रतिक्रिया वादी	201 (67%)	45 (15%)	54 (18%)	300 (100%)
2.	वाह्य समूहों की सदस्यता	203 (67.67%)	45 (15%)	52 (17.33%)	300 (100%)
3.	नेतृत्व की भावना	171 (57%)	60 (20%)	69 (23%)	300 (100%)
4.	अधिक दूरदर्शता	188 (62.67%)	58 (19.33%)	54 (18%)	300 (100%)
5.	यौन व्यवहार की उच्छृंखलता	171 (57%)	62 (20.67%)	67 (22.33%)	300 (100%)

उपरोक्त सारणी से प्रगट होता है कि अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में अधिक तनाव के अन्य कारक उत्तरदाई है जिसमें 203 सर्वाधिक 67.67 प्रतिशत ने शिक्षित परिवारों को अधिक 'वाह्य समूहों की सदस्यता'को, 201 सूचनादाता 67 प्रतिशत ने अधिक 'प्रतिक्रिया वादिता' को, 188 उत्तरदाता 62.67 प्रतिशत ने अधिक 'दूरदर्शता' को, 57 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने क्रमशः यौन व्यवहार में 'उच्छखलता' तथा 'नेतृत्व की भावना' मुख्य लक्षण थे।

तालिका संख्या-63

अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में अधिक तनाव के राजनैतिक कारक

क्र. सं.	राजनैतिक कारक	हां	नहीं	अनिश्चित	योग (%)
1.	शीघ्र बदलती सरकारें	253 (84.33%)	40 (13.34%)	7 (2.33%)	300 (100%)
2.	राजनैतिक दलों का पूर्वागृह	261 (87%)	39 (13%)	- -	300 (100%)
3.	ढीली नीतियां	245 (81.67%)	55 (18.33%)	- -	300 (100%)
4.	नीति क्रियान्वयन में इच्छा शक्ति का अभाव	183 (61%)	96 (32%)	21 (7%)	300 (100%)
5.	आरक्षण नीति	162 (54%)	138 (46%)	- -	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में तनाव के राजनैतिक कारक भी होते हैं जिसमें 261 उत्तरदाताओं 87 प्रतिशत ने "राजनैतिक दलों के पूर्वाग्रह" को, 253 उत्तरदाताओं 84.33 प्रतिशत ने 'शीघ्र बदलती सरकारों का, 245 सूचनादाताओं 8.67 प्रतिशत ने 'सरकारी ढीली नीतियों' को, 183 उत्तरदाताओं 61 प्रतिशत 'नीति क्रियान्वयन में सरकार की इच्छा शक्ति के अभाव' को तथा 54 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने आरक्षण नीति को कारण बताया।

तालिका संख्या-64

अशिक्षित परिवारों में शिक्षित परिवार की तुलना में तनाव होने के सांस्कृतिक कारक

क्र. सं.	सांस्कृतिक कारक	हां	नहीं	अनिश्चित	योग (%)
1.	सत्य बोलना	195 (65%)	60 (20%)	45 (15%)	300 (100%)
2.	परम्पराओं का पालन	189 (63%)	69 (23%)	42 (14%)	300 (100%)
3.	रीति-रिवाजों में विश्वास	170 (56.67%)	94 (31.33%)	36 (12%)	300 (100%)
4.	कर्म को धर्म मानना	174 (58%)	72 (24%)	54 (18%)	300 (100%)
5.	सांस्कृति विलम्बना	184 (61.33%)	64 (21.34%)	52 (17.33%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में तनाव के सांस्कृतिक कारकों को सर्वाधिक उत्तरदायी माना जिसमें 195 उत्तरदाता 65 प्रतिशत ने "सत्य बोलने को" को, 189 उत्तरदाता 63 प्रतिशत ने परम्पराओं के पालन को लेकर पति-पत्नी के मत भेदों को, 184 उत्तरदाताओं 61.33 प्रतिशत ने "सांस्कृतिक विलम्बना" को, 174 सूचनादाता 58 प्रतिशत ने "कर्म को धर्म मानना" को तथा 170 सूचनादाता 56.67 प्रतिशत ने रीति-रिवाजों में विश्वास को बताया।

♣♣♣

अध्याय -9

पारिवारिक तनाव को कम करने के सुझाव

- सम्प्रेक्षण की तकनीकियां
- स्वयं प्रयास
- शीलों का पालन
- धार्मिक क्रिया-कलाप
- सामाजिक क्रियाएं
- मनोवैज्ञानिक सुझाव

अध्याय -9

पारिवारिक तनाव को कम करने के सुझाव

यदि अनुसंधान किसी सामाजिक समस्या या व्यवहारिक जीवन से सम्बन्धित है तो शोध का यह अनिवार्य उद्देश्य होना चाहिए कि शोध अध्ययन के अन्त में सुझाव अवश्य दिए जाए। इन सुझावों की विषय वस्तु के सम्बन्ध में मुखर्जी (2001:389) ने उल्लेख किया है कि "इन सूझावों में एक समस्या को किस प्रकार व्यवहारिक ढंग से हल किया जाय, अथवा एक अवस्था विशेष को किस रचनात्मक रूप से उन्नत किया जाय, इनके सम्बन्ध में सुझाव अवश्य दिए जाये"।[1] संक्षेप में सुझाव उपयोगी तथा व्यवहारिक लाभ की दृष्टि से उपयुक्त हों साथ ही तर्क पर आधारित व रचनात्मक हो इस बात का अधिक ध्यान अनुसंधानकर्ता रखता है तथा उसे रखना भी चाहिए। ये सुझाव तीन प्रकार के हो सकते हैं - एक तो वे सुझाव जो अध्ययन के दौरान में स्वयं उत्तरदाताओं से द्वारा दिए गये हैं। ये सुझाव अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि एक विशेष क्षेत्र यासमुदाय में काफी समय से रहने वाले लोग (सूचनादाता) सैद्धांतिक ज्ञान न रखते हुए भी समस्याओं से भुक्तभोगी होने के कारण समस्या को व्यवहारिक दृष्टि से समझते हैं और इस लिए अपने अनुभव के आधार पर इस योग्य होते हैं कि अवस्था को उन्नत करने या सुधारने के लिए उपयोगी सुझाव दे सके। इसलिए ऐसे सुझावों को शोध प्रतिवेदन में अवश्य स्थान दिया जाता है। दूसरे वे सुझाव होते हैं जो कि स्वयं अनुसंधान कर्ता अपने अध्ययन के आधार पर प्रस्तुत करता है। इस प्रकार के सुझावों की उपयोगिता शोधार्थी के ज्ञान, अनुभव, सूझ-बूझ तथा दृष्टिकोण पर निर्भर करती हैं। तीसरे प्रकार के वे सुझाव होते हैं जिन्हें सामाजिक घटनाओं के

---

1. मुखर्जी, रवीन्द्र नाथ (2001): सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी, विवके प्रकाशन जवाहर नगर दिल्ली-7, पृष्ठ-389

अध्ययन के उपरान्त पूर्व ही किसी के द्वारा सूचना के द्वैतीय श्रौत्रों के माध्यम से अनुसंधान कर्ता अपने शोध समस्या के बारे में संकलित करके प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोध समस्या "मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव एवं विघटन का एक समाजशास्त्रीय में उपरोक्त तीनों प्रकार के तनाव व विघटन नियंत्रण के सुझाव प्रेषित किए गये हैं।

तालिका संख्या-65

पारिवारिक तनाव कम करने के संचार सम्बन्धी सुझावों का विवरण

क्र. सं.	संचार की तकनीकिया	हां	नहीं	योग (%)
1.	मुस्कान भरी वार्ता	205 (68.67%)	94 (31.33%)	300 (100%)
2.	वार्ता में मधुर शब्दों का प्रयोग	220 (73.33%)	80 (26.67%)	300 (100%)
3.	परस्पर सम्मान से	225 (75%)	75 (25%)	300 (100%)
4.	वार्ता मेंसराहना करना	208 (69.33%)	92 (30.67%)	300 (100%)
5.	मतभेदी सन्दर्भ हीन वार्ता	198 (66%)	102 (34%)	300 (100%)

प्रस्तुत सारणी के अवलोकन से विदित होता है कि पारिवारिक तनाव कम करने के संचार सम्बन्धित सुझावों के अन्तर्गत 225 उत्तरदाता 75 प्रतिशत मानते थे कि पति-पत्नी द्वारा आपस में पारस्परिक सम्मान देने से पारिवारिक तनाव कम होता है। 220 उत्तरदाताओं 73.33 प्रतिशत की राय थी कि पारिवारिक वार्ता में मधुर शब्दों का प्रयोग करने से पारिवारिक तनाव कम होते हैं। 208 उत्तरदाताओं

69.33 प्रतिशत के अनुसार पारस्परिक संचार में दूसरों की सराहना करने पर पारिवारिक तनाव कम होते हैं। 206 उत्तरदाता 68.67 प्रतिशत मानते थे कि आपसी वार्ता मुस्कान के साथ करने से तनाव तथा झगड़े कम होते हैं। इसी प्रकार 198 उत्तरदाताओं 66 प्रतिशत की राय थी कि पारस्परिक संचार में मतभेद पैदा करने वाले सन्दर्भों को पृथक रखने से पारिवारिक तनाव कम होते हैं।

तालिका संख्या-66

पारिवारिक तनाव कम करने के स्वयं के प्रयास के सुझाव सम्बन्धी विवरण

क्र. सं.	स्वयं प्रयास की क्रियाएं	हां	नहीं	योग (%)
1.	कारण जान हल के प्रयास	204 (68%)	96 (32%)	300 (100%)
2.	कार्य में संलग्नता	190 (63.33%)	110 (36.67%)	300 (100%)
3.	भविष्य निर्माण के प्रयास	209 (69.67%)	91 (30.33%)	300 (100%)
4.	वार्ता में उलाहनाओं की कमी	182 (60.67%)	118 (39.33%)	300 (100%)
5.	साहित्य का पठन-पाठन	162 (54%)	138 (46%)	300 (100%)
6.	योगाभ्यास	178 (59.33%)	122 (40.67%)	300 (100%)

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि 209 उत्तरदाताओं 69.67 प्रतिशत की राय थी कि सुन्दर भविष्य के निर्माण के प्रयासों से पारिवारिक तनाव कम होते हैं। 204 उत्तरदाता 68 प्रतिशत मानते थे कि तनाव के कारणों को जानकर हल करने

से पारिवारिक तनाव कम होते हैं। 190 उत्तरदाताओं 63.33 प्रतिशत के मतानुसार व्यक्ति द्वारा अपने को कार्य में व्यस्त रखने से पारिवारिक तनाव कम होते हैं। 182 उत्तरदाता 60.67 प्रतिशत मानते थे कि पारस्परिक पृष्ठभूमि में ताने न मारने से भी पारिवारिक तनाव कम होते हैं। इसी प्रकार 178 उत्तरदाताओं 59.33 प्रतिशत की राय थी कि मेडीटेशन के अभ्यास से भी पारिवारिक तनाव कम होते हैं। 162 उत्तरदाताओं 54 प्रतिशत के मतानुसार व्यक्ति द्वारा खाली समय में साहित्य पठन-पाठन से भी पारिवारिक तनाव कम होता है।

तालिका संख्या-67

पारिवारिक तनाव कम करने के शीलों के पालन सम्बन्धी सुझावों का विवरण

क्र. सं.	शीलों का पालन	हां	नहीं	योग (%)
1.	सत्य बोलना	213 (71%)	87 (29%)	300 (100%)
2.	अपरिस्त्री गमन	175 (58.33%)	125 (41.67%)	300 (100%)
3.	मद्यपान निषेध	202 (67.33%)	98 (32.67%)	300 (100%)
4.	अहिंसा का पालन	185 (61.67%)	115 (38.33%)	300 (100%)
5.	अचुगल खोरी	178 (59.33%)	122 (40.67%)	300 (100%)
6.	कुशल कार्यो का निष्पादन	186 (62%)	114 (38%)	300 (100%)

पारिवारिक तनाव कम करने के सम्बन्ध में उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 213 उत्तरदाता 71 प्रतिशत मानते थे कि सत्य बोलने से पारिवारिक तनाव कम होता है। 202 उत्तरदाताओं 67.33 प्रतिशत के मतानुसार मद्यपान न करने से भी पारिवारिक तनाव कम होता है। 186 उत्तरदाताओं 62 प्रतिशत की राय थी कि कुशल कार्य करने से भी पारिवारिक तनाव कम होता है। 185 उत्तरदाता 61.67 प्रतिशत मानते थे कि जीव हिंसा से विरत रहने से भी पारिवारिक तनाव कम होता है। 178 उत्तरदाताओं 59.33 प्रतिशत के मतानुसार चुगलखोरी न करने से पारिवारिक तनाव कम होता है। इसी प्रकार 175 उत्तरदाता 58.33 प्रतिशत मानते थे कि परस्त्रीगमन न करने से भी पारिवारिक तनाव कम होता है।

तालिका संख्या-68

पारिवारिक तनाव कम करने के धार्मिक क्रियाकलाप सम्बन्धी सुझावों का विवरण

क्र. सं.	धार्मिक क्रियाकलाप	हां	नहीं	योग (%)
1.	सतसंगों में सहभागिता	160 (53.33:)	140 (46. 67%)	300 (100%)
2.	कल्याणकारी कार्य	173 (57.67%)	127 (42.33%)	300 (100%)
3.	तीर्थ स्थलों का दर्शन	164 (54.67%)	136 (45.33%)	300 (100%)
4.	धार्मिक शास्त्रों का पाठन	180 (60%)	120 (40%)	300 (100%)
5.	साधना शिविरों में अभ्यास	178 (59.33%)	122 (40.67%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 180 उत्तरदाता 60 प्रतिशत मानते थे कि धार्मिक शास्त्रों को पढ़ने से पारिवारिक तनाव कम होता है। 178 उत्तरदाताओं 59.33 प्रतिशत की राय थी कि साधना शिविरों के अभ्यास करने से पारिवारिक तनाव कम होता है । 173 उत्तरदाताओं 57.67 प्रतिशत के मतानुसार कल्याणकारी कार्यों के निष्पादन से पारिवारिक तनाव तथा झगड़े कम होते हैं। 164 उत्तरदाताओं 54.67 प्रतिशत के अनुसार धार्मिक स्थलों के दर्शनों से पारिवारिक तनाव कम होता है। इसी प्रकार 160 उत्तरदाताओं 53.33 प्रतिशत मानना था कि सत संगों में सहभागिता से पारिवारिक तनाव तथा झगड़े कम होते हैं।

तालिका संख्या-69

पारिवारिक तनाव कम करने के सामाजिक क्रियाओं सम्बन्धी सुझावों का विवरण

क्र. सं.	सामाजिक क्रियाएँ	हां	नहीं	योग (%)
1.	सन्दर्भ समूहों के मध्य विचार विमर्श	198 (66%)	102 (34%)	300 (100%)
2.	सांस्कृतिक आयोजना में सहभागिता	190 (63.33%)	110 (36.67%)	300 (100%)
3.	भूल-सुधार प्रक्रिया	209 (69.67%)	91 (30.33%)	300 (100%)
4.	अन्त क्रियाओं में अहस्तक्षेप	195 (65%)	105 (35%)	300 (100%)
5.	सकारात्मक अवलोकन	205 (68.33%)	95 (31.67%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पारिवारिक तनाव कम करने सम्बन्धी सामाजिक क्रियाओं के सन्दर्भ में 209 उत्तरदाताओं 69.67 प्रतिशत की राय थी कि भूल-सुधार प्रक्रिया से पारिवारिक तनाव कम होता है। 205 उत्तरदाता 68.33 प्रतिशत मानते थे कि सकारात्मक अवलोकनों से भी तनाव कम होता है। 198 उत्तरदाता 66 प्रतिशत मानते थे कि आयु व सन्दर्भ समूहों के मध्य विचार-विमर्श करने से भी पारिवारिक तनाव तथा झगड़े कम होते हैं। 195 उत्तरदाताओं 65 प्रतिशत के मतानुसार अन्तःक्रियाओं में हस्तक्षेपों को न्यूनतम कर देने से भी पारिवारिक तनाव तथा झगड़े कम होते हैं। इसी तरह 190 उत्तरदाताओं 63.33 प्रतिशत का मानना था कि सांस्कृतिक आयोजनों में सहभागिता बढ़ाने से भी पारिवारिक तनाव तथा झगड़े कम होत हैं।

तालिका संख्या-70

पारिवारिक तनाव कम करने के मनोवैज्ञानिक क्रिया सम्बन्धी सुझावों का विवरण

क्र. सं.	मनोवैज्ञानिक सुझाव	हां	नहीं	योग (%)
1.	मनोवैज्ञानिक परामर्श	208 (69.33%)	92 (30.67%)	300 (100%)
2.	धैर्य धारण	199 (66.33%)	101 (33.67%)	300 (100%)
3.	मै ठीक-तुम भी ठीक की सोच	215 (71.67%)	85 (28.33%)	300 (100%)
4.	वर्तमान में जीना	186 (62%)	114 (38%)	300 (100%)
5.	पारस्परिक समझ	205 (68.33%)	95 (31.67%)	300 (100%)

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 215 उत्तरदाता 71.67 प्रतिशत मानते थे कि 'मैं भी ठीक हूँ और आप भी ठीक हैं' की सोच से पारिवारिक तनाव कम होता है। 208 उत्तरदाताओं 69.33 प्रतिशत के अनुसार मनोवैज्ञानिक परामर्श लेने से भी पारिवारिक तनाव कम होता है। 205 उत्तरदाता 68.33 प्रतिशत मानते थे कि पारस्परिक समझ तनावों को कम करती है। 199 उत्तरदाताओं 66.33 प्रतिशत के मतानुसार धैर्य रखने से भी पारिवारिक तनाव कम होता है तथा 186 उत्तरदाताओं 62 प्रतिशत का मानना था कि वर्तमान में ही जीने से भी पारिवारिक तनाव तथा झगड़े कम होते हैं।

तालिका संख्या-71

पारिवारिक तनाव कम करने के सांस्कृतिक क्रियाओं सम्बन्धी सुझावों का विवरण

क्र. सं.	सांस्कृतिक क्रियाऐं	हां	नहीं	योग (%)
1.	गीत-संगीत कार्यक्रम	213 (71%)	87 (29%)	300 (100%)
2.	खेल प्रतियोगिता दर्शन	184 (61.33%)	116 (38.67%)	300 (100%)
3.	रेडियों/दूरदर्शन देखना/सुनना	192 (64%)	108 (36%)	300 (100%)
4.	ललित कलाओं का सृजन	202 (67.33%)	98 (32.67%)	300 (100%)
5.	समालोचनात्मकता	179 (59.67%)	121 (40.33%)	300 (100%)

प्रस्तुत सारणी से ज्ञात होता है कि 213 उत्तरदाता 71 प्रतिशत मानते थे कि गीत-संगीत के कार्यक्रम पारिवारिक तनाव को कम करते हैं। 202 उत्तरदाताओं 67.33 प्रतिशत की राय थी कि ललित कलायें तनाव को कम करती हैं। 192 उत्तरदाताओं 64 प्रतिशत के मतानुसार रेडियो/दूरदर्शन के सुनने-देखने से तनाव से मुक्ति मिलती है। 184 उत्तरदाताओं 61.33 प्रतिशत का मानना था कि खेल से भी पारिवारिक तनाव दूर होता है तथा 179 उत्तरदाता 59.67 प्रतिशत मानते थे कि समालोचनात्मकता से भी पारिवारिक तनाव तथा झगड़े कम होते हैं।

अध्याय - 10

शोधाध्ययन के निष्कर्ष

- ❖ सारांश
- ❖ कठिनाईयाँ
- ❖ समाधान

अध्याय - 10

शोधाध्ययन के निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव एवं विघटन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन था, जिसके अध्यनार्थ शोधार्थी ने उत्तर प्रदेश के जनपद झाँसी नगर क्षेत्र की तीन आवासी कालोनियों में जहां मध्यम-वर्गीय परिवार प्रचूर मात्रा में निवास करते थे, वहां किया गया था जिसमें क्रमशः झाँसी नगर के पूरब में शिवाजी नगर, पश्चिम में नन्दनपुरा में स्थित आवास-विकास, के0 के0 पुरी तथा संगम बिहार व नगर के मध्य में सिविल लाइन शामिल थे। जनसंख्या वितरण की दृष्टि से शिवाजी नगर में 300 परिवार, नन्दन पुरा क्षेत्र की आवास-विकास में 300 परिवार, के0 के0 पुरी में 200 परिवार, संगम बिहार में 200 परिवार तथा सिविल लाइन में लगभग 1000 परिवार (योग-2000 परिवार) में से 15 प्रतिशत प्रत्येक से 300 मध्यम वर्गीय परिवारों का निदर्शन आकार शोध हेतु रेन्डम विधि की लॉटरी पद्धति से किया गया ताकि मध्यम वर्गीय परिवारों का उनके आयु, आय, व्यवसाय तथा जाति का प्रतिनिधित्व हो सके। इस शोध में प्राथमिक आंकड़ों का संकलन तथा क्षेत्रीय कार्य पूर्व परीक्षित एवं संचरित 'साक्षात्कार अनुसूची' द्वारा साक्षात्कार की प्रत्यक्ष पूछताछ प्रणाली एवं असहभागी अवलोकन प्रविधि द्वारा किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य अन्वेषणात्मक प्ररचना पर आधारित था।

पूर्व एवं पूर्वोत्तर समय में मध्यम वर्गीय परिवार अस्तित्व में थे और भावी काल में भी विद्यमान रहेगें। प्राय देखा गया है कि मध्यम वर्गीय परिवारों के ढांचे एवं प्रकार्य में सामाजिक परिवर्तन अधिक पाये जाते हैं। उनकी उच्च शिक्षा, नगरों में निवास, महत्वाकांक्षी प्रवृत्ति, सब कुछ प्राप्त करने हेतु सामाजिक प्रतियोगिता एवं संघर्ष ने उन्हें निम्न एवं उच्च परिवारों की तुलना में अधिक प्रभावित किया है। परन्तु आज स्थिति कुछ अधिक ही बदली हुई है क्योंकि उनमें

कई सामाजिक आर्थिक, पारिवारिक तथा सांस्कृतिक कारकों के कारण उनके परिवारीजनों के मध्य पाई जाने वाली अंतःक्रिया में सामाजिक सम्बन्धों की व्यवस्थापन, आत्मसातीकरण तथा सहयोग प्रक्रिया की तुलना में आज प्रतियोगिता व संघर्ष प्रक्रिया ने अग्रणी बनकर नकारात्मक प्रभाव डाला है जिसे हम तनाव तथा विघटन के रूप में पाते हैं।

इस शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य- (1)मध्यम वर्गीय परिवारों की सामाजिक, आर्थिक तथा जनांककीय का अध्ययन, (2) तनाव के कारक, (3) विघटन के कारक, (4) तनाव व विघटन का व्यक्ति-परिवार तथा समाज पर प्रभाव, (5) अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में तनाव अधिक क्यों पाया जाता है तथा (6) मध्यम वर्गीय परिवारों के अनुसार तनाव तथा विघटन रोकने हेतु सुझावों को एकत्र करना था।

इस शोध कार्य के निष्कर्ष निम्नलिखित हैं -

<u>(क) मध्यम वर्गीय परिवारों की सामाजिक-आर्थिक एवं जनांककीय विशेषताओं सम्बन्धी निष्कर्ष :-</u>

1.1 आयु वर्ग : मध्यम वर्गीय परिवारों के चयनित उत्तरदाता 99सर्वाधिक का आयुवर्ग 41-45 वर्ष 33 प्रतिशत, 36-40 वर्ष 19 प्रतिशत, 51-55 वर्ष 18 प्रतिशत, तथा 46-50 वर्ष 10 प्रतिशत था।

1.2 लिंग : उत्तरदाताओं में 183 अधिकांश 61 प्रतिशत पुरूष एवं 117 महिलाऐं 39 प्रतिशत थी।

1.3 शैक्षिक स्तर : उत्तरदाताओं में 210 सर्वाधिक 70 प्रतिशत स्नातक, 20 प्रतिशत परास्नातक शेष 10 प्रतिशत इन्टर तक की योग्यताएं रखते थे।

1.4 जाति : उत्तरदाताओं में 162 अधिकांश 54 प्रतिशत सामान्य जाति के, 26 प्रतिशत अन्य पिछड़े वर्ग तथा 20 प्रतिशत अनुसूचित जाति के थे।

1.5 धर्म : चयनित 300 उत्तरदाताओं में 200 सर्वाधिक 66.67 प्रतिशत हिन्दू, 25 प्रतिशत मुसलिम, 5.67 प्रतिशत सिख तथा 2.66 प्रतिशत ईसाई धर्म के अनुयाई थे।

1.6 व्यवसाय : उत्तरदाताओं में 231 सर्वाधिक 77 प्रतिशत सरकारी अधिकारी (नौकरी) तथा 23 प्रतिशत व्यापारी थे।

1.7 मासिक आय : चयनित 300 निदर्शनों में 99 अधिकांश 33 प्रतिशत की मासिक आय रू0 25-30 हजार, 25 प्रतिशतों की रू0 30-35 हजार, 69 उत्तरदाताओं 23 प्रतिशत की रू0 21-25 हजार, 11 प्रतिशतों की आय रू0 15-20 हजार तथा शेष 8 प्रतिशत की मासिक आय रू0 35-40 हजार थी।

1.8 वैवाहिक स्तर : 243 सर्वाधिक चयनित उत्तरदाता 81 प्रतिशत विवाहित, 10 प्रतिशत पृथककरण तथा शेष 9 प्रतिशत तलाक सुदा थे।

1.9 जीवित बच्चे : उत्तरदाताओं में 144 अधिकांश 48 प्रतिशत के 2 जीवित बच्चे, 34 प्रतिशत के 3 जीवित बच्चे तथा 14 प्रतिशत के 4 जीवित बच्चे थे।

1.10 विवाह का प्रकार : 150 सर्वाधिक 50.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने परम्परागत विवाह रचा, 30.00 प्रतिशत ने प्रेम विवाह (संगठित) तथा 20.00 प्रतिशतों ने कोर्ट मैरिज की।

1.11 परिवार का स्वरूप : 300 चयनित परिवारों में से 258 उत्तरदाताओं 86 प्रतिशत एकांकी परिवार, 42 उत्तरदाता 14 प्रतिशत संयुक्त परिवार में रहते थे।

1.12 आवासीय दशा : उत्तरदाताओं में 258 सर्वाधिक आराम दायक आवासीय दशाओं में रहते थे 42 उत्तरदाता 14 प्रतिशत सन्तोषजनक आवासीय दशा में रहते थे।

1.13 सूचना श्रौत्र : सत प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास सूचना श्रौत्रों के रूप में समाचार पत्र, टी0वी0, रेडियों तथा टेलीफोन व मुबाइल उपलब्ध थे। 68

उत्तरदाता उपरोक्त के अतिरिक्त पत्रिकाएं तथा 33 उत्तरदाता सिनेमाओं से भी सूचना ग्रहण करते थे।

(ख) मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव-ग्रस्तता की स्वीकरोक्ति स्तर तथा उत्तरदाई कारकों सम्बन्धी निष्कर्ष :-

2.1 सर्वाधिक 270 उत्तरदाता 90 प्रतिशत अपनी तीव्र गति से भागती जिन्दगसे तनाव ग्रस्तता की अनुभूति करते थे।

2.2 जब उनसे तनाव की सीमा के बारे में पूछा गया तो 146 सर्वाधिक 48.67 प्रतिशत उत्तरदाता तनाव का स्तर 'अधिक', 86 उत्तरदाता 28 प्रतिशत 'कम' तथा 40 उत्तरदाता 13.33 प्रतिशत सामान्य तनाव को महसूस करते थे।

2.3 तनाव के उद्‌भव सम्बन्धी समस्याओं का विवरण मांगने पर उत्तरदाता ने पति-पत्नी के बीच समस्याओं को 85 प्रतिशत , घर में किसी के व्यवहार को लेकर 79 प्रतिशत, घर में किसी की बीमारी तथा पुत्र की बेरोजगारी को लेकर क्रमशः 70 प्रतिशत, पुत्री की शादी को लेकर 60 प्रतिशत तथा अन्य 30 प्रतिशत समस्याओं को उत्तरदाई माना।

2.4 उत्तरदाताओं में आपसी 'कहा-सुनी' के सामान्य मुद्दों में 108 सर्वाधिक 36 प्रतिशत कार्यो का असहयोग, 36 प्रतिशत पारस्परिक हस्तक्षेप, 17 प्रतिशत पति का मद्यपान तथा 15 प्रतिशत पारिवारिक उत्तरदायित्व हीनता को स्वीकार किया।

2.5 उत्तरदाताओं में परिवार में 'कहा-सुनी' के विशेष मुद्दे क्रमशः 45.33 प्रतिशत स्वार्थीपन, 31.33 प्रतिशत धन सम्बन्धी मामले, 11.67 पति की विलम्ब से घर वापसी तथा घर से अधिक 'मित्रों का प्राथमिकता' प्रदान करना पाये गये।

2.6 मध्यम वर्गीय परिवारों में "कहा-सुनी" की समाप्ति 30.67 सहनशीलता से, 23 प्रतिशत पति द्वारा डाट-डपट से, 19 प्रतिशत चेतावनी देकर, 15 प्रतिशत मारपीट कर तथा 12.33 गाली-गलौज देकर होती थी।

2.7 मध्यम वर्गीय परिवार में 'तना-तनी' के मध्य 66.67 प्रतिशत 'घरवाले', 21 प्रतिशत पड़ोसी तथा 12.33 प्रतिशत रिस्तेदार हस्तक्षेपक की भूमिका निभाते थे।

2.8 पारिवारिक पति-पत्नी के मध्य 'तना-तनी' के मामले 86.67 प्रतिशत पास के थानों में रिपोर्ट नहीं होते थे परन्तु चयनित उत्तरदाताओं में 13.33 प्रतिशत ऐसे थे जिन्होंने थानों में पहुंच की थी।

2.9 पुलिस थानों में रिपोर्ट के कारण 21 प्रतिशत उत्तरदाताओं के न्यायालयों में कैसेज दायर किए गये।

2.10 न्यायालयों के विचाराधीन प्रकरणों में से 28.50 प्रतिशत के पति-पत्नी के मध्य 'राजीनामे' , 28.50 प्रतिशत के पृथककरण 18.54 प्रतिशत तलाक तथा 17.46 प्रतिशत केश न्यायालय में चलने के परिणाम थे।

2.11 उत्तरदाताओं ने कटु प्राथमिक सम्बन्धों में सास-बहू के 68 प्रतिशत विपरीत सम्बन्धों , देवरानी-जिठानी में 67 प्रतिशत विपरीत सम्बन्धों को, 62 प्रतिशत ननद-भावज के विपरीत सम्बन्धों को, 61.67 प्रतिशत दो भाइयों के बीच विपरीत सम्बन्धों को, तथा 59.67 प्रतिशत माता-पिता व सन्तानों के बीच विपरीत सम्बन्धों को तनाव के कारक बतलाये।

2.12 मध्यम वर्गीय परिवारों में निम्न मनोवैज्ञानिक कारक तनाव के उत्तरदाई पाये गये जिनमें 79 प्रतिशत पति या पत्नी में से एक की झगड़ालू प्रवृत्ति, 53 प्रतिशत एक-दूजे के प्रति घृणा भाव का प्रदर्शन, 61 प्रतिशत परस्पर आलोचना करना, 59.67 प्रतिशत पति-पत्नी का सरलता से क्रोधित हो जाना तथा 59.67 प्रतिशत पति-पत्नी में से किसी एक की भावुकता/वहकावे में आने सम्बन्धी थे।

2.13 मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव प्राथमिक सम्बन्धों में कटुता के कारण भी उभरते हैं जैसाकि 68 प्रतिशत उत्तरदाता सास-बहू के विपरीत सम्बन्ध के प्रति, 67 प्रतिशत देवरानी-जिठानी , 62.67 प्रतिशत ननद-भावज, 61.67 प्रतिशत दो भाईयों के विपरीत सम्बन्ध तथा 59.67 प्रतिशत माता-पिता व सन्तान के विपरीत सम्बन्धी कारकों से सहमत थे।

2.14 पति की आदतों के कारण मध्यम वर्गीय परिवार में तनाव के निम्न कारक पाये गये- 196 उत्तरदाता 65.33 प्रतिशत घर बिलम्ब से लौटना, 62.67 प्रतिशत पति की मद्यपानी आदत, 62 प्रतिशत पत्नी की पति द्वारा उपेक्षा करना, 61 प्रतिशत बात-बात में पत्नी को टोकना-डाटना, 57 प्रतिशत पति का धूम्रपानी तथा 57 प्रतिशत पति का जुआरी होना के कतिपय कारकों से उत्तरदाताओं ने सहमत व्यक्त की।

2.15 पत्नी का व्यवहार भी मध्यम वर्गीय परिवार में तनाव का कारण पाया गया। जिन कारकों के प्रति उत्तरदाताओं ने सहमत व्यक्त की उनमें पति द्वारा पत्नी को बाहर घुमाने की जिद पूरा न करना 65 प्रतिशत, पत्नी का सन्देहीपन 57 प्रतिशत, पत्नी द्वारा पति को बिना पूछ कार्य कर लेना 54 प्रतिशत, तथा पत्नी द्वारा मायके की प्रशंसा करना 53 प्रतिशत आदि कारक थे।

2.16 मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव के प्रसंग में सांस्कृतिक कारकों की भूमिका अवलोकन को आत्मसात हुई। जिसमें 72.33 प्रतिशत उत्तरदाता पति-पत्नी के विश्वासों में भिन्नता को, 69 प्रतिशत उत्तरदाता आपसी आराम को, 62.33 प्रतिशत उत्तरदाता सम्पत्ति को लेकर, 62 प्रतिशत उत्तरदाता परिवार नियोजन को तथा 52 प्रतिशत उत्तरदाता बच्चों के शैक्षिक विषयों का तनाव के कारक मानते थे।

2.17 मध्यम वर्गीय परिवारों में तनाव की पृष्ठभूमि में आर्थिक कारकों की भूमिका महत्वपूर्ण पायी गई जिसमें 67 प्रतिशत उत्तरदाता पति की पत्नी

पर अधिक आत्मनिर्भरता, 58 प्रतिशत क्रमशः कुसमय पति के व्यवसाय की असफलता व पत्नी का काम-काजी होना, 55 प्रतिशत पति की ऋणग्रस्तता, 54 प्रतिशत पति का अस्थाई व्यवसाय तथा 52 प्रतिशत पति-पत्नी दोनों का काम-काजी होना आदि कारक उत्तरदाई थे।

2.18 मध्यम वर्गीय परिवारों में पारिवारिक तनाव में जैवकीय कारकों का भी योगदान पाया गया जिसमें 60 प्रतिशत पति की नपुसंकता, 57 प्रतिशत पत्नी का बांझपन, 52 प्रतिशत पति-पत्नी के मध्य असन्तोष पूर्ण यौन सम्बन्ध तथा 49 प्रतिशत लड़की जनना कारकों की मुख्य भूमिका पाई गई।

2.19 शोधार्थी द्वारा मध्यम वर्गीय परिवारों में पारिवारिक तनाव के जब अन्य कारकों का अन्वेषण किया तो 68.34 प्रतिशत ने पति-पत्नी में किसी एक का दुर्वल स्वास्थ को, 68 प्रतिशत ने क्रमशः वैवाहिक असन्तोष व पति-पत्नी की आयु में अधिक अन्तर तथा 58 प्रतिशत ने "अधिक सन्तानों" को तनाव के कारकों में पहिचान की।

3.0 <u>मध्यम वर्गीय परिवारों में पारिवारिक विघटन के उत्तरदाई कारकों सम्बन्धी निष्कर्ष :-</u>

3.1 <u>पारिवारिक विघटन के वैयक्तिक कारक :</u>

❖ 222 सर्वाधिक उत्तरदाता 74 प्रतिशत ने पारिवारिक विघटन के लिए पति द्वारा मद्यपान करना माना,

❖ 72 प्रतिशत सूचनादाता पारिवारिक विघटन के लिए पति-पत्नी का विपरीत दृष्टिकोण का मानते थे,

❖ 67 प्रतिशत उत्तरदाता पारिवारिक विघटन के लिए पति की धूत क्रीड़ा को उत्तरदाई मानते थे,

❖ 66 प्रतिशत सूचनादाता ने 'अपव्ययी पति' को पारिवारिक विघटन का कारक मानते थे तथा

❖ 53 प्रतिशत उत्तरदाता 'परस्त्रीगमन' का परिवार विघटन का कारण स्वीकार करते थे।

3.2 <u>पारिवारिक विघटन में पारिवारिक तनाव की भूमिका :</u>

❖ 238 उत्तरदाताओं 79.33 प्रतिशत ने पारिवारिक विघटन के लिए पति-पत्नी के जीवन उद्देश्यों को उत्तरदाई बताया,

❖ 75 प्रतिशत सूचनादाताओं ने पारस्परिक कार्यों में असहयोग को परिवार विघटन का कारक माना,

❖ 70 प्रतिशत उत्तरदाता पति-पत्नी के बीच सहानुभूति को परिवार विघटन का कारक मानते थे,

❖ 64.33 प्रतिशत ने घर में कल्याण कारी सेवाओं को पति के द्वारा न करने को पारिवारिक विघटन का कारक माना तथा

❖ 59.33 प्रतिशत सूचनादाता पति-पत्नी की पारस्परिक सन्देहात्मक उदासीनता का पारिवारिक विघटन का कारक मानते थे।

3.3 <u>पारिवारिक विघटन में परिवार के कार्यों में परिवर्तन की भूमिकाः</u>

❖ 234 उत्तरदाता पारिवारिक विघटन का कारक पति-पत्नी द्वारा उत्तरदायित्वहीनता को अंकित करते थे ,

❖ 62.33 प्रतिशत सूचनादाता पारिवारिक विघटन का कारण पति-पत्नी की निर्भरता में कमी का मानते थे तथा

❖ 57.33 प्रतिशत उत्तरदाता पत्नी की राजनीति में सहभागिता को परिवार विघटन का कारक मानते थे।

3.4 पारिवारिक विघटन में परिवार संरचना में परिवर्तन :

❖ 207 उत्तरदाता 69 प्रतिशत की पति द्वारा अलग से अस्थाई परिवार बना लेने से परिवार विघटन हो जाता है,

❖ 65 प्रतिशत उत्तरदाता परिवार विघटन के लिए पत्नी की भूमिका में बहुलता, तथा पश्चिमी करण का मानते थे ,

- ❖ 58 प्रतिशत सूचनादाता का मानना था कि पति की सत्ता के ह्रास होने के कारण परिवार विघटित हो रहे है तथा
- ❖ 56 प्रतिशत सूचनादाता एकांकी परिवार की स्थापना पर बल देने को पारिवारिक विघटन का कारक मानते थे।

3.5 <u>पारिवारिक विघटन पर सामाजिक कारकों का प्रभाव :</u>

- ❖ 223 उत्तरदाता 74.33 प्रतिशत महिलाओं की अन्तःक्रिया में वृद्धि को पारिवारिक विघटन का कारक मानते थे,
- ❖ 72 प्रतिशत सूचनादाता जनसंख्या की गतिशीलता को पारिवारिक विघटन का कारक मानते थे,
- ❖ 66 प्रतिशत उत्तरदाता महिला उच्च शिक्षा को पारिवारिक विघटन का कारक बताते थे,
- ❖ 59.33 प्रतिशत सूचनादाता औद्योगीकरण तथा नारीकरण को पारिवारिक विघटन का कारक मानते थे तथा
- ❖ 53 प्रतिशत उत्तरदाता वित्त वाणिज्य मनोरंजनों का पारिवारिक विघटन का कारण मानते थे।

3.6 <u>पारिवारिक विघटन के आर्थिक कारक :</u>

- ❖ 208 उत्तरदाता 69 प्रतिशत "परिवार की निर्धनता" को पारिवारिक विघटन का कारक मानते थे,
- ❖ 64 प्रतिशत सूचनादाता 'पत्नी की पति पर अधिक निर्भरता' को पारिवारिक विघटन का कारण मानते थे,
- ❖ 60 प्रतिशत उत्तरदाता 'पति की बेरोजगारी' को पारिवारिक विघटन का कारक स्वीकारते थे तथा
- ❖ 59.33 प्रतिशत उत्तरदाता क्रमशः 'पत्नी की आर्थिक स्वतंत्रता' को तथा परिवार की आय के साधनों की विफलता को पारिवारिक विघटन का कारक मानते थे।

3.7 <u>परिवार विघटन के मनोविकार व्यक्तित्व के कारक :</u>

❖ 232 उत्तरदाता 77.33 प्रतिशत पत्नी को दैनिक गाली-गिलौज करने को पारिवारिक विघटन का कारक मानते थे,

❖ 68 प्रतिशत सूचनादाता "पति का क्रूरता" को पारिवारिक विघटन का कारण मानते थे,

❖ 60.33 प्रतिशत पति द्वारा पत्नी संग शारीरिक हिंसा को पारिवारिक विघटन का कारक मानते थे,

❖ 58 प्रतिशत सूचनादाता "पति के अहमवादी" व्यक्तित्व का परिवार विघटन का कारण स्वीकार करते थे तथा

❖ 53 प्रतिशत उत्तरदाता पति या पत्नी का मिर्गी/दौड़े पडने को पारिवारिक विघटन का कारण मानते थे।

3.8 <u>पारिवारिक विघटन का पति-पत्नी के बीच तनाव एक कारक :</u>

❖ 213 उत्तरदाता 71 प्रतिशत पति-पत्नी के व्यवहार प्रतिमानों में भिन्नता को,

❖ 70.33 प्रतिशत सूचनादाता पति-पत्नी के परस्पर विरोधी स्वभाव को,

❖ 60 प्रतिशत उत्तरदाता "वैवाहिक असन्तोष" को

❖ 58.67 प्रतिशत पति-पत्नी में से किसी एक की व्यक्तिवादिता को तथा

❖ 59 प्रतिशत उत्तरदाता "यौन असन्तोष" को पारिवारिक विघटन का कारक मानते थे।

4.0 <u>पारिवारिक तनाव का व्यक्ति-परिवार व समाज पर प्रभाव सम्बन्धी निष्कर्षो का विवरण :-</u>

(क). <u>व्यक्ति पर प्रभाव :</u> उत्तरदाताओं ने पारिवारिक तनाव का व्यक्ति की जीवन शैली पर किस स्तर का प्रभाव पड़ता है जिसमें उनके अनुसार

4.1 उत्तरदाताओं से जब पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के ऊपर कितना और किस पक्ष पर प्रभाव पड़ता है तो उन्होंने व्यक्ति की जीवन पर प्रभाव बताया और उसके कतिपय पक्षों पर प्रभाव बताया।

❖ 231 उत्तरदाता 77 प्रतिशत के मतानुसार पारिवारिक तनाव से व्यक्ति की उत्तरदायित्व हीनता में वृद्धि होती है,

❖ 74 प्रतिशत सूचनादाता मानते थे कि पारिवारिक तनाव से व्यक्ति में व्यक्तिवादिता का विकास हो जाता हैं,

❖ 68 प्रतिशत उत्तरदाताओं की राय थी कि पति-पत्नी में पारस्परिक विश्वास की कमी आ जाती है,

❖ 64.33 प्रतिशत सूचनादाताओं का मत था कि पारिवारिक तनाव पति-पत्नी के मध्य आपसी घृणा-द्वेष उत्पन्न हो जाता है,

❖ 61 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि पति-पत्नी के यौन सम्बन्धों में अधिक प्रभाव पड़ता है,तथा

❖ 58 प्रतिशत सूचनादाताओं की राय थी कि पारिवारिक तनाव पारस्परिक दृष्टिकोण में अधिक परिवर्तन आ जाता है।

4.2 पारिवारिक तनाव का उत्तरदाताओं ने व्यक्ति के मानसिक व्यवहार के निम्न पक्षों पर अधिक प्रभाव बताया :

❖ 201 सूचनादाताओं ने 67 प्रतिशत ने मनोविकृति में वृद्धि बताई,

❖ 192 उत्तरदाता 64 प्रतिशत ने पारिवारिक तनाव से मानसिकता कमजोर होना बताया,

❖ 61.67 प्रतिशत सूचनादाताओं ने बताया कि पारिवारिक तनाव से व्यक्ति में अलगांव पनपता है,

❖ 63 प्रतिशत उत्तरदाता ने स्वीकार किया कि पारिवारिक तनाव से स्मृति में ह्रास हो जाता है,

- ❖ 58.33 प्रतिशत सूचनादाताओं की राय थी कि व्यक्ति में दुराचार का पारिवारिक तनाव में प्रोत्साहन मिलता है तथा
- ❖ 52 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि पारिवारिक तनाव के कारण व्यक्ति में भ्रांतियों की वृद्धि होती है।

4.3 <u>पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के स्वास्थ्य पर प्रभाव :</u>

जब सूचनादाताओं से पारिवारिक तनाव का स्वास्थ्य के किस पहलू पर कितना प्रभाव पड़ता है?

- ❖ 220 उत्तरदाताओं 73.33 प्रतिशत ने पारिवारिक तनाव का 'रोग उपचार में आलसीपन' का अधिक प्रभाव बताया,
- ❖ 66 प्रतिशत सूचनादाताओं की राय थी कि पारिवारिक तनाव के प्रभाव से व्यक्तिगत अस्वच्छता की आदत का अधिक उदय होता है,
- ❖ 63 प्रतिशत उत्तरदाता पारिवारिक तनाव से व्यक्ति में कुपोषण में अधिक वृद्धि होती है ऐसा मत व्यक्त किया तथा
- ❖ 69.33 प्रतिशत ने पारिवारिक तनाव का क्रमशः व्यक्ति का स्वास्थ्य जागरूकता में अभाव को तथा कुसमय व्यक्ति द्वारा भोजन करने के अधिक प्रभाव को बताया।

4.4 <u>पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के व्यवहार प्रतिमानों पर प्रभाव :</u>

- ❖ 192 उत्तरदाताओं 64 प्रतिशत ने पारिवारिक तनाव से व्यक्ति के व्यवहार में अधिक अशिष्टता को आना बताया,
- ❖ 63.34 प्रतिशत सूचनादाताओं की राय थी कि पारिवारिक तनाव से व्यक्ति अधिकतर दूसरों के साथ अपने को समायोजित करने में असमर्थ हो जाता है,
- ❖ 62.34 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पारिवारिक तनाव से व्यक्ति हर किसी से विवाद की अधिक स्थिति उत्पन्न कर लेता है,

- ❖ 60 प्रतिशत उत्तरदाता पारिवारिक तनाव से व्यक्ति में समरसता की अधिक कमी होना मानते थे,
- ❖ 54.34 प्रतिशत सूचनादाता का मानना था कि पारिवारिक तनाव से व्यक्ति में सभ्य व्यवहार की अधिक कमी आ जाती है तथा
- ❖ 51.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि पारिवारिक तनाव निर्णयों को अधिक कुप्रभावित करता है।

4.5 <u>पारिवारिक तनाव का व्यक्ति की व्याधिकी पर प्रभाव :</u>

- ❖ 213 उत्तरदाता 71 प्रतिशत ने पारिवारिक तनाव का व्यक्ति की शारीरिक क्षति में अधिक वृद्धि होना माना,
- ❖ 67.67 प्रतिशत सूचनादाताओं ने स्वीकार किया कि पारिवारिक तनाव व्यक्ति में मद्यपान की वृत्ति में अधिक प्रभावी होता है,
- ❖ 65 प्रतिशत उत्तरदाता पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के व्यवहार में अधिक उत्तेजना के लिए उत्तरदाई मानते थे,
- ❖ 62 प्रतिशत उत्तरदाता पारिवारिक तनाव का व्यक्ति में अधिक द्यूतक्रीड़ा करने का प्रेरक मानते थे,
- ❖ 60.67 प्रतिशत उत्तरदाता की राय थी कि पारिवारिक तनाव से व्यक्ति के व्यक्तित्व में सन्देहीपन अधिक उभरता है तथा
- ❖ 59.34 प्रतिशत मानते थे कि पारिवारिक तनाव व्यक्ति की अपराध वृत्ति में अधिक वृद्धि करता है।

4.6 <u>पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के आर्थिक व्यवहार पर प्रभाव :</u>

- ❖ 69.33 प्रतिशत उत्तरदाता कार्य में व्यक्ति की अधिक अनुपस्थिति, को पारिवारिक तनाव का प्रभाव मानते थे,
- ❖ 63.34 प्रतिशत सूचनादाता व्यक्ति में समय की पाबन्दी में अधिक कमी को पारिवारिक तनाव के प्रभाव को स्वीकारते थे,

❖ 60 प्रतिशत उत्तरदाता व्यक्ति के व्यवसाय में अरूचि में वृद्धि को पारिवारिक तनाव का प्रभाव आंकते थे,

❖ 59 प्रतिशत सूचनादाता व्यक्ति की 'साख में अधिक कमी' का पारिवारिक तनाव का प्रभाव मानते थे,

❖ 58.33 प्रतिशत उत्तरदाता व्यक्ति के आर्थिक स्तर में अधिक गिरावट को पारिवारिक तनाव का प्रभाव स्वीकार करते थे तथा

❖ 52 प्रतिशत सूचनादाता व्यक्ति की ऋणग्रस्ता में अधिक वृद्धि को पारिवारिक तनाव का प्रभाव ही मानते थे।

4.7 पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के नैतिक मूल्यों पर प्रभाव :

❖ 62.34 प्रतिशत उत्तरदाता मानते थे कि पारिवारिक तनाव के प्रभाव से व्यक्ति में वृद्धजनों के प्रति आदरभाव में अधिक अभाव हो जाता है,

❖ 61 प्रतिशत सूचनादाता ने स्वीकार किया कि पारिवारिक तनाव के प्रभाव से व्यक्ति की अव्यवहारिकता में अधिक वृद्धि हो जाती है,

❖ 59.67 प्रतिशत उत्तरदाता की राय थी कि पारिवारिक तनाव से व्यक्ति पाप कर्मो की ओर अधिक अग्रसर होने लगता है,

❖ 59 प्रतिशत उत्तरदाता मानते थे कि पारिवारिक तनाव के प्रभाव से व्यक्ति सामाजिक बन्धनों की अधिक अवहेलना करता है,

❖ 58.33 प्रतिशत सूचनादाता का विश्वास था कि पारिवारिक तनाव के प्रभाव से ही व्यक्ति में पूजा-पाठ के प्रति अरूचि बड़ती है तथा,

❖ 55.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मान्यता थी कि पारिवारिक तनाव के प्रभाव से व्यक्ति धार्मिक कार्यो में अधिक असहभागिता करता है।

4.8 पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव :

❖ 68 प्रतिशत उत्तरदाता का मानना था कि पारिवारिक तनाव अधिक दवाब में वृद्धि करता है,

❖ 66 प्रतिशत सूचनादाता की राय थी कि पारिवारिक तनाव व्यक्ति की चिन्ता में अधिक वृद्धि करता है,

❖ 60.67 प्रतिशत उत्तरदाता मानते थे कि पारिवारिक तनाव व्यक्ति के चिडचिडापन में अधिक वृद्धि करता है,

❖ 58.67 प्रतिशत सूचनादाता ने स्वीकार किया कि पारिवारिक तनाव व्यक्ति की अर्न्तद्वन्द में अधिक वृद्धि करता है,

❖ 58 प्रतिशत उत्तरदाता से ज्ञात हुआ कि पारिवारिक तनाव व्यक्ति की बुद्धि ह्रास को अधिक प्रभावित करता है तथा

❖ 57.34 प्रतिशत मानते थे कि पारिवारिक तनाव व्यक्ति के क्रोध में अधिक वृद्धि करता है।

पारिवारिक तनाव का परिवार पर प्रभाव सम्बन्धी निष्कर्ष

(ख) परिवार पर प्रभाव :

4.2.1 पारिवारिक तनाव का बच्चों के समाजीकरण पर प्रभाव :

❖ 69 प्रतिशत उत्तरदाता ने परिवार के ऊपर पारिवारिक तनाव का परिवारीजनों के आत्मविश्वास में अधिक अवरोध स्वीकारा,

❖ 63 प्रतिशत सूचनादाता ने पारिवारिक तनाव से बच्चों को माता-पिता द्वारा अधिक डाट-डपट की जाती है,

❖ 60 प्रतिशत उत्तरदाता मानते थे कि पारिवारिक तनाव से बच्चों में अनुशासन हीनता में अधिक वृद्धि हो जाती है,

❖ 59 प्रतिशत उत्तरदाता की राय थी कि पारिवारिक तनाव बच्चों में अधिक भावात्मक एकता का अभाव हो जाता है,

❖ 58 प्रतिशत के मतानुसार पारिवारिक तनाव से बच्चों द्वारा स्कारात्मक सीख पर अधिक प्रभाव पड़ता है तथा

- ❖ 52.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि पारिवारिक तनाव बच्चों में माता-पिता के प्रति अधिक तिरस्कार पनपता है।

4.2.2 <u>पारिवारिक तनाव का बच्चों के मनोवैज्ञानिक व्यवहार पर प्रभाव :</u>

- ❖ 205 उत्तरदाताओं 68.33 प्रतिशत ने बताया कि पारिवारिक तनाव से बच्चों में अधिक हीनभावना का उदय हो जाता है,
- ❖ 63.33 प्रतिशत सूचनादाताओं की राय थी कि पारिवारिक तनाव से बच्चों में गलत आदतों का समावेश हो जाता है,
- ❖ 62 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार पारिवारिक तनाव बच्चों में असुरक्षा की भावना का उदय होता है,
- ❖ 185 सूचनादाता 61.67 प्रतिशत का कहना था कि पारिवारिक तनाव से भाई-बहिनों में प्रतिद्वन्द्वुता में वृद्धि होती है तथा
- ❖ 178 उत्तरदाता 59.33 प्रतिशत ने बताया कि पारिवारिक तनाव से परिवारी परवेश घुटन भरा हो जाता है।

4.2.3 <u>पारिवारिक तनाव का परिवार के पोषण पर प्रभाव :</u>

- ❖ 188 उत्तरदाता 62.67 प्रतिशत ने बताया कि पारिवारिक तनाव से परिवार द्वारा उपयोग किया जाने वाला भोजन अधिक आहार विज्ञान की दृष्टि से असन्तुलित हो जाता है,
- ❖ 61.67 प्रतिशत सूचनादाता ने माना कि पारिवारिक तनाव से परिवार के सदस्यों में अधिक शारीरिक वृद्धि अवरूद्ध हो जाती है,
- ❖ 56 प्रतिशत उत्तरदाताओं की राय थी कि पारिवारिक तनाव परिवारीजनों के मानसिक विकास में अधिक बाधा डालती है,
- ❖ 54.67 प्रतिशत सूचनादाता ने स्वीकार किया कि पारिवारिक तनाव से परिवार के सदस्यों में कुपोषण में अधिक वृद्धि होती है तथा
- ❖ 53 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार पारिवारिक तनाव के कारण परिवार के सदस्यों में रक्ताल्पता हो जाती है।

4.2.4 पारिवारिक तनाव का परिवार के संगठन पर प्रभाव :

❖ 204 उत्तरदाताओं 68 प्रतिशत के अनुसार पारिवारिक तनाव पति-पत्नी के मध्य कलह में अधिक वृद्धि करता है,

❖ 64.67 प्रतिशत सूचनादाता मानते थे कि पारिवारिक तनाव पति-पत्नी में प्रेमभाव को अधिक क्षय करता है,

❖ 62.33 प्रतिशत उत्तरदाता ने स्वीकार किया कि पारिवारिक तनाव तलाकों की संख्या में अधिक वृद्धि करता है,

❖ 58.67 प्रतिशत सूचनादाताओं की राय थी कि पारिवारिक तनाव आत्म हत्याओं को अधिक प्रोत्साहित करता है,

❖ 58.34 प्रतिशत का मानना था कि पारिवारिक तनाव परि पति-पत्नी गमन में अधिक वृद्धि करता है तथा

❖ 51.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं के मतानुसार पारिवारिक तनाव न्यायालय तक झगड़ों की पहुँच को अधिक बढ़ा देता है।

4.2.5 पारिवारिक तनाव का प्राथमिक सम्बन्धों पर प्रभाव :

❖ 194 उत्तरदाता 64.67 प्रतिशत की राय थी कि पारिवारिक तनाव से परिवार को नियंत्रण अधिक शिथिल हो जाता है,

❖ 62.34 प्रतिशत सूचनादाताओं के अनुसार पारिवारिक तनाव से सदस्यों के मध्य 'हम' भावना की कमी अधिक हो जाती है,

❖ 62 प्रतिशत उत्तरदाता ने स्वीकार किया कि पारिवारिक तनाव से परिवार विघटन के कगार में अधिक वृद्धि होती है,

❖ 61.67 प्रतिशत उत्तरदाता मानते थे कि पारिवारिक तनाव से पति-पत्नी के विचारों में अधिक मतभेद हो जाता है,

❖ 58.33 प्रतिशत लोगों का मानना था कि पारिवारिक तनाव से पति-पत्नी के मध्य पारस्परिक समझदारी की अधिक कमी हो जाती है तथा

❖ 56 प्रतिशत उत्तरदाताओं का विचार था कि पारिवारिक तनाव से पति-पत्नी के या अन्य सदस्य के प्रत्यक्ष सम्प्रेक्षण प्रक्रिया पर (आपस में वार्ता बंद) अधिक प्रभाव पड़ता है।

(ग) समाज पर पारिवारिक तनाव के प्रभाव के निष्कर्ष

4.3.1 पारिवारिक तनाव का सामाजिक प्रक्रियों पर प्रभाव :

❖ 188 उत्तरदाता 62.67 प्रतिशत के अनुसार पारिवारिक तनाव से सामाजिक सम्बन्धों में असहयोग अधिक होने लगता है,

❖ 59.33 प्रतिशत सूचनादाताओं ने बताया कि पारिवारिक तनाव से प्रतियोगिता में अधिक वृद्धि होती है,

❖ 58 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार पारिवारिक तनाव से परिवार के सदस्यों की अन्तक्रिया अधिक संकुचित हो जाती है,

❖ 57 प्रतिशत उत्तरदाताओं की राय थी कि पारिवारिक तनाव से सम्बन्धों के व्यवस्थापन में अधिक अभाव आ जाता है, तथा प्रतियोगिता में वृद्धि हो जाती है तथा

❖ 55.34 प्रतिशत सूचनादाताओं ने बताया कि पारिवारिक तनाव से सामाजिक आत्मसाती करण की प्रक्रिया में अधिक कमी आ जाती है।

4.3.2 पारिवारिक तनाव का सामाजिकता पर प्रभाव :

❖ 183 उत्तरदाताओं 61 प्रतिशत के अनुसार पारिवारिक तनाव से सामाजिक असहयोग में अधिक वृद्धि हो जाती है,

❖ 58.33 प्रतिशत सूचनादाताओं की राय थी कि पारिवारिक तनाव से द्वैतीय समूहों से सम्बन्धों में अधिक कमी हो जाती है,

❖ 57 प्रतिशत उत्तरदाता स्वीकार करते थे कि पारिवारिक तनाव से सामाजिक समरसता अधिक कम हो जाती है,

- ❖ 54.67 प्रतिशत सूचनादात मानते थे कि पारिवारिक तनाव से सामाजिक मामलों में भिन्नता अधिक बड़ जाती है तथा
- ❖ 52.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार पारिवारिक तनाव से कुशल क्षेमता की अधिक तथा 35.33 प्रतिशत के मतानुसार कम उपेक्षा होती है

4.3.3 पारिवारिक तनाव का सामाजिक नियंत्रण पर प्रभाव :

- ❖ 195 उत्तरदाता 65 प्रतिशत पारिवारिक तनाव का प्रभाव सामाजिक स्तरीकरण पर अधिक मानते थे ,
- ❖ 62 प्रतिशत सूचनादाता पारिवारिक तनाव का प्रभाव सामाजिक अलगांव वाद पर अधिक मानते थे,
- ❖ 59.33 प्रतिशत उत्तरदाता पारिवारिक तनाव का प्रभाव धर्म में अधिक अविश्वास बढ़ना मानते थे,
- ❖ 58.33 प्रतिशत सूचनादाता पारिवारिक तनाव का प्रभाव नैतिक मूल्यों में अधिक ह्रास को मानते थे तथा
- ❖ 54 प्रतिशत उत्तरदाता पारिवारिक तनाव का प्रभाव पत्नी परित्याग में अधिक वृद्धि को मानते थे।

4.3.4 पारिवारिक तनाव का उत्पादकता पर प्रभाव :

- ❖ 171 उत्तरदाता 57 प्रतिशत पारिवारिक तनाव का प्रभाव उत्पादन की संख्या पर अधिक पड़ता है यह मानते थे,
- ❖ 56 प्रतिशत सूचनादाताओं की राय थी कि पारिवारिक तनाव का प्रभाव अनुचित समय पर अधिक उत्पादन होना मानते थे,
- ❖ 52.67 प्रतिशत उत्तरदाता पारिवारिक तनाव से लघु उद्योगों के विकास में अधिक बाधा आना मानते थे,
- ❖ 51.67 प्रतिशत सूचनादाता पारिवारिक तनाव से उत्पादन की गुणवत्ता पर अधिक नकारात्मक प्रभाव बताते थे तथा

❖ 50 प्रतिशत उत्तरदाता अधिक तथा 25.67 प्रतिशत उत्तरदाता कम पारिवारिक तनाव का प्रभाव कुटीर उद्योगों के विकास में बाधा मानते थे।

4.3.5. <u>पारिवारिक तनाव का सामाजिक स्वास्थ्य पर प्रभाव :</u>

❖ 273 उत्तरदाता जिसमें 63 प्रतिशत अधिक तथा 28 प्रतिशत कम पारिवारिक तनाव का प्रभाव समाज की सुख-शांति-समवृद्धि में रूकावट मानते थे,

❖ 276 उत्तरदाता जिसमें 57.67 प्रतिशत अधिक तथा 34.33 प्रतिशत पारिवारिक तनाव से अपराधों में वृद्धि होना मानते थे,

❖ 273 उत्तरदाता जिसमें 53.67 प्रतिशत अधिक तथा 37.33 प्रतिशत कम पारिवारिक तनाव का प्रभाव रहन-सहन पर कुभाव स्वीकार करते थे,

❖ 267 उत्तरदाता में से 52.67 प्रतिशत पारिवारिक तनाव का प्रभाव तथा 36.33 प्रतिशत कम बाल अपराधों को प्रोत्साही मानते थे तथा

❖ 261 उत्तरदाता में से 51 प्रतिशत अधिक तथा 36 प्रतिशत कम पारिवारिक तनाव का प्रभाव सामाजिक निपुणता में ह्रास होना मानते थे।

5.0. <u>अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में अधिक तनाव के कारक</u>

5.1 <u>वैयक्तिक कारक</u> :

सर्वाधिक 234 उत्तरदाता 78 प्रतिशत ने अशिक्षित परिवारों में शिक्षित परिवारों में अधिक तनाव के लिए "अधिक आत्म सम्मान", 219 उत्तरदाता 73 प्रतिशत ने असन्तुष्टि वृति को, 216 सूचनादाता 72 प्रतिशत ने "अहम भावना" को, 186 उत्तरदाता 62 प्रतिशत ने निर्णय लेने की स्वतंत्रता को, तथा 171सूचनादाताओं 57 प्रतिशत ने "मद्यपान को" उत्तरदाई स्वीकार किया।

5.2 <u>सामाजिक कारक :</u>

अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में अधिक तनाव के जो सामाजिक कारक निरूपित किये उनमें 239 उत्तरदाताओं 79.67 प्रतिशत ने सांस्कृतिक कारकों में संलग्नता को, 231 उत्तरदाताओं 77 प्रतिशत ने अधिक "प्रतियोगिता" को, 202 सूचनादाताओं 67.33 प्रतिशत ने अधिक "स्वतंत्रता" को, 192 सूचनादाताओं 64 प्रतिशत ने "संगठनात्मक कार्यो में सहभागिता" को उत्तरदाई समझते थे।

5.3 <u>आर्थिक कारक :</u>

अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में तनाव अधिक होने के जिन आर्थिक कारकों को उत्तरदाई पाया उनमें 220 उत्तरदाताओं 73.33 प्रतिशत ने "अत्यधिक व्यय" को, 208 सूचनादाताओं 69.33 प्रतिशत ने "आवश्यकताओं की अधिकता" को, 187 सूचनादाताओं 62.33 प्रतिशत ने "धन की अधिक लिप्सा" को, 177 उत्तरदाताओं 59 प्रतिशत ने "महिलाओं की आत्मनिर्भरता" को तथा 160 उत्तरदाता 53.33 प्रतिशत ने "व्यवसायिक प्रतिद्वन्दुता" मुख्य थी।

5.4 <u>महिला सशक्रीकरण :</u>

अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में अधिक तनाव के लिए महिला सशक्रीकरण को उत्तरदाई माना जिसमें 228 सर्वाधिक उत्तरदाता 76 प्रतिशत ने "महिलाओं में अधिकारों की सजगता" को, 174 उत्तरदाता 58 प्रतिशत ने "महिलाओं के कामकाजी" होने को, 168 उत्तरदाताओं 56 प्रतिशत ने "महिला के सामाजिक दायरे में वृद्धि" को, 159 सूचनादाताओं 53 प्रतिशत ने "नारी संरक्षण अधिनियमों" को, तथा 132 उत्तरदाताओं 44 प्रतिशत ने महिला शिक्षा को मुख्य कारक माना।

5.5 अशिक्षितों में कम तनाव के कारक :

शिक्षित परिवारों की तुलना में अशिक्षित परिवारों में कम तनाव होने के जिन कारकों का निरूपण किया उनमें 233 उत्तरदाता 77.67 प्रतिशत ने "लोक-लाज का भय" को, 222 उत्तरदाता 74 प्रतिशत ने "भाग्यवाद" को, 201 सूचनादाता 67 प्रतिशत ने "सहनशीलता" को, 192 उत्तरदाताओं 64 प्रतिशत ने "सन्तोष" को, 186 उत्तरदाता 62 प्रतिशत ने "धर्म परायणता" को तथा 142 उत्तरदाता 47.33 प्रतिशत ने अशिक्षा मुख्य कारक थी।

5.6 राजनैतिक कारक :

अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में अधिक तनाव के जिन राजनैतिक कारकों की पहिचान की गई उनमें 261 उत्तरदाताओं 87 प्रतिशत ने "राजनैतिक दलों का पूर्वाग्रह" को, 253 उत्तरदाता 84.33 प्रतिशत ने "शीघ्र बदलती सरकारों" को, 245 उत्तरदाताओं ने "ढीली नीतियों" को, 183 उत्तरदाताओं 61 प्रतिशत ने नीति क्रियान्वयन में राजनैतिक इच्छा शक्ति के अभाव को, तथा 162 उत्तरदाताओं 54 प्रतिशत ने आरक्षण नीति को कारक माना था।

5.7 सांस्कृतिक कारक :

शिक्षित परिवारों की तुलना में अशिक्षित परिवारों में कम तनाव होने के जिन सांस्कृतिक कारकों को बताया उनमें 195 उत्तरदाता 65 प्रतिशत ने "सत्य बोलने" को, 189 उत्तरदाता 63 प्रतिशत ने "परम्पराओं के पालन" करने को, 184 उत्तरदाताओं 61.33 प्रतिशत ने "सांस्कृतिक विलम्बना" को, 174 उत्तरदाताओं 58 प्रतिशत ने "कर्म को धर्म मानना" को, तथा 170 उत्तरदाताओं 56.67 प्रतिशत ने "रीति-रिवाजों में विश्वास" को मुख्य कारक थे।

5.8 अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में तनाव के अधिक होने के अन्य कारकों की भी उत्तरदाताओं ने पहिचान की जिनमें 203 सर्वाधिक

उत्तरदाताओं 67.67 प्रतिशत ने "वाह्य समूहो की सदस्यता" को 201 उत्तरदाताओं 67 प्रतिशत ने अधिक प्रतिक्रियावाद" को, 188 उत्तरदाताओं 62.67 प्रतिशत ने अधिक "दूरदर्शता" को तथा 171 उत्तरदाता 57 प्रतिशत ने क्रमशः "नेतृत्व की भावना" तथा यौन व्यवहार की उच्छखलता का उत्तरदाई पाया।

6.0 <u>सूचनादाताओं द्वारा प्रदान किए गये सुझावों का विवरण</u>

6.1 पारिवारिक तनाव कम करने के 'सम्प्रेक्षण' सम्बन्धी सुझाव

❖ 225 उत्तरदाता 75 प्रतिशत मानते थे कि पति-पत्नी द्वारा आपस में सम्मान देने से पारिवारिक तनाव कम होता है,

❖ 73.33 प्रतिशत सूचनादाताओं की राय थी कि पारिवारिक सम्प्रेक्षण में मधुर शब्दों का प्रयोग करने से पारिवारिक तनाव कम होते हैं,

❖ 69.33 प्रतिशत उत्तरदाता के मतानुसार पारस्परिक संचार में दूसरों की सराहना करने पर पारिवारिक तनाव कम होते हैं,

❖ 68.67 प्रतिशत सूचनादाताओं के अनुसार वार्ता मुस्कान से प्रारम्भ करने से पारिवारिक तनाव कम होते है तथा

❖ 66 प्रतिशत उत्तरदाताओं का विचार था कि सम्प्रेक्षण की अवधि में मतभेद पैदा करने वाले सन्दर्भो को पृथक रखने से पारिवारिक तनाव कम होते हैं।

6.2 पारिवारिक तनाव तथा विघटन कम करने के 'स्वयं प्रयास'

❖ 209 उत्तरदाता 69.67 प्रतिशत की राय थी कि सुन्दर भविष्य के निर्माण के प्रयासों से पारिवारिक तनाव कम होते हैं,

❖ 68 प्रतिशत सूचनादाता मानते थे तनाव के कारणों को जानकर हल करने से पारिवारिक तनाव कम होते हैं,

❖ 63.33 प्रतिशत के मतानुसार व्यक्ति द्वारा अपने को कार्य में व्यस्त रखने से पारिवारिक तनाव व विघटन कम होता है,

- ❖ 60.67 प्रतिशत उत्तरदाता मानते थे कि आपस में उलाहना न मारने से पारिवारिक तनाव व विघटन कम होते है,
- ❖ 59.33 सूचनादाताओं का सुझाव था कि योग अभ्यास करने से तनाव कम होते है।

6.3 पारिवारिक तनाव व विघटन कम करने हेतु शीलों के आचरण

- ❖ 213 उत्तरदाता 71 प्रतिशत मानते थे कि सत्य बोलने से पारिवारिक कलह, तनाव व विघटन कम होते हैं ,
- ❖ 67.33 प्रतिशत सूचनादाताओं के सुझाव थे कि मद्यपान न करने से पारिवारिक तनाव एवं विघटन पर नियंत्रण बना रहता हैं,
- ❖ 186 उत्तरदाता 62 प्रतिशत कुशल कार्य करने से पारिवारिक तनाव तथा विघटन पर रोक लगती है,
- ❖ 61.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं का सुझाव था कि शारीरिक एवं मानसिक हिंसा से विरत रहने से पारिवारिक तनाव व विघटन में कमी आती है,
- ❖ 59.33 प्रतिशत के मतानुसार चुगलखौरी न करने से परिवार में कलह-तनाव तथा विघटन उत्पन्न नहीं होता तथा
- ❖ 58.33 प्रतिशत सूचनादाता मानते थे कि "परिस्त्रीगमन" करने से परिवार विघटित नहीं होता।

6.4 पारिवारिक तनाव/विघटन कम करने के "धार्मिक क्रियाकलाप" सम्बन्धी सुझाव

- ❖ 180 उत्तरदाताओं 60 प्रतिशत का सुझाव था कि धार्मिक शास्त्रों को पढ़ने से पारिवारिक तनाव कम होता है,
- ❖ 59.33 प्रतिशत का सुझाव था कि "साधना-शिविरों में अभ्यास" करने से पारिवारिक तनाव व विघटन कम होता है,
- ❖ 57.67 सूचनादाताओं ने सुझाव दिया कि "कल्याणकारी कार्यों" के निष्पादन करने से पारिवारिक तनाव कम होता है,

- ❖ 54.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''धार्मिक स्थलों के दर्शनों'' करने से पारिवारिक तनाव तथा विघटन पर नियंत्रण बना रहता है,
- ❖ तथा 53.33 प्रतिशत सूचनादाताओं ने सुझाव दिया कि ''सतसंगों में सहभागिता'' से पारिवारिक तनाव कम होत हैं।

6.5 पारिवारिक तनाव व विघटन कम करने 'सामाजिक कार्य' सम्बन्धी सुझाव

- ❖ 209 उत्तरदाता 69.67 प्रतिशत का सुझाव था कि ''मूल सुधार प्रक्रिया'' से पारिवारिक तनाव व विघटन पर नियंत्रण रहता है,
- ❖ 68.33 प्रतिशत सूचनादाताओं के अनुसार सकारात्मक अवलोकनों से भी पारिवारिक तनाव कम होते हैं,
- ❖ 66 प्रतिशत उत्तरदाताओं का सुझाव था कि आयु व सन्दर्भ समूहों के मध्य विचार विमर्श करने से पारिवारिक तनाव व विघटन पर नियंत्रण रहता है,
- ❖ 65 प्रतिशत सूचनादाता मानते थे कि ''सामाजिक अन्तक्रियाओं'' में हस्तक्षेपों को न्यूनतम करने से पारिवारिक तनाव-झगड़े व विघटन कम होते हैं तथा
- ❖ 63.33 प्रतिशत उत्तरदाता ''सांस्कृतिक आयोजनों में सहभागिता बढ़ा ने पारिवारिक तनाव कम होते हैं।

6.6 पारिवारिक तनाव व विघटन कम करने की मनोवैज्ञानिक क्रियाएं सम्बन्धी सुझाव

- ❖ 215 उत्तरदाताओं 71.67 का सुझाव था कि ''कि मै भी ठीक हूँ और तुम भी ठीक हो'' की सोच से पारिवारिक तनाव/विघटन कम होता है,
- ❖ 69.33 प्रतिशत सूचनादाताओं ने सुझाव दिया कि तनाव की अवधि में तनाव ग्रसित पति-पत्नी को मनोवैज्ञानिक परामर्श लेने से पारिवारिक तनाव कम होता है,
- ❖ 68.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मत था कि'पति-पत्नी का ''पारस्परिक समझ'' पारिवारिक तनाव/विघटन पर रोक लगती है,

❖ 66.33 प्रतिशत सूचनादाताओं की राय थी कि "धैर्य रखने" से पारिवारिक तनाव/विघटन कम होता है तथा

❖ 62 प्रतिशत उत्तरदाताओं का सुझाव था कि "वर्तमान में जीने से" पारिवारिक तनाव तथा झगड़े कम होते हैं।

6.7 पारिवारिक तनाव व विघटन कम करने की सांस्कृतिक क्रियाओं सम्बन्धी विवरण

❖ 213 सूचनादाताओं 71 प्रतिशत का सुझाव था कि 'गीत-संगीत के कार्यक्रम' पारिवारिक तनाव को कम करते हैं,

❖ 202 उत्तरदाता 67.33 प्रतिशत की राय थी कि ललित कलाओं के सृजन में संलग्नता पारिवारिक तनाव को कम करती है ,

❖ 192 उत्तरदाताओं 64 प्रतिशत के मतानुसार रेडियों/दूरदर्शन के देखने से तनाव कम होता है,

❖ 184 सूचनादाताओं 61.33 प्रतिशत का मानना था कि खेल-कूद की प्रतियोगिताएं देखने से तनाव की स्थिति से मुक्ति मिलती है, तथा

❖ 179 उत्तरदाताओं 59.67 प्रतिशत के सुझावव था कि समालोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाने से पारिवारिक तनाव पर अंकुश लगता है।

ग्रंथावली

- अब्राहम सेन डेविड (1960): साइकिलोजी आफ क्राइम, कोलम्बिया प्रेस, न्यूयार्क, पृष्ठ-43
- आगवर्न एण्ड निमकौफ 1960. हेण्ड बुक आफ सोशियालॉजी, रोलेज एण्ड केगन को. लन्दन पृष्ठ 208
- आगवर्न एण्ड निमकाफ 1960: ए हेण्डबुक आफ सोशियोलाजी रोलेज एण्ड वेगन पोल लि. लन्दन पृष्ठ 211
- आगवर्न निमकाफ (1960): 'सांस्कृतिक विलम्बना का सिद्धांत'.
- आगवर्न निमकाफ (1960): हेण्डबुक आफ सोसियोलोजी, पृष्ठ -540-41
- आहूजा, राम (1987): "महिलाओं के विरूद्ध अपराध," रावत पब्लिकेशन पृष्ठ-243, जयपुर
- आहूजा, राम (2002): "सामाजिक समस्याऐं", पृष्ठ-82 रिपिन्ट रावत पवली मंशन जयपुर एवं नयी दिल्ली.
- आहूजा, राम (2002) "सामाजिक समस्याऐं" अध्याय-1,पृष्ठ-16,रावत पब्लिकेशन, सत्यम अपार्टमेन्ट सेक्टर 3
- अग्रवाल, एस.एन. (1970): ट्रेनिंग इन्डियास डेमोग्रफरस, एन इन्टरव्यूह बाई के.एन. एल.पिल्लई,स्पान, पृष्ठ-31

- अग्रवाल, एस.एन. (1970): ट्रेनिंग इन्डियास डेमोग्रफरस, एन इन्टरव्यूह बाई के.एन. एल.पिल्लई,स्पान, पृष्ठ-31

- अग्रवाल भारत (1981): 'भारतीय समाज' अतीत से वर्तमान तक, मनमोहनदास पुस्तक मन्दिर प्रा.लि. भरतपुर (राज), पृष्ठ- 103
- अग्रवाल, गोपाल कृष्ण, (1986): 'मानव समाज' आगरा बुक स्टोर, आगरा, पृष्ठ-148
- आगरा सामाजिक संस्थान (1962)
- अल्तेकर, ए.एस.: एजूकेशन इन ऐनसीयेन्ट इन्डिया, पृष्ठ- 8

- अल्तेकर, ए.एस.: एजूकेशन इन ऐनसीयेन्ट इन्डिया, पृष्ठ- 8

- अग्रवाल, गोपाल कृष्ण (1986): मानव समाज, आगरा बुक स्टोर आगरा, पृष्ठ -384
- अग्रवाल, गोपाल कृष्ण (1986): मानव समाज, आगरा बुक स्टोर आगरा, पृष्ठ -443
- Bodington,Statiatics and its application to commerce, P-140
- भषीन, वी.के. 1986 कमन्केकेशन टू मदर एण्ड चाइड पृष्ठ- 431
- बेसिन, एफ.एच. (1962): व्यवहारिक विज्ञानों में साहित्य समीक्षाऐं, मैकमिलन कम्पनी प्रालि मद्रास,पृष्ठ-40
- Brockington, C.E. (1958): World Health, 2nd Edi, churchil London.
- बोगार्डस द्वारा उद्धत
- दुबे, एस. सी. 1969: भारत के बदलते गांव, भारतीय गांव पृष्ठ 99
- डेविस किन्सले 1966: ह्यूमन सोसाइटी पृष्ठ 33
- डासन एण्ड गेटिस: कोटेड बाई गुप्ता एवं शर्मा 1998 समाजशास्त्र साहित्य पब्लिकेशन आगरा पृष्ठ-172
- दुर्खीम
- डेविस, ह्यूमन सोसाईटी, पृष्ठ- 52
- एण्डरसन एण्ड पाकर सोसाइटी 1961, पृष्ठ 162
- एण्डरसन, पारक 1961- सोसाइटीज ओरगेनाइजेशन एण्ड ओपरेशन पृष्ठ- 160
- एम जिन्सवर्ग 1959: क्लास कोन्ससनेस फाम इन साइकोपीडियां आफ साइन्सेज पृष्ठ 536
- ऐक्कोफ, के.एल. डिजायन आफ सोसल रिसर्च पृष्ठ-5
- एडल्फ जेनसन
- एलहान्स, डी. एन. फण्डामेण्टल ऑफ स्टेटिसिटक्स, पृष्ठ-56
- इलियट एण्ड मैरिल (1941): डिस ओरगनाईजेशन सामाजिक,व्यैक्तिक, पृष्ठ -25

- इलियट एण्ड मैरिल (1941): डिस ओरगनाईजेशन सामाजिक,व्यैक्तिक, पृष्ठ -27
- इलियट एण्ड मैरिल (1941): डिस ओरगनाईजेशन सामाजिक,व्यैक्तिक, पृष्ठ -27
- इलियट एण्ड मैरिल (1941): डिसओरगनाईजेशन, पृष्ठ-34
- इलियट एण्ड मैरिल (1941): डिसओरगनाईजेशन, पृष्ठ-96
- इलियट एण्ड मैरिल (1941): डिसओरगनाईजेशन, पृष्ठ-343-45
- फ्रेंकयाटन, उधृत द्वारा मुखर्जी ,आ.एन. (2001): विवके प्रकाशन जवाहर नगर दिल्ली-7,पृष्ठ-280
- फैरिस, आई.ई.आई. (1948): सामाजिक विघटन, पृष्ठ-
- फैरिस
- गुप्ता, एम.एल. (1994) : सामाजिक विघटन, पृष्ठ -105
- गिडिंग्स, एफ.एच. (1922)
- गुड एण्ड हाट (1952): मेथड इन सोशल रिसर्च, माइग्रोहिल बुक को. न्यूयोर्क पृष्ठ-331
- घुरिये, जी. एस. भारत में सामाजिक तनाव, पृष्ठ - 5
- गिलिन एण्ड गिलिन, कल्चरल सोसियोलोजी, पृष्ठ- 127
- गुप्ता एस.डी.एण्ड शर्मा, डी.डी. (1994): भारत में सामाजिक विघटन, साहित्य भवन, आगरा, पृष्ठ-168
- गिलिन एण्ड गिलिन, कल्चरल सोसियोलोजी, पृष्ठ- 622
- हेवलोक, एलिस 198. मैन इन प्रीमिटिव बल्ड
- हेरिस, सी. सी. 1942: दी फेमिली पृष्ठ 70
- हंसराज थियोरी एण्ड प्रेक्टिस इन सोसल रिसर्च, पृष्ठ-69
- हिसिन, पी.वी.यंग (1931) फेक्ट-फाइन्डिग विदरूरल पीपुल पृष्ठ-36-37
- होरनेल एण्ड हर्ट, इला (1927): अन सक्सेस फुल मैरिज इन द जर्नल आफ द वर्ल्ड द्मोरो जून-1927
- हरिस, सी.सी. (1969:70): "द फैमिली"
- जे. के. संस्थान, पारिवारिक दशा और भगेडूपन का सर्वेक्षण (1963)
- जी. डी. एच. कोल द्वारा उद्यृत ESO- 04 social shatification I. G. Now school of social scinces, 2001 mach
- जीत कृष्ण सिंह (1977) : प्रकाशन केन्द्र लखनऊ, न्यू विलडिंग अमीनाबाद, पृष्ठ- 98
- जहोडा डच एण्ड डब्लू रिसर्च मैथड इन सोसल इनवेस्टीगेशन पृष्ठ-270
- किग्सले डेविस "1959" हृयन सोसाइटी मैकामिलिन एण्ड को, न्यूयार्क पृष्ठ 305
- किम्वालयंग 1957: ए हेण्डबुक आफ सोशियोलाजी पृष्ठ- 89
- किट्ट राव 1986 एप्रोप्रियेट कम्नूकेशन एण्ड मीडिया पृष्ठ- 415
- कारपेन्टर एन. जीत कृष्णा द्वारा उधृत अपराधशास्त्र पृष्ठ-240
- करलिंगर एफ.एनु, दि फाउण्डेशन ऑफ विहेवियरल रिसर्च,रिनेहार्ट एण्ड न्सिटन प्रेस हाल्ट, न्यूयार्क, 1964, पृष्ठ-4
- कोनोर, एल.आर.(1936) ए स्टैटिस्टिक्स इन थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस, पृष्ठ-18
- क्वीन, एस.ए.एण्ड मन्न (1925):
- Khan, Nasir Ali (1963): The emerging pattern of marriage (A sociologically srudy of civil marriage), Ph.D. thesis of Lucknow University PP-242-43
- केवलरमानी, सी.एस. (1983): "बाल दुर्व्यवहार, रावत पब्लिकेशन जयपुर
- क्रूगर, डा.वी. एन. सिंह, वी.ए. एवं जे. ने. (2000): "नगरीय समाजशास्त्र द्वारा उद्धत पृष्ठ-45
- कूले, सी.एच. सोसल ओरगनाइजेशन
- कूले, सी.एच. सोसल ओरगनाईजेशन
- केवन (1928) : सुसाइड, पृष्ठ- 148-177
- किन्से, ए.सी. (1948): सैकसुअल विहेवियर इन हयूमन मेल, पृष्ठ-585
- क्यूवर

- किन्सले डेविस, ह्यूमन सोसाईटी, पृष्ठ- 162
- कार्ल मानहीम (1951): फ्रीडमः पोवर एण्ड डेमो क्रेटिक प्लानिंग पृष्ठ-8
- लुण्ड वर्ग, जी. ए. 1968 समाजशास्त्र, पृष्ठ- 291
- लरनर, डी. 1958: दी पासिंग आफ ट्रेडिसीनल सोसाइटी पृष्ठ- 17
- लेडिस, जे.जे. (1946): 'अमेरिकन सोशियोलोजीकल रिव्यू' पृष्ठ-62
- लवानिया, एस.एम.(1990):प्रक्टीकल सोशियोलाजी, प्राब्लम्स एण्ड एक्ट्स,प्रकाशन केन्द्र लखनऊ,उ. प्र.पृष्ठ-32080. Last, J.M. (1983): A Dictionary of eidennology, ox port university Press
- Leavell, H.R. (1965): Preventure Medicine for the Doctors in his community, Mc Graw Hill, New York
- मैकाइवर एण्ड पैज 1953 सोसाइटी, मैकमिलन एण्ड को. लिमिटेड लन्दन पृष्ठ 288
- तदैव पृष्ठ 289
- मार्क्स इण्डिया इन कानिष्ट मैनीफेस्टो कुटेटेड बाई मैटचल इन डिस्कवरी आफ सोशियोलाजी पृष्ठ 184
- मुखर्जी, आर.एन.(2001), अष्टम संस्करण, सामाजिक शोध व सांख्यिकी, मातृ आशीष तिलक कालोनी, सुभाष नगर,बरेली, पृष्ठ-1
- मौसर, सी. ए. (1961): सर्वेमैथड इन सोसल इन्वेस्टीगेशन, हेनरमेन लन्डन, पृष्ठ-3
- मुखर्जी, रवीन्द्रनाथ (2001), सामाजिक शोध व सांख्यिकी, विवके प्रकाशन 7,यू.ए. जवाहर नगर,दिल्ली, पृष्ठ-279
- मौसर, सी. ए. (1961): सर्वेमैथड इन सोसल इन्वेस्टीगेशन, पृष्ठ-271
- मर्टन, आर.के. (1957): सोसल थ्योरी एण्ड सोसल स्टेक्चर' द फ्री प्रेसगिलीन को इलीनोयस, पृष्ठ-672-682
- माइवर (1943): सोसल एण्ड परसनल डिस आर्गनाइजेशन,
- माइवर (1941): सोसल एण्ड परसनल डिस आर्गनाइजेशन,
- तदैव
- तदैव
- माइवर (1941): सोसल एण्ड परसनल डिस आर्गनाइजेशन, पृष्ठ
- मेकाइवर एण्ड पेज (1950): 'सुसाइटी' पृष्ठ-5
- Mohan, Btih (1963): social work and the problem of mental disorers ph. D. thers Lucknow university P-308
- मुखर्जी, राधाकमल (1964): सिकनेस आफ सिविलाईजेशन, पृष्ठ-6
- मुकेश अहूजा (1996): विधवा, न्यू ऐज पब्लिकेशन, दिल्ली,
- जैन मन्दिर रोड,जवाहर नगर, जयपुर
- Mill, J.S.
- मुखर्जी रबीन्द्र नाथ (2001): सामाजिक शोध व सांख्यिकी 8 वॉ संस्करण बालाजी आफसेट, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32, पृष्ठ-175
- मुखर्जी रबीन्द्र नाथ (2001): सामाजिक शोध व सांख्यिकी 8 वॉ संस्करण बालाजी आफसेट, नवीन शाहदरा,पृ159
- मर्टन, आर. के. (1961): सोसल प्रोबलम्स एण्ड सोशियोलोजीकल थ्योरी इन कनटेमपरेरी सोशल प्रोबलम्स ऐडी. पृष्ठ-70.
- मारवर (1941): सामाजिक एवं वैयक्तिक विघटन.
- मारवर (1941): सामाजिक एवं वैयक्तिक विघटन.
- मोरटिन, एच.न्यूमेयरः ओपसिट पी.पी. 9-17 उद्धत द्वारा एम.एल. गुप्ता एवं डी. वी. शर्मा (1994):' सामाजिक विघटन' साहित्य भवन आगरा पृष्ठ-4
- मारवर (1943): वैयक्तिक एवं सामाजिक विघटन

- मीड, एम. थ्योरी आफ सोसिलाइज
- मुखर्जी, रवीन्द्र नाथ (2001): सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी, विवके प्रकाशन जवाहर नगर दिल्ली-7, पृष्ठ-389
- न्यूमेयर, एम.एच. (1953): सोसल प्रोवलम्स एण्ड चैंजिंग सुसाइटी, पृष्ठ. डी. वान नोटेण्ड कं. इनक्लेव न्यूजर्सी.
- नेटलर, उद्धत द्वारा-मुखर्जी, रवीन्द्रनाथ, विवके प्रकाशन,7 यू. ए. जवाहर नगर , दिल्ली- पृष्ठ-213
- प्रो. गुप्ता 1998 समाजशास्त्र साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा पृष्ठ - 105
- पार्थस्वामी, टी. के. 1986 मां एवं बच्चे के लिये बेहतर संचार पृष्ठ- 421
- प्रकाशन केन्द्र न्यूबिलिडिंग्स अमीनाबाद, लखनऊ जोजेफली, जीत कृष्णा द्वारा उघृत अपराधशास्त्र पृष्ठ- 237
- पालमार, वी.एम.(1928)फील्ड स्टडी इन सोशियोलोजी, यूनितरसिटी आफ शिकागो,पृष्ठ-57
- पालमार, वी.एम.(1928)फील्ड स्टडी इन सोशियोलोजी,पृष्ठ-170
- प्लेवेन केयर.
- पी. वी. यंग (1960): साईन्टीफिक सोसल सर्वे एण्ड रिसर्च, एसिया पवलिसिंग हाऊस, बोम्बे,पृष्ठ -309
- पार्क एण्ड वरगेस (1925:508)
- पार्क एण्ड वर्गिस (1924): इन्ट्रोडक्सन आफ साइंस आफ सोशियोलोजी, पृष्ठ- 631
- पार्क एण्ड वर्गिस (1924): इन्ट्रोडक्सन आफ साइंस आफ सोशियोलोजी, पृष्ठ- 631
- पारसन, टालकोट एण्ड आर.बी. बेल्स, फेमिली , सोसिलाइजेशन एण्ड इनट्रेक्शन पृष्ठ- 19
- पोर्टरफील्ड
- राल्फ लिन्टन 1952. द कल्चररल बैकग्रउन्ड आफ परसनलटी पृष्ठ 143
- राबर्ट फास्ट
- रीड
- रोवर्ट, इ. चन्ढोक (1925) प्रन्शीपल एण्ड मैथड ऑफ स्टेटिक्स, होगटन मिफिन कम्पनी वोस्टन पृष्ठ-43
- स्यूटर, एम.आर. (1960): 'ऐन इन्ट्रोडकशन टू सोशियोलाजी' मैक्ग्रोहिल बुक कं.,न्यूयार्क लन्दन.
- रिचार्ड, सी.फुलर एण्ड मार्यस (1941): सम आसपेक्ट्स आफ ए थ्योरी आफ सोसल प्रोबलम्स, अमेरिकन सोशियोलोजी रिव्यू, पृष्ठ- 24-32
- रोवर्ट वीर स्टीड, दा सोसल आर्डर, पृष्ठ- 14
- तदैव
- शोल्डर ए. डब्ल्यू, एण्ड जिटालिन 1979: द फ्यूचरर आफ इनटुलेक्चुयलस एण्ड राइज आफ नयू क्लास लन्दन
- सी. डी. हेरिस एण्ड ई. एल. अरमन 1942: द नेचर आफ मिडिल क्लास, फमिली कुटेड वाई, आर.एन. 2002 भारतीय सामाजिक व्यवस्था, पृष्ठ 192
- श्रीनिवास एम. एन. दी सोशल सिस्टम एण्ड आफ मैसूर विपेज सोशल चेंज इन माडर्न इण्डिया
- तदैव
- सिंह जीत कृष्णा 1977 अपराधशास्त्र अध्याय 25, पृष्ठ- 236
- सिंह, एस.डी. 1980: वैज्ञानिक सामाजिक अनुस्थान अवाम सर्वेक्शन, के मूल तदवा कमल प्रकाशन, इन्दौर एम.पी. पृष्ठ-50
- सेलटिज, जहोडा, डच.कुक रिसर्च मेथड इन सोसल रिलेशन, पृष्ठ -33
- सर्वश्री स्टॉउफर सेम्युल रिव्यू (1962:73): ए मैजर स्टैप आफ इन्वेस्टीगेशन इन सोसल साइन्सेज,अमेरिकन सोशियोलोजीकल रिव्यू अंक 23, पृष्ठ-73
- सोरोकिन,पी.ए. (1941): 'द क्राइसिस आफ अवर ऐंज' पृष्ठ-17
- तदैव, पृष्ठ-316

- स्टीन मट्ेस,एस.के.एण्ड स्टोस,एम (1974): 'वायलेन्स इन फेलिजी' हार एण्ड रो,न्यूयार्क,उद्धत द्वारा राम अहूजा, सामाजिक समस्याऐं', द्वितीय संस्करण पृष्ठ-239-341,रावत पवलीकेशन जयपुर एण्ड बम्बई.
- Society for social Medicines (1966): Evidences submitted to the Royal common social medical Education, Beit, Pre. Soc. Medi, 20,158
- सारस्वत, आर.पी. (1993): 'ऐन इन्ट्रोडकशन टू सोशियोलाजी' मैक्ग्रोहिल बुक कं.,न्यूयार्क लन्दन, पृष्ठ-57
- सत्येन्द्र, के. एण्ड भटनागर, पी.के.(1992): रिसर्च डिजाइन इन सोसल साइन्सेज सोसल कन्डीशन एण्ड प्रावलम्स, जगन्नाथ पब्लिकेशन प्रा.लि. दरभंगा (बिहार,द्वितीय एडीशन) पृष्ठ-89
- श्री मिश्रा पी. के. (1997:37)
- श्री वास्तव, जी. के. (1985): 'सामाजिक विघटन' आगरा बुक स्टोर 1/125 पचकुइयां - 282010
- सेमुअल वटलर
- सिंह, जीत कृष्णा (1977:261): अपराध शास्त्र, प्रकाशन केन्द्र, न्यू विल्डिगस, अमीनावाद, लखनऊ
- थोमस करसन, मैक्ग्रोनक (1941) ऐलीमेन्ट्री स्टेटिसटिक, पृष्ठ-224
- थोमस, डब्लू.आई. (1923): 'द अनएडजस्टेड गर्ल' पृष्ठ-17
- थामस जैनिकी, (1958): पोलिस पीजेटन्स इन यूरोप एण्ड अमेरिका बोलम-4,पृष्ठ-2
- थामस जैनिकी, (1958): पोलिस पीजेटन्स इन यूरोप एण्ड अमेरिका बोलम-4,पृष्ठ-2
- थामस जैनिकी, (1958): पोलिस पीजेटन्स इन यूरोप एण्ड अमेरिका बोलम-4,पृष्ठ-5
- तिलेरा,के.एस.(1990): प्रक्टीकल सोशियोलाजी, प्राबलम्स एण्ड सोसल एक्टस प्रकाशन केन्द्र लखनऊ, पृष्ठ-132
- थामस एण्ड जैनिकी : ओपसिट पी.पी. 34, उद्धत द्वारा एम.एल. गुप्ता (1994):' सामाजिक विघटन' पृष्ठ-4
- वर्गिस एण्ड लाक (1943): द फेमिली फिरोम इन्सट्शन टू कम्पेनियनशिप, रूटलैज एण्ड कीगनपॉल,लन्दन पृष्ठ-7
- तदैव, पृष्ठ-9
- वरगिल एण्ड लॉक 1943. "दी फेमिली" पृष्ठ 8
- वरगिस एण्ड लॉक 1943. "दी फेमिली" पृष्ठ 9
- वोटामो, टी. वी. समाजशास्त्र हिन्दी एडीसन, पृष्ठ 193
- विलियम, जे.गुड एण्ड पौल, के.हाट (1952): मैथड्स इन सोसल रिसर्च मैक्ग्रो हिल बुक को. इनक,न्यूयार्क पृष्ठ -209
- विलियम, जे.गुड एण्ड पौल, के हाट (1952) मैथड इन सोसल रिसर्च मैक्ग्रोहिल बुक कम्पनी न्यूयार्क पृष्ठ-15
- वोर्ग, जी.वी. (1963): सामाजिक विज्ञानों के अनुसंधानों में साहित्य का सिंहावलोकन, जैन ब्रदर्स एण्ड संस पवलीसर्स एण्ड डिस्ट्री ब्यूटरस बाम्बे, पृष्ठ-48
- वट्रेन्ड रसल (1916), "प्रिन्सीपल ऑफ सोसल रिकन्सटेक्शन" पृष्ठ-26
- वर्गेस, इ. उब्लू, एण्ड कोट रेल, एल.एस. (1939): प्रीडिक्टिग सक्सेसे और फैलोर इन मैरिज
- वेनवर्ग, एस. के. (1961): सोसल प्रोबलम्स इन अवर टाउन, पृष्ठ-4
- विलियमस, रिडक्सन आफ इन्टर ग्रुप टेनसन, पृष्ठ- 4-5
- विलियमस, रिडक्सन आफ इन्टर ग्रुप टेनसन, पृष्ठ- 4-5
- डब्ल्यू. एच.ओ. (1976): डब्ल्यू.एच.ओ. किरानी की, 30 (2) 58.
- WHO, (1948): Health For All , Sr. no.1
- यंग, पी.वी. (1960): साईन्टीफिक सोसल सर्वे एण्ड रिसर्च, एसिया पवलिसिंग हाऊस, बोम्बे,पृष्ठ -44
- यंग, पी.वी. (1960) साइंटीफिक सोसल सर्वे एण्ड रिसर्च, एशिया पवलिसिंग हाऊस, बोम्बे,पृष्ठ- 127
- यंग, पी.वी. (1960): साईन्टीफिक सोसल सर्वे एण्ड रिसर्च, एसिया पवलिसिंग हाऊस, बोम्बे,पृष्ठ -509
- यंग, पी.वी. (1960): साईन्टीफिक सोसल सर्वे एण्ड रिसर्च, एसिया पवलिसिंग हाऊस, बोम्बे,पृष्ठ -310

मध्यम वर्गीय परिवारों में पारिवारिक तनाव व विघटन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

(झाँसी शहर के विशेष सन्दर्भ में)

(साक्षात्कार अनुसूची)

अनुसूची संख्या.......................... मायाराम

1. उत्तरदाता का नाम..
2. आयु : 21–25 ☐ 26–30 ☐ 31–35 ☐ 36–40 ☐ 41–45 ☐ 46–50 ☐ 51–55 ☐ 56–60 ☐ 60 से ऊपर ☐
3. लिंग : पुरूष ☐ स्त्री ☐
4. शिक्षा : प्राईमरी ☐ जूनियर ☐ हा0 स्कूल ☐ इन्टर ☐ बी0ए0 ☐ एम0ए0 ☐
5. जाति : सामान्य ☐ ओ0बी0सी ☐ दलित ☐
6. धर्म : हिन्दू ☐ मुसलिम ☐ इसाई ☐ जैन ☐ बौद्ध ☐
7. व्यवसाय : कृषि ☐ नौकरी ☐ व्यापार ☐ प्राईवेट वर्क ☐
8. मासिक आय : रू 10000 ☐ 11000 ☐ 12000 ☐ 13000 ☐ 14000 ☐ 15000 ☐
9. वैवाहिक स्तर : विवाहित ☐ अविवाहित ☐ विधुर ☐ तलाकशुदा ☐
10. जीवित बच्चे : लड़के ☐ लड़की ☐ योग ☐
11. विवाह का प्रकार : परम्परागत ☐ कोर्ट विवाह ☐ प्रेम विवाह ☐
12. परिवार का स्वरूप : एकांकी ☐ संयुक्त ☐ विस्तृत ☐
13. आवासी दशा : सन्तोषजनक ☐ असन्तोषजनक ☐ आरामदायक ☐
14. सूचना श्रोत्र : समाचार पत्र ☐ टी0बी0/रेडियो ☐ पत्रिका ☐ सिनेमा ☐ टेलीफोन ☐

2.0 पारिवारिक तनाव के कारण सम्बन्धी सूचनाऐं :–

15. क्या आप आज की तीव्र गति की जिन्दगी से तनाव ग्रस्त हो जाते हो ? हाँ ☐ नहीं ☐
16. तो आप कितने तनावग्रस्त हो जाते हो ? कुछ कह नहीं सकते ☐ कम ☐ अधिक ☐
17. आप निम्न समस्याओं में से किससे तनाव ग्रस्त हैं ?

	कभी–कभी	हमेशा	अक्सर	थोड़ा	नहीं
1. आप पुत्री की शादी को लेकर कितने तनाव ग्रस्त हैं?	☐	☐	☐	☐	☐
2. आप पुत्र की बेरोजगारी से कितने तनावग्रस्त हैं ?	☐	☐	☐	☐	☐
3. आप घर में किसी की बीमारी से कितने तनावग्रस्त हैं ?	☐	☐	☐	☐	☐
4. आप घर के किसी सदस्य के व्यवहार से कितने तनावग्रस्त हैं?	☐	☐	☐	☐	☐
5. पति–पत्नि के बीच कहने–सुनने का क्या स्वभाव है ?	☐	☐	☐	☐	☐

18. कहने–सुनने के सामान्य कौन से मुद्दे होते हैं ?
    1. मद्यपान ☐ 2. धूम्रपान ☐ 3. देर से लौटना ☐ 4.पारस्परिक हस्तक्षेप ☐
    5. कार्यो में असहयोग ☐ 6. उत्तरदायित्व की हीनता ☐
19. कहने–सुनने के विशेष मुद्दे :–
    1. विलम्ब से घर वापिसी ☐ 2. धन सम्बंधी मामले ☐ 3. स्वार्थीपन ☐
    4. मित्रों को प्राथमिकता ☐
20. कहने–सुनने की समाप्ति निम्न में से किससे होती है ?
    1. डाट–डपट कर ☐ 2. गाली–गलौज कर ☐ 3.पारस्परिक चेतावनी ☐
    4. मार–पीट कर ☐ 5. सहनशीलता से ☐ 6. अन्य ☐
21. तना–तनी के मध्य कौन–कौन हस्तक्षेप करते हैं ?
    1. घर वाले ☐ 2. पड़ोसी ☐ 3. रिश्तेदार ☐ 4. कोई नहीं ☐
22. क्या पारिवारिक तनाव–झगड़ों को लेकर थाने में रिपोर्ट की गई हाँ ☐ नहीं ☐
23. यदि हाँ तो क्या मुकदमा चल रहा है ? हाँ ☐ नहीं ☐

24. मुकद्मा का क्या फल निकला : 1. राजीनामा ☐ 2. तलाक ☐ 3. पृथकीकरण ☐ 4. केसविचाराधीन ☐

25. क्या निम्न मनोवैज्ञानिक कारणों से पारिवारिक तनाव हो जाते हैं।	सहमत	असहमत	अनिश्चित
1. पति–पत्नि के अधिक भावुक होने व बहकावे में आने से	☐	☐	☐
2. पति–पत्नि का सरलता से क्रोधित होने से	☐	☐	☐
3. स्वार्थ सिद्ध हेतु झगड़ालू प्रवृत्ति बना लेने से	☐	☐	☐
4. दूसरों के प्रति घृणा भाव शीघ्र प्रदर्शित करने से ?	☐	☐	☐
5. दूसरो की अलोचना में सुखी होने से	☐	☐	☐
26. क्या निम्न प्राथमिक सम्बन्धों के कारणों से पारिवारिक तनाव हो जाते हैं?			
1. माता–पिता व सन्तानों के विपरीत सम्बन्धों से	☐	☐	☐
2. क्या सास–बहू के विपरीत सम्बन्धों से	☐	☐	☐
3. ननद व भावज के बीच कहने–सुनने से	☐	☐	☐
4. भाई–भाई के बीच मतभेद होने से	☐	☐	☐
5. देवरानी–जिठानी के बीच कहने–सुनने से	☐	☐	☐
27. क्या पति की निम्न आदतों के कारण पारिवारिक तनाव होते हैं?			
1. मद्यपान करने से	☐	☐	☐
2. जुआ की आदत से	☐	☐	☐
3. धूम्रपान की आदत से	☐	☐	☐
4. बात–बात में टोकने–डाँटने से	☐	☐	☐
5. देर से घर लौटने से	☐	☐	☐
6. पत्नि की उपेक्षा करने से	☐	☐	☐
28. क्या पत्नी से निम्न व्यवहार करने से पारिवारिक तनाव हो जाते हैं?			
1. मायके की अधिक प्रशंसा करने से	☐	☐	☐
2. पत्नी के संदेहीपन से	☐	☐	☐
3. पति द्वारा कभी बाहर न ले जाने से	☐	☐	☐
4. पत्नी द्वारा बिना पूछे कार्य कर लेने से	☐	☐	☐
29. क्या निम्न सांस्कृतिक कारकों में भिन्नता होने के कारण पारिवारिक तनाव होता हैं?			
1. क्या पति–पत्नी के मध्य विश्वासों की भिन्नता के कारण	☐	☐	☐
2. गर्भ–निरोधकों के प्रयोग के मुद्दे से	☐	☐	☐
3. पति–पत्नी के बीच संपत्तियों को लेकर विरोध से	☐	☐	☐
4. पति–पत्नी के द्वारा अपने–अपने आराम को लेकर	☐	☐	☐
5. बच्चों के शिक्षा विषयों को लेकर	☐	☐	☐
30. क्या निम्न आर्थिक कारणों से पारिवारिक तनाव होते हैं?			
1. पति–पत्नी दोनों के काम–काजी होने से	☐	☐	☐
2. केवल पत्नी के काम–काजी होने से	☐	☐	☐
3. पति के अस्थाई व्यवसाय होने से	☐	☐	☐
4. पत्नी की अधिक आर्थिक निर्भरता से	☐	☐	☐
5. कुसमय व्यवसाय फैल होने से	☐	☐	☐
6. पति की ऋणग्रस्तता से	☐	☐	☐
31. क्या निम्न जैवकीय कारकों के कारण पारिवारिक तनाव होते हैं?			
1. पति की नपुंसकता	☐	☐	☐
2. यौनिक असंतोष के कारण	☐	☐	☐
3. पत्नी का बांझपन	☐	☐	☐
4. लड़की जनना	☐	☐	☐
32. क्या अन्य निम्न कारणों की वजय से पारिवारिक तनाव हो जाते हैं?			
1. अधिक सन्तानें होनें के कारण	☐	☐	☐
2. पति–पत्नी में किसी एक का दुर्बल स्वास्थ्य	☐	☐	☐

3. वैवाहिक असंतोष ☐ ☐ ☐
4. पति–पत्नी आय में अन्तर ☐ ☐ ☐

3.0 मध्यम वर्गीय परिवारों में पारिवारिक विघटन के कारण

33. क्या निम्न वैयक्तिक कारण परिवार विघटित हो जाते है? हाँ नहीं
1. मद्यपानी पति ☐ ☐
2. अपव्ययी पति ☐ ☐
3. विपरीत दृष्टिकोण ☐ ☐
4. धूतक्रीड़ा ☐ ☐
5. परस्त्रीगमन ☐ ☐

34. क्या निम्न पारिवारिक तनाव के कारण परिवार विघटित हो जातें है?
1. परिवार के सदस्यों में उद्देश्यों की भिन्नता के कारण ☐ ☐
2. पारिवारिक कार्यो में असहयोग ☐ ☐
3. पारिवारिक कल्याणकारी सेवाओं के अवरूद्ध होने से ☐ ☐
4. पति–पत्नी के सम्बन्धों में मधुरता–स्नेह तथा सहानुभूति लुप्त होने से ☐ ☐
5. पति–पत्नी में संवेदनात्मक उदासीनता से ☐ ☐

35. क्या निम्न परिवार के कार्यो में परिवर्तन होने से पारिवारिक विघटन हो जाता है?
1. पति द्वारा उत्तरदायित्व न निर्वहन करने से ☐ ☐
2. पारिवारिक निर्भरता मे कमी आने से ☐ ☐
3. स्त्रीयों के राजनीति में प्रवेश एवं रूचि लेने से ☐ ☐
4. सामाजिक एवं पारिवारिक निर्णय प्रक्रिया में स्त्री द्वारा हस्तक्षेप करने से ☐ ☐

36. निम्न पारिवारिक संरचनात्मक परिवर्तनशीलता से परिवार विघटन होते हैं?
1. क्या पति–पत्नी की भूमिकाओं में बहुलता के कारण ☐ ☐
2. पति सत्ता में ह्रास ☐ ☐
3. मात्र पृथक से अस्थाई परिवार ☐ ☐
4. क्या एकांकी परिवारों की स्थापना पर बल देने से ☐ ☐
5. क्या पश्चिमी–मनोवृत्तियों का हावी होने से ☐ ☐

37. निम्न मानसिक विकार युक्त व्यक्तित्व के कारण पारिवारिक विघटन हो जाता है?
1. क्या पति के क्रूर व्यवहार से पारिवारिक विघटन हो जाता है ☐ ☐
2. क्या शारीरिक हिंसा करने से ☐ ☐
3. क्या गाली–गलौज आये दिन करने से ☐ ☐
4. क्या पति की भावनाओं या उच्च का अहम् के कारण ☐ ☐
5. क्या दौरे पड़ने से ☐ ☐

38. निम्न सामाजिक कारणों के कारण क्या पारिवारिक विघटन हो जाते हैं?
1. स्त्रीयों की वाहय अंतःक्रिया में बृद्धि के कारण ☐ ☐
2. स्त्रीयों की उच्च शिक्षा के कारण ☐ ☐
3. जनसंख्या की गतिशीलता के कारण ☐ ☐
4. नगरीकरण में बृद्धि के कारण ☐ ☐
5. वित्त वाणिज्यीय मनोरंजन के कारण ☐ ☐

39. निम्न आर्थिक कारण क्या परिवार विघटन के उत्तरदायी हैं? ☐ ☐
1. क्या परिवार की निर्धनता पारिवारिक विघटन का कारक हैं? ☐ ☐
2. क्या पति की बेरोजगारी के कारण क्या परिवार विघटन हो जाते हैं? ☐ ☐
3. क्या पत्नी की आर्थिक स्वतंत्रता से परिवार विघटित हो जाते है? ☐ ☐
4. क्या पत्नी की अधिक पति पर निर्भरता से परिवार विघटन का कारक है? ☐ ☐
5. अचानक जीविका उपार्जन का साधन फैल होने से ☐ ☐

40. क्या निम्न पति–पत्नी के मध्य तनाव होने के कारण पारिवारिक विघटन हो जाते हैं?
1. पति–पत्नी का परस्पर विरोधी स्वभाव से ☐ ☐
2. यौनिक असंतोष होने से ☐ ☐

3. वैवाहिक असंतोष पनपने से ☐ ☐
4. व्यवहारिक प्रतिमानों में भिन्नता होने से ☐ ☐
5. व्यक्तिवादिता वादित होने से ☐ ☐

4.0 पारिवारिक तनाव का व्यक्ति–परिवार व समाज पर प्रभाव

	कम	अधिक	अज्ञात
41. पारिवारिक तनाव से व्यक्ति की जीवन शैली पर प्रभाव :–			
1. पारिवारिक तनाव से उत्तरदायित्व हीनता कितनी बढ़ जाती है?	☐	☐	☐
2. घृणा दोष का कितना जन्म होने लगता है?	☐	☐	☐
3. यौन सम्बन्धों में कितना तनाव आ जाता है?	☐	☐	☐
4. व्यक्ति में व्यक्तिवादिता का कितना विकास हो जाता है?	☐	☐	☐
5. विश्वास हीनता में कितनी कमी आ जाती है?	☐	☐	☐
6. व्यक्ति के दृष्टिकोण में कितना परिवर्तन हो जाता है	☐	☐	☐
42. पारिवारिक तनाव से व्यक्ति के मानसिक व्यवहार का प्रभाव :–			
1. पारिवारिक तनाव से व्यक्ति में कितनी मानसिक कमजोरी आती हैं?	☐	☐	☐
2. भ्रम की दशा कितनी बढ़ जाती है ?	☐	☐	☐
3. व्यक्ति की यादगार में कितना ह्रास हो जाता है ?	☐	☐	☐
4. अकेलेपन को कितना मन करता है ?	☐	☐	☐
5. व्यक्ति कितना दुराचार के निकट हो जाता है ?	☐	☐	☐
6. व्यक्ति की मनोविकृति कितनी हो जाती है ?	☐	☐	☐
43. पारिवारिक तनाव का व्यक्ति के स्वास्थ्य पर प्रभाव :–			
1. व्यक्ति की स्वयं स्वास्थ्य जागरूकता पर कितना प्रभाव पड़ता है	☐	☐	☐
2. रोग उपचार में कितना आलसीपन आ जाता है।	☐	☐	☐
3. व्यक्तिगत अस्वच्छता में कितनी उदासी आ जाती है	☐	☐	☐
4. समय पर भोजन न करने की कितनी आदत पड़ जाती है	☐	☐	☐
5. व्यक्ति कुपोषित कितना हो जाता है	☐	☐	☐
44. व्यक्ति के व्यवहारिक प्रतिमानों पर प्रभाव :–			
1. मानव व्यवहार में कितनी अशिष्टता आ जाती है ?	☐	☐	☐
2. विवाद की स्थिति कितनी पैदा हो जाती है ?	☐	☐	☐
3. निर्णय लेने के ढंगों में तनाव का प्रभाव पड़ता है ?	☐	☐	☐
4. सभ्यव्यवहार का कितना प्रभाव पड़ता है ?	☐	☐	☐
5. समरसता में कितनी कमी आ जाती है ?	☐	☐	☐
6. दूसरों के संग समायोजित होने में कितनी कठिनाई होती है ?	☐	☐	☐
45. व्यक्ति की व्याधिकी पर प्रभाव :–			
1. तनाव से व्यक्ति कितना मद्यपानी हो जाता है ?	☐	☐	☐
2. तनाव से अपराधी वृत्ति कितनी बढ़ जाती है ?	☐	☐	☐
3. तनाव से धूतक्रीड़ा का कितना उदय हो जाता है ?	☐	☐	☐
4. उत्तेजनात्मक व्यवहार कितना बढ़ जाता है ?	☐	☐	☐
5. दूसरों के प्रति व्यक्ति कितना सन्देही हो जाता है ?	☐	☐	☐
6. शारीरिक हानियाँ कितनी होने लगती हैं ?	☐	☐	☐
46. व्यक्ति के आर्थिक व्यवहार पर प्रभाव :–			
1. व्यवसाय में कितना कम मन लगता है ?	☐	☐	☐
2. व्यक्ति काम पर कितनी देर से जाने लगता है ?	☐	☐	☐
3. व्यक्ति कार्य पर कितना अनुपस्थित रहने लगता है ?	☐	☐	☐
4. व्यक्ति कितना ऋणग्रस्त हो जाता है ?	☐	☐	☐
5. व्यक्ति का आर्थिक स्तर कितना निम्न हो जाता है ?	☐	☐	☐
6. व्यक्ति की अर्थ साख कितनी कम हो जाती है ?	☐	☐	☐
47. व्यक्ति के नैतिक मूल्यों पर प्रभाव :–			
1. व्यक्ति का मन पूजापाठ में कितना नहीं लगता ?	☐	☐	☐

2. बड़ों के प्रति आदर भाव कितना कम हो जाता है ? ☐ ☐ ☐
3. व्यक्ति सामाजिक बन्धनो को कितना तोड़ने लगता है ? ☐ ☐ ☐
4. व्यक्ति की धार्मिक कार्यक्रम में कितनी रूचि कम हो जाती है ? ☐ ☐ ☐
5. व्यक्ति पाप की ओर कितना बढ़ने लगता है ? ☐ ☐ ☐
6. व्यक्ति कितना अव्यवहारिक हो जाता है ? ☐ ☐ ☐

48. व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव :–
1. तनाव से व्यक्ति के मन पर कितना दबाव पड़ता है ? ☐ ☐ ☐
2. व्यक्ति में अन्तर्द्वन्द कितना बढ़ जाता है ? ☐ ☐ ☐
3. व्यक्ति चिन्ताशील कितना हो जाता है ? ☐ ☐ ☐
4. व्यक्ति में बृद्धि ह्रांस कितना हो जाता है ? ☐ ☐ ☐
5. व्यक्ति में कितना चिड़चिड़ापन आ जाता है ? ☐ ☐ ☐
6. व्यक्ति कितना शीघ्र क्रोधित हो जाता है ? ☐ ☐ ☐

49. पारिवारिक तनाव का बच्चों के समाजीकरण पर प्रभाव :–
1. बच्चों में आत्म विश्वास कितना रूक जाता है ? ☐ ☐ ☐
2. बच्चों की सीखने की कितनी प्रवृत्ति नकारात्मक हो जाती है ? ☐ ☐ ☐
3. बच्चे माँ–बाप से कितना तिरस्कृत हो जाते हैं ? ☐ ☐ ☐
4. बच्चों में कितनी अनुशासनहीनता आ जाती है ? ☐ ☐ ☐
5. बच्चों की कितनी डाट–डपट बढ़ जाती है ? ☐ ☐ ☐
6. बच्चों में भावनात्मक एकीकरण कितना कम हो जाता है ? ☐ ☐ ☐

50. बच्चों में मनोवैज्ञानिक व्यवहार पर प्रभाव :–
1. बच्चे कितनी असुरक्षा अनुभव करने लगते हैं ? ☐ ☐ ☐
2. परिवार का परिवेश कितना घुटन भरा हो जाता है ? ☐ ☐ ☐
3. बच्चे गलत आदतें कितनी सीख लेते हैं ? ☐ ☐ ☐
4. भाई–बहिनों में प्रतिद्वन्दता कितनी बढ. जाती है ? ☐ ☐ ☐
5. बच्चों में हीनभावना कितनी भर जाती है ? ☐ ☐ ☐

51. परिवार के पोषण पर प्रभाव :–
1. परिवार के सदस्यों में कितनी अल्प रक्तता हो जाती है ? ☐ ☐ ☐
2. बच्चों की शारीरिक बृद्धि कितनी रूक जाती है ? ☐ ☐ ☐
3. बच्चे कितने कुपोषित हो जाते हैं ? ☐ ☐ ☐
4. बच्चों का मानसिक विकास कितना कम होता है ? ☐ ☐ ☐
5. परिवार असन्तुलिताहार को कितना लेने लगता है ? ☐ ☐ ☐

52. पारिवारिक संगठन पर प्रभाव :–
1. पति–पत्नी के बीच कितने झगड़े होने लगते हैं ☐ ☐ ☐
2. परिवार की प्रेमभाव का कितना क्षय होने लगता है ? ☐ ☐ ☐
3. परिपति–पत्नी गमन कितना होने लगता है ? ☐ ☐ ☐
4. तनाव–झगड़े के प्रकरण न्यायालय कितने पहुँचते हैं ? ☐ ☐ ☐
5. आत्म हत्याओं को कितना प्रोत्साहन मिलता है ? ☐ ☐ ☐
6. तलाकों की संख्या में कितनी बृद्धि हो जाती है ? ☐ ☐ ☐

53. प्राथमिक सम्बन्धों पर प्रभाव :–
1. कितना प्रत्यक्ष संचार पर प्रभाव पड़ता है ? ☐ ☐ ☐
2. कितनी परिवार में हम की भावना कम हो जाती है ? ☐ ☐ ☐
3. कितना विचारों में एकमत्यता का क्षय हो जाता है ? ☐ ☐ ☐
4. कितनी पारस्परिक समझदारी घट जाती है ? ☐ ☐ ☐
5. कितनी परिवार की नियंत्रण में शिथिलता आ जाती है ? ☐ ☐ ☐
6. परिवार कितना विघटन के कगार पर पहुँच जाता है ? ☐ ☐ ☐

54. पारिवारिक तनाव का सामाजिक प्रक्रियाओं पर प्रभाव :–
1. कितना सामाजिक व्यवस्थापन पर प्रभाव पड़ता है ? ☐ ☐ ☐

2. कितना आत्मसातीकरण कम हो जाता है ? ☐ ☐ ☐
3. कितना सामाजिक असहयोग कुप्रभावित होता है ? ☐ ☐ ☐
4. कितना सामाजिक संघर्षो को बल मिलता है ? ☐ ☐ ☐
5. कितना व्यक्ति का व्यवहार अधिक प्रतियोगी हो जाता है ? ☐ ☐ ☐
6. कितना अन्तःक्रियाओं का दायरा संकुचित हो जाता है ? ☐ ☐ ☐

55. पारिवारिक तनाव का सामाजिकता पर प्रभाव :–
1. परिवार के अन्य समूहों के सम्बन्ध कितने कम रह जाते हैं ? ☐ ☐ ☐
2. सामाजिक कुशल क्षमता कितनी उपेक्षित हो जाती है ? ☐ ☐ ☐
3. सामाजिक मामलों में भिन्नता कितनी आ जाती है ? ☐ ☐ ☐
4. सामाजिक समरसता कितनी प्रभावित होती है ? ☐ ☐ ☐
5. सामाजिक असहयोग कितना बढ़ जाता है ? ☐ ☐ ☐

56. पारिवारिक तनाव का सामाजिक नियंत्रण पर प्रभाव :–
1. नैतिक मूल्यों का कितना ह्रांस हो जाता है ? ☐ ☐ ☐
2. सामाजिक अलगाव कितना बढ़ जाता है ? ☐ ☐ ☐
3. समाज में पति–पत्नी परित्याग की दर कितनी बढ़ जाती है ? ☐ ☐ ☐
4. सामाजिक धर्म में विश्वास कितना कम हो जाता है ? ☐ ☐ ☐
5. सामाजिक स्तरीकरण पर कितना प्रभाव पड़ता है ? ☐ ☐ ☐

57. पारिवारिक तनाव का उत्पादकता पर प्रभाव :–
1. उत्पादन में संख्यात्मक अभाव कितना हो जाता है ? ☐ ☐ ☐
2. उत्पादन की गुणवत्ता भी कितनी प्रभावित होती है ? ☐ ☐ ☐
3. कुटीर उद्योगों के विकास में बाधा कितनी आती है ? ☐ ☐ ☐
4. लघु उद्योगों के विकास में बाधा कितनी आती है ? ☐ ☐ ☐
5. उत्पादन सही समय पर कितना नहीं हो पाता ? ☐ ☐ ☐

58. पारिवारिक तनाव का सामाजिक स्वास्थ्य पर प्रभाव :–
1. सामाजिक रहन–सहन के स्तर पर कितना प्रभाव पड़ता है ? ☐ ☐ ☐
2. सामाजिक निपुणता का कितना ह्रांस होता है ? ☐ ☐ ☐
3. अपराधों में बृद्धि कितनी लगती है ? ☐ ☐ ☐
4. बाल अपराधों को कितना प्रोत्साहन मिलता है ? ☐ ☐ ☐
5. सामाजिक शान्ति–सुख–समवृद्धि कितनी रूकती है ? ☐ ☐ ☐

5.0 शिक्षित एवं अशिक्षित परिवारों में तनाव की तुलनात्मक समीक्षा सम्बन्धी सूचनाएं

59. क्या निम्न व्यक्तिगत कारकों की वजय से अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में तनाव अधिक होते हैं ?

	हाँ	नहीं	कह नहीं सकते
1. क्या शिक्षित परिवारों में आत्मसम्मान की भावना अधिक पाई जाती है ?	☐	☐	☐
2. क्या शिक्षित परिवारों में मद्यपान अधिक पाया जाता है ?	☐	☐	☐
3. क्या शिक्षित परिवारों में निर्णय लेने की अधिक स्वतंत्रता अधिक होती है?	☐	☐	☐
4. क्या शिक्षित परिवारों में अहंम की भावना अधिक पाई जाती है ?	☐	☐	☐
5. क्या शिक्षित परिवार अपनी उपलब्धि से कम सन्तुष्ट रहते हैं ?	☐	☐	☐

60. क्या निम्न सामाजिक कारकों के कारण शिक्षित परिवारों में तनाव अधिक होता है ?

1. क्या शिक्षित परिवारों में अधिक प्रतियोगिता होती है ?	☐	☐	☐
2. क्या शिक्षित परिवारों में अधिक स्वतंत्रता होती है ?	☐	☐	☐
3. क्या शिक्षित परिवारों सांस्कृतिक कार्यक्रमों में संलग्न रहते हैं ?	☐	☐	☐
4. क्या शिक्षित संगठनात्मक कार्य में अधिक भाग लेते हैं ?	☐	☐	☐
5. क्या शिक्षितों में ऊपर उठने की अधिक गतिशीलता होती है ?	☐	☐	☐

61. निम्न आर्थिक कारकों की वजय से शिक्षित परिवारों में अशिक्षित परिवारों की तुलना में अधिक तनाव होते हैं?

1. क्या महिला के आत्मनिर्भरता के कारण तनाव होता है ?	☐	☐	☐
2. क्या धन की अधिक चाहत से तनाव होता है ?	☐	☐	☐

3. क्या अधिक आवश्यकताओं के कारण तनाव होता है ? ☐ ☐ ☐
4. व्यवसायक प्रतिद्वन्दता के कारण तनाव होता है ? ☐ ☐ ☐
5. क्या व्यय की अधिकता के कारण तनाव होता है ? ☐ ☐ ☐

62. क्या निम्न महिला सशक्तीकरण कारकों के कारण शिक्षित परिवारों में तनाव अधिक होता है?
1. क्या महिला द्वारा अपने अधिकारों की अधिक सजगता होती है ? ☐ ☐ ☐
2. क्या महिलायें शिक्षा के कारण तनाव उत्पन्न होता है ? ☐ ☐ ☐
3. क्या नये नारी संरक्षण अधिनियमों का होना तनाव उत्पन्न होता है? ☐ ☐ ☐
4. क्या काम–काजी महिला होने के कारण तनाव होता है ? ☐ ☐ ☐
5. क्या सामाजिक दायरा बढ़ जाने के कारण तनाव होता है? ☐ ☐ ☐

63. क्या निम्न कारकों के कारण अशिक्षित परिवारों में तनाव कम होते है?
1. क्या अशिक्षित परिवारों में सहनशीलता अधिक होती है ? ☐ ☐ ☐
2. क्या वे भाग्यवाद में विश्वास करते हैं? ☐ ☐ ☐
3. क्या उन्हें लोक–लाज का भय अधिक होता है ? ☐ ☐ ☐
4. क्या अशिक्षा तनाव को कम करती है ? ☐ ☐ ☐
5. क्या अशिक्षित अधिक धर्म परायण होते हैं ? ☐ ☐ ☐
6. क्या वे अधिक सन्तोषी होते हैं ? ☐ ☐ ☐

64. क्या अन्य निम्न कारणों की वजय से भी पारिवारिक तनाव हो सकते हैं?
1.क्या आप अनुभव करते हैं कि शिक्षित परिवार अधिक प्रतिक्रिया वादी होते हैं? ☐ ☐ ☐
2. क्या उनमें अधिक संघर्ष की भावना पाई जाती है? ☐ ☐ ☐
3. क्या वे वाह्य समूहों के अधिक सदस्य होते हैं ? ☐ ☐ ☐
4. क्या उनमें नेतृत्व की भावना अधिक पाई जाती है ? ☐ ☐ ☐
5. क्या उनमें अधिक दूरदर्शिता होती है ? ☐ ☐ ☐
6. क्या उनका यौन व्यवहार अश्रृंखला होता हैं ? ☐ ☐ ☐

65. अशिक्षित परिवारों की तुलना में शिक्षित परिवारों में अधिक तनाव के क्या निम्न राजनैतिक कारक होते हैं ?
1. शीघ्र बदलती सरकारें ☐ ☐ ☐
2. राजनैतिक दलों का पूर्वाग्रह ☐ ☐ ☐
3. ढीली नीतियां ☐ ☐ ☐
4. नीति क्रियान्वयन में इच्छाशक्ति ☐ ☐ ☐
5. आरक्षण नीति ☐ ☐ ☐

66. अशिक्षित परिवारों में शिक्षित परिवारों की तुलना में अधिक तनाव क्या निम्न सांस्कृतिक कारकों से होता हैं ?
1. सत्य बोलना ☐ ☐ ☐
2. परम्पराओं का पालन ☐ ☐ ☐
3. रीति–रिवाजों में विश्वास ☐ ☐ ☐
4. कर्म को धर्म मानना ☐ ☐ ☐
5. सांस्कृतिक विलम्बना ☐ ☐ ☐

6.0 पारिवारिक तनाव कम करने सम्बन्धी सूचनाऐं :–

67. संचार सम्बन्धी सुझाव :– हाँ नहीं अज्ञात

निम्न बिन्दुओं को वार्ता के समय ध्यान में रखन से क्या पारिवारिक तनाव कम होते हैं।
1. क्या आपसी वार्ता मुस्कान के साथ करने से तनाव तथा झगड़े कम होते हैं? ☐ ☐ ☐
2. क्या पारिवारिक वार्ता में मधुर शब्दों के प्रयोग करने से पारिवारिक तनाव कम होते हैं? ☐ ☐ ☐
3. क्या आपस में पारिस्पारिक सम्मान देने करने से पारिस्पारिक तनाव कम होते हैं? ☐ ☐ ☐
4. क्या पारस्परिक संचार में दूसरों की सराहना करने पर पारिवारिक तनाव कम होते हैं? ☐ ☐ ☐
5. क्या पारस्परिक संचार में मतभेदी सन्दर्भो को पृथक रखने से तनाव मिटते हैं ? ☐ ☐ ☐

68. निम्न स्वयं के सुझाव प्रयास करने से पारिवारिक तनाव कम होते हैं।
1. क्या तनाव के कारणों को जानकर हल करने से होते हैं? ☐ ☐ ☐

2. क्या व्यक्ति द्वारा अपने को कार्य में संलग्न रखने से? ☐ ☐ ☐
3. क्या सुन्दर भविष्य के निर्माण के प्रयासों से ? ☐ ☐ ☐
4. क्या पारस्परिक पृष्ठभूमि में ताने न मारने से ? ☐ ☐ ☐
5. क्या व्यक्ति द्वारा रिक्त समय में साहित्य पठन–पाठन से ? ☐ ☐ ☐
6. क्या मेडीटेशन के अभ्यास से ? ☐ ☐ ☐

69. निम्न शीलों के पालन से पारिवारिक तनाव कम होते हैं? कम अधिक अज्ञात
1. क्या सत्य बोलने से तनाव कम होते है? ☐ ☐ ☐
2. क्या परस्त्री गमन न करने से तनाव कम होते हैं? ☐ ☐ ☐
3. क्या मद्यपान न करने से तनाव कम होते हैं? ☐ ☐ ☐
4. क्या जीव हिन्सा से विरत रहने से तनाव कम होते हैं? ☐ ☐ ☐
5. क्या चुगुलखोरी न करने से तनाव कम होते हैं? ☐ ☐ ☐
6. क्या कुशल कार्य करने से तनाव कम होते हैं? ☐ ☐ ☐

70. निम्न धार्मिक क्रियाकलापों से पारिवारिक तनाव कम होते हैं?
1. क्या सत्संगों में सहभागिता से परिवारी तनाव–झगड़े कम होते हैं? ☐ ☐ ☐
2. कल्याणकारी कार्यो के निष्पादन से पारिवारिक तनाव तथा झगड़े कम होते हैं? ☐ ☐ ☐
3. क्या धार्मिक स्थलों के दर्शनों से तनाव कम होते हैं? ☐ ☐ ☐
4. क्या धार्मिक शास्त्रों के पढ़ने से तनाव कम होते हैं? ☐ ☐ ☐
5. साधना शिवरों के अभ्यास करने से क्या तनाव कम होते हैं? ☐ ☐ ☐

71. निम्न सामाजिक क्रियाओं के करने से पारिवारिक तनाव कम होते हैं।
1. क्या तनाव–झगड़ों को हम आयु व सन्दर्भ समूह के मध्य विचार–विमर्श करने से तनाव कम होते हैं? ☐ ☐ ☐
2. सांस्कृतिक आयोजनों में सहभागिता बड़ाने से क्या तनाव–झगड़े कम हो जाते हैं? ☐ ☐ ☐
3. क्या भूल–सुधार प्रक्रिया से तनाव कम होते है? ☐ ☐ ☐
4. क्या हस्तक्षेपों को अन्त क्रियाओं में हस्तक्षेपों को न्यूनतम करने से तनाव कम होते है। ☐ ☐ ☐
5. क्या सकारात्मक अवलोकनों से तनाव कम होते हैं? ☐ ☐ ☐

72. निम्न मनोवैज्ञानिक क्रियाएं तनाव कम करती हैं
1. क्या मनोवैज्ञानिक परामर्श लेने से तनाव कम होते हैं ? ☐ ☐ ☐
2. क्या धैर्य रखने से तनाव कम होते हैं ? ☐ ☐ ☐
3. क्या मैं भी ठीक हूँ आप भी ठीक हैं की सोच से तनाव कम होते हैं? ☐ ☐ ☐
4. क्या वर्तमान में ही जीने से तनाव कम होते हैं? ☐ ☐ ☐
5. क्या पारस्परिक समझ तनावों को कम करती हैं? ☐ ☐ ☐

73. निम्न सांस्कृतिक क्रियाओं से पारिवारिक तनाव कम होगें ?
1. क्या गीत–संगीत के कार्यक्रम तनाव को कम करते हैं? ☐ ☐ ☐
2. क्या खेल से तनाव कम होते हैं ? ☐ ☐ ☐
3. क्या रेडियो/दूरदर्शन के सूनने–देखने से तनाव से मुक्ति मिलती है? ☐ ☐ ☐
4. क्या ललित कलायें मानव तनाव को कम करती हैं? ☐ ☐ ☐
5. क्या समालोचनात्मकता से तनावों में कमी आती है? ☐ ☐ ☐

शोधार्थी के हस्ताक्षर

दिनांक :–

(मायाराम)